अपराधिनी

रूपान्तरकार

यज्ञदत्त शर्मा

१९६२
साहित्य प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली

प्रकाशक:
साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

मूल्य
पाँच रुपया

मुद्रक :—
मुद्रण-कला केन्द्र द्वारा
नूतन प्रेस, चाँदनी चौक, दिल्ली।

दो शब्द

प्रस्तुत उपन्यास प्रसिद्ध उपन्यासकार सोमर सेट मॉम के 'पेन्टेडवेल' उपन्यास के आधार पर भारतीय पात्रों, परिस्थियों और आदर्शों पर लिखी गई एक रचना है। इसे मौलिक रूप प्रदान करने पर भी इसकी आत्मा में लेखक की अनभूति, शैली और कथा का पूरा तारतम्य ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय पाठकों के लिए अब यह बहुत रोचक हो गया।

यज्ञदत्त शर्मा

१

विमला और श्याम एक सोफ़े पर पास-पास सटे बैठे थे। विमला का हाथ श्याम के हाथ में था और उसके नेत्र श्याम के सुन्दर सुडौल चेहरे पर। कितना अनुपम सौन्दर्य था। पुरुषत्व की साक्षात प्रतिमा था वह।

विमला ठगी-सी रह गई, स्तब्ध।

तभी अचानक उनके कमरे की चटखनी धीरे से घूमी और नीचे गिर गई। द्वार की झिर्री तनिक खुली, परन्तु द्वार बन्द ही रहे। एक छाया-सी, किसी व्यक्ति की, उन किवाडों के बीच की झिर्री के सामने से गुज़रती दिखाई दी और विमला सहम गई। उसके मुँह से बड़ी ज़ोर की चीख़ निकल जाती, परन्तु श्याम ने सावधानी से उसके मुँह पर हाथ रख दिया।

विमला की आवाज़ मुँह के अन्दर ही घुमड़कर रह गई। श्याम गम्भीरता पूर्वक बोला,—"यह क्या विमला! क्या पगली हो गई हो?"

"मैंने किसी व्यक्ति को द्वार पर खड़े देखा था।" विमला घबराहट में बोली।

"होगा कोई। नौकर होगा तुम्हारा।" लापरवाही से श्याम ने कहा, परन्तु दिल उसका भी धड़क रहा था और चित्त में बेचैनी-सी भी पैदा हुई थी।

"नहीं, नौकर नहीं था वह। नौकर को पता है कि मैं भोजन करके सो जाती हूँ। वह कभी इस प्रकार मेरे कमरे की चटखनी पर हाथ नहीं डाल सकता।" भयभीत-सी दशा में विमला ने कहा।

"फिर कौन था?" श्याम ने पूछा।

"डाक्टर रमेश।" विमला ने फुसफुसाकर कहा। कहते-कहते विमला का स्वर काँप उठा। उसकी वाणी धीमी पड़ गई। उसका बदन स्थिर न रह सका। वह गिर जाती यदि श्याम उसे सँभाले न होता।

श्याम ने धीरे से विमला के बालों में उँगलियाँ डालकर सहलाते हुए कहा,—"घबराओ नहीं विमला! यह डाक्टर रमेश का आने का समय नहीं है। अभी तो वह अपने मरीजों से ही माथा-पच्ची कर रहे होंगे।" और उसने विमला का सर अपनी छाती से सटाकर प्यार से उसके मस्तक पर हाथ फेरते हुए कहा,—"घबराओ नहीं। धीरे से उठकर देखो, वह कौन था।"

"मैं बाहर नहीं जा सकती श्याम! मेरे पैर लड़खड़ा उठेंगे। मैं गिर जाऊँगी। मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा है और मेरा सिर चकरा रहा है।" विमला ने कहा।

श्याम ने विमला को धीरे से सोफ़े पर लिटा दिया और स्वयं खड़ा होकर द्वार के पास गया। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला और उसकी झिर्री से झाँककर बाहर बरांडे में देखा।

वहाँ कोई नहीं था। उसने दरवाज़ा खोल दिया और बाहर जाकर इधर-उधर दूर-दूर तक नज़र दौड़ाई, परन्तु उसे कुछ दिखाई नहीं दिया।

विमला ने तब तक शीशे के सामने खड़ी होकर कंघे से अपने बालों को सँवार लिया, अपनी साड़ी की सलवटें ठीक कर लीं और चेहरे को धीरे से तौलिया लेकर साफ़ करते हुए मुस्कराने का प्रयास किया।

श्याम अन्दर आकर बोला,—"तुम भी बड़ी बावली हो विमला! तुमने व्यर्थ ही मुझे भयभीत कर दिया। डाक्टर रमेश इस समय नहीं लौट सकते।"

"विचार तो मेरा भी यही है श्याम! परन्तु वह था कौन?"

दोनों देर तक इसी विषय पर बातें करते रहे। दोनों ही गुत्थी को सुलझाने का भरसक प्रयास किया, परन्तु वह सुलझ न सकी। शंका दोनों के मस्तिष्क को घेरे रही।

विमला के चित्त पर उसका बहुत गहरा प्रभाव था। वह उसे भुलाने का जितना ही प्रयास करती थी बात उतनी ही तीव्र वेग के साथ उसके मस्तिष्क को झँझोड़ने लगती थी।

श्याम को लगा कि विमला पागल हो जायगी। साथ ही उसे विमला पर क्रोध भी आ रहा था कि यदि यह स्थान सुरक्षित नहीं था तो इसने मुझे बुलाया ही क्यों। इसे मुझे नहीं बुलाना चाहिए था। इसने न तो अपनी आबरू का विचार किया और न मेरी ही आबरू का कोई सुनेगा तो भला क्या कहेगा।

तभी विमला ने अपना हाथ धीरे से श्याम के हाथ पर रख दिया। श्याम के बदन में हल्की-सी सिहरन आई और मान-अपमान की बात उसके मस्तिष्क से लुप्त हो गई। उसने विमला के चेहरे पर देखा तो वह धीरे-धीरे मुस्करा रही थी।

श्याम छूटते ही बोला,—"मक्कार कहीं की। व्यर्थ ही डरा दिया मुझे भी। यह कैसा मजाक किया तुमने विमला?" और उसने विमला का सिर अपनी छाती से लगा लिया।

विमला भी श्याम से सटकर बैठ गई और श्याम के सुन्दर चेहरे पर दृष्टि पसारकर धीरे-धीरे बोली,—"मैंने मजाक नहीं किया श्याम! देख नहीं रहे हो मेरा बदन अभी भी काँप रहा है। द्वार पर अवश्य कोई था। मैंने स्पष्ट देखा था। मेरी आँखों ने मुझे धोखा नहीं दिया।"

विमला धीरे-धीरे अपने को सँभालने का प्रयास कर रही थी, परन्तु वह छाया अभी तक उसकी पुतलियों से लुप्त नहीं हो सकी थी। वह भयभीत थी।

श्याम ने देखा कि अचानक ही विमला सुबक-सुबक कर रो पड़ी। श्याम घबरा उठा। वह विमला को सोफ़े पर छोड़कर एक बार फिर उठा। उसने खिड़कियों से इधर-उधर देखा, बरांडे में जाकर झाँका उसे कोई दिखाई नहीं दिया।

श्याम भी इस समय कांप रहा था। वह न जाने क्या-क्या सोच रहा था।

श्याम फिर तनिक सावधान होकर बोला,—"विमला भयभीत न हो। सँभल कर बैठो। इस प्रकार डरने की आवश्यकता नहीं। तुम्हें स्थिति का गम्भीरता से सामना करना चाहिए।"

विमला अपना रूमाल खोज रही थी। श्याम ने उसका रूमाल उसे दे दिया और उसने उससे अपना चेहरा साफ़ कर लिया।

"तुम्हारी टोपी कहाँ है?" विमला ने पूछा।

"मैं नीचे रख आया था।"

"अरे भगवान्! यह तुमने क्या किया?"

"होश में आओ विमला! वह रमेश नहीं था। शर्त लगाता हूँ मैं यदि वह रमेश हो। मैं सौ रुपये दूँगा और रमेश न हुआ तो तुम एक रुपया देना। आखिर वह यहाँ इस समय क्यों आता? वह कभी दोपहर में नहीं आता, क्या आता है कभी?"

"नहीं।" विमला ने कहा।

"तो फिर मैं शर्त बद सकता हूँ। वह अन्य कोई रहा होगा।" श्याम बोला।

विमला मुस्करा दी। श्याम ने उसे सांत्वना दी। विमला ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर दबा दिया। श्याम ने उसे सहारा देकर ऊपर उठाया और प्रेम पूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा। फिर बोला, "विमला! इस तरह हम यहाँ नहीं रह सकते। तनिक बाहर जाकर देखो। कोई है तो नहीं बाहर।"

"मैं नहीं देख सकती।" विमला बोली।

"तुम्हारे पास थोड़ी बरांडी है?"

"नहीं" विमला ने कहा। उसकी घनी भौंहें कांप उठीं। वह समझ नहीं पाई कि वह क्या करे। उसने अपने दोनों हाथ कराकर, एक-दूसरे से पकड़ लिए। वह चकित दृष्टि से चारों ओर देखने लगी।

"यदि रमेश कहीं बाहर हुआ तो क्या होगा ?" कहकर विमला ने मुस्कराने का प्रयास किया, परन्तु उसकी बाणी मौन रही।

"इसकी सम्भावना नहीं है। तुम जाकर देखो। तुम्हारा पति रमेश इस समय नहीं आ सकता। वह आया होता और नीचे उसने मेरी टोपी देखी होती तो वह ऊपर आता। वह द्वार से लौट नहीं सकता था। मेरे विचार से कोई नौकर ही होगा।"

"नौकर आया, यह भी अच्छा नहीं हुआ।" विमला भयभीत-सी बोली।

"उसे ठीक किया जा सकता है। मैं उसे भय दिखा दूंगा। अफसर होने का चाहे और कोई लाभ न हो, इतना तो है ही कि जो काम चाहूँ कर सकता हूँ।"

विमला ने सोचा श्याम ठीक कह रहा था। वह खड़ी हुई और अपनी दोनों बाँहें उसकी ओर को फैला दीं। श्याम ने उसे सहारा देकर ऊपर उभार दिया। वह मन से उसे पूजती थी।

विमला खिड़की तक गई। उसने दरवाज़ा खोला और बाहर झाँकी। वहाँ कोई नहीं था। वह द्वार खोलकर बाहर गई। फिर अपने पति के कमरे में गई। फिर अपने कमरे में आई। दोनों कमरे खाली थे, उनमें कोई नहीं था। वह फिर अपने सोने के कमरे में आई और श्याम से कहा,—"कोई नहीं है। मैंने चारो ओर देख लिया। वह अभी तक नहीं लौटे।"

"यह सब तुम्हारी आँखों का भ्रम था।" श्याम बोला।

"मैं डर के मारे सूख गई थी। आओ, बैठो। मैं कपड़े बदल लूं।" विमला ने कहा।

२

श्याम चला गया। कुछ देर पश्चात् विमला भी वहीं पहुँच गई जहाँ श्याम ने उससे मिलने को कहा था। वह सिगरेट पी रहा था।

"क्या मुझे थोड़ी बराँडी मिलेगी ?" श्याम ने कहा।

"मँगाती हूँ।" विमला बोली।

विमला ने नौकर को बराँडी का आर्डर दिया। बराँडी आने पर विमला श्याम से बोली,—"जरा प्रयोगशाला में फोन करके, मालूम करो कि डाक्टर रमेश वहाँ हैं या नहीं। वह तुम्हारी आवाज नहीं पहचानते।"

श्याम ने फोन किया। उसने पूछा कि डाक्टर रमेश वहाँ हैं या नहीं।

"खाना खाने के पश्चात् वह वहाँ नहीं आये," उसने विमला से कहा।

"मेरे नौकर से पूछो कि वह वहाँ तो नहीं आये।"

"मेरा साहस नहीं है।"

नौकर बराँडी और सोडा ले आया। श्याम ने बराँडी ली। उसने विमला से भी पीने का आग्रह किया, परन्तु विमला ने स्वीकार नहीं किया।

"यदि आने वाला व्यक्ति रमेश ही होगा तो क्या होगा ?" विमला ने भयभीत स्वर में पूछा।

"वह परवाह भी नहीं करेगा।" श्याम ने कहा।

"क्या ?" विमला के स्वर में थरथराहट थी।

"हाँ ! वह शर्मीली प्रकृति का है। कुछ लोग ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देते। वे जानते हैं कि इस प्रकार की बातों को बढ़ाने में बदनामी होती है। इसलिए वे जानते हुए भी उन पर पर्दा ही डालना चाहते हैं और यही उचित समझते हैं कि बात छिपी ही रहे। वह किसी प्रकार उखड़े नहीं। परन्तु मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि वह रमेश नहीं था।

यदि वह था तो वह इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहेगा। मेरे विचार से वह अनदेखी, अनसुनी कर देगा इस बात को।"

विमला को यह भला नहीं लगा। वह बोली,—"वह मुझे बहुत चाहते हैं, श्याम !"

"यह और भी अच्छी बात है। तब तुम उसे ठीक कर सकोगी।" इतना कहकर वह मुस्करा दिया। विमला उसकी इस मीठी मुस्कान पर न्यौछावर हो जाती थी। श्याम की यह मुस्कान उसकी आँखों में होती हुई धीरे-धीरे उसके हृदय में उतर जाती थी। उसके अपने सुन्दर दाँत चमक उठते थे। वह स्पन्दित हो उठती थी। उसका बदन रोमांचित हो जाता था।

"मैं चिन्ता नहीं करती।" विमला ने कहा। वह मुस्करा रही थी। "वह हैं भी इसी योग्य।"

"गलती मेरी ही थी।" श्याम बोला।

"तुम क्यों आये ? मैं तुम्हें देखती रह गई।" विमला ने पूछा।

"मैं रोक नहीं सका अपने को।"

"श्याम बाबू !"

विमला उसकी ओर थोड़ी झुकी। उसकी काली और चमकदार आखों में वासना भरी थी। विमला उसकी ओर देख रही थी। उसका मुँह खुला हुआ था। श्याम ने अपनी बाहें विमला के गले में डाल दीं। विमला ने उन फैली हुई बाहों में अपने आप को डाल दिया।

मुझ पर विश्वास करना।" श्याम ने कहा।

"तुम्हारे साथ मैं बहुत प्रसन्न हूँ। काश, मैं तुम्हें उतना सुखी कर पाती जितना तुम मुझे करते हो।" विमला ने नेत्र बन्द करके कहा।

"अब तो तुम्हें भय नहीं लगता।" श्याम बोला।

"मुझे अपने पती से घृणा है, बहुत जबरदस्त घृणा।" विमला ने कहा।

श्याम की समझ में नहीं आया कि वह क्या उत्तर दे। उसने विमला के मुलायम गालों पर हलकी सी थपकी दी। फिर उसने अपनी घडी देखी।

"तुम्हें मालूम है मैं क्या चाहता हूँ।" श्याम बोला।

"द्वार बन्द करदूँ ?" विमला कहकर मुस्करा दी।

श्याम बोला "नहीं। मैं अब जाना चाहता हूँ।" वह चल पड़ा और विमला अकेली खड़ी रह गई।

विमला मुस्कारा कर बोली, "आपको लज्जा नहीं आती। अपने दफ्तर का तनिक भी ध्यान नहीं।, जाइये आप अपने काम पर जाइये।"

श्याम विमला से चुहल करने को रुका और बोला, "प्रतीत होता है कि तुम मुझ से छुटकारा पाना चाहती हो।"

"तुम जानते हो कि मैं तुम्हें रोकना चाहती हुँ।" बिमला धीमे स्वर में बोली।

श्याम मुस्करा दिया।

"मेरी अच्छी विमला ! तुम उस आने वाले के लिए चिन्ता न करना। तुम व्यर्थ परेशान न होना। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह नौकर ही होगा। यदि वह रमेश ही हुआ और उसने तुम्हें कष्ट देना चाहा तो मैं तुम्हें कष्टन हीं उठाने दूंगा, विश्वास रखना।"

वमला मुस्करा दी, श्याम चला गया।

३

श्याम की आयु चालीस वर्ष थी, परन्तु उसका बदन कसा हुआ था। वह युवक प्रतीत होता था।

विमला के घर स्तब्धता थी। उसने चुपचाप घर में प्रवेश किया। मंसूरी में पहाड़ी के एक किनारे पर उनका मकान था। इससे अधिक बड़ा मकान वे नहीं ले सकते थे। वह अब केवल अपने प्रेमी के विषय में सोच रही थी। उसका ध्यान श्याम के सौंदर्य में उलझा हुआ था।

आज जो कुछ हुआ वह मूर्खता थी, परन्तु जब वह चाहते तो वह कैसे मना कर सकती थी ? वह दो-तीन बार आ चुका था। वह हर बार दोपहरी में आया, जब कोई भी बहार जाने की बात नहीं सोच सकता। बच्चों ने भी उसे आते-जाते कभी नहीं देखा।

विमला जब प्रथम बार श्याम से इस छोटे से मकान में मिली थी तो उसने कहा था, "तुम कितने छोटे और गंदे मकान में रहती हो विमला !"

"हाँ, तुम्हारे आने से पूर्व तो यह गन्दा ही था," उसने कहा था। परन्तु जब श्याम ने उसे अपने करों में भर लिया था तो वह सब कुछ भूल गई थी। उसे वह गंदा और छोटा मकान स्वर्ग सा प्रतीत होने लगा था।

यह कितना बुरा था कि वह स्वतंत्र नहीं थी। वे दोनों स्वतन्त्र नहीं थे। विमला को श्याम की पत्नी अच्छी नहीं लगती थी। उसका विचार अब श्याम की पत्नी पर केन्द्रित हो गया। उसका कमला नाम

कितना गंदा था। उसकी अवस्था अड़तीस वर्ष की होगी। श्याम ने उसके सम्बन्ध में कभी कुछ कहा नहीं। उसे उसकी चिन्ता भी नहीं थी। कमला ने उसे परेशान कर दिया था, परन्तु श्याम बड़ा सज्जन था। विमला श्याम के प्रति अपने प्रेम की भावना पर खिल उठी। कमला विमला से कद में लम्बी थी; पतली भी। उसके केश काले थे। और कुछ सुन्दर नहीं था उसका। जवानी के दिनों में वह सुन्दर रही होगी। उसके नक्श सुन्दर थे। परन्तु कोई विशेषता नहीं थी। उसकी नीली आंखों में आभा नहीं थी। उसमें अब कोई आकर्षण नहीं था। उसके गाल भी दब गये थे। कपड़े वह सुन्दर पहनती थी। वैसे ही जैसे अफ़सर की पत्नी को पहनने चाहिएँ। विमला के मुख पर हास्य की रेखाएँ खिंच गईं।

कमला की आवाज़ में मिठास था। श्याम कहता था कि वह बच्चों के लिए बहुत अच्छी माँ है। विमला की माताजी ऐसी स्त्रियों को सीधी-सादी पत्नी कहा करती थीं। परन्तु विमला को कमला कभी अच्छी नहीं लगी। उसे वह हर तरह नापसन्द थी।

अपने घर आने वाले अतिथियों के प्रति कमला का व्यवहार विमला को खलता था और विशेष रूप से अपने प्रति। वह कमला की नज़रें पहचानती थी और उसकी विवशता पर मुस्कराती थी। वह उसे दुर्बल और अपने को सबल समझती थी। कभी-कभी अकेली ही खिल-खिला कर हँस पड़ती थी और उसे कमला की दशा बहुत ही दयनीय प्रतीत होती थी।

कमला का उसके आस-पास के रहने वाले सभी लोग आदर करते थे, परन्तु विमला की दृष्टि में वह कभी आदर की पात्री न बन सकी। अन्य लोग कमला को बहुत सरल और सहृदय महिला कहकर पुकारते थे, परन्तु विमला को वह नितांत नीरस और सूखी-सूखी लगती थी। उसके अन्दर कभी कमला के प्रति आकर्षण पैदा नहीं हुआ।

विमला के पिता हाईकोर्ट के जज थे। हजारों लोग उनसे मिलने

के लिए उनके बंगले पर आते थे, परन्तु जबसे विमला का विवाह हुआ तो उसके मकान पर कोई नहीं आता। यदि आता भी था तो कोई एक आध मरीज़ जिसे देखकर विमला को नफ़रत ही होती थी। उसकी नाक भों चढ़ जाती थीं और सोचती थी कि वह जितना शीघ्र वहाँ से टले उतना ही अच्छा।

विवाह के उपरान्त विमला ने देखा कि समाज में उसके मान का स्तर उसके पति के स्तर द्वारा ही आँका जाता था। इस कटु सत्य के साथ विमला समझौता न कर सकी। सम्पर्क में आने वालों ने उसे मान दिया। आरम्भ में उस दम्पति को प्रायः नित्य ही किसी-न-किसी पार्टी में बुलाया गया। एक बार वह गवर्नर के यहाँ भी दावत में गई। वहाँ उसका नववधु जैसा आदर-सत्कार हुआ, परन्तु उसने शीघ्र ही समझ लिया कि एक डाक्टर की पत्नी होने के नाते उसका समाज में विशेष महत्व नहीं था। इसने विमला के मन पर गहरा आघात किया।

एक दिन विमला ने अपने पति से दुखित होकर कहा, "कितना दुःख होता है जब मैं सोचती हूँ कि मेरे घर पर कितने ही लोग प्रतिदिन आते थे और यहाँ हमें बिलकुल कूड़े-करकट की भाँति अलग पड़े रहना पड़ता है। मानो सभ्य समाज के हम अंग ही नहीं हैं।"

डाक्टर रमेश विमला की बात सुनकर केवल मुस्करा भर दिये।

विमला बोली, "मुझे डिनर इत्यादि पर किसी अन्य के साथ जाने पर कितना बुरा लगता है, मैं कह नहीं सकती।"

विमला कहकर मुस्करा दी, सम्भवतः इसलिए कि डाक्टर रमेश को बुरा न लगे।

डाक्टर रमेश मुस्कराकर विमला का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, "विमला, इसकी तुम चिन्ता न करो।"

रहस्य, रहस्य ही बना रहा। विमला कुछ भी न समझ सकी। वह जिस गुत्थी को खोलना चाहती थी उसकी गाँठ और भी कड़ी हो

गई। उसने डाक्टर रमेश के चेहरे पर गम्भीरता पूर्वक देखा, परन्तु वह बराबर मुस्करा रहे थे। उनकी आकृति पहले जैसे ही सरल थी।

बिमला कुछ लजा सी गई और आँखें नीची हो गई।

५

विमला ने अपने मन में सोच लिया कि उस दिन डाक्टर रमेश न रहे होंगे। कोई नौकर रहा होगा। परन्तु यदि कोई नौकर था तब भी कुछ अच्छा नहीं हुआ। कौन जाने कब डाक्टर रमेश के सामने वह बात किस रूप में आ जाये।

उस दिन खिड़की की चटखनी धीरे-धीरे घूमने की बात जब भी बिमला को याद आती तो उसका दिल धड़कने लगता। वह सोचती कि उसे यह नहीं करना चाहिए था। इससे यही अच्छा है कि वह किसी अन्य स्थान पर उससे मिल आया करे। वहाँ जाते उसे कोई देखे भी तो किसी को कोई ख्याल नही होगा। वहाँ वे दोनों निश्शंक मिल सकते हैं।

विमला उठकर अपनी बैठक में चली आई। सोफे पर आराम से बैठी कि उसने एक पुस्तक पर एक लिखा हुआ कागज देखा। विमला ने उसे खोला, उस पर लिखा था। 'प्रिय विमला;

यह तुम्हारी पुस्तक है। मैं इसे भेजने ही वाला था कि डाक्टर रमेश आ गये। उन्होंने कहा कि वह घर जा रहे हैं और किताब स्वयं लेते जायेंगे।

राजन

विमला ने तुरन्त घण्टी बजाई। नौकर आया तो बिमला ने पूछा, "यह किताब कौन लाया था? किस समय लाया था ?"

"डाक्टर साहब लाये थे मालकिन ! वह खाना खाने के बाद आये थे।" नौकर ने उत्तर दिया।

"तो वह डाक्टर साहब ही थे।" उसने तुरन्त श्याम को फोन किया। विमला को जो कुछ भी पता लगा था उसने सब उससे कह दिया। श्याम के उत्तर देने से पूर्व पूर्ण मौन था।

विमला ने पूछा, "मुझे क्या करना चाहिए ?"

"मैं इस समय एक बहुत आवश्यक कार्य में व्यस्त हूँ। इस समय तुमसे बातें नहीं कर सकूँगा। मेरा मत है कि तुम एकदम निश्चित रहो। मानो कुछ नहीं हुआ।"

विमला ने रिसीवर रख दिया। वह समझ गई कि श्याम इस समय अकेला नहीं है। श्याम की इस व्यस्तता से विमला का जी भर आया। उसका दिल भारी हो गया।

विमला बैठ गई। अपना मुँह हथेली में छिपाकर सारी स्थिति पर विचार करने लगी। सम्भव है डाक्टर रमेश ने सोचा हो कि वह उस समय सो रही थी। यदि द्वार अन्दर से बन्द था तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि उसने कोई गलत कार्य किया। फिर सोचा कि कहीं उस समय वह और श्याम बातें तो नहीं कर रहे थे। नीचे श्याम की टोपी भी तो रखी हुई थी। श्याम ने अपनी टोपी नीचे छोड़कर कितनी बड़ी नासमझी की ? परन्तु इसमें श्याम का भी क्या दोष ? यह बिलकुल साधारण बात थी। हो सकता है डाक्टर रमेश ने वह टोपी देखी ही न हो।

सम्भव है डाक्टर जल्दी में रहे हों और इस नोट के साथ यह किताब यहाँ छोड़ गये हों। शायद इसी ओर से अपने किसी काम पर जा रहे हों। यदि उन्हें कमरे में आना था तो पहले उन्हें दरवाजा खड़खड़ाना था। यदि उन्होंने यह सोचा कि मैं सो रही हूँ तो उन्होंने खिड़की की चटखनी क्यों खोली ? उन्होंने अपनी आदत के विरुद्ध

कार्य क्यों किया ? वह कितनी बड़ी मूर्खता कर बैठी। उसका मन भारी हो गया।

विमला ने अपने दिल में दर्द महसूस किया। उस दर्द ने श्याम से मिलने को बाध्य किया। श्याम ने उसे वचन दिया था कि वह उसे सहायता देगा। चाहे उसपर कितनी ही आपत्ति क्यों न आये वह उसका साथ नहीं छोड़ेगा, खैर ! पहले तनिक डाक्टर रमेश को क्रोध तो करने दो। उसका सहारा तो श्याम है ही। उसे किसी की चिन्ता नहीं थी। डाक्टर के क्रोध करते ही उसे पता चल जायेगा कि विमला का साथी श्याम है। विमला ने कभी भी डाक्टर रमेश को नहीं चाहा। अब जबकि वह श्याम से प्रेम करती थी तब डाक्टर रमेश के आलिंगन में जाना उसे खलता था। वह रमेश के साथ नहीं रहना चाहती थी। विमला की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर रमेश उस घटना को प्रमाणित कैसे करेगा। यदि रमेश ने विमला पर आरोप लगाया भी तो वह स्पष्ट मुकर जायेगी। यदि ऐसी ही स्थिति आ गई कि सब कुछ बिगड़ने वाला हुआ तो वह सारा सत्य रमेश के कानों में उड़ेल देगी। फिर डाक्टर चाहे कुछ भी करें, उनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं रह जायगा।

विमला डाक्टर रमेश को प्रेम नहीं कर सकती। उनसे विवाह करके विमला का सामाजिक स्तर नीचे गिरा ; ऊपर नहीं उठा। वह एक जज की लड़की थी और साधारण डाक्टर के पल्ले पड़ गई, जिसका कोई स्टैंडर्ड नहीं ; कोई सम्मान नहीं। कोई दो कौड़ी को उसे नहीं पूछता। कोई सलाम झुकाने उसके मकान पर नहीं आता। कोई विमला को मेम साहब कह कर नहीं पुकारता। श्याम के साथ रहने पर उसे यह सब सम्मान प्राप्त होगा। श्याम एक बहुत बड़ा अफ़सर है। उसकी शान-शौकत निराली ही है। उसके जीवन में कमला के आ जाने से जो कमी आ गई है, उसे मैं पूर्ण कर दूंगी।

६

विमला बचपन से सुन्दर थी। उसके माता-पिता को भी अपनी बच्ची के सौन्दर्य पर गर्व था। उसके सारे बदन की बनावट अच्छी थी, फिर भी वह सर्वांग सुन्दर न थी। उसकी ठोड़ी चौकोर थी और नाक भी जरा लम्बी थी। हाँ, उतनी लम्बी नहीं थी जितनी कमला की। उसकी सुन्दरता का विशेष कारण उसका यौवन था। उसकी माँ ने विचार लिया था कि वह विमला की चढ़ती जवानी में ही उसका विवाह कर देगी।

विमला के यौवन का निखार अत्यन्त आकर्ष था। उसके बदन की बनावट और कटाक्ष बहुत सुन्दर था। उसकी आँखें और उनपर बड़ी पलकें किसी के भी अन्तर में गुदगुदी पैदा कर देती थीं। विमला की माताजी ने विमला पर अपना सारा-स्नेह न्योछावर कर दिया था। वह चाहती थीं कि विमला का विवाह शानदार हो और बहुत सम्पन्न तथा ऊँचे घराने में हो।

विमला को इस धारणा के साथ पाला गया था कि उसे सचमुच एक सुन्दर युवती बनना है, यद्यपि विमला को अपनी माँ की इस धारणा पर कभी-कभी सन्देह होता था। विमला की माताजी को भी अच्छी महफ़िलों में, बड़ी पार्टियों में जाने की सुविधा प्राप्त थी। अपने साथ वह विमला को ले जाना न भूलती थीं। उनका विश्वास था कि ऐसे ही स्थानों पर बड़े लोग सम्पर्क में आते हैं। विमला जहाँ जाती, वहीं सफल होती। वह दिलचस्प थी, साथ ही सुन्दर भी। देखते-ही-देखते लगभग एक दर्जन व्यक्तियों ने उससे प्रणय-निवेदन किया, उसके प्रेम की भिक्षा माँगी।

परन्तु उनमें से कोई भी विमला को पसन्द न था। वह सबसे हँसती बोलती; परन्तु किसी से भी किसी प्रकार का कोई लगाव न रखती। विमला उन सबसे हँसी-मज़ाक करती और उनके मन में अपना घर बनाने के लिए उन्हें एक का दूसरे का प्रतिद्वन्दी बना देती। और जब उन लड़कों ने उसके सम्मुख विवाह की चर्चा चलाई, तो गम्भीरता से उसने कह दिया, "आपके प्रेम-प्रदर्शन के लिए कृतज्ञ हूँ, परन्तु मैं आपके साथ विवाह नहीं करूँगी।"

इस प्रकार विमला के चढ़ते यौवन का प्रथम वर्ष समाप्त हो गया। दूसरा भी समाप्त हुआ, परन्तु अभी तक उसकी और उसकी माँ की इच्छा का वर नहीं मिला। विमला अभी युवती थी, अभी वह और ठहर सकती थी, थोड़ी और प्रतीक्षा कर सकती थी। विमला भी अपनी सहेलियों से कहा करती कि लड़की का विवाह इक्कीस वर्ष की अवस्था से पूर्व नहीं होना चाहिए।

तीसरा वर्ष भी खाली गया और चौथा भी। विमला के पुराने दो तीन प्रेमियों ने अपना-अपना प्रणय निवेदन किया, परन्तु व्यर्थ। वे निर्धन थे। एक दो ऐसे युवकों ने भी प्रेम-प्रस्ताव रखा जो विमला से अवस्था में छोटे थे; दो-एक बहुत बड़े अफ़सरों ने भी विवाह का प्रस्ताव रखा, पर वे विधुर थे। उनमें से एक तरेपन वर्ष का था।

विमला अब भी अपनी मस्ती में थी। वह होटलों में जाती और डान्स करती थी, परन्तु अब कोई अफ़सर या सम्पन्न व्यक्ति उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव नहीं रखता था। इससे विमला की माँ को थोड़ी चिन्ता होने लगी थी। उसने देखा कि विमला अब युवकों के स्थान पर चालीस और उससे ऊपर के ही व्यक्तियों को आकर्षित कर पाती थी। उसने सोचा कि विमला अब उतनी सुन्दर तथा आकर्षक नहीं रहेगी जितनी अब है। माँ ने इस बात को लेकर घर में चर्चा नहीं की परन्तु विमला को सचेत कर दिया और कह दिया कि अब विमला को अपना वर पसन्द करने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

विमला की समझ में यह सब नहीं आया। वह सोचती थी कि वह अब भी उतनी ही सुन्दर थी जितनी चार वर्ष पूर्व। अब शायद कुछ अधिक सुन्दर हो गई थी। गत चार वर्षों में उसे वस्त्र-परिधान-कला का ठीक ज्ञान हो गया था। यदि वह विवाह करना चाहे तो आज एक दर्जन युवक अपना प्रेम-प्रस्ताव लेकर आगे आ सकते हैं। उसे विश्वास था कि जैसे पति की उसके मन में इच्छा थी वैसा उसे अवश्य मिलेगा। चाहे देर से मिले, पर मिलेगा। इसके विपरीत उसकी माँ ने स्थिति को गम्भीर समझा। वह चाहती थी कि घड़ी की चौथाई में कोई वर मिल जाय और वह उसका विवाह कर दे। अब उन्होंने अपनी लड़की के लिए वर की खोज थोड़े निम्न स्तर के युवकों में भी करनी आरम्भ करदी। उसने अब अपनी खोज डाक्टर व्यापरी तथा वकीलों में आरम्भ की। यद्यपि इन वर्गों पर वह कुछ दिन पूर्व नाक-भौं चढ़ा चुकी थीं, उन्हें पसन्द नहीं करती थीं। परन्तु अब लाचारी में उन्होंने यह स्वीकार कर लिया था। वह चाहती थी कि इन्ही वर्गों में कोई उन्नतिशील और प्रभावशाली वर अपनी पुत्री के लिए खोज लें। अब किसी अफ़सर का मिलना उन्हें कठिन लगता था।

विमला अब पच्चीस वर्ष की थी। उसकी माँ अब निराश होने लगी।

इसी निराशा और मानसिक बेचैनी के दिनों में एक दिन डाक्टर रमेश से विमला की भेंट हुई। यह सम्बन्ध जुड़ने में अधिक समय नहीं लगा। परन्तु विमला को आज ही ध्यान आया कि आज से पाँच वर्ष पूर्व भी उसकी इस युवक से भेंट हुई थी। उस समय इसकी आर्थिक दशा बहुत खराब दीखती थी। आज वैसी नहीं थी। उसने मुस्करा कर कहा था, "डाक्टरी करता हूँ। मेरा स्वतन्त्र व्यवसाय है।"

विमला को और क्या चाहिए। स्वतन्त्रता ही तो वह खोज रही थी। स्वतन्त्र व्यवसायी के पास उसे निश्चय ही स्वतन्त्रता मिलेगी।

विमला ने डाक्टर रमेश से विवाह किया, परन्तु वह उसकी ओर कभी आकर्षित नहीं हुई। उसे बिल्कुल याद नहीं था कि उनकी प्रथम भेंट कहाँ हुई थी। मँगनी के बाद डाक्टर रमेश ने उसे बताया कि उनकी प्रथम भेंट कहाँ हुई थी। विमला ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। विमला ने रमेश के पास कभी रेस्ट्राँ में बैठकर नाश्ता किया होगा तो उसका कारण रमेश का अच्छा होना नहीं। वह रमेश से बोली तो इसलिए कि वह खुशमिजाज थी। वह तो किसी के भी साथ बातें करके मुस्करा सकती थी। रमेश ने बताया कि एक दिन विमला से उसकी बात-चीत भी हुई थीं। तब विमला को याद आया कि वह जिस पार्टी में भी गई, वहीं उसने रमेश को देखा। विमला ने स्मित हास्य से रमेश से कहा था, "मैं आपके साथ कितनी ही पार्टियों में भाग ले चुकी हूं पर आप का शुभ नाम नहीं जान सकी। क्या आप अपना नाम बताने की कृपा करेंगे ?"

रमेश विस्मय में रह गया। बोला, "आपका मतलब है कि आप मेरा नाम भी नहीं जानतीं। मेरा तो आपसे परिचय कराया जा चुका है। फिर कई बार आपसे बातें भी हो चुकी हैं।"

'भ्रम भी हो सकता है। मुझे तो सन्देह है कि आप मेरा नाम जानते हों।" विमला मुस्करा कर बोली।

रमेश भी मुस्करा दिया। उसका मुख गम्भीर था और थोड़ा परेशान। पर उसकी मुस्कान भरी चितवन आकर्षक थी।

"जी नहीं, मैं आपका नाम जानता हूँ।" एक क्षण चुप रहकर व बोला "क्या आपको मेरा नाम जानने की उत्कण्ठा है ?"

"उतनी ही जितनी हर स्त्री को होती है।" बिमला बोली

"तो आपको किसी से मेरा नाम पूछने का खयाल कभी नहीं आया ?" डाक्टर रमेश ने मुस्कराकर पूछा।

विमला को थोड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा कि आखिर रमेश को यह विचार कहाँ से मिला कि मैं उसके सम्बन्ध में जानना चाहूँगी। वह रमेश को प्रसन्न रखना चाहती थी। जगमगाती हुई आँखें और विद्युत सी हँसी हँसते हुए उसने रमेश को देखा था। मानो जंगल में पेड़ों के समीप ही कोई छोटा सा तालाब हो, जिस पर रात भर ओस गिरी हो। रमेश एक सुन्दर युवक था। उसमें नारी के लिए आकर्षण था।

"तो क्या नाम है ?"

"डाक्टर रमेश।"

विमला कभी भी न समझ सकी कि वह क्यों पार्टी में आता था। उसे न तो पार्टी का शौक था और न उसकी जान-पहचान ही बहुत घनी थी। कभी उसने सोचा था कि डाक्टर रमेश शायद उसे प्रेम करता था, पर इस विचार के उठते ही वह उसे दबा देती थी। उसे प्रश्रय नहीं देती थी। विमला ऐसी लड़कियों को भी जानती थी जो समझती थीं कि जिस युवक से भी वे मिलती थीं वही उन्हें प्रेम करने लगा था। विमला उनकी इस मूर्खता पर हँसती थी। इससे उसका ध्यान डाक्टर रमेश की ओर अधिक आकर्षित हुआ था। रमेश ने अन्य युवकों की भाँति अपना प्रेम प्रदर्शित नहीं किया था। बहुत से युवकों ने उससे अपना प्रेम स्पष्ट प्रदर्शित किया था। बहुत से उसे अपने आलिंगन और चुम्बनों से विभोर कर देना चाहते थे। परन्तु डाक्टर रमेश ने कभी ऐसा नहीं किया; न ही उसने अपने सम्बन्ध में किसी को कुछ बताया। वह प्रायः चुप रहता था। विमला को कभी यह खामोशी बुरी नहीं लगी; कारण कि उसे स्वयम् बातें करने की बहुत आदत थी। वह यदि कभी कोई रिमार्क पास करती और वह

हँस देता, तो बस यही उसे भला लगता था। उसने यह भी देखा था कि डाक्टर रमेश जब बात करता था तो उसमें मूर्खता नहीं होती थी। वह शर्मीली प्रकृति का था। उसे मालूम हुआ कि वह एक कुशल डाक्टर था।

एक बार रविवार को वह किसी के घर गया हुआ था। वहाँ और भी आदमी थे। वह वहाँ थोड़ी देर बैठा। उसे वहाँ विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। वह लौट आया। विमला की माँ ने विमला से रमेश के विषय में पूछा।

विमला ने कहा, "मुझे मालूम नहीं। क्या आपने उन्हें नहीं बुलाया था इस पार्टी में ?"

"हाँ ! मैं उससे मिली थी। उसी ने कहा था कि वह तुम्हें जानता है। उसने तुम्हें कई बार पार्टियों में देखा है। वह तुमसे मिल चुका है। मैंने कहा था कि मैं हर रविवार को घर पर ही रहती हूँ। रविवार को मैं कहीं नहीं जाती।"

"उनका नाम डाक्टर रमेश है और सरकारी सर्विस में है।"

"हाँ, वह डाक्टर हैं। क्या वह तुझे चाहता है ?" माँ ने पूछा।

"मैं नहीं जानती।" विमला बोली।

"मैं समझती हूँ कि कि तुम अब समझदार हो गई हो। तुम यह जान सकती हो कि तुमसे कब और कौन प्रेम करता है ?" माँ ने कहा।

"यदि वह मुझसे प्रेम करता भी है तो भी मैं उससे विवाह नहीं करूँगी। वह आदमी भला है, पर मेरे विवाह के लिए नहीं।"

विमला की माताजी चुप रहीं। उन्हें विमला की बात भली नहीं लगी। वह उदास हो उठीं। उनकी चुप्पी से विमला काँप उठी। वह जानती थी कि उसकी माँ चाहती थीं कि वह अब कहीं भी किसी से विवाह करले। उन्हें इसकी चिन्ता नहीं थी कि पात्र कैसा हो। केवल मेरा विवाह कर लेना ही उनको प्रसन्न कर सकता है। वह अब विमला को और अधिक कुँआरी नहीं रहने देना चाहती थीं।

विमला अगले सप्ताह में तीन बार डाक्टर रमेश से मिली। उसने देखा कि डाक्टर रमेश की झिझक अब पहले से कम हो गई थी। वह काफ़ी बोलता था। वह जीव-विज्ञान का डाक्टर था। अभी तक विमला केवल अपनी ही प्रशंसा सुनने की इच्छुक रखती थी, अपनी ही बड़ाई वह सुनना चाहती थी, पर आज रमेश की वार्ता और उसके जीवन ने बिमला पर अपना प्रभाव डाला।

विमला ने सोचा कि कहीं उसे बहकाने के आशय से तो वह ये सब बातें नहीं बता रहा था। उसे लगता कि रमेश को वह अच्छी लगती थी। परन्तु डाक्टर ने अपनी ओर से इस प्रकार का कोई संकेत नहीं दिया। अगले रविवार को रमेश फिर विमला के यहाँ गया। विमला के पिता उस समय घर पर ही थे। पानी बरस रहा था अतः वह उस दिन किसी पार्टी में नहीं जा सके। पिता और डाक्टर रमेश में उस दिन बड़ी बातें होती रहीं। विमला ने रमेश के जाने के पश्चात पिताजी से पूछा कि उनसे उसकी क्या बातें हुई ?

"यह साधारण प्रतिभा का युवक प्रतीत होता है।" उन्होंने केवल इतना ही कहा।

विमला को मालूम था कि उसके पिताजी को अपनी लड़की के लिए वर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अब युवकों से चिढ़ सी हो गई थी। पिछले चार वर्ष से बराबर युवकों का सम्मान करते-करते वह थक चुके थे।

'पिताजी, आपको मेरे मित्र नापसन्द हैं।" विमला ने कहा।

अपनी आँखों में निराशा लिए हुए विमला की ओर

देखा और धीरे से बोले, "क्या तुम्हारा इससे विवाह करने का विचार है ?"

"कतई नहीं।" विमला सतर्कता के साथ बोली।

"क्या यह तुमसे प्रेम करता है ?" पिता ने पूछा।

"उसकी किसी भंगिमा से तो पता नहीं लगता।"

"तुम्हें यह पसन्द है ?" पिता ने पूछा।

"बहुत अधिक तो नहीं। कभी लगता भी है और कभी कतई अच्छा नहीं लगता।"

रमेश वास्तव में विमला के पथ पर चलने वाला नहीं था। मझोला क़द, छरहरा बदन, मूछ-दाढ़ी साफ़, पर उसका नाक-नक्श बहुत अच्छा था। उसकी आँखों की पुतली काली थीं। उनमें चंचलता नहीं थी। उसकी आँखों में जिज्ञासा थी, परन्तु सरलता नहीं। विमला कभी-कभी सोचती थी कि उसका एक-एक अंग कितना सुन्दर बना था, पर फिर भी सब मिलाकर सुन्दर नहीं कहला सकता। उसके चेहरे पर शान्ति थी। उसकी बातों में व्यंग्य छिपा होता था। विमला सोचती थी कि वह उसके योग्य नहीं था। उसमें कोई आकर्षण नहीं था, वह नीरस सा व्यक्ति था। वह ठीक से प्रेम-प्रदर्शन करना नहीं जानता था।

शरद जब तक समाप्त होने को आया, दोनों एक-दूसरे को काफ़ी समझ चुके थे। परन्तु रमेश अब भी विमला से उतना ही प्रथक रहता जितना पहले था। उसमें अब झिझक तो नहीं थी परन्तु उसकी बातों में कोई लगाव या अपनत्व प्रतीत न होता था। विमला सोचने-विचारने के पश्चात इस नतीजे पर पहुँची कि रमेश उससे प्रेम नहीं करता। वह सोचती थी कि वह उससे मिलकर प्रसन्न तो होता है; बातें तो करना चाहता है, परन्तु वह उसके साथ विवाह के बंधन में नहीं बँधना चाहता। वह दूर ही रहना चाहता है। उसके जीवन में विमला को वह चहल-पहल दिखाई नहीं दी जो

एक युवक के जीवन में होनी चाहिए। उसके अन्दर उसने कभी विमला को अपने आलिंगन में बाँध लेने की चाह नहीं देखी। अन्य युवकों की भाँति वह कभी उसे अपने गुलाबी कपोलों पर अपने चुम्बन अंकित करने के लिए आकांक्षित प्रतीत नहीं हुआ। सच बात यह थी कि विमला को यह सहमा-सहमा सा प्रेम भला नहीं लगा था।

वह सोचती डाक्टर रमेश हर समय किसी-न-किसी नर्स के प्रेम में पागल रहता है। वह सुस्त, सादी, असुन्दर और परिश्रमी होगी। ऐसी ही पत्नि डाक्टर रमेश को चाहिए। वह विमला को प्रेम नहीं कर सकता।

विमला अब पच्चीस वर्ष की थी परन्तु अविवाहिता। यदि वह विवाह न करे तब, उसने सोचा ? उस साल विमला से एक और बीस वर्ष के लड़के ने विवाह का प्रस्ताव किया। वह कालेज में पढ़ता था। विमला अपने से पाँच वर्ष छोटे लड़के से कभी विवाह नहीं कर सकती। वह बहुत छोटा था उसके लिए। विमला की परेशानी बढ़ गई। उसका चैन जाता रहा। गत वर्ष उसने एक विधुर से विवाह करना अस्वीकार कर दिया था। उसके तीन बच्चे थे। उसे 'महाराजा' का ख़िताब था। वह अब सोचती थी कि वह पैदा ही न हुई होती तो अच्छा था।

विमला का मन अब हर समय अशांत सा रहने लगा। उसे अब पार्टियों में बन-ठन कर जाना कतन पसंद नहीं रहा। उसके माता-पिता यदि अब कहीं जाने को उससे कहते भी थे तो वह स्पष्ट मना कर देती थी। वह अब अपनी कोठी को छोड़कर कहीं नहीं जाती थी। उसे कहीं जाना अच्छा नहीं लगता था। पार्टियों की चहल-पहल उसे अपने जीवन के प्रति उपहास करती-सी प्रतीत होती थी।

६

एक संध्या को विमला एकांत में उद्विग्नमना बैठी थी। उसका चित्र बहुत अशांत था। उसी समय उसने देखा कि डाटक्र रमेश आ रहे थे। उन्हें देखकर उसे लगा कि मानो उसके जीवन के बुझते-हुए चिराग़ में किसी ने तेल डाल दिया। उसके उदास चेहरे पर मुस्कराहट आई और न जाने क्यों उसके नेत्र कुछ सजल से हो उठे।

आज जाने कैसे डाक्टर रमेश ने प्रस्ताव किया कि चलो किसी पार्क में चलकर घूमा जाय। विमला तुरन्त उद्यत हो गई और उसने उठकर अपने कपड़े बदल लिए। पार्क में चलना उसे अच्छा लगा।

आज उनकी बातों में कोई क्रम नहीं था। इधर-उधर की बातें करते चल रहे थे। डाक्टर रमेश ने पूछा कि उसका विचार क्या आगामी ग्रीष्म में कहीं बाहर जाने का है?

हम लोग ग्रीष्म में देहात चले जाते हैं। पिताजी अपने काम से इतना थक जाते हैं कि फिर बिल्कुल शान्त और एकान्त-वास करने को उनका जी चाहता है।" विमला बोली।

विमला दबी ज़बान से बातें कर रही थी। उसकी अन्तरात्मा इस बात को स्वीकार नहीं कर रही थी कि सचमुच उसके पिता काम से थक जाते हैं और तब उन्हें किसी नीरव स्थान की अपेक्षा होती है। हाँ, वहाँ जाकर कुछ खर्च अवश्य कम होता था। वैसे पिताजी को छुट्टी की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती थी।

रमेश ने कहा, "क्यों न थोड़ी देर उस सामने पड़ी हुई बेंच पर बैठा जाय?"

'आओ चलो, वहीं बैठेंगे !" विमला ने कहा ।

बेंच पर बैठते ही डाक्टर रमेश कुछ उदास हो गया ।

डाक्टर रमेश को समझना नितान्त कठिन था । विमला बातें करती रही । वह प्रसन्न थी पर फिर भी उसे आश्चर्य था कि आखिर रमेश ने उससे पार्क में आने को क्यों कहा । शायद डाक्टर रमेश को अपनी उस सुस्त और असुन्दर नर्स की याद आ गई । तभी डाक्टर रमेश ने विमला की ओर देखा और विमला के वाक्य को बीच ही में काट दिया, जिससे विमला समझ जाय कि वह कुछ और कहना चाहता है । वह आज व्यर्थ की बातें करने के लिए उसे यहाँ नहीं लाया था ।

डाक्टर रमेश का चेहरा एक-दम सफेद पड़ा हुआ था और उसकी मुखाकृति पर निस्तब्धता थी । वह एक-टक विमला की ओर देख रहा था ।

"मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ ।" डाक्टर रमेश ने कहा ।

विमला ने उसकी ओर देखा । विमला को लगा कि उसकी आँखों में कोई पीड़ा निहित थी । उसकी आवाज भारी हो गई थी । वह धीमे स्वर में बोल रहा था, पर इससे पहले कि विमला परिस्थिति को समझे रमेश ने पूछा, "क्या तुम मुझसे विवाह करना पसन्द करोगी ?"

विमला फटी आँखों से रमेश की ओर देखती रह गई ।

"क्या तुम्हें कभी इस बात का आभास नहीं हुआ कि मुझे तुमसे प्रेम है ?" विमला ने सरल वाणी में उत्तर दिया, "परन्तु तुमने कभी पहले प्रेम प्रकट नहीं किया ।"

"हाँ ! मेरा तरीका थोड़ा असभ्य अवश्य रहा । जिन बातों का मैं मूल्य समझता हूँ अधिकतर उनके सम्बन्ध में कुछ नहीं बोलता ।" रमेश बोला ।

विमला के हृदय की धड़कनें बढ़ गईं । उसके सम्मुख पहले भी शादी के प्रस्ताव आ चुके थे ; पर उन सबका एक अलग अन्दाज़ था । वे कितनी प्रसन्नता से भरे थे, कितने कलात्मक ढंग से कहे गये थे ।

उसने उन प्रस्तावों का उत्तर भी उसी ढंग से दिया था। आजतक इससे पहले किसी ने इतनी गम्भीरता के साथ विवाह-प्रस्ताव उसके सम्मुख नहीं रखा था।

"यह तुम्हारी अच्छी आदत है।" विमला ने मुस्करा कर कहा।

"मैं पहली बार जब तुमसे मिला था तभी से मैं तुम्हारे प्रति आकर्षित हूँ। मैं तुमसे पहले ही पूछ लेता, पर जब-जब मैंने पूछना चाहा, मैं अपने को सम्भाल न सका। कुछ भयभीत-सा रहा मैं।"

विमला ने कहा, "यह तो कोई बात नहीं बनी।"

विमला को थोड़ा परिहास का अवसर मिला, तो वह प्रसन्न दिखाई दी। उस दिन बहुत प्यारी हवा बह रही थी। दिन भी बहुत सुहावना था। ऐसे वातावरण में यह गम्भीर चर्चा सुनकर विमला उदास सी हो गई। विमला का उत्तर सुनकर रमेश सहम गया।

"मेरा मतलब है कि मैं निराश नहीं होना चाहता था। परन्तु अब चूँकि तुम देहात चली जाओगी, इसीलिए आज पूछ बैठा।" डाक्टर रमेश भारी मन से बोला।

"मैंने तुम्हारे विषय में इस बात को लेकर कभी नहीं सोचा" विमला ने असहाय की भाँति कहा।

रमेश कुछ नहीं बोला। वह उदास मुख लिए नीचे घास की ओर देख रहा था। रमेश के विषय में विमला ने विशेष धारणा नहीं बनाई थी। आज उसका ध्यान रमेश की ओर आकर्षित हुआ। आज तक किसी ने भी इतनी संजीदगी, इतनी गुरुता और इतनी गम्भीरता से विवाह का प्रस्ताव उसके सामने नहीं रखा था। रमेश ने जिस प्रकार अपना प्रणय-निवेदन किया था उससे विमला प्रभावित हुई थी। उसपर रमेश के स्वभाव का गम्भीर प्रभाव पड़ा।

"मुझे थोड़ा विचार करने का समय तो आप दे ही सकेंगे।"

डाक्टर रमेश फिर भी कुछ नहीं बोला। वह मूक बना रहा। क्या वह विमला को वहाँ तब तक रखना चाहता था जब तक वह

अपना अंतिम निर्णय न देदे। विमला ने सोचा, यह धूर्त्तता होगी। उसे माँ से बात करनी होगी। वह सोच रही थी कि उसे अपनी बात समाप्त होते ही उठ जाना चाहिए था। परन्तु वह रुक गई थी कि शायद वह उत्तर में कुछ कहेगा। परन्तु अब वह अपनी जगह से उठना चाहते हुए भी उठ नहीं पा रही थी। विमला रमेश की ओर नहीं देख रही थी, परन्तु फिर भी रमेश की उपस्थिति का उसपर प्रभाव था। विमला ने कभी भी ऐसे पुरुष से विवाह करने के बारे में नहीं सोचा था।

"मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं जानती, मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं समझ पाती!" विमला ने चिल्ला कर कहा। वह परेशान-सी होकर बोली, "डाक्टर रमेश तुम मेरे लिए एक पहेली हो। मैं तुम्हें चाहती भी हूँ और चाहती भी नहीं। मैं आज तक तुम्हें कतन नहीं समझ पाई। मैं नहीं जानती कि तुम क्या हो और क्या चाहते हो।"

डाक्टर रमेश के नेत्र ऊपर उठे और विमला ने देखा कि उसकी आँखें अनायास ही रमेश की आँखों से टकरा गई। विमला ने देखा कि उन आँखों में मासूमियत थी, जो उसे आज तक अन्य किसी पुरुष में नहीं मिली थी। उसमें एक विचित्र प्रकार की करुणा का भाव था।

"मुझे चाहिए कि मैं अपना व्यवहारिक ज्ञान थोड़ा और बढ़ाऊँ। यही बात है न?" डाक्टर रमेश ने मुस्कराकर कहा।

"अवश्य! न मालूम आपमें इतनी झिझक क्यों है?" विमला बोली।

विमला को आज जिस प्रकार विवाह का प्रस्ताव सुनने को मिला था यह तरीका बड़ा अरुचिकर था। विमला सोच रही थी कि ऐसे अवसरों पर नकारात्मक उत्तर का यही ढंग होता है। विमला ने रमेश को कभी नहीं चाहा। विमला सोच रही थी कि क्यों नहीं उसने प्रस्ताव सुनते ही टका-सा उत्तर देकर नाँ करदी।

रमेश बोला, "मैं भी कितना मूर्ख हूँ। मैं जाने क्यों यह समझ बैठा कि संसार में तुम्हीं मेरी प्रेम-पात्री हो। मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ यह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। क्यों करने लगा, यह भी मैं नहीं जानता।"

अब और कठिन समस्या हो गई। रमेश के इन वाक्यों ने विमला के अन्तर को उद्वेलित कर दिया। उसने सोचा कि रमेश का बातें करने का ढंग ही यह है। वह सचमुच में वीतराग नहीं है। इस क्षण विमला को रमेश सदा से अधिक प्यारा लग रहा था।

विमला सोचने लगी कि मेरा विवाह अभी तक क्यों नहीं हुआ। मेरे साथ की और जितनी लड़कियाँ हैं लगभग सभी विवाहित हैं। उनमें से बहुत-सी के तो बच्चे भी हैं। विमला को लगा जैसे सहेलियों से मिलते-मिलते और उनके बच्चों को पुचकारते-पुचकारते वह थक गई थी। डाक्टर रमेश ने उसे जीवन का एक नया दृश्य दिखाया। विमला स्मित हास लिए उसकी ओर घूमी और मुस्कराकर बोली, "यदि मैं उद्दण्डता पर उतरूँ और कहूँ कि मैं तुमसे विवाह करूँगी, तो तुम जल्द-से-जल्द कब तक मुझसे विवाह कर लोगे?"

डाक्टर रमेश यह सुनते ही आनन्द-विभोर हो उठा। उसका मुख, जो सफेद पड़ा हुआ था, सहसा अरुणिम हो उठा। उसका मन खिल गया।

"अभी, तुरन्त। एक दम, जब तुम कहो। हम अपनी सौभाग्य-यात्रा के लिए जहाँ तुम कहोगी वहाँ चलेंगे।"

विमला ने सोचा तब तो उसे देहात से छुट्टी मिलेगी। सहसा उसकी आँखों में अगले दिन के समाचार-पत्र में यह समाचार प्रकाशित-सा दिखाई दिया कि नवोढ़ा पत्नी काश्मीर को रवाना होने के लिए तैयार। विवाह तुरन्त होने वाला है। वह अपनी माँ को अच्छी तरह जानती थी; उनको तैयार किया जा सकता था।

विमला ने अपना हाथ डाक्टर रमेश के हाथ में दे दिया।

"तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो। मुझे योग्य बनने का समय दो।" विमला ने कहा।

"तो इसे तुम्हारी स्वीकृति समझूँ?" डाक्टर रमेश ने पूछा।

"हाँ-हाँ! और क्या।" विमला मुस्कराकर बोली।

डाक्टर रमेश ने अपनी उँगली से अँगूठी उतारकर विमला की उँगली में पहना दी।

१०

यों तो विमला डाक्टर रमेश को पहले ही बहुत कम समझ पाई थी, परन्तु विवाह के उपरान्त भी वह अपने पति को कुछ विशेष न समझ सकी। विवाह हुए अब लगभग दो वर्ष पूरे हो रहे थे। प्रारम्भ में डाक्टर रमेश की दया-ममता से वह द्रवित हुई थी। वह बहुत ही विचारशील पुरुष था। उसने विमला के आराम का पूरा-पूरा ध्यान रखा। विमला ने भी कभी उससे कोई ऐसी इच्छा नहीं की जो अनुचित हो। रमेश समय-समय पर अपनी पत्नि को उपहार भेंट करता रहता था। विमला का स्वास्थ्य जब भी कभी कुछ खराब होता तो वह स्वयँ उसकी सेवा करता था। कभी-कभी विमला किसी काम को यदि उससे कहती तो रमेश को लगता कि उस पर विमला की विशेष कृपा है। डाक्टर रमेश बड़ा ही सुसंस्कृत था। विमला जब भी उसके कमरे में प्रवेश करती तो वह अपने स्थान से उठकर उसका स्वागत करता था। मोटर से उतरते समय अपने हाथों का सहारा देता था। कभी सड़क पर दोनों मिल जाते तो रमेश तुरन्त ठहरकर विमला के साथ हो जाता था। बन्द कमरे में यदि विमला को जाना होता था तो वह उसके दरवाज़े स्वयँ खोलता था। रमेश कभी भी विमला के कमरे में बिना

दस्तक के नहीं जाता था । भले लोगों का अपनी पत्नियों से जो व्यवहार होता है वैसा व्यवहार रमेश ने विमला के साथ किया । रमेश का व्यवहार बड़ा सुखद था, पर हास्यस्पद भी । यदि रमेश का बर्ताव थोड़ा साधारण होता तो शायद विमला अधिक आनन्द का अनुभव करती । दाम्पत्य-जीवन का प्रभाव भी उसे रमेश के निकट आने में प्रेरणा नहीं दे सका ।

विमला ने कभी भी अपने पति की भावुकता पर विचार नहीं किया । विमला को नहीं मालूम था कि उसका आत्म-संयम क्यों है । या तो रमेश में झिझक अधिक थी अथवा ऐसे ही संस्कारों में वह पला था । विमला को कभी-कभी दुःख होता जब वह देखती कि वह तो रमेश के आलिंगन में है और रमेश बचकानी बातें कर रहा है । वही रमेश जो अन्य समय ऐसी ऊट-पटाँग बातें सोच भी नहीं सकता, कह भी नहीं सकता । एक बार विमला ने उसे उसकी इस प्रकार की बातों पर झिड़क भी दिया था । तब धीरे-धीरे रमेश के हाथ जो अपने में विमला को घेरे हुए थे क्रमशः ढीले पड़ गये थे और वह बिना एक शब्द भी बोले वहाँ से उठकर अपने कमरे में चला गया था । विमला ने जो कुछ कहा था उसमें रमेश को दुःखी करने की कोई भावना नहीं थी । एक दो दिन बाद विमला ने रमेश से कहा,—"ऐ बाबू जी ! आप चाहे जैसी बातें कीजिए, मुझे बिल्कुल बुरा नहीं लगता ।" तब रमेश कुछ शर्मीली हँसी हँस दिया था । विमला ने देखा कि कदाचित रमेश की प्रकृति ही बहुत खुलकर बातें करने की नहीं थी । वह अन्तर्मुखी था । कभी किसी भी पार्टी में लोग चाहे गायें, बजायें, पर उसने कभी उसमें रस नहीं लिया । वह एक ओर बैठा स्मित-बदन देखता रहता, जिससे पता चलता कि वह बैठे-बैठे अधिक आनन्द पा रहा था । उसके उस हास से प्रकट होता था कि वह शिष्टाचार के नाते ही मुस्करा रहा था । उसकी मुस्कराहट में एक व्यंग्य होता था । कोई भी उसे ऐसे अवसर पर देखकर यह कहे बिना नहीं रह सकता था कि रमेश उन सब को

जो उस नाच-गाने में मस्त थे केवल मूर्ख समझता था। विमला की भाँति उत्साहित और उल्लसित होकर वह कभी भी क्लब या पार्टी के खेलों में भाग नहीं लेता था। उसने एक बार चमकदार कपड़े तक पहनने से इन्कार कर दिया था, जबकि अन्य लोग पहने हुए थे। रमेश के इस विचार पर कि यह सब व्यर्थ है, विमला को दुःख हुआ था।

विमला ज़िन्दादिल औरत थी। उसका मन चाहता था कि वह तमाम दिन बोलती रहे, बातें करती रहे। उसकी हँसी स्वाभाविक थी। रमेश की चुप्पी उसे कभी-कभी बहुत ही खल जाती थी। कभी-कभी ऐसी बात का, जिसका उत्तर देना आवश्यक न हो, वह उत्तर न देता, पर यदि वह उत्तर दे-दे तो कदाचित् वातावरण अधिक सजीव हो उठे, ज्यादा रंगीन नज़र आये। उस दिन पानी बरस रहा था; विमला ने कहा,—"कैसा मूसलाधार पानी बरस रहा है।" विमला ने रमेश से उत्तर की आशा की। वह सोच रही थी कि वह कहेगा "हाँ देखो तो!" पर रमेश चुप रहा। ऐसे अवसर पर विमला चाहती थी कि वह रमेश को झँझोड़ डाले और कहे कि वह भी कैसा विचित्र व्यक्ति है।

"मैंने कहा' देखो कैसा मूसलाधार पानी बरस रहा है।" विमला फिर रमेश से बोली।

"हाँ! मैंने पहली ही बार सुन लिया था।" वह मीठे स्वर में बोला।

विमला ने सोचा कि कहीं मुझे उत्तर बुरा न लगे इसलिए इतने मीठे स्वर में यह बात कही गई है। वैसे वह इसीलिए नहीं बोला था कि वह उस सम्बन्ध में नहीं बोलना चाहता था। विमला मुस्करा दी। उसने सोचा कि यदि यही हाल रहा तो शीघ्र ही मानव-जाति वाणी का उपयोग करना भूल जायेगी और आगे से गूँगे बच्चे पैदा होने लगेंगे।

विमला को रमेश की यह कम बोलने की बान कभी-कभी मित्र-मंडली में बहुत खल जाती थी और उसे लगता था कि मित्रों के व्यंग्य-वाणों का जवाबी उत्तर देने के लिए उसे अकेले ही भार सँभालना होता था।

११

यह मानना ही पड़ेगा कि डाक्टर रमेश में विमला के लिए कोई आकर्षण नहीं था। वह इतना एकांत-प्रेमी था कि उसे बहुत कम लोग जानते थे। विमला को अपने पति के कार्य में अधिक रुचि नहीं थी। उसके विचार में उसका काम विशेष अच्छा नहीं था। रमेश ने भी कभी अपने कार्य के सम्बन्ध में विमला से बातें करना उचित नहीं समझा। आरम्भ में विमला ने उसके सम्बन्ध में थोड़ा-बहुत जानना चाहा था परन्तु रमेश ने मजाक में टाल दिया। फिर विमला ने उसके विषय में कभी कोई बात नहीं की।

"नीरस काम है।" उसने कहा था। एक बार डाक्टर रमेश ने बताया कि इस काम में अधिक रुचि नहीं लेते हैं।

रमेश शान्त प्रकृति का व्यक्ति था। विमला उसके जन्म, उसकी शिक्षा और उसके जीवन के सम्बन्ध में उसी से सीधे प्रश्न करके ही जान सकी थी। पर रमेश को ऐसे प्रश्न कुछ अच्छे नहीं लगते थे। वह अपने सम्बन्ध में किसी भी प्रकार के प्रश्न सुनकर उदासीन-सा हो जाता था। जब विमला प्रश्नों की झड़ी लगा देती थी, तो उसका उत्तर देने का ढंग बड़ा अजीब होता था। विमला जान गई थी कि रमेश प्रश्नों का उत्तर अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण ही नहीं दे पाता था। वैसे अपने सम्बन्ध में जान-बूझकर वह कुछ नहीं छिपाता था। अपने सम्बन्ध की बातें रमेश को भार-सी लगती थीं। उन्हें बताते समय उसमें झिझक आ जाती थी। उसे लगता था कि वह उलझन में पड़ गया। रमेश स्वभावतः ही खुलकर बातें करने का आदी नहीं था। उसे पढ़ने का व्यसन था और विमला को उसकी किताबें इतनी अच्छी नहीं लगती

थीं। यदि वह वैज्ञानिक पुस्तकें न पढ़ता तो ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ने लगता था। रमेश कभी खाली नहीं बैठता था। विमला के विचार में रमेश आराम चाहता ही नहीं था। उसे खेलों का शौक था। वह टेनिस या ब्रिज खेलता था।

विमला सोचती थी कि ऐसा नीरस व्यक्ति आखिर उससे प्रेम कैसे कर सका। इस अपने ही में खोये हुए शान्त और नीरस व्यक्ति के साथ उसका निर्वाह कैसे हो सकेगा। यह विचार विमला को परेशान कर डालता था। फिर भी उसे विश्वास था कि रमेश उसे बहुत चाहता था। रमेश विमला के लिए पागल था। वह विमला को प्रसन्न रखने के लिए दुनियाँ का कोई भी काम कर सकता था। विमला के लिए वह मानो मोम का खिलौना था। विमला सोचती थी कि जितने लोगों को विमला चाहती थी, जानती थी, या जिनकी प्रशंसा करती थी, उनके प्रति रमेश क्यों उदासीन था? क्या यह रमेश के अन्तर में छिपी हुई कोई बड़ी कमज़ोरी नहीं थी? जैसा और लोग रमेश के विषय में सोचते थे कि वह चालाक और होशियार आदमी है, विमला भी उसी प्रकार सोचती; पर इसका प्रमाण उसे यदा-कदा ही मिल पाता, जब रमेश अपने विशेष मित्रों के साथ होता और उसकी मौज होती। वैसे विमला ने उसे कभी भी बहुत अधिक प्रसन्न नहीं पाया। रमेश के व्यवहार से विमला उलझन में नहीं पड़ती थी। उसे भार नहीं प्रतीत होता था; पर उदासीन वह अवश्य हो जाया करती थी।

विमला अब इतने दिन के सम्पर्क के पश्चात् डाक्टर रमेश को कुछ-न-कुछ पहचानने लगी थी। उसके मौन को देखकर अब वह चिंतित नहीं होती थी। पहले जैसे वह उसे उदास देखकर उदास हो जाती थी, वैसा अब नहीं था। वह अपनी प्रसन्नता को अब रमेश की गम्भीरता पर न्यौछावर नहीं करती थी। उसने सोच लिया था कि वह जैसा चाहते हैं वैसे रहें और वह जैसा चाहती है वैसे रहेगी।

१२

विमला श्याम की पत्नी से कई बार पार्टियों में भेंट कर चुकी थी। परन्तु श्याम से उसका परिचय बहुत बाद में हुआ। विमला रमेश के साथ उसके घर डिनर पर गई थी। विमला ने उससे मिलने की विशेष उत्सुकता नहीं दिखाई। श्याम एक आॅफीसर था। उसका डिनर का कमरा काफी बड़ा था। वह सुन्दर ढंग से सजा हुआ था। पार्टी में काफी आदमी थे। विमला और रमेश सबसे बाद में पहुँचे। जब वे पहुँचे तो बैरे सर्व कर रहे थे। कमला ने उनका स्वागत किया।

विमला ने देखा कि एक लम्बा-चौड़ा सुन्दर पुरुष उसके पास खड़ा था।

कमला ने परिचय कराया, "आप मेरे पति हैं।" मिस्टर श्याम ने कहा, "क्या मैं आपके साथ बैठने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता हूँ?"

विमला अब तक परेशान-सी थी। यह सुनकर उसे कुछ धैर्य हुआ। श्याम मुस्करा रहा था। विमला ने देखा कि उसकी आँखों में विस्मय था। वह समझी और समझकर एक मुस्कराहट बखेर कर उसका अभिवादन किया।

"मैं आज डिनर शायद नहीं खा पाऊँगा" श्याम ने कहा। "काश, मुझे मालूम होता कि डिनर इतना सुन्दर होगा!"

"परन्तु आप खा क्यों नहीं सकेंगे?" विमला ने पूछा।

"मुझे पहले बता देना चाहिए था।" श्याम बोला।

"क्या बता देना चाहिए था?"

"किसीने कुछ भी नहीं कहा ! मुझे क्या मालूम था कि मुझे सरापा सुन्दरता का सामना करना पड़ेगा।" श्याम बोला।

"तो इसमें मैं आपकी क्या सहायता कर सकती हूँ ?" विमला मुस्कराकर बोली।

"कुछ नहीं ! मैं आपसे बातें ही करूंगा ; पर मैं यह अवश्य और बार-बार कहूँगा कि आप अत्यन्त सुन्दर हैं।" श्याम बोला।

विमला पर इसका विशेष प्रभाव नहीं हुआ। वह सोचने लगी, न जाने इनकी पत्नी ने मेरे विषय में क्या सोचा हो। उसने अवश्य पूछा होगा। श्याम अभी तक विमला को मादक दृष्टि से देख रहा था। उसे एकाएक याद आया कि उसने अपनी पत्नी से पूछा था कि मिसेज रमेश कैसी हैं ?

कमला ने उत्तर दिया था, "बहुत अच्छी हैं; एकदम अभिनेत्री जैसी प्रतीत होती हैं।"

"क्यों, क्या वह स्टेज पर काम करती थीं ?" श्याम ने पूछा।

"नहीं-नहीं, उनके पिता वकील या ऐसे ही कुछ हैं। मेरे विचार में हम उन्हें अपने यहाँ डिनर पर बुलायें।" कमला ने कहा था।

"इसकी कोई शीघ्रता नहीं है।"

टेबिल पर विमला की बगल में बैठे हुए श्याम ने विमला को बताया कि डाक्टर रमेश उन्हें जानते हैं।

"हम साथ-साथ ब्रिज खेलते हैं। वह क्लब में ब्रिज के अच्छे खिलाड़ी माने जाते हैं।" श्याम बोला।

विमला ने लौटते समय अपने पति को यह बताया था।

"यह तो कोई बड़ी बात नहीं।" रमेश ने कहा था।

"वह कैसा खेलता है ?" विमला ने पूछा।

"बुरा नहीं। पत्ते अच्छे आये तो अच्छा खेलता है और पत्ते मतलब के न आयें तो हौसला हार देता है।"

"क्या तुम्हारे जितना अच्छा खेल पाता है ?"

"मुझे अपने खेल के सम्बन्ध में कोई भ्रम नहीं है। मैं दूसरे दर्जे के खिलाड़ियों में अच्छा खिलाड़ी कहा जा सकता हूँ। श्याम का विचार है कि वह पहले दर्जे के खिलाड़ियों में है, परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं।"

"तुम्हें पसन्द नहीं है वह?" विमला ने पूछा।

"न मुझे वह पसन्द है और न नापसन्द ही। मेरे विचार से वह अपने काम में बुरा नहीं है। लोग कहते हैं कि वह खिलाड़ी भी अच्छा है; पर मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।" रमेश बोला।

विमला को यह उत्तर अच्छा नहीं लगा। इस प्रकार का उत्तर उसने पहली बार नहीं सुना था। वह सोचने लगी कि इतना विवेकी होना क्या आवश्यक है? या तो आदमी को पसन्द करो, या नापसन्द। विमला को श्याम बहुत अच्छा लगा था। वह कदाचित् इस समय वहाँ का सबसे अधिक प्रसिद्ध व्यक्ति था। लोगों का विचार था कि कुछ दिन बाद वह वहाँ का सबसे बड़ा अफसर होगा। वह टेनिस, पोलो और गोल्फ़ खेलता था। उसने रेस के घोड़े भी पाले थे। वह किसी की भी भलाई के लिए सदा तत्पर रहता था। अपने सम्बन्ध में वह बढ़-चढ़कर बातें बनाता था। विमला सोच रही थी कि उसका बात करने का ढंग बहुत अच्छा था।

वह शाम बड़ी सुहावनी गुजरी। विमला बहुत प्रसन्न थी। उनमें आपस में बहुत-सी बातें हुईं रेस, क्लब, पोलो यानी कोई विषय छोड़ा नहीं गया।

डिनर के बाद ड्राइंग-रूम में वह फिर उसीके पास आकर बैठ गया। ऐसी विशेष कुछ बात नहीं हुई थी; पर फिर भी उसकी बातों पर विमला हँसती रही। उसकी भारी आवाज़ में एक आकर्षण था। उसकी आँखें काली थीं, जिनमें चमक थी, एक अपनापन था, जो किसीका भी मन मोह सकती थीं। सचमुच वह आकर्षक था, तभी तो विमला को उसकी बातें बहुत अच्छी लगीं।

वह लम्बे कद का था। विमला को उसके शरीर का बनाव बड़ा सुन्दर लगा। उसका अंग-अंग सुन्दर और पुष्ट था और उसके बदन पर कहीं व्यर्थ का मुटापा नहीं था। वह कहीं से भी ढीला दिखाई नहीं पड़ता था। वह अच्छे कपड़े पहने था। विमला को चुस्त आदमी पसन्द था। उसकी आँखों में श्याम के लिए जिज्ञासा थी। उसने श्याम की पोशाक, यहाँ तक कि उसके कफ़ों के बटन और बास्कट के बटनों तक को ग़ौर से देखा था। ठंड के कारण श्याम का मुख सफेद पड़ गया था; पर फिर भी उसके गालों पर लाली विद्यमान थी। उसकी छोटी-छोटी मूछें थीं। वे घुँघराली और बटी हुई थीं। उसके बाल काले और छोटे थे; पर उन पर बड़े कायदे से ब्रश किया हुआ था। उसकी आँखों में दया और मुस्कराहट छिपी थी, जो सहज ही किसी भी मिलने वाले को आकर्षित कर लेती थी। विमला के विचार में ऐसी आँखों वाला व्यक्ति कभी किसीको दुःख नहीं दे सकता।

विमला का दृढ़ विश्वास था कि वह अपने व्यक्तित्व की एक झलक श्याम पर छोड़ आई थी। इसका कारण यह था कि श्याम ने उसकी प्रशंसा की थी, उससे रसीली बातें की थीं। उसने अपने यहाँ पार्टी में हरएक की दिलचस्पी की बातें की थीं। विमला सोचती थी कि जब वह वहाँ से चलने लगी थी तो श्याम ने उससे हाथ मिलाया था और तभी श्याम ने उसका हाथ हल्के-से दबा दिया था। उसने कहा था, "मुझे आशा है कि हम फिर शीघ्र ही मिलेंगे।" बात उसने छोटी ही कही थी, परन्तु वह अर्थपूर्ण थी। उसकी आँखों में फिर मिलने का निमंत्रण था। विमला ने समझने में कोई ग़लती नहीं की थी।

उसने कहा था, 'यहाँ मिलना कोई बड़ी बात नहीं। छोटी-सी जगह है; जब चाहो मिल लो।"

श्याम के इन शब्दों ने विमला के मन पर जादू का असर किया था।

१३

विमला सोच रही थी कि यह खयाल भी किसीको नहीं हो सकता कि केवल तीन महीने के मेल-जोल में ही ऐसे सम्बन्ध हो जायेंगे। श्याम ने बाद में उससे कहा था कि वह तो पहली शाम की भेंट के बाद ही विमला के लिए पागल हो उठा था। श्याम कहता था कि विमला के समान सुन्दर स्त्री उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखी। उसे विमला के उस दिन संध्या के वस्त्र अभी तक याद थे। वह विमला के विवाह के अवसर की पोशाक थी। उसने विमला को उस शाम कमलिनी की उपमा दी थी। विमला श्याम के बताने के पहले ही समझ गई थी कि वह उससे प्रेम करने लगा था। इस विचार से विमला को भय-सा लगा था और वह श्याम से पृथक ही रही थी। परन्तु विमला के लिए उससे पृथक रहना कष्टप्रद था। वह श्याम से भागती थी, और ऐसे अवसर पर उसके दिल की धड़कनें बढ़ जाती थीं। विमला ने कभी किसीसे प्रेम नहीं किया था। यह अनुभूति उसके लिए नई थी। उसे आश्चर्य हुआ, एक गुदगुदी हुई और अब उसे मालूम हुआ कि अपने पति रमेश के लिए उसके हृदय में प्रेम नहीं था। वह तो अकस्मात् एक संवेदना जगी थी। रमेश उसे तंग करता है। वह रमेश से ऊब गई थी। विमला उसे सताती, उससे खिलवाड़ करती, पर रमेश उसकी इच्छा के विपरीत उस खिलवाड़ में मग्न हो जाता। विमला रमेश से थोड़ा भय खाती थी, पर अब उसे अपने में अधिक विश्वास हो गया था। वह रमेश को सताती, पर रमेश के मुख पर स्मित हास्य देखकर वह प्रसन्न होती। वह ऐसे अवसर पर विमला को प्रसन्न विस्मय की दृष्टि से देखता। विमला सोचती कि

अब रमेश में मानवता के गुणों का समावेश हो रहा था। वह इन्सान बन रहा था।

परन्तु जब श्याम उसके जीवन में आया तो उसके और रमेश के सम्बन्ध बिगड़ते गए। वह रमेश की ओर देखना तक न चाहती थी। विमला को रमेश के प्रति अपनी इस उदासीनता से प्रसन्नता होती। वह जितना कुछ भी करती श्याम को लेकर करती क्योंकि बिना उसके सम्भवतः वह श्याम से मिल भी न पाती। वह अन्तिम निश्चय करने से पूर्व थोड़ा डगमगाई, इसलिए नहीं कि वह श्याम के प्रेम के आगे झुकना नहीं चाहती थी, वह स्वयं भी श्याम को उतना ही चाहती थी, इसलिए कि इस फैसले में उसके संस्कार बाधक थे।

"क्या मुझसे कुछ रुष्ट हो ?" एक दिन डाक्टर रमेश ने पूछा।

विमला ने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया, "नहीं, मैं तुम्हें पूजती हूँ।"

"क्या तुम्हारा अब भी तो यह विचार नहीं है कि तुमने अपना सारा समय व्यर्थ नष्ट किया ? मैं बिलकुल बेवकूफ़ थी।"

विमला ने रमेश के चेहरे पर देखा और देखा कि वह जो कुछ करने जा रही थी उसमें कुछ भूल थी। वह बहुत देर तक एक टक उसके चेहरे पर देखती रही, परन्तु शब्द एक भी उसके मुख से न निकल सका। उसके नेत्र डबडबा आये।

डाक्टर रमेश ने विमला को आगे बढ़कर अपनी भुजाओं में भर लिया। रमेश की भुजाओं का आश्रय पाकर विमला को लगा कि जैसे वह डूबने जा रही थी और उसे रमेश ने बचा लिया।

विमला अब प्रसन्न थी, मुस्करा रही थी।

१४

विमला की प्रसन्नता, जो कभी-कभी उसे स्वयं के लिए भार-सी लगती थी, उसकी सुन्दरता को बढ़ा देती थी। अपने विवाह के कुछ ही पहले उसे अपना यौवन ढलता-सा लगने लगा था। वह थकी-थकी और मुरझाई-सी लगती थी। कुछ लोग बिना सोच-विचार के कह देते थे कि अब उसमें सौन्दर्य नहीं रहा। पर पच्चीस वर्ष की एक कुमारी में और विवाहिता में बड़ा अन्तर होता है। वह उस गुलाब की कली की भाँति थी जिसकी पंखड़ियों ने पीलाई पकड़ ली थी और अब वह पूरे गुलाब की भाँति खिल उठी थी। उसकी चमकदार आँखों की चमक बढ़ गई थी! अपने स्वास्थ्य पर विमला ने सदा गर्व किया था, उसे सहेज कर रखा था। उसका बदन चिकना और मुलायम था। इतना चिकना और इतना मुलायम कि फूलों को भी उसे देख कर डाह होती थी। वह फिर एक बार अठारह वर्ष की लगने लगी थी। उसकी सुन्दरता अपनी चरम सीमा पर थी। उसे देखकर चुप रह जाना कठिन था। विमला की सहेलियाँ कभी-कभी उससे अकेले-दुकेले में पूछ बैठतीं कि उसे बच्चा तो नहीं होने वाला था। कुछ उदासीन लोग, जिन्होंने कभी विमला के सम्बन्ध में कहा था कि वह है तो सुन्दर, पर उसकी नाक बड़ी हैं, अब सोचते थे कि उन्होंने उसमें सौन्दर्य ग़लत आँका था। अब वह इतनी आकर्षक थी कि जब श्याम ने उसे पहली बार देखा था तो वह कह उठा था, "इतना रूप!"

वे दोनों अपनी चालें बड़ी तदबीर से चलते रहे। श्याम ने दुनियाँ देखी थी और उसे कोई चिन्ता भी नहीं थी, परन्तु फिर भी विमला को देखकर वह कोई भी खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। वे एकान्त

में नहीं मिल पाते थे। श्याम के लिए तो यह मिलन भी काफी था, परन्तु विमला के लिए उसे इन्तज़ाम करना था। कभी वे क्लब में मिलते, कभी विमला के घर पर, जब दोपहर के भोजन के पश्चात् वहाँ कोई नहीं होता था। विमला उससे घर से बाहर ही अधिक मिलती थी। विमला से जब वह मिलता तो बड़े औपचारिक ढंग से। विमला को उसका व्यवहार बड़ा अच्छा लगता था। वह हँस-मुख था। वह सबसे इसी प्रकार मिलता था। उसकी इस तरह की बातचीत सुनकर कोई भी नहीं कह सकता था कि वह विमला को आलिंगन-बद्ध कर लेना चाहता था।

श्याम विमला का देवता बन गया। वह जब पोलो की वर्दी में बूट पहने होता, तो देखते ही बनता। टेनिस खेलने के लिए जब वह कपड़े पहनता तो युवक लगता। श्याम को भी अपने शरीर पर गर्व था। विमला ने किसी भी पुरुष का शरीर श्याम की भाँति पुष्ट और सुन्दर नहीं देखा था। वह अपने शरीर का बड़ा ध्यान रखता था। उसने कभी डबल रोटी, मक्खन या आलू खाये ही नहीं थे। वह बराबर कसरत करता था। श्याम अच्छा खिलाड़ी था। एक साल पहले उसने टेनिस चेम्पियनशिप जीती थी। वह नाचता भी बहुत अच्छा था। विमला ने कभी इतना अच्छा 'डान्सर' नहीं देखा था। बहुतों के लिए उसके साथ 'डान्स' करना केवल स्वप्न था। श्याम को देखकर कोई अनुमान ही नहीं लगा सकता था कि वह चालीस वर्ष का था। विमला ने तो कह दिया था कि श्याम चालीस वर्ष का है, इसपर वह विश्वास नहीं कर सकती।

वह कहती, "मुझे यकीन है तुम झूठ बोलते हो, तुम्हारी अवस्था पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं है।"

वह हँस देता। उसे प्रसन्नता होती विमला की बात पर। सुनकर उसके साथ ही विमला भी फूल जैसी खिल उठती और समझती कि उसने

श्याम के उस रहस्य को पहचान लया जिसे अन्य कोई नहीं पहचान सका, उसकी पत्नी भी नहीं।

"विमला! मेरे पुत्र की अवस्था पन्द्रह वर्ष की है। मैं अधेड़ आदमी हूँ। अगले दो-तीन वर्षों तक बूढ़ा हो जाऊँगा।" श्याम विमला की बचकानी बात सुनकर कहता।

"तुम सौ साल के क्यों न हो जाओ, फिर भी मैं तुम्हें पूजती रहूँगी ?"

विमला को श्याम की काली भौंहें बड़ी भाती थीं। वह सोचती कि कहीं इन्ही घनी भौंहों के कारण तो श्याम की आँखें दूसरे को चक्कर में नहीं डाल देती हैं। वह सोचती रहती, परन्तु उसकी समझ में कुछ भी न आता।

विमला सोचती कि श्याम सर्वगुण-सम्पन्न है। वह पियानो बजा लेता है, गीत कितने अच्छे गाता है। उसकी आवाज़ में कितना सोज़ है—कितना माधुर्य है। विमला के विचार में श्याम के लिए कोई काम ऐसा नहीं था जो वह कर नहीं सकता था। वह अपने दफ्तर का काम भी बड़ी चतुराई से करता था। जब कभी वह विमला को बताता कि गवर्नर ने किसी कार्य-विशेष के सम्पन्न हो जाने पर उसे बधाई दी है, तो वह मारे प्रसन्नता के फूली न समाती थी। उसकी मुस्कराहट से विमला के लिए प्रेम उमड़ पड़ता—वह कहता, "यह मैं ही था जो इतना कठिन काम कर सका। दूसरा कोई इसे नहीं कर सकता था।"

विमला सोचती मैं रमेश की पत्नी न होकर काश इसकी पत्नी होती तो मेरा कितना बड़ा भाग्य होता! उसे श्याम की तुलना में अपना पति डाक्टर रमेश नाचीज प्रतीत होता। उसके मन में रमेश के प्रति घृणा होने लगती, अपने भाग्य पर उसे पछतावा होने लगता।

विमला को उस घड़ी पर पछतावा हो उठता जब उसने रमेश के साथ विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। काश, वह दिन उसके जीवन में आया ही न होता तो वह स्वतन्त्र होती और श्याम से

मिलने-जुलने में उसे कठिनाई न होती। उसे फिर इस प्रकार छिप-छिपकर श्याम से मिलने न जाना होता। वह खुले-खज़ाने जाकर श्याम से मेल कर पाती। वह फिर जहाँ चाहती श्याम को बुलाती और जहाँ वह उसे बुलाता वह जाकर उससे भेंट करती।

विमला को हार्दिक खेद हुआ कि उसने व्यर्थ अपना स्वतन्त्र जीवन नष्ट कर लिया।

१५

रमेश के सम्बन्ध में यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता था कि विमला और श्याम के सम्बन्धों से वह पूर्णतया परिचित था। यदि वह नहीं था तो ठीक था। यदि जान जाता तो भी अच्छा होता। सबकी समस्या सुलझ जाती। आरम्भ में जब विमला श्याम के दर्शनों से न थकती तो चोरी-छिपे उससे मिल लिया करती थी; पर ज्यों-ज्यों उसकी कामना श्याम के प्रति बढ़ती गई, त्यों-त्यों उसे अपने मार्ग की रुकावटें अधिक खलने लगीं। वह चाहती थी कि हर समय श्याम के ही साथ रहे। श्याम कभी-कभी विमला से कहता था कि उसे अपनी सामाजिक अवस्था अभिशाप-सी लगती थी ; जिसके कारण उसे इतना सोच-विचारकर यह सब कुछ करना होता था। काश, ये बन्धन न होते और वे दोनों स्वतन्त्र होते ! विमला श्याम की बात समझती। दोनों में से कोई भी बदनामी नहीं चाहता था। जीवन को दूसरी ओर मोड़ने के लिए बड़े सोच-विचार की आवश्यकता थी। काश, वे आज़ाद कर दिये जाते, तो सब कुछ कितना सरल और सुलभ हो जाता !

उनके मिलन से किसीको कोई हानि न होती। वह श्याम की पत्नी के प्रति श्याम के विचार खूब जानती थी। उन दोनों में

आपस में प्रेम नहीं था। परिस्थिति और बच्चों के कारण दोनों साथ रह रहे थे। उसकी अपेक्षा श्याम के लिए यह सब अधिक सुगम था। रमेश विमला से प्रेम करता था। परन्तु वह जब देखो तब अपने ही कार्य में व्यस्त रहता था।

फिर पुरुष के लिए तो क्लब आदि भी हैं। शुरू-शुरू में सम्भव है उसे यह सब बुरा लगे, परन्तु बाद में वह अभ्यस्त हो जाएगा। वह क्यों नहीं किसी और से विवाह कर ले? श्याम ने एक बार विमला से कहा था कि उसने आखिर डाक्टर रमेश में ऐसा क्या देखा जो उससे विवाह कर लिया?

विमला किंचित् हास्य लिये अब सोच रही थी कि थोड़ी देर पहले इस विचार से डर क्यों गई थी। रमेश ने उसे श्याम के साथ देख लिया था। यह सच था कि दरवाजे का हेंडिल अचानक ही घूमते हुए कोई देखे तो सचमुच ही चौंक उठेगा। परन्तु उन्हें मालूम था कि अधिक-से-अधिक रमेश क्या करेगा? वे दोनों उसके लिए बिलकुल तैयार थे। श्याम और विमला दोनों ही यह चाहते थे कि यदि रमेश कुछ फैसला कर ले तो उन दोनों का रास्ता साफ हो जाय। रमेश सज्जन पुरुष था। वह विमला को चाहता था। वह उसके साथ न्याय करना चाहता था। वह चाहता था कि विमला उससे तलाक़ माँगे। विमला और श्याम ने ग़लत समझा और वे अपनी ग़लती जल्दी ही समझ गये। विमला ने अपना मार्ग निर्धारित कर लिया और उसने भली प्रकार सोच लिया कि वह रमेश से क्या कहेगी और उसके साथ कैसा व्यवहार करेगी। उसने सोचा कि वह स्नेह का व्यवहार करेगी, स्मित-बदन रहेगी और दृढ़ रहेगी। उनमें आपस मे झगड़ा होने का प्रश्न नहीं उठता। बाद में तो वह रमेश को देखकर प्रसन्न ही होगी। उसे विश्वास था कि दो वर्ष जो उसने और रमेश ने अपने दाम्पत्य-जीवन के बिताये थे उनकी अनुभूति रमेश के लिए अमूल्य निधि बनकर रहेगी।

विमला सोचती कि कमला को श्याम को तलाक देने में कोई असुविधा नहीं होगी। उसका सबसे छोटा पुत्र दिल्ली में पढ़ता है। कमला को उसके पास रहना चाहिए। मसूरी में उसके लिए कोई आकर्षण नहीं है। दिल्ली में वह अपने बच्चों के साथ अच्छा समय बिता सकेगी और फिर वहाँ उसके माता-पिता भी हैं।

यदि ऐसा हो जाए तो सबका झंझट दूर हो जाये। न किसीकी बदनामी हो और न ही किसीके बुरे बनें। तब उसका और श्याम का विवाह हो सकेगा। विमला ने एक लम्बी साँस ली। ऐसा हो जाये तो वे दोनों कितने खुश होंगे। उस प्रसन्नता को पाने के लिए थोड़ी-बहुत कठिनाई भी सही जा सकती है। विमला के मन में विचारों का ताँता बँध गया था। एक के बाद एक विचार शीघ्रता से आता-जाता था। वह सोचती थी कि उनके विवाह के बाद का जीवन कैसा होगा—कितना आनन्दमय होगा—वे दोनों यात्रा में साथ रहा करेंगे। वह मकान जिसमे वे रहेंगे, कितना सुन्दर होगा, श्याम का सामाजिक स्तर ऊँचा होगा,—और उसमें वह क्या योग देगी। श्याम उसपर नाज़ करेगा और उसके लिए वह उसका आराध्यदेव होगा।

पर यह स्वप्निल तन्द्रा शीघ्र ही भंग हो जाती। लगता जैसे स्वर में बँधे वाद्य में कोई कच्चा स्वर लग जाये और सारा मज़ा किर-किरा कर दे। रमेश घर लौटेगा ही और यह सोचते ही कि उसे रमेश से मिलना होगा, उसकी धड़कनें तेज़ी पकड़ जातीं। कितने ताज्जुब की बात थी कि उस दिन दोपहर बाद वह बिना कुछ कहे-सुने घर से चला गया। वह उससे डरती नहीं; पर फिर भी न जाने क्यों वह कुछ उदास-सी हो गई थी। ख़ामख़ाँ का काण्ड बनाने से लाभ भी क्या ? विमला ने सोचा, तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह रमेश को कष्ट नहीं देना चाहती थी—परन्तु अगर वह रमेश से प्रेम नहीं कर पाती तो इसमें उसका क्या दोष ? बहाने बताने से लाभ भी क्या ? सच ही क्यों न बोला जाये। उसने सोचा कि अब उसे क्लेश नहीं होगा, परन्तु उसने

और श्याम ने जो ग़लती की उसे मान लेने में ही भलाई थी। वह सदा ही रमेश का मान करेगी।

विमला के यह सोचते ही उसे अचानक भय का अनुभव हुआ। उसकी हथेलियाँ पसीने से तर हो गई। भय का आभास होते ही वह रमेश के प्रति क्रुद्ध हो गई। अगर वह काण्ड ही बनाना चाहता है तो बनाने दो—उसे भी नहीं भूलना चाहिए कि जितना उसने बदले में सोचा है उससे अधिक ही उसे मिलेगा। वह साफ़ कह देगी कि उसे रमेश की लेश-मात्र भी चिंता नहीं है—विवाह के पश्चात् किसी भी दिन वह अपने किये पर बिना पछताये नहीं रह सकी। कितना सुस्त है रमेश! उसने मुझे परेशान कर डाला है। मैं खीझ गई हूँ—ऊब गई हूँ—वह अपने को सबसे ज्यादा अच्छा समझता है—उसे बातें करने का सलीका नहीं। वह रमेश की इस बू से उकता गई थी, उसके बेतुके आत्म-नियन्त्रण से ऊब गई थी। आत्म-नियन्त्रण उस अवस्था में तो ठीक है जब कोई स्वयं में रह जाना चाहता हो—और अपने स्वयं के अतिरिक्त अन्य कोई दायित्व न हो। विमला को रमेश से घृणा हो गई थी। वह उसके बंधन से दूर भागना चाहती थी। उसमें है क्या, जो अपने को ऊँचा समझता है। कितना बुरा 'डान्स' करता है? पार्टी में मुँह लटकाये बैठा रहता है। न कोई बाजा बजा सकता है, न गा सकता है—न पोलो खेल पाता है। टेनिस भी नौसिखियों की भाँति खेलता है और ब्रिज? हुँ-हुँ। विमला ने रमेश से निपटने की तैयारी उग्र रूप से कर ली। उसने सोचा कि आने दो आज और मुझसे बोलने दो, फिर देखूँ। जो कुछ हुआ, उस सबका वही कसूरवार है। भला हुआ जो आखिर उसे पता लग गया। वह उससे इतनी घृणा करने लगी थी कि उसे देखना तक नहीं चाहती थी। सचमुच ही वह प्रसन्न थी कि रमेश को पता लग गया।

सारा बखेड़ा निपट गया। रमेश क्यों नहीं उसे अकेली छोड़ देता? उसने पीछे पड़के शादी कर ली। अब वह उससे बिलकुल ऊब गई थी। उसे वह कतन अच्छा नहीं लगता था।

"ऊब गई हूँ।" उसने ज़ोर से कहा। विमला क्रोध से काँप रही थी, "ऊब गई हूँ, ऊब गई हूँ।"

तभी उसने फाटक से अन्दर आती हुई मोटर की आवाज़ सुनी। डाक्टर रमेश ऊपर आ रहा था।

१६

रमेश कमरे में आया। विमला के दिल की धड़कनें ज़ोर से बढ़ गई। उसके पाँव काँप रहे थे। सौभाग्य से वह सोफे पर लेटी हुई थी। उसके हाथ में खुली हुई कोई पुस्तक थी—जैसे वह कुछ पढ़ रही हो। दरवाजे पर रमेश क्षण-भर रुका। उन दोनों की आँखें टकराईं। विमला का दिल डूब गया—लगा जैसे सारे शरीर में एक तीखी लहर-सी दौड़ गई। उसने अनुभव किया जैसे रमेश उसकी कब्र पर चल रहा हो—रमेश का चेहरा बिलकुल पीला पड़ा हुआ था। विमला ने उसका यह रूप अपने विवाह के पूर्व एक बार देखा था, जब वे दोनों किसी पार्क में बैठे थे और रमेश ने उससे शादी का प्रस्ताव किया था। उसकी काली स्थिर आँखें काफी बड़ी लग रही थीं। उसे सब कुछ मालूम था।

विमला ने कहा—"आज बड़ी जल्दी आ गये।"

उसके होंठ काँप रहे थे। बड़ी कठिनाई से शब्द उसके मुँह से बाहर निकले। वह बुरी तरह भयभीत था। उसे लगा कि कहीं वह अचेत न हो जाय।

"नहीं, मैं रोज के ही समय आया हूँ।" रमेश ने कहा।

विमला को रमेश की आवाज़ अपरिचित-सी लगी। वाक्य का अन्तिम भाग कुछ जोर से बोला गया था—जैसे उसने बोलने के लिए ही उत्तर दिया हो। विमला सोच रही थी कि कहीं रमेश मेरा थरथराता

शरीर न देख ले। न मालूम किस ताक़त का सहारा लेकर वह अपनी चीख रोके थी। रमेश ने अपनी आँखें फिरा लीं।

"मैं कपड़े बदलने जा रहा हूँ।" रमेश इतना कहकर अपने कमरे में चला गया।

विमला को लगा, उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। वह अचेत हो जायगी।

कुछ क्षण वह हिल-डुल तक न सकी। थोड़ी देर बाद वह धीरे-धीरे सोफे से उठी, जैसे किसी बीमारी के बाद उठी हो। वह अभी बड़ी कमज़ोरी अनुभव कर रही थी। उसे विश्वास न हुआ कि उसकी टांगें उसका बोझ सम्हाल सकेंगी। कुर्सियों और मेजों का सहारा लेकर वह बरामदे में आई। उसने अपना 'गाउन' पहना और गोल कमरे में गई। वहाँ रमेश किसी चित्र को देख रहा था। विमला कठिनाई से कमरे में गई।

"नीचे चलें, खाना तैयार है?" विमला बोली।

"क्या मेरी वजह से ही रुकी रहीं?" रमेश ने पूछा।

विमला के होंठ बुरी तरह काँप उठे।

वह कहे क्या और क्या बोले?

दोनों बैठ गये। एक क्षण दोनों में से कोई न बोला। फिर रमेश बोला—उसकी बोली इस एकान्त में भयावह-सी लगी। कहा—"महाराजिन नहीं आई—शायद आँधी-तूफान के कारण तो नहीं रुक गई?"

"ऐसा ही होगा?" विमला ने कहा।

"हाँ।" रमेश ने कहा।

विमला ने अब उसकी ओर देखा। उसने देखा कि रमेश की आँखें उसी चित्र पर गड़ी थीं। वह फिर बोला, परन्तु वैसे ही बेमतलब। वह किसी टेनिस-प्रतियोगिता की बात कह रहा था। साधारणतः उसकी

आवाज अच्छी थी, परन्तु इस समय वह एक ही स्वर में—खड़ी आवाज़ में बोल रहा था, जो बिलकुल भी उसकी प्रकृति से मेल नहीं खा रही थी ।

विमला ने अनुभव किया कि वह कहीं दूर से बोल रहा था । बातचीत के सारे समय या तो रमेश की आँखें चित्र पर लगी रहीं या मेज़ ोर देखता रहा या कभी-कभी चित्रों की ओर देख लेता था । उसने ा की ओर एक बार भी नहीं देखा । विमला ने सोचा कि रमेश को उससे आँखें मिलाना सह्य नहीं था ।

"क्यों ऊपर चलें ?" खाना समाप्त करने के बाद रमेश ने कहा ।

विमला उठी और रमेश ने उठकर उसके लिए द्वार खोल दिया । विमला ने देखा तब भी उसकी आँखें नीचे ही कुछ देख रही थीं । वे दोनों जब दूसरे कमरे में पहुँचे तो रमेश ने पत्रिका उठा ली ।

"क्या यह नई पत्रिका है ? मैंने अभी तक देखी ही नहीं ।"

"मुझे मालूम नहीं—मैंने ध्यान नहीं दिया ।"

विमला को मालूम था कि वह पत्रिका बहुत दिन से पड़ी थी और रमेश उसे अच्छी तरह पढ़ चुका था । वह बैठकर पत्रिका देखने लगा । विमला सोफे पर लेट गई और उसने वही किताब हाथों में ले ली । साधारणतः वे दोनों जब किसी शाम को खाली होते थे तो ताश खेलते थे । आज रमेश तो आराम-कुर्सी पर आराम से बैठा था और दिखता था जैसे वह पत्रिका पढ़ने में लीन था । उसने इतनी देर में एक पन्ना भी नहीं पलटा । विमला ने पढ़ने का प्रयास किया, परन्तु पढ़ न सकी । शब्द और वाक्य जैसे उसे दीख ही नहीं रहे थे ।

लगभग एक घंटा दोनों चुपचाप बैठे रहे । विमला ने पढ़ने का बहाना छोड़ दिया और उपन्यास अपनी गोद में रख, खोयी-सी एक ओर को देखने लगी । वह नहीं चाहती थी कि उसकी किसी भी कार्य-विधि से कोई ध्वनि हो । रमेश बिलकुल वैसे ही बैठा था और उसकी स्थिर आँखें पत्रिका पर गड़ी थीं । उसकी स्थिरता विमला के लिए

घातक हो उठी। उसे लगा कि कोई हिंसक पशु अपने शिकार पर टूटने वाला था। वह भयभीत-सी होती जा रही थी। सोने का प्रयास करने पर भी वह सो नहीं सकती थी। उसकी आँखों में कड़वाहट हो चली थी।

डाक्टर रमेश कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। विमला ने अपने दोनों हाथ उलझा लिए; वह बिलकुल पीली पड़ गई थी। सोचा—अब उसे क्या करना चाहिए? क्या उसे बोलना चाहिए?

उसी प्रकार शान्त और सीधी आवाज से, बिना आँख उठायें रमेश ने कहा—"मुझे कुछ काम करना है। मैं अब 'स्टडी' करूँगा। जब तक मैं समाप्त करूँगा तब तक तुम सो जाओगी।"

"मैं आज बहुत थक गई हूँ।" विमला ने कहा।

"अवश्य थक गई होगी विमला! तुम सो जाओ, सोने से थकान दूर हो जायगी।"

"नमस्कार!"

रमेश कमरे से चलने लगा।

रमेश के शब्दों में उसे कटु-व्यंग्य झाँकता प्रतीत हुआ। उसने उसके थकी होने का समर्थन करके निश्चय ही उसका उपहास किया। ऐसा उपहास उसने विमला का पहले कभी नहीं किया था। उसे इस प्रकार विमला का उपहास करने का कोई अधिकार नहीं था।

विमला बोली—"ठहरो! तुम मुझे आज बहुत उदास से दीख रहे हो। क्या कोई विशेष बात है?"

रमेश बाहर ठहर गया। बोला—"विशेष बात क्या होगी विमला! और उदासी जिसके भाग्य में लिखी है उसे कौन रोक सकता है," कहकर रमेश कमरे से बाहर चला गया।

विमला वहीं सोफ़े पर पड़ी रही। उसे लगा कि रमेश उसके सीने में कुछ चुभा गया। वह उसे घायल करना चाहता है। परन्तु वह घायल होने वाली नहीं है। उसने रमेश को कभी प्यार नहीं किया।

१७

दूसरे दिन सवेरे विमला ने श्याम के दफ्तर में फोन किया।

"हाँ! क्यों, क्या है?" श्याम ने कहा।

"मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ" विमला बोली।

"मैं बहुत व्यस्त हूँ, कामकाजी आदमी ठहरा!"

"मिलना बहुत आवश्यक है। मैं दफ्तर चली आऊँ?" विमला ने पूछा।

"अरे नहीं, नहीं। मैं अगर तुम्हारे स्थान पर होता तो ऐसा कभी न करता।" श्याम बोला।

"तो तुम यहाँ आजाओ।" विमला ने कहा।

"मैं इस समय यहाँ से हट ही नहीं सकता। आज तीसरे पहर क्यों न मिलें? और फिर तुम्हारे घर मेरा न आना ही अच्छा है।" श्याम बोला।

"मैं तुमसे तुरन्त मिलना चाहती हूँ।" विमला बोली।

एक क्षण खामोशी रही। विमला समझी कि लाइन कट गई।

"क्यों, तुम वहाँ हो?" विमला की आवाज़ में आकुलता थी।

"हाँ! मैं सोच रहा था, क्यों? कुछ हो गया क्या?"

"मैं टेलीफोन पर नहीं बता सकती।" विमला बोली।

फिर एक मिनट तक मौन रहा।

"अच्छा देखो! मैं तुमसे दस मिनट को मिल सकता हूँ। तुम उसी दूकान पर चली जाओ, मैं वहीं पहुँच जाऊँगा।"

"उस दूकान पर?" आश्चर्य से विमला ने पूछा।

"अब किसी होटल में तो मिला नहीं जा सकता।" श्याम बोला।

विमला ने श्याम के स्वर में नाराजगी अनुभव की।

"अच्छा, मैं वहीं पहुँच रही हूँ।" विमला बोली और उसने रिसीवर रख दिया। फिर तुरन्त कपड़े बदले और उस दूकान की ओर चल दी जहाँ वे भेंट किया करते थे।

विमला इस समय बहुत बेचैन थी। वह बहुत बुरी तरह से घबरा रही थी। उसकी समझ काम नहीं कर रही थी कि उसे क्या करना चाहिए।

१८

विमला विक्टोरिया रोड पर रिक्शा से उतरकर ढलवाँ-सँकरी पगडंडी पर चली। थोड़ी देर में वह उस दूकान पर पहुँच गई। वह एक क्षण रुकी—लगा, कोई उसे देख रहा है, फिर निश्चिन्त होकर आगे बढ़ी। बाहर ही एक लड़का ग्राहकों के लिए खड़ा था—उसने मुस्कराकर विमला का स्वागत किया। लड़के ने अन्दर के किसी आदमी को सूचना दी और तभी ठिगने क़द का मोटा और भारी चेहरा लिये एक पुरुष बाहर आया। उसने विमला का अभिवादन किया। विमला तेज़ी से भीतर चली गई।

श्याम बाबू अभी नहीं आये थे। "आप ऊपर के भाग में चली जाइए, वहीं पर मैंने कुर्सियाँ डलवा दी हैं।"

दूकान के पिछवाड़े होकर विमला ऊपर जाने की सीढ़ी पर चढ़ गई। वह आदमी उसे ऊपर तक छोड़ने गया और कमरे का दरवाज़ा खोल दिया। कमरे में साँस घुटती थी—वहाँ मदक की गन्ध आ रही थी। वह एक बैंच पर बैठ गई।

एक क्षण बाद विमला ने कमज़ोर सीढ़ियों पर किसीके भारी कदमों की आहट सुनी। श्याम ने अन्दर आते ही किवाड़ बन्द कर दिये। उसका चेहरा गम्भीर था। परन्तु विमला को देखते ही सारी गम्भीरता हवा हो गई और उसकी साधारण मुस्कान उसके चेहरे पर खेलने लगी।

"अब बताओ, क्या कष्ट है ?" श्याम ने पूछा।

विमला ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"तुम सामने होते हो तो अच्छा लगता है। अब कोई कष्ट नहीं है मुझे।"

श्याम बैठकर सिगरेट सुलगाने लगा।

"आज बड़ी उदास दीख रही हो ?" श्याम ने पूछा।

विमला ने उत्तर दिया—"मैं रात-भर पलक नहीं झपका सकी। बहुत परेशान रही रात-भर।" विमला बोली।

श्याम ने ध्यान से विमला को देखा। वह अब भी मुस्करा रहा था ; पर मुस्कराहट प्राकृतिक न होकर बनावटी थी।

विमला को महसूस हुआ कि श्याम कुछ परेशान था।

एक क्षण तक मौन रहकर श्याम बोला—"क्या कहा उसने ?"

"कुछ भी तो नहीं कहा।" विमला बोली।

"क्या ! तब तुम कैसे सोच रही हो कि उसे सब कुछ मालूम है ?"

"हर बात से, उसकी आँखों से, उसके कल रात के खाने के समय बोलने के तरीके से।"

"क्यों, क्या कुछ कठोर था ?"

"नहीं ! बल्कि वह तो अति मृदु था, शादी के बाद पहली बार कल उसने इतनी मधुर बातें कीं।"

विमला ने आँखें झुका लीं। उसकी समझ से श्याम शायद समझ नहीं सका। साधारणतः रमेश विमला से इतनी सरस बातें नहीं किया करता था।

"तुम्हारे विचार में उसने आखिर क्यों नहीं कहा ?"

"मुझे मालूम नहीं ।" विमला बोली ।

कुछ देर मौन रहा । विमला मूर्ति-सी निश्चल उसी कुर्सी पर बैठी श्याम को निहार रही थी । श्याम का मुख एकाएक फिर गम्भीर हो गया । उसके चेहरे पर भय की छाया थी । उसके होंठ चिपक से गये । फिर एकाएक उसकी आँखों में चमक आ गई ।

"मेरा खयाल है वह कुछ नहीं कहेगा ।"

विमला ने उत्तर नहीं दिया । विमला समझ ही नहीं सकी कि श्याम का अभिप्राय क्या था ।

श्याम ने कहा—"वह पहला आदमी तो है नहीं, जिसने यह व्यापार पहली बार देखा हो । शोर मचाकर उसे मिल ही क्या जायगा । अगर उसे शोर ही मचाना होता तो वह उसी समय तुम्हारे कमरे में दाखिल हो जाता ।" कहते ही श्याम की आँखों की चमक बढ़ गई और होंठों पर मुस्कराहट खेलने लगी । 'उस समय तो हम सचमुच निहायत विचित्र लगते ।'

"काश, तुम कल रात उसका चेहरा देख पाते ।" विमला बोली ।

"मेरे विचार में तो वह उद्विग्न रहा होगा और होना भी चाहिए । किसी भी पुरुष के लिए ऐसा अवसर बड़ा कष्टदायक होता है । रमेश ने कम-से-कम इस बात का शोर तो नहीं मचाया ।"

विमला ने हाँ-में-हाँ मिलाते हुए कहा—"ख्याल तो मेरा भी यही है । वह भावुक बहुत है, यह मुझे भली-भाँति ज्ञात है ।"

"तो यह तो हम लोगों के लिए और भी अच्छी बात है । तुम सोचो कि यदि तुम ही ऐसे स्थान पर होतीं तो क्या करतीं ? केवल एक ही रास्ता है कि आदमी मौन रह जाय और कुछ भी न जानने का अभिनय करे । मैं शर्त के साथ कह सकता हूँ कि वह भी ऐसा ही करेगा ।" श्याम बोलते-बोलते अधिक तीखा होता जाता था । उसकी आँखें चमक रही थीं और वह हँसमुख प्रतीत हो रहा था ।

श्याम फिर बोला—"मैं उसके विषय में कोई कटु बात नहीं कहना

चाहता। मेरा अब सेक्रेटरी होने का अवसर आरहा है और यह अच्छा ही होगा कि रमेश मेरा विरोध न करे। उसे अपने काम-से-काम होना चाहिए। यदि वह मेरी बदनामी करेगा तो उसका बहुत बड़ा अहित हो सकता है। यदि वह चुप रहेगा तो उसका भला होगा। वह शोर मचाएगा तो अपना सर्वनाश कर लेगा। मेरा विरोध करके वह यहाँ रह नहीं सकता। उसे मैं किसी भी प्रकार फँसाकर जेलखाने की हवा खिला सकता हूँ।"

इतना कहकर श्याम तनिक गम्भीर हो गया। उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे और उसकी त्योरी चढ़ गई थी। उसके मज़बूत भुजदंड फड़क रहे थे।

विमला मौन बैठी सोच रही थी कि रमेश बेचारा तो वैसे ही शर्मीला है। उसे सचमुच ही लोगों की उलटी-सीधी बातें नहीं सुहायेंगी। परन्तु वह कभी भी मान और धन के लोभ में आकर मौन नहीं रहेगा। श्याम उसे कतन नहीं समझता।

"क्या कभी तुमने यह देखा है कि वह मेरे लिए पागल है। वह मुझे बहुत प्रेम करता है। उसके हृदय में मेरे अतिरिक्त और कुछ नहीं है?"

श्याम ने उत्तर नहीं दिया। वह शरारत-भरी आँखों से मुस्करा दिया। उसने विमला की बात पर मानो कोई ध्यान ही नहीं दिया। यह कोई बात नहीं थी उसके लिए।

विमला को उसकी यह मुद्रा बड़ी आकर्षक लगी।

"तो क्या हुआ! मुझे मालूम है कि तुम क्या कहना चाहती हो। स्त्री सदा यह समझती है कि पुरुष उसे बहुत चाहता है।" श्याम मुस्कराकर बोला।

अब पहली बार विमला मुस्कराई। वह श्याम की ओर आकर्षित होकर बोली, "वाह, क्या बात कही आपने?"

"परन्तु मैं तुम्हें बताऊँ कि इधर तुमने अपने पति का ध्यान रखना छोड़ दिया है और अब शायद वह तुमसे इतना प्रेम भी नहीं करता

जितना पहले करता था। जितना करता भी है उसमें भी धीरे-धीरे कमी आने लगेगी।"

"फिर भी मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम मेरे लिए दिवाने नहीं हो।" विमला आँखें तरेरकर बोली।

"ओह! यह तुम्हारी भूल है।" श्याम मक्कारी से बोला।

विमला को यह सुनकर कितना अच्छा लगा वह कुछ कह न सकी। श्याम के मुख से यह सुनकर उसका सीना चौड़ा हो गया। श्याम बोलते-बोलते बिस्तर से उठकर विमला की बगल में आकर बैठ गया। उसने विमला की कमर में बाँहों का घेरा डाल दिया।

वह एक क्षण पश्चात् बोला, "पगली, चिन्ता न कर। विश्वास रख। डरने का कोई कारण नहीं है। मुझे तो अच्छी तरह विश्वास है कि वह कुछ भी न जानने का ही अभिनय करेगा। तुम्हें मालूम है, ऐसी बातें किसीसे कही नहीं जा सकतीं। जिससे भी वह कहेगा वह चाहे उसके मुँह पर उससे सहानुभूति प्रकट करदे परन्तु बाद में उसे मूर्ख ही कहेगा। रमेश इस प्रकार अपने को मूर्ख घोषित करना पसंद नहीं कर सकता। फिर तुम कहती हो कि वह तुम्हें प्यार करता है—शायद वह तुम्हें छोड़ना भी नहीं चाहेगा।"

विमला श्याम पर झुक गई। उसका बदन निर्जीव-सा श्याम की बाँहों में था। श्याम के प्रति यह बात सोचना ही विमला को तिलमिला देता था। श्याम ने कहा था कि रमेश उसे इतना चाहता है कि वह अपने ऊपर हर प्रकार का कष्ट सह लेगा, यदि विमला उसे प्रेम की भीख दे सके। विमला यह समझती थी; पर यह दो प्रकार के प्रेम का अभिनय करना उसके लिए कठिन था। फिर भी श्याम के लिए वह यह भी करने को उद्यत थी। तभी अचानक उसमें रमेश के प्रति क्रोध उमड़ आया। आखिर क्यों वह बिलकुल दास होकर उसके साथ रहना चाहता था?

विमला ने अपनी बाँहें श्याम के गले में डाल दीं, "कितने अच्छे

हो तुम । मैं जब यहाँ आई थी तो थरथर काँप रही थी । तुमने कितनी सरलता से मुझे सहारा देकर भय-मुक्त कर दिया ।"

श्याम ने अपने हाथों पर विमला का चेहरा उठाकर रख लिया और बोला, "डार्लिंग !"

विमला ने विश्वास के साथ कहा, "तुमसे मुझे कितना आराम मिलता है, कितनी सांत्वना मिलती है, मैं कह नहीं सकती ।"

"तुम परेशान न हो । मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । तुम्हें ठोकरें नहीं खाने दूँगा । तुम्हारी हर प्रकार रक्षा करना मैं अपना धर्म समझता हूँ ।"

विमला निर्भीक हो गई । परन्तु फिर अपने भविष्य के स्वप्न बिखरते देख उदास हुई । अब सब खतरे समाप्त हो गये थे । तब भी वह चाहती थी कि रमेश उसे तलाक दे दे । वह बोली, "मुझे तुम्हारा ही तो भरोसा है श्याम !"

"होना भी चाहिए ।" श्याम बोला ।

"तुम जाकर खाना नहीं खाओगे क्या ?" विमला ने पूछा ।

"गोली मारो खाने को," श्याम ने कहा ।

श्याम ने विमला को अपनी भुजाओं में कस लिया । दोनों मिलकर एक हो गये ।

"श्याम मुझे जाने दो अब, मेरा मन जाने कैसा हो रहा है ।"

"नहीं-नहीं ।" श्याम बोला ।

विमला के मुख पर किंचित् मुस्कराहट खेल गई—तृप्त प्रेम की मुस्कराहट, विजय की मुस्कराहट । श्याम की आँखें कामुकता से भरी जा रही थीं । उसने विमला को अपने हाथों में उठा लिया ।

श्याम और विमला बहुत देर तक वहीं पलंग पर लेटे रहे । विमला अब बहुत प्रसन्न थी । वह अपने को बंधन-मुक्त अनुभव कर रही थी । उसे डाक्टर रमेश की कतन चिंता नहीं थी । वह बालिग थी और उसे रमेश को तलाक देकर उससे पृथक होने का पूर्ण अधिकार था । उसे कानून की पूर्ण आज्ञा थी । उसे कोई रोक नहीं सकता था । रमेश को

कोई अधिकार नहीं था कि वह किसी भी प्रकार उसे रोक कर अपनी बन्दिनी बनाये रख सके।

विमला ने श्याम की चमकदार आँखों में झाँक कर देखा तो उसे अपना प्रेम उनके अन्दर भरा हुआ प्रतीत हुआ। उसे लगा कि उसका रूप श्याम की आँखों में भर गया था। अब कोई शक्ति उसे श्याम के नेत्रों से निकालकर बाहर नहीं कर सकती थी।

१९

विमला बराबर श्याम की उन बातों पर विचार करती रही जो उसने रमेश के विषय में कही थीं। रमेश और विमला को संध्या-समय बाहर कहीं भोजन पर जाना था। रमेश संध्या को क्लब से आया तो विमला शृंगार कर रही थी। रमेश ने द्वार पर आहट की।

"आजाओ।" विमला बोली।

उसने द्वार खोला।

"मैं 'ड्रेस' करने जा रहा हूँ। तुम्हें कितनी देर लगेगी?" रमेश ने पूछा।

"दस मिनट।" विमला बोली।

रमेश बिना कुछ बोले ही सीधे अपने कमरे में चला गया। रमेश की आवाज़ आज भी वैसी ही भारी और गम्भीर थी जैसी पिछली रात को थी। विमला को स्वयं पर अब काफी भरोसा हो गया था। वह रमेश से पहले ही तैयार हो गई और नीचे आकर कार में बैठ गई।

"मैंने कुछ देर लगा दी।" डाक्टर रमेश बोले।

"कोई बात नहीं।" विमला ने उत्तर दिया और मुस्करा दी। मार्ग में विमला ने एक-दो बातें करने का असफल प्रयास किया, परन्तु

रमेश ने तीखे उत्तर दिये। विमला उकताने लगी। उसने सोचा कि यदि यह उदासीन रहना चाहते हैं, तो रहने दो। मुझे भी चिंता नहीं करनी है। निश्चित स्थान तक पहुँचने तक दोनों बिलकुल चुप रहे। बहुत बड़ी पार्टी थी। बहुत से लोग जमा हुए थे। कई प्रकार के व्यंजन थे। विमला जब अपने पास-पड़ौस के लोगों से बातें करती तो वह रमेश को भी देख लेती। रमेश का चेहरा बिलकुल पीला पड़ा हुआ था, जैसे उसे कोई बहुत बड़ा आघात पहुँचा हो।

"तुम्हारे पति बहुत क्षीण दिखते हैं। कहीं सर्दी का प्रभाव तो नहीं है? आजकल काम भी बहुत अधिक है?"

"यह काम करते ही बहुत अधिक हैं।" विमला बोली।

"शायद तुम लोग कहीं बाहर जाने वाले हो।"

"हाँ, विचार तो है। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी मैं कलकत्ता जाना चाहती हूँ।" विमला ने कहा, "डाक्टर कहते हैं कि मैं यदि नहीं गई तो यहाँ स्वास्थ्य खराब हो जायगा।"

रमेश की आदत थी कि पार्टी में वह विमला को नहीं देखता था। आज भी नहीं देखा। आज तो विमला ने यह भी देखा कि 'कार' पर बैठते समय भी रमेश ने अपनी आँखें फेर ली थीं, पर उसने शिष्टाचार के नाते 'कार' से उतरने में विमला को सहायता दी थी। यहाँ पार्टी में वह जब अपने आस-पास की महिलाओं से बातें करता, तब भी एक फीकी मुस्कान तक उसके मुख पर नहीं थी। इसके विपरीत वह उन्हें रूखी नजरों और बिना पलक झपकाये देख रहा था। उस समय उसकी आँखें उसके पीले चेहरे पर सचमुच बहुत बड़ी लग रही थीं। उसका बदन अकड़ा हुआ था।

विमला सोच रही थी, "कितना अच्छा साथी मिला है!"

अन्य स्त्रियाँ जो गम्भीर-नीरस रमेश से बोलने की चेष्टा कर रही थीं, विमला उन सबमें दिलचस्पी नहीं ले सकी।

वह वास्तव में सब कुछ जानता था, इसमें कोई सन्देह नहीं और

वह है भी कुछ क्रुद्ध, परन्तु वह कुछ कहता क्यों नहीं ? क्या केवल इसलिए नहीं कहता कि इतना सब जान लेने पर भी वह विमला से प्रेम करता है और उसे भय है कि कहीं वह उसे छोड़ दे। इस विचार ने विमला में रमेश के प्रति तिरस्कार का भाव भर दिया। पर विमला का स्वभाव अच्छा था। उसने तुरन्त सोचा कि आखिर रमेश उसका पति है और वह उसके रहन-सहन, खान-पान का समुचित प्रबन्ध करता रहा है, परन्तु फिर भी जब तक वह उसके मार्ग में बाधा नहीं बनता तभी तक ठीक है। वह भी उस समय तक उससे अच्छा व्यवहार करेगी। शायद उसकी यह खामोशी उस घटना के बोझ के कारण हो। श्याम ठीक कहता था कि रमेश बदनामी से बहुत डरता है। श्याम ने विमला को बताया था कि एक बार रमेश को किसी मुकदमे में बुलाया गया था, तो वह गवाही के एक सप्ताह तक सो नहीं सका था। रमेश बहुत ही शर्मीला था।

एक बात और भी थी कि पुरुष दम्भी होते हैं। जब तक वे समझते हैं कि ऐसी घटनाओं का किसीको पता नहीं है तब तक वे स्वयं भी ऐसी बातें भूले रहते हैं। रमेश भी इसलिए टालता रहा है। तभी विमला को ध्यान आया कि श्याम ने कहा था रमेश बहुत अच्छी तरह अपनी स्थिति जानता है और भलाई-बुराई को समझता है। श्याम का कितना नाम है और फिर वह अब सेक्रेटरी बनने वाला है। वह रमेश की कितनी अधिक सहायता कर सकता है। फिर सोचा, परन्तु यदि रमेश ने कहीं काण्ड खड़ा किया, तो क्या होगा ? और इस विचार के आते ही वह उदास होगई। विमला जब सोचती कि श्याम कितने दृढ़ विचार का पुरुष है तो वह सहम उठती, वह श्याम की बाँहों में स्वयं को कितना असमर्थ पाती है।—ये पुरुष भी कितने अजीब होते हैं—विमला ने रमेश को कभी इतना नीच नहीं समझा था। परन्तु क्या मालूम यह गम्भीरता उसकी उसी प्रकृति को ढाँकने-मात्र का आवरण हो। विमला जितना सोचती, उतना ही उसका विश्वास दृढ़ होता

जाता कि श्याम ने जो कुछ कहा, सच कहा। फिर उसने श्याम के सम्बन्ध में सोचा। उस विचार-क्रम में अपने पति के प्रति उसका कोई लगाव नहीं था—कोई अपनत्व नहीं था।

तभी विमला ने देखा कि रमेश के अगल-बगल की महिलाएँ अपने साथियों से बातें करने लगी थीं और रमेश नितान्त अकेला रह गया था। वह अपने सामने आँखें फाड़े देख रहा था। उसे बिलकुल भी ध्यान नहीं था कि वह किसी पार्टी में है, उसकी आँखों में विषाद साकार खड़ा था। विमला का दिल धड़धड़ा उठा। वह सहन न कर सकी। उसे अपने प्रति घृणा-सी उत्पन्न होने लगी। आज प्रथम बार जाने क्यों उसे ऐसा लगा कि वह कुछ भूल कर रही थी।

खड़े-खड़े विमला के पैर कुछ लड़खड़ा से गये। उसे अपनी सुध नहीं रही, और हो सकता था कि वह गिर जाती परन्तु उसने देखा कि डाक्टर रमेश की सशक्त भुजाओं ने उसे सहारा देकर सँभाल लिया था।

"तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है विमला, चलो घर चलें।" डाक्टर रमेश ने कहा और सावधानी से विमला को कार में बिठला कर गाड़ी स्टार्ट कर दी।

२०

दूसरे दिन दोपहर के खाने के पश्चात् विमला आराम कर रही थी। तभी दरवाजे की आहट ने उसे चौंका दिया। विमला इस समय कोई व्यवधान नहीं चाहती थी। उसने रुष्ट स्वर में पूछा, "कौन है ?"

"मैं।"

विमला ने अपने पति का स्वर पहचाना और तुरन्त उठ बैठी।

"अन्दर आ जाओ," विमला ने कहा।

कमरे में दाखिल होते ही रमेश ने कहा, "मैंने तुम्हें जगा दिया।"

पिछले दो-तीन दिन में विमला ने आज साधारण स्वर में रमेश से बातें करना आरम्भ किया। उसी स्वर में उसने उत्तर दिया, "हाँ जगा तो दिया।"

"क्या मेरे कमरे तक चलोगी? तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

विमला के दिल की धड़कनें बढ़ गईं।

"मैं ज़रा 'गाउन' पहन लूँ।" विमला बोली।

रमेश चला गया। बिमला ने 'गाउन' पहना। दर्पण में अपना मुँह देखा, बिलकुल पीला था। उसने गालों पर लाली लगाई। तैयार हो वह क्षण-भर द्वार पर ठिठकी, अपने को सम्हालने की चेष्टा की और फिर साहस बाँधकर रमेश के कमरे में चली गई।

"दोपहर में इस समय आज कैसे आ गये? मैंने कभी तुम्हें इस समय आते नहीं देखा?" विमला ने पूछा।

"तुम बैठोगी नहीं क्या? खड़ी-खड़ी ही सब बातें पूछ लोगी।" रमेश ने विमला की ओर बिना देखे ही कहा। डाक्टर रमेश के कहते ही विमला बैठ गई। उसकी टाँगें काँप रही थीं, स्वर रुँधा-सा था। वह मौन थी। रमेश भी बैठकर सिगरेट सुलगाने लगा।

रमेश बिना पलकें झुकाये कमरे में चारों ओर देख रहा था। लगता था बात आरम्भ करने में उसे कुछ कठिनाई अनुभव हो रही थी।

उसने विमला को बड़े ध्यान से देखा। इतने दिनों बाद उसने विमला को इस प्रकार देखा था। आज इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से उसके देखने पर विमला को भय लगा, वह चीख पड़ना चाहती थी।

रमेश ने पूछा, "तुमने भोपाल के विषय में सुना है? आजकल पत्रों में उसकी बड़ी चर्चा है।"

विस्मय से विमला ने रमेश को देखा। वह भयभीत हो उठी। कहा, "वही जगह तो नहीं जहाँ 'कॉलरा' फैला हुआ है।"

"हाँ, वहाँ महामारी फैली है। गत कई वर्षों से वहाँ के लोगों ने ऐसी बीमारी नहीं देखी थी। वहाँ एक डाक्टर काम कर रहा था। वह मर गया। वहाँ के लोग भय से इधर-उधर भाग रहे हैं।"

रमेश अब भी विमला को देख रहा था। विमला अपनी आँखें उसके चेहरे से न हटा सकी। वह उसके चेहरे के भावों को पढ़ना चाहती थी। वह केवल रमेश का चेहरा देख पा रही थी। वह बिना पलकें झुकाये देख रहा था।

वहाँ ऐसी दशा में कोई डाक्टर जाना नहीं चाहता। आदमी वहाँ मक्खियों की तरह मर रहे हैं। मैंने वहाँ जाकर काम सम्भालने का निश्चय किया है।"

"तुमने ?" भयभीत होकर विमला ने कहा।

"हाँ विमला !" डाक्टर रमेश बोले।

विमला ने सोचा कि यदि रमेश चला गया तो वह आराम से अपना स्वच्छन्द जीवन बिता सकेगी। वह बिना किसी बाधा के श्याम से मिल सकेगी। परन्तु फिर भी उसके इस विचार से विमला को धक्का-सा लगा। वह पीली पड़ गई। विमला को रमेश के निरन्तर अपनी ओर ताकते रहने के कारण उलझन-सी होने लगी।

उसने अटकते हुए पूछा, "क्या यह आवश्यक है ?"

"वहाँ कोई डाक्टर है ही नहीं, मानवता के नाते आवश्यक ही है विमला !"

"परन्तु तुम तो डाक्टर नहीं हो, तुम तो जीव-शास्त्री हो।"

"क्यों, मैं एम० डी० हूँ। और इस दिशा में आगे काम करने के पूर्व मैंने अस्पताल में काम किया है। और फिर जीव-शास्त्री हूँ, यह तो और भी अच्छा है। मुझे काम करने का सुन्दर अवसर मिलेगा। वहाँ मैं कॉलरा के कीटाणुओं का अच्छा परीक्षण कर सकूँगा।"

डाक्टर रमेश सरलता और तेजी से बोल रहा था। विमला ने

उसकी ओर देखा तो उसे लगा कि रमेश की आँखों में उपहास स्पष्ट झलक रहा था। वह कुछ भी नहीं समझ सकी।

"परन्तु वहाँ भय कितना है ?" विमला ने कहा।

"बहुत ! परन्तु भय कहाँ नहीं है विमला !" रमेश ने मुस्कराकर कहा।

रमेश के अन्दाज़ से लगता था कि उसने वहाँ जाने का निश्चय कर लिया था। विमला ने अपना मस्तक अपनी हथेली पर टेक कर सोचा। आत्म-हत्या ! वहाँ जाना आत्म-हत्या नहीं तो और क्या है ? भयानक ! "बहुत भयानक आत्म-हत्या" विमला की ज़बान से निकला।

विमला ने कभी नही सोचा था कि रमेश यह सब करेगा। नहीं; वह उसे वहाँ नहीं जाने देगी। यह महान् निर्दयता होगी। यदि वह रमेश से प्रेम नहीं कर पाती तो इसमें उसका स्वयं का क्या दोष है ? विमला यह कभी नहीं सहन कर सकती कि रमेश विमला के कारण अपनी हत्या करे। उसके नेत्रों में आँसू झलक आये। वह हिड़क-हिड़क कर रो उठी। उसका सारा बदन काँप उठा।

"तुम रो क्यों रही हो विमला ?" डाक्टर रमेश की आवाज़ आई।

"तुम्हारा जाना आवश्यक तो नहीं है ?" विमला ने कहा।

"नहीं ! मैं अपनी इच्छा से जा रहा हूँ।" डाक्टर रमेश बोले।

"रमेश, मत जाओ। यदि तुम्हें कुछ हो गया तो क्या होगा ? यदि तुम्हारी जान चली गई तब ?"

रमेश के चेहरे के भावों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह किंचित् मुस्करा दिया। उसने उत्तर नहीं दिया।

"यह जगह है कहाँ ?" विमला ने रुककर पूछा।

"मध्यप्रदेश की भोपाल राजधानी है। महामारी-ग्रस्त नगर और देहात दोनों को देखना होगा हमें।"

"यही हम कौन ?"

"तुम और मैं ।" रमेश ने कहा ।

विमला ने रमेश को देखा । उसने सोचा था कि उसने शायद कुछ ग़लत सुना था । मुस्कराहट से अब रमेश के होंठ फैल गये । उसकी काली आँखें विमला के चेहरे पर जमी थीं ।

"मुझे भी साथ ले चलोगे ?" विमला ने पूछा ।

"मेरी समझ से तो तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए ।" डाक्टर रमेश ने कहा ।

विमला की साँस की गति तीव्र हो गई । वह काँप उठी ।

"परन्तु वह जगह औरतों के मतलब की नहीं है । जो डाक्टर वहाँ काम कर रहे थे उन्होंने अपनी पत्नी को बहुत पहले ही वहाँ से हटा दिया था । अपनी पत्नी और बच्चों को वहाँ से हटा कर अन्यत्र भेज दिया था । मैं उनकी पत्नी से पार्टी में मिल चुकी हूँ । मुझे याद है उन्होंने कहा था कि वहाँ 'कॉलरा' फैलने के कारण ही वह यहाँ आ गई है ।"

"वह न सही, परन्तु वहाँ स्त्रियों की कमी नहीं है ।"

विमला हतप्रभ-सी रह गई ।

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझ सकी । वहाँ जाना पागलपन नहीं तो और क्या है ? सोचिये, वहाँ की मुसीबत को मैं कैसे सहन कर पाऊँगी—फिर 'कॉलरा' ! मेरे तो होश उड़ जायेंगे । यह तो जान-बूझकर कुए में गिरना होगा । मेरे जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता । मैं मर जाऊँगी ।" विमला ने कहा ।

रमेश ने उत्तर न दिया । विमला उसे असहाय-सी देख रही थी । उसने बड़ी कठिनाई से अपनी चीख रोकी । रमेश के चेहरे पर की कालिमा इस समय बढ़ गई थी । उसे देखकर विमला डर गई । उसने देखा कि रमेश की आँखों में उसके लिए घृणा भरी थी । क्या वह चाहता था कि मैं मर जाऊँ ?

"यह बिलकुल व्यर्थ बात है । यदि तुम सोचते हो कि तुम्हें वहाँ

जाना चाहिए, तो तुम जैसा ठीक समझो, करो। मैं नहीं जाऊँगी। मुझे बीमारी से घृणा है। महामारी भी 'कॉलरा' जैसी। मैं बहादुर होने का दावा नहीं करती और मैं स्पष्ट कह दूं कि मैं मरना भी नहीं चाहती। मैं यहीं रहूँगी। आपका जहाँ जी चाहे, चले जायें।"

"मैं सोचता था कि मैं इतने भयानक स्थान मे जा रहा हूं तो तुम मुझे अकेला न जाने दोगी।" डाक्टर रमेश मुस्कराकर बोले। उनकी वाणी में अथाह व्यंग भरा था।

अब रमेश विमला का स्पष्ट उपहास कर रहा था। वह झमेले में पड़ गई। उसकी समझ ही मे नही आया कि रमेश जो कुछ कह रहा था वह सत्य था या केवल उसे डराने का प्रयत्न।

"मैं तो नहीं समझती कि किसी ऐसे स्थान में जहाँ मेरा कोई काम नहीं, जहाँ मैं कुछ कर नही सकती, यदि मैं न जाऊँ तो कोई मुझे बुरा कहेगा।" विमला ने कहा।

"तुम वहाँ बहुत बड़ा काम कर सकती हो विमला! तुम मुझे प्रसन्न रख सकती हो, मेरी सुख-सुविधा का ध्यान रख सकती हो और मैं संलग्नता से रोगियों की सेवा कर सकता हूँ। इससे बड़ा और क्या काम होगा?"

विमला और भी पीली पड़ गई

"तुम्हारी बातें मेरी समझ से बाहर हैं।" विमला ने कहा।

"मेरे विचार में तो कोई भी सामान्य बुद्धि का आदमी मेरी बातें समझ सकता है। मैं कोई फ़िलासफ़ी की बातें नहीं कर रहा।" रमेश मुस्कराकर बोला।

"रमेश, मैं नहीं जाऊँगी। मुझसे पूछना भी तुम्हारी निर्दयता है।"

"तो फिर मैं भी नही जाऊँगा। तुम नहीं जाओगी तो मैं अकेला जाकर क्या करूँगा? तुम्हारे बिना आखिर मैं वहाँ रह कैसे सकूँगा?"

यह सुनकर विमला प्रसन्न होकर बोली, "यही तो मैं कहती हूँ कि आप वहाँ जाकर क्या करेंगे। महामारी के बीच व्यर्थ जाकर कूद

पड़ना कहाँ की बुद्धिमत्ता है । ऐसी मानवता दिखाने से कोई लाभ नहीं । आपको भी नहीं जाना चाहिए वहाँ ।" विमला ने दृढ़तापूर्वक कहा ।

डाक्टर रमेश विमला की बात सुनकर मुस्करा दिये, परन्तु तभी उन्होने देखा कि विमला मुस्करा अवश्य रही थी परन्तु उनके वहाँ न जाने की सूचना ने उसे अधिक प्रसन्न नहीं किया । उन्हें लगा कि जैसे विमला के हृदय में एक आशा की उमड़ उठने वाली सरिता यकायक रुककर मंथर गति से बहने लगी ।

डाक्टर रमेश मुस्कराते रहे और विमला उन्हें तनिक भी न समझकर उनके चेहरे पर ताकती रही ।

२१

विमला स्तब्ध थी । उसकी आँखें रमेश पर जमी हुई थीं । रमेश ने जो कुछ कहा था वह अप्रत्याशित था । विमला सब सुनकर भी समझ नहीं सकी ।

उसने कहा, "आखिर क्या चाहते हो तुम, मैं समझी नहीं ।"

विमला को अपना स्वर ही ग़लत लगा । उसने रमेश के मुख की ओर देखा । रमेश ने सुना, पर उसका चेहरा सीधा था । उसपर क्रोध और घृणा का स्पष्ट भाव था ।

"लगता है मैं जितना मूर्ख हूँ, तुम उससे कुछ अधिक मानती हो ।" डाक्टर रमेश बोला ।

विमला कुछ कह नहीं सकी । वह समझ नहीं पा रही थी कि क्षोभ से इस समय काम बनेगा अथवा चुप रहने से । रमेश मानो उसके मनोभाव पढ़ रहा था, वह उसके अन्दर झाँक रहा था ।

"मैं सब कुछ साबित कर सकता हूँ।" रमेश बोला।

विमला रो पड़ी। अन्तर की पीड़ा आँसू बनकर बहने लगी। उसने आँखें पोंछी नहीं। रोने से जैसे उसे स्वयं को संयत करने का आधार मिल गया। पर उसका मन खाली था, उसमें शून्य था। रमेश को जैसे इस सबसे कोई सरोकार नहीं था। उसकी चुप्पी विमला के भय का कारण हो रही थी। रमेश उतावला हो उठा।

"तुम्हें इस रोने-धोने से कुछ मिलना नहीं है विमला!"

रमेश के सीधे स्वर ने विमला पर प्रभाव किया। उसका हौसला बढ़ा।

"मुझे कोई चिंता नहीं। मैं तुम्हें तलाक दे दूँगी। तुम पुरुष हो, तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा।" विमला ने कहा।

"परन्तु क्या बता सकती हो कि तुम्हारे कारण मैं स्वयं को क्यों असुविधा का शिकार बनाऊँ?" डाक्टर रमेश बोला।

"तुम्हारे लिए सुविधा-असुविधा का कोई प्रश्न नहीं है। परन्तु इन्सान की तरह बर्ताव करने को अगर कहूँ तो अनुचित न होगा।" विमला ने कहा।

"मुझे तुम्हारी सुविधा का ध्यान है।" रमेश बोला।

विमला ने आँसू पोंछ डाले।

उसने पूछा, "आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"श्याम तुमसे उसी अवस्था में विवाह कर सकता है जब वह प्रतिवादी हो, पर बात इतनी बेशर्मी की है कि उसकी पत्नी पर ज़ोर देकर ही श्याम को तलाक दिलाया जा सकेगा।"

विमला ने रोष-भरे स्वर में कहा, "तुम ऊट-पटाँग क्या कहे जा रहे हो?"

'मूर्ख विमला!" रमेश बोला।

रमेश के स्वर में घृणा भरी थी। विमला को क्रोध आ गया। क्रोध का कारण भी था। उसने आज से पहले रमेश को कभी इतना स्पष्ट-

वादी नहीं समझा था। रमेश आज तक विमला से सदा ही माधुर्य-भरे स्वर में बातें करता रहा था। विमला ने रमेश को सदा ही अपनी मौजों के आगे झुकते देखा था। वह सगर्व इठलाकर बोली—"अगर तुम्हें सत्य जानना है तो सुनो। श्याम मुझसे किसी भी समय विवाह कर लेगा। कमला उसकी पत्नी किसी भी समय उसे तलाक़ दे देगी। हम दोनों जैसे ही आज़ाद हो जायेंगे, विवाह कर लेंगे।"

"क्या श्याम ने कभी तुमसे कुछ ऐसी बातें कही हैं या स्वप्न देख रही हो?"

रमेश की मुद्रा में स्पष्ट उपहास था। विमला थोड़ी घबराई। विमला से श्याम ने विवाह की बात कभी नहीं कही थी।

"श्याम ने बार-बार मुझ से कहा है।"

"तुम सरासर झूठ बोल रही हो।" डाक्टर रमेश बोला।

"वह मुझे हृदय से प्रेम करता है। मैं भी उससे प्रेम करती हूँ। तुम्हें भी इस सत्य का पता चल गया है। मैं कोई बात नहीं छिपाती। क्यों छिपाऊँ? हम दोनों में प्रेम हुए एक वर्ष से ऊपर बीत चुका है। मुझे इस प्रेम पर गर्व है। वह संसार में सबसे अधिक मुझे चाहता है। अच्छा हुआ कि तुम भी जान गये। चोरी-छिपे हम लोग मिल-मिलकर थक गये थे। मैंने तुमसे विवाह करके बहुत बड़ी ग़लती की। मैं मूर्ख थी, मुझे नहीं करना चाहिए था। मुझे तुम्हारी कभी परवाह तक नहीं रही। हम दोनों में समानता छू तक नहीं गई है। जो व्यक्ति तुम्हें पसन्द हैं वे मुझे नापसन्द है, जो वस्तुएँ तुम्हें अच्छी लगती हैं, मुझे उनसे घृणा है। अच्छा हुआ आज सबका फैसला हो गया।"

रमेश बिना किसी भाव-अनुभाव के विमला को देखता रहा—देखता रहा। विमला की सारी बात उसने सुनी—उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

"तुम्हें मालूम है कि मैंने तुमसे विवाह क्यों किया?"

"क्योंकि तुम्हारे साथ अन्य कोई युवक विवाह करने को उद्यत नहीं था।" रमेश बोला।

डाक्टर रमेश का सत्यतापूर्ण कटु-व्यवहार सुनकर क्रोध और घृणा में विमला के दाँत किटकिटा उठे।

रमेश ने कहा, "तुम्हारे प्रति मैंने बहुत बड़ी बातें नहीं सोची थीं, मैंने स्वप्न नहीं देखे थे। मैं जानता था कि तुम मूर्ख लड़की हो। फिर भी मैंने तुमसे प्रेम किया। मैं जानता था कि तुम्हारी आदतें और काम सब बाज़ारू थे, परन्तु मैंने तुमसे प्रेम किया। मैं जानता था कि तुम ऊँचे स्तर की नहीं हो, तब भी मैंने तुमसे प्रेम किया। मैं आज सोचता हूँ तो हँसी आती है कि जो तुमने सोचा उसे आज मुझे सोचना पड़ा। मैं तुम्हें जताना चाहता था कि मैं मूर्ख और अशिष्ट नहीं हूँ। मैं किसीकी बदनामी फैलाना नहीं चाहता।

"मुझे मालूम था कि बुद्धि से तुम्हें घृणा है, फिर भी मैंने सारे काम तुमने जैसे चाहे वैसे ही किये। मैंने तुम्हें पूरी तरह सोच लेने दिया कि जैसे अन्य पुरुषों को तुम मूर्ख समझती हो, मुझे भी समझो। मुझे यह भी पता है कि तुमने अपनी सुविधा के कारण ही मुझसे विवाह किया था। इस सबको भुलाकर मैंने तुम्हें चाहा है। अपने प्रेम का प्रतिदान न पाने पर और लोग कुछ-से-कुछ हो जाते हैं परन्तु मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मैंने अपने प्रेम का प्रतिदान तुमसे कभी चाहा ही नहीं। मेरी समझ में कभी भी नहीं आया कि तुम प्रतिदान दो भी तो क्यों? मैंने स्वयं को कभी भी प्रेम के योग्य नहीं माना। मैं तुमसे प्रेम करता था, यही मेरे लिए बहुत था। जब कभी तुम्हारी आँखों में भूले-से मेरे प्रति स्नेह उमड़ा, उसे देखकर मैं फूला नहीं समाता था। मैंने कभी भी अपने प्रेम को तुम पर भार नहीं बनने दिया। जब कभी तुममें उकताहट आई, मैं तुरन्त भाँप गया। बहुत से पति जिसे अपना अधिकार

मानते हैं, उसे मैंने केवल उपकार समझा।" डाक्टर रमेश ने गम्भीरता-पूर्वक कहा।

विमला अब तक बराबर मीठी, चापलूसी-भरी अपनी बड़ाई की ही बातें सुनती आई थी। आज पहली बार यह सब सुनकर उसका क्रोध तीव्र भय में परिणत हो गया। उसका कंठ सूख गया, उसका खून जम गया। स्त्री के दम्भ को चोट लग जाय तो वह सिंहनी से अधिक भयानक और विकराल हो जाती है। उसके जबड़े अकड़े, आँखों से चिंगारियाँ बरसने लगीं। उनमें कटुता आ गई। परन्तु उसने अपने क्रोध पर संयम रखा।

"यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को प्रसन्न नहीं कर सकता तो दोष पुरुष का है; स्त्री का नहीं।"

"बिलकुल!"

रमेश के इस उत्तर ने विमला के क्रोध की ज्वाला को और भी भड़का दिया। पर उसने सोचा शान्त रहकर ही इससे बदला लिया जा सकता है।

"न तो मैं बहुत पढ़ी-लिखी हूँ और न ही विशेष चतुर। मैं एक साधारण स्त्री हूँ। मैं जिस समाज में पली हूँ, वहाँ जो बातें पसन्द की जाती थीं वे ही मुझे प्रिय है। मुझे सिनेमा, टेनिस, थियेटर भाते हैं। मुझे वे पुरुष अच्छे लगते हैं जिनको ये अच्छे लगते हैं। मैं कह दूँ कि तुम्हारी पसन्द पर मैं सर्वदा कुढ़ कर रह गई हूँ। मुझे वे कभी अच्छी नहीं लग सकीं।" विमला बोली।

"यह सब मैं जानता हूँ।" रमेश बोला।

"मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे योग्य, अपने को नहीं बना सकी। तुम मुझे कभी प्रसन्न नहीं कर सके। मुझे तुमसे घृणा रही। इसमें मेरा दोष नहीं है।"

"मैं दोष देता भी नहीं तुम्हें विमला।"

रमेश यदि क्रोध में चीखता तो विमला की समस्या हल हो जाती।

गर्म लोहे को गर्म लोहा काट देता। परन्तु रमेश का आत्म-नियन्त्रण कमाल का था। इस समय विमला में उसके प्रति इतनी घृणा भर गई थी कि जितनी पहले कभी नहीं थी।

"तुम इन्सान हो, मुझे इसीमें सन्देह है। तुम दरवाजा तोड़कर उस समय भीतर क्यों नहीं आगये। तुम्हें मालूम था कि मैं और श्याम भीतर थे। तुम उसे मार सकते थे। पर तुम डर गये थे शायद ?" विमला बोली।

यह कहते ही विमला कुछ अरुणिम हो उठी, थोड़ा लजा गई। रमेश निष्पन्द रहा। उसकी आँखों में उसने कटुता देखी। ईषत हास की एक छाया रमेश के होंठों पर नाची और विलीन हो गई।

"हो सकता है ऐसा ही रहा हो। वैसे मैं बड़ी अच्छी तरह लड़ सकता हूँ।" डाक्टर रमेश बोले।

विमला को उत्तर नहीं सूझा। रमेश की आँखें विमला पर केन्द्रित थीं। वह काँप उठी।

"तुम मुझे तलाक़ क्यों नहीं देने देते ?" विमला ने पूछा।

रमेश ने अपनी आँखें हटा लीं। वह अपनी कुर्सी के सहारे बैठ गया। एक सिगरेट सुलगा ली। बिना कुछ कहे वह पूरी सिगरेट फूँक गया। अन्तिम कश खींचकर बचा हुआ टुकड़ा फेंकते हुए थोड़ा मुस्कराया और फिर एक बार विमला को देखा।

"यदि मिसेज़ श्याम मुझसे वायदा कर लें कि वह अपने पति को तलाक दे देंगी और मिस्टर श्याम मुझे लिखकर दे दें कि तलाक के एक सप्ताह बाद वह तुमसे विवाह कर लेंगे, तो मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।" गम्भीरतापूर्वक डाक्टर रमेश ने कहा।

जिस तरीके से बात कही गई थी उस पर विमला को दुःख हुआ, पर उसके स्वाभिमान ने उसे शर्त मानने को बाध्य कर दिया।

"इस प्रकार तुम बहुत बड़ा उपकार करोगे।" विमला ने कहा।

रमेश ज़ोर से ठहाका मार कर हँस पड़ा। विमला को क्रोध आ गया।

"तुम हँस क्यों पड़े ? इसमें हँसने की क्या बात थी ?"

"ओह ! क्षमा करना। मेरा परिहास भी निराला ही है।"

भयातुर विमला रमेश को ताक रही थी। उसने चाहा कि वह कुछ कटु कह दे, पर उसे कुछ सूझा ही नहीं। रमेश ने घड़ी देखी।

"यदि तुम्हें श्याम से मिलना है तो तय्यार हो जाओ। यदि तुम मेरे साथ भोपाल चलना चाहो तो हम लोग परसों चल देंगे।"

"तब क्या मै आज ही श्याम से मिलूँ ?" विमला ने पूछा।

"आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।"

"विमला के दिल की धड़कनें एकाएक बढ़ गई। वह परेशान नहीं थी। परन्तु धड़कनें क्यों बढ़ीं, वह समझ न सकी। उसने चाहा कि उसे थोड़ा समय मिल जाये। उसे श्याम को राजी करना था, पर उसे तो श्याम पर पूर्ण विश्वास था। उसने सोचा कि यह विचार तक उठना पाप था कि श्याम उसके प्रस्ताव का स्वागत नहीं करेगा। उसने गम्भीरतापूर्वक रमेश से कहा—"तुम क्या जानो प्रेम किसे कहते हैं ? तुम क्या जानो कि हम दोनों आपस में एक-दूसरे को कितना चाहते हैं ? हमारे प्रेम में कोई बाधा नहीं आ सकती।"

रमेश ने जैसे विमला की हाँ-में-हाँ मिला दी। बोला वह एक शब्द नहीं। विमला जाने लगी तो उसकी आँखें विमला के चेहरे पर पड़ीं। वह गम्भीरतापूर्वक बोला, "विमला ! आज तक तुमने मुझे मूर्ख समझा है। आज मुझे अधिकार दो कि मैं कह सकूँ, 'मेरी मूर्ख विमला !' तुम जहाँ जल देख रही हो, वहाँ सूखा बालू है। तुम्हारी नासमझ आँखों ने तुम्हें धोखा दिया है। तुमने मनुष्य का ऊपरी रूप देखने का प्रयास किया है। दिल की गहराई तक तुम्हारी आँखों की दृष्टि कभी नहीं पहुँच पाई। तुम इस समय एक ऐसी कगार पर खड़ी हो

जो क्षण-भर में टूटकर सागर की लहरों में विलीन हो जायगी। मुझे विश्वास है कि तुम सोच-समझकर आगे कदम बढ़ाओगी।"

विमला ने रमेश की बात गम्भीरतापूर्वक सुनी और वह आगे बढ़ गई।

२२

विमला ने श्याम के दफ्तर में एक चिट भेजी, "मुझे बहुत आवश्यक कार्य के लिए भेंट करनी है।" चपरासी ने उत्तर लाकर दिया कि मिस्टर श्याम पाँच मिनट बाद मिल सकेंगे। विमला के होश-हवास ठिकाने नहीं थे। वह श्याम के कमरे में पहुँची तो वह स्वयं उसके स्वागत को आगे आया।

"मैं कहता हूँ कि तुम दफ्तर मे न मिला करो विमला! मेरे पास बहुत काम है। जग-हँसाई कराने से आख़िर क्या लाभ?"

विमला ने चाहा कि मुस्करा दे, पर उसके होंठ जकड़ गये। वह अपनी सुन्दर आँखों से श्याम को निहारती रह गई।

"यदि इतना आवश्यक न होता तो मैं कदापि नहीं आती।" विमला ने कहा।

"अच्छा, अब आई हो, तो बैठ जाओ।" श्याम बोला।

कमरा लम्बा था। छत ऊँची थी। दीवारों पर मिट्टी की बनी मूर्तियों जैसी चित्रकारी थी। कमरे में एक मेज़ थी, श्याम के बैठने के लिए घूमने वाली कुर्सी थी; एक और कुर्सी मेज़ के दूसरी ओर थी जिस पर मिलने वाला आकर बैठ सकता था। विमला उसी कुर्सी पर बैठ गई। श्याम मेज़ पर बैठा। विमला ने पहले कभी उसे ऐनक लगाये नहीं देखा था। उसे पता भी नहीं था कि वह ऐनक लगाता है।

श्याम ने देखा कि वह बराबर उसी ऐनक को देखे जा रही है, तो उसने ऐनक उतार ली।

"मैं केवल लिखने-पढ़ने के ही समय इसका उपयोग करता हूँ।"

विमला देखते-देखते रो पड़ी। उसकी सिसकियाँ बँध गईं। उसे स्वयं नहीं पता था कि वह क्यों रो पड़ी।

विमला धोखा नहीं देना चाहती थी, पर रोने में यह भाव अवश्य ही निहित था कि श्याम की सहानुभूति को उभारा जाय। श्याम विमला को ठगा-सा देखता रहा। वह समझा नहीं कि क्या बात थी।

"रोओ नहीं विमला! बात तो बताओ हुआ क्या?"

विमला ने रूमाल निकालकर आँसू पोंछ डाले। श्याम ने घण्टी बजाई। नौकर आया तो वह स्वयं द्वार तक गया और उसने आदेश दिया कि कोई पूछे तो कह देना मैं बाहर गया हूँ।

"बहुत अच्छा सरकार!"

नौकर ने दरवाजे बन्द कर दिया। श्याम विमला की कुर्सी के हत्थे पर आकर बैठ गया। उसने विमला के कन्धों पर अपनी बाँह रख दी।

"अब बताओ, क्या बात है?"

विमला ने कहा, "रमेश तलाक देना चाहता है।"

विमला ने अनुभव किया कि यह सुनते ही श्याम ने जिस हाथ से उसके कन्धे पकड़े थे उसकी पकड़ ढीली पड गई। श्याम का शरीर अकड़ गया। वह एक क्षण मौन रहा। फिर वह वहाँ से उठ गया और अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

उसने कहा, "तुम्हारा मतलब क्या है?"

विमला ने देखा और अनुभव किया कि उसका स्वर कठिन हो गया था और मुख तमतमा उठा था।

"मैंने रमेश से बातें कीं। मैं सीधी घर से चली आ रही हूँ। उसके पास सारे सबूत हैं।" विमला बोली।

"परन्तु तुमने तो कुछ स्वीकार नहीं किया न?"

विमला का दिल डूबने लगा ।

उत्तर दिया, "नहीं ।"

तीखी दृष्टि से देखते हुए उसने पूछा, "ठीक कह रही हो न ?"

वह फिर झूठ बोली, "हाँ ।"

श्याम अपनी कुर्सी के तकिये से चिपक गया । सामने दीवार पर उसकी दृष्टि अटक गई । विमला पूर्ण मनोयोग से उसे ताकती रही । समाचार पाकर श्याम ने जो भाव प्रदर्शित किया उससे विमला को क्लेश हुआ । उसने सोचा था कि श्याम यह समाचार सुनते ही वह उसे अपने आलिंगन में भर लेगा और कहेगा कि बड़ा अच्छा हुआ, अब वे साथ-साथ रह सकेंगे; पर पुरुष कितना अस्थिर होता है ? वह फिर दोनों रोने लगी, अब रोने का उद्देश्य उसकी सहानुभूति जगाना नहीं था, बल्कि वह रोई इसलिए कि इसके अतिरिक्त दूसरा कोई चारा न था ।

श्याम ने कहा, "यह तो हम बुरे फँसे । परन्तु दिमाग़ खराब करने से कोई लाभ नहीं । रोने-धोने से क्या आना-जाना है ?"

विमला ने स्पष्ट अनुभव किया कि श्याम के स्वर में झुँझलाहट थी । उसने अपने आँसू पोंछ डाले ।

"इसमें मेरा क्या कसूर है ? मैं क्या करती ?"

"हाँ ठीक है । हमारी क़िस्मत ही खराब है । मेरा भी उतना ही दोष है, जितना तुम्हारा । अब देखना यह है कि हमारा निस्तार कैसे हो । मैं समझता हूँ कि तुम्हें तलाक़ देने की आवश्यकता नहीं है ।"

विमला का श्वास रुक गया । उसने श्याम के अन्दर जाना चाहा । उसने स्पष्ट देखा कि श्याम को उसकी तनिक भी परवाह नहीं थी ।

श्याम जैसे स्वयं बात कर रहा था, मुझे आश्चर्य है कि आखिर उसने सबूत कहाँ से इकट्ठे कर लिये । मैं तो नहीं समझता कि साबित कर सकेगा कि हम दोनों एक साथ कमरे में थे । हम अपने सारे व्यापार बड़ी सावधानी से बरतते थे । कहीं दूकान के उस बूढ़े ने तो धोखा नहीं दिया ?

आरोप लगाना बड़ा सरल है, पर उसे सत्य ठहराना सरल काम नहीं है। हम हर बात को झूठा बतायेंगे। अगर रमेश धमकी देता है तो करे जो चाहे, हम भी निपट लेंगे।" श्याम बोला।

"श्याम, मैं कहचरी नहीं जा सकूँगी।" विमला बोली।

"परन्तु क्यों ? तुम्हें तो जाना ही होगा। सच मानों, मैं कोई उपद्रव नहीं चाहता, परन्तु मजबूरी जो ठहरी।" श्याम बोला।

"परन्तु हम बचें क्यों ?" विमला बोली।

"वाह ! क्या सवाल किया तुमने। तुम अकेली तो इस झमेले में नहीं फँसी हो, मैं भी तो बिंध गया हूँ। परन्तु तुम डरो कतन मत। मैं तुम्हारे पति को ठीक कर दूँगा। परन्तु फिर भी चाहूँगा कि शान्ति से सब निपट जाय।"

लगा कि जैसे उसके मस्तिष्क ने कोई रास्ता खोज निकाला था; क्योंकि उसकी खोई मुस्कान लौट आई थी। स्वर भी जो क्षण-भर पूर्व कड़ा हो गया था उसमें मधुरता आगई थी।

"तुम घबरा अधिक गई हो। यह बुरी बात है।" श्याम ने अपना हाथ बढ़ाकर विमला को हाथों में ले लिया। "यह झंझट उठा तो, परन्तु हम इसमें से सरलता से निकल जायेंगे। हमें अपने होश ठीक रखने की आवश्यकता है। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा।" श्याम ने कहा।

"मैं नहीं डरती। मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं, वह चाहे जो करें।" विमला दृढ़तापूर्वक बोली।

श्याम मुस्करा रहा था, पर उसकी मुस्कराहट बनावटी थी।

"यदि बात आगे बढ़ी तो मैं गवर्नर का सब बता दूँगा। वह बिगड़ेगा अवश्य, पर आदमी सज्जन है। उसे व्यावहारिक ज्ञान भी है। वह सब कुछ ठीक कर लेगा। यदि बदनामी हो गई तो रमेश कहीं का नहींरहेगा।

"वह क्या करेगा ?" विमला ने पूछा।

"वह रमेश पर दबाव डाल सकता है। यदि उसके साधारण कहने से रमेश नहीं माना तो दफ्तर के जरिये मना लेगा।"

विमला चौंकी। उसने सोचा कि श्याम को वह कदाचित् मामले की गम्भीरता पूरी तरह समझाने में असमर्थ रही। श्याम के बढ़-बढ़ कर बाते करने से वह ऊब गई थी। उसे दु:ख हो रहा था कि वह दफ्तर में क्यों आई। वातावरण ने उसे भयभीत कर दिया। उसने सोचा कि बाहर जहाँ श्याम की बाँहों में वह होती और उसकी बाँहें श्याम के गले में होतीं, वहाँ कहना चाहिए था उसे यह सब।

उसने कहा, "तुम रमेश को समझते नहीं हो।"

"हर आदमी की अपनी कीमत होती है।" श्याम बोला।

विमला श्याम को जी-जान से चाहती थी, पर उसके जवाब उसे क्लेश पहुँचा रहे थे। श्याम जैसे कुशल आदमी के मुँह से उसे मूर्खता की बातें सुनने की आशा नहीं थी।

"शायद तुम जानते नही कि रमेश कितना क्रुद्ध है? तुमने उसका तमतमाता हुआ चेहरा और सुलगती आँखें कहाँ देखी हैं?"

श्याम को तुरन्त कोई उत्तर न सूझा। वह ईषत् हास लिए विमला को देखता रहा। विमला जानती थी कि वह विचार-मग्न है। रमेश जीव-शास्त्री था और उसका पद श्याम से नीचा था। वह कभी भी अपने बड़े अफ़सरों के लिए उलझन खड़ी नही करेगा।

"श्याम स्वयं को धोखा देने से कोई लाभ नही। यदि रमेश ने सोच लिया है तो तुम क्या कोई भी उसे डिगा नहीं सकता।" विमला ने कहा।

श्याम का मुँह उतर गया।

"क्या वह मुझको प्रतिवादी बतायेगा?"

"हाँ, उसका ऐसा ही विचार है। फिर बाद में मैंने ही तलाक देने को उसे मना लिया था।" विमला ने कहा।

"फिर तो इतनी टेढ़ी खीर नहीं है।" श्याम ने आराम की साँस

ली। ऐसी दशा में इस झमेले से मेरा निकल जाना बड़ी सरल-सी बात है। शरीफ आदमी यही करेगा।"

"परन्तु उसने एक शर्त रखी है।" विमला बोली।

श्याम ने प्रश्न-भरी दृष्टि से विमला की ओर देखा। "मैं धनी नहीं हूँ, यह ठीक है, परन्तु जो कुछ मेरे बस में होगा उससे नहीं चूकूँगा।" श्याम बोला।

विमला चुप रही। श्याम ऐसी बातें कह रहा था जो विमला कभी उसके सम्बन्ध में सोच भी नहीं सकी थी। इन्हीं बातों को सुनकर उसकी वाणी जैसे खो गई। उसने सोचा था कि वह श्याम की चौड़ी छाती पर अपना तप्त मुख टिकाकर सब कुछ एक साँस में बता देगी।

"वह तलाक देने को तैयार है परन्तु यदि तुम्हारी पत्नी उससे वायदा करे कि वह भी तुम्हें तलाक दे देगी।" विमला ने कहा।

"और कुछ ?" श्याम ने पूछा।

विमला को और कुछ नहीं सूझा।

"और, और श्याम, कि तुम तलाक़ के एक सप्ताह के अन्दर ही मुझसे विवाह कर लो।"

विमला की बात सुनकर विमला को लगा कि जैसे श्याम को लकवा मार गया। उसका सारा बदन एक शव के समान कुर्सी पर पड़ा रह गया। उसके नेत्र पथरा गये। वह ठीक से विमला की सूरत देख भी न सका। उसे पसीना आ गया।

विमला को लगा कि वह पागल हो उठेगी।

२३

एक क्षण श्याम मौन रहा। फिर उसने विमला का हाथ अपने हाथ में दबाया। बोला—"डार्लिंग, मैं कमला को इस सबमें बिलकुल नहीं लाना चाहता। मैं उससे इसके विषय में कुछ नहीं कह सकता।"

विमला खोई-सी श्याम को ताक रही थी।

"परन्तु अलग कैसे रखा जा सकता है ?" विमला ने पूछा।

"हमें अपना ही नहीं सोचना है, कुछ और बातें भी हैं दुनिया की जिन पर विचार करना है। तुमसे विवाह करने में मैं अपने को भाग्यशाली मानूँगा, परन्तु विवाह हो कैसे सकता है ? मैं कमला को खूब जानता हूँ। वह मुझे किसी प्रकार नहीं छोड़ सकती।"

विमला घबरा गई। उसकी हिचकियाँ बँध गई ? श्याम विमला की कुर्सी के हत्थे पर आकर बैठा और अपनी बाँहें उसकी कमर में डाल दीं।

"इतनी परेशान न हो, दिमाग़ को ठीक रखो विमला !"

"मुझे विश्वास था कि तुम्हें मुझसे प्रेम है।"

"बिलकुल ! मुझे तुमसे प्रेम है। तुम्हें इसमें सन्देह होना ही नहीं चाहिए।" श्याम ने कहा।

"यदि कमला तुम्हें तलाक़ नहीं देगी तो रमेश तुम्हें प्रतिवादी बनायेगा।" विमला बोली।

श्याम की समझ में नहीं आया कि वह क्या उत्तर दे। उसका कण्ठ सूख गया था।

'तब तो मेरा सारा भविष्य बरबाद हो जायेगा। उससे तुम्हारा

भी कुछ भला नहीं होगा। यदि मामला बहुत बढ़ गया तो कमला से सब कुछ साफ-साफ बता दूँगा। वह मुझे अवश्य क्षमा कर देगी। यदि उसे अब सब कुछ मालूम हो गया तो वह डाक्टर रमेश के पास जाकर उसे मना लेगी कि वह कुछ न करे।" श्याम बोला।

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि तुम कमला को तलाक़ नहीं देना चाहते ?"

"मुझे अपने बच्चों का भी तो ध्यान रखना है। और फिर मैं कमला को अप्रसन्न नहीं करना चाहता। हम दोनों का जीवन बड़ा सुखमय रहा है। तुम्हें तो मालूम ही है कि वह आदर्श पत्नी रही है।"

"तब फिर तुमने मुझसे क्यों कहा था कि उसकी तुम्हें कोई परवाह नहीं ?" विमला ने पूछा।

"यह मैंने कभी नहीं कहा। मैंने कहा था कि मैं उसे प्यार नहीं करता। हम साथ-साथ वर्ष में शायद ही कभी सोते हों। परन्तु वह इन सब बातों की चिन्ता नहीं करती। हम दोनों में बड़ी घनिष्ठता है। उससे अधिक मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकता।" श्याम ने दृढ़ता-पूर्वक कहा।

"तो तुम्हें मुझे पहले ही अकेली छोड़ देना चाहिए था ?" विमला को स्वयं पर आश्चर्य हुआ कि वह क्रोध में उफन रही थी, फिर भी वह शान्ति से बोल रही थी।

"तुम्हारे-जैसा सुन्दर रूप मैंने वर्षों से नहीं देखा था। मैं तुम्हारे प्रेम में दीवाना हो गया, मैं क्या करूँ ?"

"पर अभी तो तुमने कहा था कि तुम मुझे धोखा नहीं दोगे।"

"मैं तुम्हें धोखा कहाँ दे रहा हूँ ? हम जिस जंजाल में फँसे हैं, जैसे भी हो हमें उसमें से निकलना चाहिए।

—केवल उस एक तरीके से नहीं जो बिलकुल सीधा-सादा है।"

श्याम उठा और अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"विमला, तुम थोड़ा दिमाग़ से काम लो। थोड़ी सफ़ाई की आव-

श्यकता है । मैं तुम्हारी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता। परन्तु सत्य कहता हूँ कि मुझे अपना भविष्य बहुत प्यारा है । कोई कारण नहीं कि मैं एक दिन गवर्नर न बन जाऊँ । हमें इस मामले को दफ़ना देना चाहिए । इसे दफ़नाये बिना मेरे लिए गवर्नर बनना असम्भव है । मुझे नौकरी भले ही न छोड़नी पड़े, पर मेरी नौकरी मे कालिख तो पुत ही जायगी । यदि नौकरी छूटी तो मुझे व्यापार करना पड़ेगा और उसके लिए यहाँ से मुझे जाना होगा । हर अवस्था में कमला का साथ मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है । मैं कमला को किसी भी दशा में नहीं छोड़ सकता ।"

"तब यह कहने की क्या आवश्यकता थी कि मेरे अतिरिक्त तुम किसीको नहीं चाहते ?" विमला ने कहा ।

श्याम के होंठ कुण्ठित हो गये ।

"विमला ! हर बात जो कही जाती है उसके शाब्दिक अर्थ से चिपका नहीं जाता । तुम्हें समझदारी से काम लेना चाहिए ।"

"तो तुमने जो कहा उसमें कुछ तत्व नही था ।" विमला बोली ।

"उस क्षण था ।"

"यदि डाक्टर रमेश ने मुझे तलाक़ दे दिया तो मेरा क्या होगा ?"

"यदि अपने को बचाने का चारा ही नहीं रहेगा तो कैसे बचा पायेंगे । यदि ऐसा हो भी जाय तो इसका डंका नही पीटना चाहिए । आजकल के लोग वैसे भी उदार हैं ।" श्याम बोला ।

आज विमला को प्रथम बार अपनी माँ का स्मरण हो आया । वह काँप उठी । उसने श्याम की ओर देखा । उसकी पीड़ा और वेदना में अब घृणा घुल गई थी ।

"मेरे विचार में मैं जो कुछ भुगतूंगी उससे तुम पर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।" विमला ने कहा ।

श्याम ने उत्तर दिया, "जली-कटी बातों से हम किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकेंगे ।"

हताश हो विमला चीख पड़ी। अनोखा व्यापार था। श्याम को इतना चाह कर भी वह उसके प्रति कटु हो गई थी। श्याम को क्या मालूम था कि विमला के लिए वह क्या था ?

"श्याम, तुम नहीं जानते कि मैं तुम्हें कितना प्रेम करती हूँ।"

"मेरी विमला, मैं भी तुमसे प्रेम करता हूँ। परन्तु हम किसी रेतीले द्वीप पर तो निवास नहीं करते। अपनी परिस्थितियों के अनुकूल ही तो चलना पड़ेगा। तुम थोड़ा तो सोचो।" श्याम बोला।

"कैसे सोचूं ? मेरे लिए तुम्हारा प्रेम ही सब कुछ था। तुम्हीं मेरा जीवन थे। कितना दुःख हुआ है मुझे यह जानकर कि तुम्हारे लिए वह सब एक कहानी से अधिक कुछ नहीं था।" विमला बोली।

"कहानी तो नहीं था। परन्तु मेरी पत्नी, जिसके बिना मैं रह नहीं सकता, उसीको तलाक़ देने को तुम कहती हो और अपने से विवाह करने को कहकर मेरा भविष्य उजाड़ने पर तुली हो, यह कहाँ तक उचित है ? तनिक तुम भी तो सोचो कि यह तुम्हारा कैसा प्रेम है ?"

विमला ने श्याम को देखा, जैसे नहीं देखा। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था। उसकी आँखों से अविरल अश्रु गिरने लगे।

"ओह निर्मम ! तुम कितने कठोर हो !"

"विमला स्वयं पर नियन्त्रण रखो, डियर !"

विमला ने कहा, "तुम्हें क्या पता कि मैंने तुम्हें कितना चाहा है ? मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मुझ पर तरस खाओ श्याम !" वह आगे कुछ नहीं कह सकी, केवल रोती रही।

"देखो, मैं कष्ट देना नहीं चाहता। भगवान् जानता है कि मैं तुम्हारी भावनाओं को बिलकुल ठेस नहीं पहुँचाना चाहता। पर सत्य तो कहना ही होगा। मैं कमला को तलाक़ नहीं दे सकता।"

"मेरा सारा जीवन बरबाद हो जाएगा। तुमने मुझे पहले ही क्यों नहीं अकेली रहने दिया ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था श्याम ?"

"अगर सारा दोष मुझ पर मँढ़कर तुम्हें सन्तोष होता है तो यही करो विमला !"

विमला क्रोध से तिलमिला उठी। उसके नेत्र रक्तिम हो गये।

"तो मैं ही तुम्हारे पीछे पड़ी रही। मैंने तुम्हारा सुख-चैन लूट लिया, उस समय तक चैन नहीं लेने दिया जब तक तुम्हें अपने पंजे में फँसा न लिया। इससे अधिक और कुछ कहना चाहते हो ?"

"मैं तो यह नहीं कह रहा। पर तुम्हारी इच्छा के बिना भी तो मैंने कुछ नहीं किया कभी।" श्याम बोला।

डूब मरने की बात थी। विमला जानती थी कि श्याम का कथन सत्य था। श्याम गम्भीर हो गया था। उसका मुख उदास था। क्षण-क्षण पर थकी-थकी आँखों से वह विमला को देख रहा था।

"क्या रमेश तुम्हें क्षमा नहीं करेगा ?" कुछ रुककर श्याम ने पूछा।

श्याम ने अपने हाथ बाँध लिए। विमला ने स्पष्ट देखा कि वह अपने क्रोध को अपने होंठों में दबा रहा था।

"तुम रमेश से जाकर क्षमा क्यों नहीं माँगतीं ? जैसा तुमने कहा कि वह तुमसे बेहद प्रेम करता है, तो कोई कारण नहीं है कि वह तुम्हें क्षमा न कर दे।"

"काश ! तुम उसे समझ पाते।" विमला ने गम्भीर वाणी में कहा, "तुम डाक्टर रमेश को जीवन-भर नहीं समझ सकोगे श्याम ! उन्हें मैं भी नहीं समझ पाई थी परन्तु आज समझ रही हूँ। उन्होंने सच ही कहा था," कहकर विमला मौन हो गई। उसने निराश दृष्टि से एक बार फिर श्याम की ओर देखा।

२४

विमला ने आँसू पोंछ डाले और स्वयं को संयत करके कहा, "तुम धोखा दोगे तो मैं मर जाऊँगी श्याम !"

विमला ने सोचा काश वह सारी बात श्याम के आलिंगन में बँध कर कह पाती ! उस समय श्याम विमला के कष्ट को समझता और उसकी न्यायप्रियता, उदारता और पुरुषत्व सब उसे उसकी सहायता करने को बाध्य करते। उसका उद्धार हो जाता।

"रमेश मुझे अपने साथ भोपाल ले जाना चाहता है।"

"परन्तु वहाँ तो कॉलरा फैला है। गत पचास वर्ष में वहाँ ऐसी महामारी कभी नहीं फैली। स्त्रियों के लिए वह स्थान उपयुक्त नहीं है। तुम वहाँ कैसे जाओगी ?"

"यदि मुझे धोखा दोगे तो मेरे पास अन्य कोई चारा ही क्या रह जाएगा ?"

"तुम्हारा मतलब मैं समझा नहीं।"

"एक डाक्टर जो वहाँ मर गया है उसीके स्थान पर रमेश जा रहा है। वह मुझे भी साथ ले जाना चाहता है।"

"कब ?"

"तुरन्त।"

श्याम ने अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई। वह शरमाई आँखों से विमला को देख रहा था। उसकी समझ में यह पहेली न आई।

"मैं बिलकुल ही मूर्ख सही, पर तुम्हारी बातों का सिर-पैर नहीं समझ पाता। वह तुम्हें साथ भी ले जाना चाहता है, तलाक़ भी देना चाहता है। यह क्या पहेली है ?"

"उसने मुझे दोनों में से एक चुनने को कहा है। या तो मैं उसके साथ भोपाल जाऊँ या फिर उसे उसकी मनमानी करने दू।"

"अब समझा।" श्याम का स्वर बदला। बोला, "यह तो और भी अच्छा होगा। तुम क्या सोचती हो।"

"अच्छा है।"

"उसका वहाँ जाना ठीक है।"

"पर मेरा क्या होगा श्याम ?" विमला असहाय-सी चिल्ला पड़ी।

"इन परिस्थितियों में यदि वह तुम्हें साथ ले जाना चाहता है तो तुम्हें ना नहीं करनी चाहिए।" श्याम गम्भीरतापूर्वक बोला।

"पर वहाँ जाना तो मृत्यु का आलिंगन करना है; बे मौत मरना होगा।" विमला बोली।

"तुम हद से ज्यादा बात बढ़ाती हो। रमेश को यदि इतना भय होता तो वह तुम्हें नहीं ले जाता। तुम्हारे लिए कुछ नहीं है। खतरा उसकी जान को है। वास्तव में ऐसे डर की कोई बात ही नहीं। हाँ, थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। मैं यहाँ कॉलरा के दिनों में रहा हूँ, बाल भी बाँका नहीं हुआ। बिना पका खाना न खाना, कच्चे फल या सलाद न खाना, पानी उबाल कर पीना—कुछ भी नहीं होगा।" श्याम का हौसला अब बढ़ रहा था। वह बिना रुके धारा-प्रवाह से बोले जा रहा था। उसकी उदासी उड़ चुकी थी। वह चुस्त दिखाई पड़ रहा था। "आखिर नौकरी है। फिर मच्छरों-वच्छरों के अध्ययन में वह मास्टर ठहरा। वे रमेश का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"परन्तु मेरा क्या होगा श्याम ?" इस बार विमला के स्वर में दयनीयता नहीं थी।

"भई किसीको समझने के लिए स्वयं को थोड़ी देर वैसा ही बन जाना होता है। रमेश की दृष्टि में तुम उसके क्लेश का कारण रही हो। वह तुम्हें अहित के मार्ग से हटा लेना चाहता है। मैं कभी

विश्वास नहीं कर सकता कि वह तुम्हें छोड़ देगा। वह इस प्रकार का आदमी नही है। उसने तो उदारता के साथ तुम्हें दूसरा अच्छा मार्ग दिखाया है और तुम मना करके उसे अपना विपक्षी बना लोगी। मैं तुम्हें दोष नहीं देता, पर इतना अवश्य कहूँगा कि बिना सोचे-विचारे तुम उसके साथ चली जाओ, इसीमें सबका भला है।"

"तुम क्यों नहीं समझते कि वहाँ मेरे प्राण निकल जायेंगे? तुम क्यों नहीं समझते कि वह मुझे केवल इसीलिए ले जा रहा है कि वहाँ मैं जल्दी मर जाऊँ?"

"विमला, ऐसी बातें मत करो। हम सबकी अवस्था इस समय शोचनीय है। यह समय इस सारे स्वाँग का नहीं है।"

"अब तुम मेरी बात क्यों समझने लगे हो श्याम?" विमला का अन्तर-बाह्य किसी पीड़ा से कराह उठा। वह चाहती थी कि वह चीख़ पड़े, "तुम मुझे जान-बूझकर मौत के मुँह में ढकेले दे रहे हो। तुम्हें यदि मुझसे प्रेम नहीं है, मेरी अवस्था पर यदि दया नहीं आती, तो क्या मानव-सुलभ सहानुभूति भी समाप्त हो गई?"

"मेरे सम्बन्ध में यह कहना ठीक नहीं है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, तुम्हारा पति तुम्हारे साथ बहुत सभ्य व्यवहार कर रहा है। वह चाहता है कि तुम अवसर दो तो तुम्हें क्षमा कर दे। वह तुम्हें यहाँ से हटाना चाहता है। मैं नही कहता कि भोपाल में तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर जायगा। मुझे यह भी नहीं पता था कि वह वहाँ जा रहा है। परन्तु वहाँ के नाम पर घबराने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। घबराकर तुम अपना अहित ही करोगी। मेरे विचार में तो लोग भय से अधिक मरते हैं, महामारी से कम।"

"पर मैं तो डर गई हूँ। रमेश ने जब यह सब बताया तो मैं संज्ञाहीन-सी हो गई थी।" विमला बोली।

"पहले-पहल सुनकर तो धक्का लगना स्वाभाविक ही है, पर यदि

सोचा जाए तो बड़ी साधारण-सी बात है। वहाँ जाकर तुम्हें अनुभव होगा।" श्याम बोला।

"मैंने सोचा था...मैं सोचती थी......।"

वेदना से विमला उद्विग्न हो उठी। श्याम चुप रहा। उसका मुख फिर गम्भीर हो गया। बहुत देर तक इस परिवर्तन को विमला भाँप नहीं सकी। विमला अब रो नहीं रही थी। उसकी आँखें स्वच्छ और शान्त थीं; स्वर सधा हुआ था।

"तो तुम चाहते हो कि मैं चली जाऊँ?" विमला ने पूछा।

"इससे अच्छी और कोई बात हो नहीं सकती?" श्याम बोला।

"अच्छा।" विमला ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"मैं पहले ही बता दूँ तो ठीक होगा कि यदि तुम्हारे पति ने तुम्हें तलाक दे दिया तो मैं तुमसे विवाह नही कर पाऊँगा।" श्याम बोला।

विमला चुप रही। श्याम को लगा कि विमला को मौन हुए युग बीत गया। वह उठ खड़ी हुई।

"मुझे तो याद नही पड़ता कि मेरे पति ने कभी मुक़दमा करने की बात भी सोची हो।" विमला बोली।

"तब तुम मुझे अब तक क्यों डरा रही थी?" श्याम बोला।

विमला श्याम को स्थिर चितवन से देख रही थी।

"रमेश पहले ही जानता था कि तुम मुझे धोखा दे रहे हो।" विमला कहकर चुप हो गई।

विमला रमेश को विदेशी भाषा की किताब की तरह पढ़ रही थी। वह रमेश को बिलकुल इसी प्रकार समझ रही थी। उसके लिए रमेश का मस्तिष्क एक व्यापक अँधेरे से घनीभूत दृश्य था जिसमें कभी कोई प्रकाश की किरण बिजली की भाँति चमक जाती थी और फिर अंधकार छा जाता। विमला काँप उठी। उसके नेत्रों के सम्मुख अन्धकार छा गया।

वह बोली, "रमेश ने यह केवल इसलिए कहा था कि वह जानता था कि तुम मुझसे विवाह करने को मना कर दोगे और मेरी आँखें खुल जाएँगी । कैसे आश्चर्य की बात है कि उसने तुम्हें कितना ठीक समझा। रमेश ही मुझे इतनी बड़ी मृगतृष्णा से उबार सकता था। वह वास्तव में बहुत समझदार व्यक्ति है।"

श्याम की निगाहें नीची थीं, वह मेज पर रखे ब्लाटिंगपेपर को देख रहा था; उसे कुछ कहने को शब्द नहीं मिल रहे थे।

रमेश जानता था कि तुम दम्भी हो, कायर हो, अपने ही में सिमटे हुए हो। वह चाहता था कि यह वास्तविकता मैं स्वयं अपनी आँखों से देखूँ। वह समझता था कि तुम खतरा आने पर भाग खड़े होगे। उसे कितना सही ज्ञान था कि मैं कितने बड़े धोखे में हूँ और यह समझती हूँ कि तुम मुझसे प्रेम करते हो। वह अच्छी तरह जानता था कि तुम किसीसे प्रेम नहीं कर सकते। तुम केवल अपने आपसे प्रेम करते हो। उसे मालूम था कि जब कभी अवसर आएगा तो तुम स्वयं को बचाने के लिए मुझे अपने जीवन से दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दोगे।"

"यदि ये बेहूदा बातें तुम्हें कुछ सान्त्वना देती हैं तो मुझे कोई शिकायत नहीं है। स्त्री कोई-न-कोई तरीका पुरुष को नीचा दिखाने का निकाल ही लेती है। परन्तु इसके विपरीत भी बहुत कुछ कहा जा सकता है।" श्याम गम्भीरतापूर्वक बोला।

विमला ने श्याम की इस बात को अनसुनी कर दिया।

"अब मैं भी रमेश की भाँति सब कुछ समझ गई हूँ। मैंने देख लिया है कि तुम कितने हृदयहीन और निर्दय व्यक्ति हो। मैं समझ गई हूँ कि तुम निरे स्वार्थी और कायर हो। तुममें तनिक भी साहस नहीं है। तुम झूठे हो। तुम घृणास्पद हो।" कहते-कहते विमला के मुख पर साकार पीड़ा खेलने लगी, "कितना दुःखद है यह सत्य कि मैं अब भी तुम्हें हृदय से चाहती हूँ।"

"विमला !"

विमला ज़हर-भरी हँसी हँस दी । श्याम ने बड़ी गम्भीरता से विमला का नाम लिया था; पर विमला को जैसे उससे कोई सम्बन्ध नहीं था ।

"मूर्ख !" विमला ने उत्तर दिया ।

श्याम कुर्सी से लग गया । इस समय की विमला उसकी समझ से बिलकुल बाहर थी । विमला ने श्याम को देखा । उसकी आँखों में श्याम के प्रति उपहास भरा था ।

"तो अब तुम मुझसे घृणा करने लगी हो न ? ठीक है, मुझसे घृणा करो । मुझे इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता ।" श्याम बोला ।

विमला अपने दस्ताने पहन रही थी ।

श्याम ने पूछा, "तुम क्या करोगी अब ?"

"तुम मत घबराओ । तुम्हें कोई हानि नहीं होगी ।"

"भगवान् के लिए ऐसी बातें न करो विमला !" श्याम का स्वर भारी था । "तुम क्यों नहीं समझतीं कि तुम्हारी हर बात से मेरा सम्बन्ध है । मैं सब कुछ जानने के लिए कितना उद्विग्न रहूँगा ? आखिर तुम अपने पति को क्या उत्तर दोगी ?" श्याम ने पूछा ।

"मैं कहूँगी कि मैं भोपाल जाऊँगी ।"

"जब तुम राजी होगी तो वह बेजा दबाव नहीं डालेगा ।" श्याम बोला ।

विमला उसे आश्चर्य से देख रही थी । श्याम नहीं समझ सका क्योंकि ऐसी दृष्टि से अपनी ओर देखते उसने विमला को कभी नहीं देखा था ।

श्याम ने पूछा, "तुम अब तो नहीं डर रही हो ?"

"नहीं ! तुमने मेरा हौसला बढ़ाया है । कॉलरा जैसी महामारी वाले स्थान पर जाऊँगी । वहाँ मुझे भरा-पूरा अनुभव होगा । मैं मर जाऊँगी तो मर जाऊँ ।" विमला बोली ।

"मैंने तुमसे इतनी बेदिली से तो बात नहीं की ।" श्याम ने कहा ।

विमला ने फिर एक बार श्याम पर दृष्टि डाली। विमला की आँखों से आँसू बह रहे थे। उसका हृदय भर आया था। विमला चाहती थी कि वह झपटकर श्याम की छाती में अपना मुँह छिपा ले, और उसके होंठ अपने होंठों से चबा डाले और कहे कि श्याम तुम इतने निष्ठुर नहीं हो सकते, पर उससे कुछ लाभ नहीं था। विमला ने उत्तर दिया, "अगर जानना चाहते हो तो सुनो। मैं मृत्यु के मुँह में जा रही हूँ। मुझे नहीं मालूम रमेश के दिल में क्या है? उसका दिमाग टेढ़ा है। परन्तु मुझे बड़ा भय लग रहा है।—शायद मौत ही मुझे अब छुटकारा दिलाएगी।"

विमला ने अनुभव किया कि अब एक क्षण में सम्भव है वह अपना आत्म-नियन्त्रण खो बैठे। वह तेजी के साथ द्वार की ओर बढ़ी और कमरे के बाहर निकल गई। श्याम अपनी कुर्सी से उठा, उसे विदा करते-करते रह गया। श्याम ने आराम की साँस ली। उसका जी चाहा कि वह बराण्डी पिये। उसके माथे से उसे लगा कि एक भारी बोझा टल गया।

वह धीरे-से उठा और बाहर बाबू से बोला, "मैं जा रहा हूँ ज़रा, कोई आये तो कहना कि आज भेंट नहीं होगी।"

इतना कहकर श्याम बाहर की ओर बढ़ गया। आज उसने संतोष की श्वास लेकर बराँडी की बोतल ले गिलास में पेग उँडेला और फिर पूरी-की-पूरी सोडे की बोतल उसमें पलट दी।

विमला यहाँ से चली जाएगी, रमेश भी चला जाएगा। फिर कौन जाने कि उस महामारी से लौट पाएँगे या नहीं। महामारी में जाकर भला कौन लौटा है।

२५

विमला घर पहुँची तो रमेश घर पर ही था। विमला सीधी अपने कमरे में जाना चाहती थी, पर रमेश नीचे ही टहल रहा था और घर के नौकरों को कुछ आदेश दे रहा था। विमला इतनी हताश थी कि उसने तुरन्त ही रमेश से अपना निश्चय कह देना चाहा। वह रमेश के सामने पहुँच गई।

उसने कहा, "मैं तुम्हारे साथ भोपाल चलूँगी।"

"बहुत अच्छा।" रमेश ने कहा।

"मैं कब तक तैयार हो जाऊँ ? विमला ने पूछा।

"कल रात तक।" डाक्टर रमेश बोले।

विमला नहीं जान सकी कि उसमें कहाँ से इतनी हिम्मत आगई थी। विमला को स्वयं अपने शब्दों पर आश्चर्य हो रहा था।

"मेरे विचार से तो मैं केवल गर्मियों के कुछ कपड़े ले चलूँ या और कुछ ले चलना चाहिए ?"

विमला बराबर रमेश को देखे जा रही थी। उसने भाँप लिया था कि उसकी चपलता रमेश को सुहाई नहीं।

"मैंने तुम्हारी आया को सब समझा दिया है।" डाक्टर रमेश बोले।

विमला ने स्वीकृति दी और चली गई। वह बिलकुल पीली पड़ गई थी।

विमला और रमेश अपनी यात्रा लगभग समाप्त कर रहे थे। रमेश ने अपनी सेवाएँ शहर की अपेक्षा देहात के लिए देनी पसंद की थीं। इसलिए उन्हें देहात में ही भेजा गया।

आगे विमला थी और उसके पीछे रमेश। उनके पीछे एक लम्बी क़तार कुलियों की चलती थी, जो सारा सामान उठाये चल रहे थे। विमला सारे मार्ग को अनदेखे तय कर रही थी। यात्रा बड़ी ख़ामोश हो रही थी। कभी-कभी किसी-किसी कुली के अटपटे शब्द कानों में पड़ जाते थे या किसी गीत की कोई धुन। विमला के विचारों में रह-रहकर श्याम के दफ्तर में उसकी बातचीत के दृश्य घूम जाते। सारी बातें रह-रहकर उसके कानों में गूँज रही थीं। विमला आश्चर्य कर रही थी कि किस तरह उनके सम्बन्ध बिलकुल ही व्यवहार में बदल गये। जो कुछ वह कहना चाहती थी वह उसने कहाँ कहा? काश वह अपने हृदय का सारा प्रेम और अपनी असहायता उँडेल पाती; तब भी क्या श्याम इतना निर्दयी हो सकता था कि उसको आज यह कष्ट भुगतना पड़ता! उसे न तो श्याम के शब्दों पर और न ही अपने कानों पर विश्वास हुआ था, जब उससे श्याम ने कहा था कि उसे विमला की कोई चिन्ता नहीं है। तब उसके मुँह से चीख़ निकलते-निकलते रह गई थी। वह बिलकुल हक्की-बक्की रह गई थी। वह कितनी रोई थी, कितनी अधिक रोई थी।

रात में वे धर्मशाला में विशेष अतिथियों के रूप में ठहर थे। रमेश अपनी खाट पर विमला से कुछ ही दूर सोता था। विमला रात को रोती थी तो अपने दाँत तकिए में गड़ा देती थी कि रमेश कहीं उसकी सिसकियाँ न सुन ले; पर दिन में वह खुले तौर पर रो लेती थी। उसमें इतनी वेदना समा गई थी कि वह चीख़-चीख़ पड़ना चाहती थी। उसने कभी भी नहीं सोचा था कि किसीको इतना क्लेश हो सकता है। वह स्वयं से प्रश्न करती थी कि आखिर उसने ऐसा कौनसा गुनाह किया था कि जिसकी सज़ा उसे मिल रही थी। वह समझ नहीं पाती थी कि श्याम ने उससे क्यों प्रेम नहीं किया। वह सारा दोष स्वयं को देती थी।......पर उसने तो श्याम को अपना बनाने के लिए कुछ भी उठा नहीं रखा था। उनका जीवन कितना सुखमय

था, वे मित्र भी थे और प्रेमी भी, वह कह नहीं पा रही थी, उसका दिल चूर-चूर हो गया था। उसने स्वयं को सम्बोधन कर बात की। वह सोच रही थी कि अब उसे श्याम से घृणा हो गई है; पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बिना श्याम को देखे वह जीवित कैसे रहेगी। यदि रमेश केवल दण्ड देने के लिए उसे यहाँ लाया है, तो यह उसका भ्रम है। अब मेरा चाहे जो कुछ हो, मुझे कोई चिन्ता नहीं। विमला के लिए अब जीने का कोई आधार ही नहीं रहा। केवल सत्ताईस वर्ष की अवस्था में ही मृत्यु पा लेना दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है ?

विमला कभी-कभी रात-भर सोचती रहती कि आखिर उसने क्यों इतनी भूल की। वह क्यों श्याम के धोखे में आई। यदि यह श्याम वाला काण्ड न हुआ होता तो डाक्टर रमेश एक से लाख तक यहाँ आने की बात न सोचते। मेरे व्यवहार ने उनके हृदय को जो ठेस पहुँचाई, उसीके परिणामस्वरूप उन्होंने यहाँ आने का विचार किया। वहाँ जो वातवरण मैंने श्याम से मिलकर इनके लिए बना दिया था उसमें इनका दम घुटने लगा था। उस घुटन में यह छटपटा उठे थे।

२६

रमेश अब निरन्तर अध्ययन करता। हाँ, खाने पर कभी-कभी कुछ बातचीत करने की चेष्टा करता। वह विमला से बात करता, मानो किसी अपरिचित से बात करता हो। वह भिन्न-भिन्न विषयों पर बात करता। उसके सौजन्य को देखकर विमला सोचती की उन दोनों के बीच कितनी बड़ी खाई बन गई है।

विमला ने स्वयं ही श्याम से कहा था कि रमेश उसे तलाक़ देना

चाहता है। या अपने साथ उस महामारी वाले प्रदेश में ले जायगा। रमेश चाहता था कि वह स्वयं अनुभव करे कि श्याम कितना निस्पृह, कितना स्वार्थी और कितना कायर है। रमेश के व्यंग्यात्मक हास से उसके विचार में कितना साम्य था। वह सत्य ही कहता था। रमेश को यह सब मालूम था, इसीलिए उसने आया को मेरे लौटने से पूर्व ही सारे आवश्यक आदेश दे-दिए थे। विमला ने उसकी आँखों में तिरस्कार भरा देखा था। वह तिरस्कार उसके स्वयं के लिए और श्याम के लिए रह-रहकर छलक पड़ता था। वह सोचती थी कि कहीं रमेश श्याम की स्थिति में होता तो वह सचमुच ही मेरे लिए सब-कुछ भूल जाता, सब त्याग देता। विमला को इस सत्य का विश्वास भी था।—पर जब उसकी आँखें खुलीं तो कितना भयानक क़दम उठाने को रमेश ने उससे कह दिया। आरम्भ में उसे लगा कि रमेश केवल परिहास कर रहा था। वह मुझे नही ले जाएगा और इस विचार को वह तब तक पाले रही जब तक स्टेशन से गाड़ी रवाना हुई थी।

विमला रमेश की विचारधारा भाँप तक नहीं सकी।—उसे विश्वास था कि रमेश उसका मर जाना कभी नहीं चाहेगा। वह उससे प्रेम करता था। अब वह समझ नहीं रही थी कि प्रेम वास्तव में होता क्या है? उसे रमेश के प्रेम की एक-एक बात याद आरही थी। विमला की उदासी अथवा प्रसन्नता ही रमेश को उदास और प्रसन्न बनाती थी। यह हो नहीं सकता था कि रमेश अब उससे प्रेम न करता हो। क्या कोई भी किसीको चाहना छोड़ सकता है, इसलिए कि उभय पक्ष ने प्रेमी के प्रति निर्दयता का व्यवहार किया है? जितना श्याम ने मुझे सताया है, मैंने उतना तो रमेश को नहीं सताया। आज भी यदि श्याम मुझे इशारे से बुलाए तो मैं सारी दुनियाँ को छोड़कर उसकी बाँहों में चली जाऊँ। यद्यपि उसने मुझे छोड़ दिया है, मेरी परवाह नहीं की, वह मेरे प्रति निर्मम रहा; फिर भी मैं उसे चाहती हूँ; उससे प्रेम करती हूँ।

आरम्भ में विमला का विचार था कि समय सारे घाव भर देगा और रमेश उसे क्षमा कर देगा। वह सोच ही नहीं सकती थी कि रमेश सदा के लिए उससे दूर चला गया है। प्रेम किसी भी प्रकार फीका नहीं पड़ सकता। उसे विश्वास था कि रमेश अब भी उसे चाहता था, पर अब उसका विश्वास डोल रहा था। शाम को लालटेन के प्रकाश में जब वह अध्ययन मे व्यस्त होता, तो विमला रमेश के मुख की रेखाएँ पढ़ा करती थी। वह एक तख्त पर लेटा होता और वह स्वयं थोड़ा अँधेरे में होती। उसका शान्त मुख देख विमला सोचती कि उसका मुख कितना गम्भीर है। उन दोनों में आपस में कभी मन्द हास तक का आदान-प्रदान नहीं होता। वह पढ़ता रहता, पढ़ता रहता, जैसे विमला उससे हज़ारों मील दूर हो। रमेश को पुस्तक के पृष्ठ पलटते देखती और उसकी आँखें ताका करतीं और लाइन के बाद लाइन पर दौड़ती जातीं। वह निस्सन्देह मेरे विषय में नहीं सोचता। और जब खाने की मेज़ लगती, उसपर खाना लगता तो पुस्तक हटाकर रख देता और विमला को उस समय उसकी आँखों में साकार तिरस्कार दिखाई पड़ता। वह हड़बड़ा जाती। क्या उसका प्रेम सचमुच समाप्त हो चुका? क्या वह सचमुच ही मेरी मौत चाहता है? कितनी बेवकूफ़ी की बात है, कोई पागल ही ऐसी बात सोच सकता है। जैसे ही वह रमेश के मस्तिष्क के सम्बन्ध में सन्देह करती, उसके सारे शरीर में कँपकँपी दौड़ जाती।

रमेश के व्यवहार को विमला समझ नहीं पा रही थी। एक बात वह स्पष्ट देख रही थी कि आज का यह रमेश वह पहले वाला रमेश नहीं था। इसमें और उसमें आकाश-पाताल का अन्तर था।

विमला ने रमेश के पवित्र प्रेम का तिरस्कार किया था। श्याम के बाहरी रूप की मृगतृष्णा में आकर और वह श्याम भी कैसा तोता-चश्म निकला। कितनी नेक सलाह दी उसने मुझे कि मुझे यहाँ आकर कॉलरा की शिकार होने में दुनियाँ का तजुरबा होगा।

सो हो रहा है वह तजुरबा।

२७

विमला बॅंगले के गोल कमरे में पहुँचकर कुर्सी पर बैठ गई। कुलियों ने एक-एक कर बाहर से सामान उठाकर अन्दर रखना आरम्भ कर दिया था। रमेश बाहर बरामदे में आदेश दे रहा था, बता रहा था कि कौन-सी वस्तु कहाँ रखनी थी। विमला थककर चूर हो गई थी। कोई अपरिचित स्वर सुनते ही वह चौंकी।

"अन्दर आ सकता हूँ?"

वह पीली पड़ गई। वह बेहद थकी हुई थी और एक अजनबी को सामने देखकर घबरा गई थी। कोई पुरुष था, बाहर अँधेरे से आ रहा था। कमरे में एक छोटा लैम्प जल रहा था। उसका प्रकाश बाहर नहीं पहुँच रहा था। उस पुरुष ने अपना हाथ बढ़ाया।

"मेरा नाम विमल है। मुझे मालूम हुआ कि आप यहाँ पहुँच गई हैं।"

विमला ने देखा कि वह छोटे कद का, सिर घुटा हुआ एक दुबला-पतला आदमी था। उसका चेहरा छोटा, लम्बाई विमला से अधिक नहीं थी।

"मैं इसी देहात में रहता हूँ। आपको आते समय मेरा मकान नहीं दीख पड़ा होगा। मैं आशा करता हूँ कि आज आप मेरे साथ खाना खायेंगी। मैंने खाने का प्रबन्ध करा दिया है और और स्वयं को भी निमन्त्रित कर लिया है।"

"मुझे जानकर प्रसन्नता हुई।" विमला ने कहा।

"मैंने आपके लिए पहले डाक्टर वाले नौकर नियुक्त कर लिये हैं। वे अच्छा काम करेंगे।"

"यह ठीक किया आपने ।"

"हाँ ! बड़ा अच्छा आदमी था बेचारा । यदि आप चाहें तो कल उसकी क़ब्र पर चलें ।"

"आप कितने सज्जन हैं !" विमला ने मन्द हास से पूछा ।

उसी समय रमेश ने कमरे में प्रवेश किया । विमल ने रमेश को अपना परिचय बाहर ही दे-दिया था । वह बोला—"मैंने अभी आपकी पत्नी से कहा था कि- आज रात को मैं खाना यहीं खाऊँगा । जब से पहले डाक्टर की मृत्यु हुई है, मैं बोलने को तरस गया । केवल कुछ नर्सें हैं, उन्हींसे बातें की जा सकती हैं और वे भी इने-गिने विषयों पर ।"

रमेश ने कहा, "मैंने नौकर को कुछ लाने को कहा है ।"

नौकर सामान ले आया । विमला देख रही थी कि विमल बिना तकल्लुफ़ स्वयं ही खाने की चीजें खाने लगा । उसके बोलने और व्यव-हार से विमला समझ गई थी कि वह गम्भीर प्रकृति का मनुष्य नहीं था ।

"अहोभाग्य !" खाते हुए विमल ने रमेश से कहा—"आपका काम यहाँ बड़ा टेढ़ा है । लोग मक्खियों की भाँति मर रहे हैं । यहाँ का मजिस्ट्रेट तो घबरा गया है । इलाके का दारोगा बड़ी कुशलता से काम कर रहा है, जिससे यहाँ लूटमार न हो सके । यदि आँखें खोलकर काम न किया जाय, तो हम सब अपने-अपने बिस्तरों में ही मार डाले जायें । मैंने नर्सों से कह दिया है कि वे सब शहीद होना चाहती हैं । भला हो उनका ।"

विमल सरल और हास्य-भरे स्वर में बोल रहा था । उसके मुख पर मुस्कान विद्यमान थी ।

रमेश ने पूछा, "आप क्यों नहीं चले गये यहाँ से ?"

"मेरे आधे से अधिक कर्मचारी तो समाप्त हो गये, अन्य जो बचे हैं वे किसी भी क्षण मृत्यु का ग्रास बन सकते हैं । किसी-न-किसी को यहाँ रहकर प्रबन्ध तो सम्हालना ही है ।"

"आपने टीका लगवा लिया है न ?" रमेश ने पूछा ।

"हाँ ! पहले डाक्टर ने ही लगाया था । उसने अपने भी टीका लगाया था, पर उस सबसे क्या हुआ ? बेचारा मर गया ।" विमल ने विमला की ओर रुख किया, "मेरे विचार से तो यहाँ कोई विशेष भय नहीं है । आप तनिक सावधानी से रहें, बस ! दूध और पानी उबाल कर पियें । कच्ची सलाद या कच्चे फल न खायें । क्या आप अपने साथ कुछ ग्रामोफ़ोन-रिकार्ड भी लाई हैं ?"

"नहीं ! मैं नहीं लाई ।" विमला ने उत्तर दिया ।

"मुझे दुःख हुआ ! मैं तो समझता था, आप अवश्य लायेंगी । मेरे पास पुराने हैं, मैं उन्हें सुनते-सुनते थक गया हूँ ।"

नौकर आकर खाने के लिए पूछने लगा ।

विमल ने पूछा, "आज तो आप लोग 'ड्रेस' नहीं करेंगे । मेरा नौकर पिछले सप्ताह मर गया और नया जो आया है, वह बिलकुल मूर्ख है । मैंने शाम को कपड़े बदलना ही छोड़ दिया है ।"

"मैं जाकर कपड़े इत्यादि उतारूँगी ।" विमला ने कहा ।

विमला का कमरा बग़ल में था । उसमें थोड़ा-बहुत फ़र्नीचर था । आया लैम्प पास रखे विमला का सामान खोलकर सजाने में लगी थी ।

२८

खाने का कमरा छोटा था । उसमें मेज़ बहुत बड़ी पड़ी थी । दीवारों पर कुछ चित्र बने हुए थे ।

विमल बोला, "सरकारी कर्मचारी घरों में खाने की मेज़ें बड़ी रखते हैं । पब्लिक का रुपया इन व्यर्थ चीज़ों में नष्ट किया जाता है ।"

छत में एक बड़ा-सा मिट्टी के तेल से जलने वाला लैम्प लटक रहा था। विमला स्पष्ट देख रही थी कि विमल किस ढंग का व्यक्ति था। पहले तो विमल की गंजी खोपड़ी से विमला समझी थी कि वह युवक नहीं था, परन्तु बाद में उसने अनुमान लगाया कि उसकी आयु चालीस वर्ष से कम थी। चौड़े माथे से लेकर छोटे से मुँह तक उसमें कहीं कोई अधेड़ावस्था का लक्षण नहीं था। उसका चेहरा बन्दर-जैसा था, पर उस भद्देपन में भी कुछ आकर्षण था। उसका चेहरा देखकर कोई भी मुस्करा सकता था। उसका गठन, नाक और मुँह सब बिलकुल बच्चों-जैसे थे। छोटी आँखें, छितरी भवें, विचित्र सूरत थी। उसने स्वयं प्लेटें लगाईं और जब खाना लग गया तो वह खाने को उतावला हो उठा। वह इस समय बहुत प्रसन्न था।

विमल ने बातें छेड़ दीं। उसने कहा कि मसूरी में उसके बहुत से मित्र हैं। वह उनकी ख़ैर-ख़बर पाने को बड़ा उत्सुक है। उसने बताया कि कोई साल-भर पहले वह वहाँ गया था और एक सप्ताह ठहरा था। गर्मियों में वह कितनी ही बार मसूरी गया है।

अचानक वह पूछ बैठा, "श्यामबाबू का क्या हाल-चाल है ? सेक्रेटरी कब तक हो जाएगा ?"

विमला की साँस रुक गई। रमेश ने उसकी ओर नहीं देखा।

"कभी भी हो सकता है।" रमेश ने उत्तर दिया।

"उसके जैसे आदमी बढ़ ही जाते हैं।" विमल बोला।

रमेश ने पूछा, "आप उन्हें कैसे जानते हैं ?"

"मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। हम दोनों ने एक बार साथ-साथ यात्रा की थी। उससे पूर्व भी मेरी उनसे मुलाकात थी। आदमी बहुत चलता हुआ है।"

तभी नदी के उस पार से आती हुई ढोल पीटने और आग जलने से लकड़ी की चटचटाहट की ध्वनि सुनाई पड़ी। उनसे थोड़ी ही दूर सारा शहर भय से परेशान था, मौत शहर की गलियों में नाच रही थी; पर

विमल को जैसे उससे कोई मतलब नहीं था। उसने मसूरी के सम्बन्ध में बातें करनी आरम्भ कर दीं। वहाँ के सिनेमाओं के सम्बन्ध में उसने बताना प्रारम्भ किया। उसने यह भी बताया कि वहाँ कौन-कौनसे अच्छे खेल चल रहे थे। पिछली बार जब वह वहाँ गया था तो कौन-कौनसे खेल देखे थे, इत्यादि। उसे एक हास्य-अभिनेता की याद आई और वह हंस पड़ा। दूसरे ही क्षण एक सुन्दर अभिनेत्री की याद ने उसे आ घेरा और उसने बड़े गर्व से बताया कि उसके एक सम्बन्धी ने एक प्रसिद्ध अभिनेत्री से विवाह किया था। विमल ने कहा कि वह उस अभिनेत्री के साथ भोजन कर चुका था। अभिनेत्री ने उसे अपना चित्र दिया था। उसने कहा कि वह विमला और रमेश को जब अपने घर बुलायेगा, तो वह चित्र दिखायेगा।

रमेश अपने अतिथि को बराबर एक व्यंग्य-भरी दृष्टि से देख रहा था। फिर भी उसने कोई ऐसा संकेत नही किया कि उसे विमल की बातों में कोई रुचि नहीं थी। विमला जानती थी कि रमेश ये बातें केवल शिष्टाचार के नाते सुन रहा था। रमेश के होंठों पर फीकी-सी मुस्कान थी।

पर विमला न जाने क्यों, किसी गहरे सोच में डूबी हुई थी। उस घर में जहाँ उनके आने के कुछ ही दिन पहले एक डाक्टर की मृत्यु हो चुकी थी और उस नगर में जहाँ मृत्यु का नृत्य हो रहा था, उसे लगा कि वह दुनियाँ से कितनी अलग थी। यहाँ सब-के-सब निपट अकेले और आपस में नितान्त अपरिचित थे।

खाना समाप्त होते ही वह उठ खडी हुई।

बोली, "क्षमा कीजिये, मैं सोना चाहती हूँ, नमस्कार।"

विमल ने उत्तर दिया, "मैं भी चलूंगा, क्योंकि डाक्टर रमेश भी अब विश्राम करना चाहेंगे। कल हमें सवेरे-ही-सवेरे आस-पास की देख-भाल के लिए निकल पड़ना होगा।"

उसने विमला से हाथ मिलाया। वह सीधा खड़ा था। उसकी आँखों में एक विचित्र चमक-सी थी।

वह रमेश से बोला, "मैं आपको लेने आऊँगा और फिर आपको मजिस्ट्रेट और दारोगाजी से मिलाने ले चलूँगा। उसके बाद हास्पिटल चलेंगे। आज मैं केवल इतना कह दूँ कि आपका काम बड़ा टेढ़ा है, बड़ा भयानक है, परन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है।"

इतना कहकर विमल मुस्कराता हुआ वहाँ से चला गया। विमला अपने कमरे में जाने लगी तो रमेश बोला, "विमला! ठहरो ज़रा! सोने से पूर्व मैं तुम्हारे इंजेक्शन लगा दूँ और तुम मेरे ही कमरे में सोना। पृथक कमरे में सोने की आवश्यकता नहीं है।"

विमला ने रमेश की किसी बात के प्रति कोई आपत्ति प्रकट नहीं की।

२६

विमला को रात-भर विचित्र स्वप्न आते रहे। वह सो नहीं सकी। कभी वह देखती कि कुली उसे उठाये लिये जा रहे थे और उसे झटके लग रहे थे। वह ऐसी जगह से होती हुई जा रही थी, जहाँ डेरों में पड़े आदमी उसकी ओर उत्सुकता से देख रहे थे। सँकरी गलियाँ थीं, वहाँ न मालूम किस-किस चीज़ की दुकानें थीं। वह वहाँ से गुज़र रही थी और तभी लोगों का आना-जाना रुक गया। दूकानदार और ख़रीदार सब भयभीत से रह गये। उसके पश्चात् वह पहाड़ी पर उस यादगार पर पहुँची और उसके पहुँचते ही वह पहाड़ी दैत्याकार रूप में बदल गई। उसको लगा जैसे उस पहाड़ी के दोनों छोर किसी देवता की विशाल बाहुओं में बदल गये हों। जैसे ही वह वहाँ रुकी, उसे

पहाड़ी के नीचे हास्य सुनाई दिया। इतने में ही वहाँ श्याम आ गया और उसने उसे अपने आलिंगन में बाँध लिया। वह बोला, "मेरी ग़लती थी और मेरा मतलब तुम्हें क्लेश पहुँचाना कभी नहीं था। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और बिना तुम्हारे रह नहीं सकता।" विमला ने देखा कि श्याम का प्रेम उस पर छा गया और मारे प्रसन्नता के वह रो पड़ी। वह श्याम से पूछ रही थी कि आखिर उस समय वह निर्दयी क्यों हो गया था। उसने पूछने को तो पूछ लिया कि उसने ऐसा क्यों किया; पर वह जानती थी कि उस बात से उनके सम्बन्धों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। तभी अचानक उन्हें एक ज़ोर की चीख़ सुनाई पड़ी और वे पृथक हो गये। उसने देखा कि एक शव को कुछ मजदूर लिये जा रहे थे। वे सब फटे-मैले नीले कपड़े पहने थे।

विमला चौंक कर उठ बैठी।

रमेश भी विमला के बैठते ही उठ बैठा और विमला को सहारा देते हुए बोला, "डर गई तुम! शायद कोई भयानक स्वप्न देख रही थीं। यह स्वप्न देखना अच्छा नहीं रहता।"

विमला को थोड़ी सांत्वना मिली।

विमला आज अकेली थी। रमेश सवेरे ही चला गया था। दोपहर को आया, खाना खाया और बिना कुछ बोले फिर चल दिया और रात को खाने के समय लौटा। कुछ दिन वह बँगले से बाहर नहीं निकली। मौसम भी बहुत गरम था। सारा-सारा दिन वह कुर्सी पर पड़ी कुछ पढ़ा करती थी।

रात्रि में उस अपने खोये हुए सपने को वह फिर एक बार देख लेना चाहती थी। उसे और कुछ तो दिखाई न पड़ता था बस वह दैत्याकार दीवार अवश्य दीखती। उसी पर वह बराबर अपनी निगाहें लगाये रहती। उसके पीछे सारा नगर भयंकर महामारी के पंजे में सहमा-सा पड़ा दीखता।

अपनी नौकरानी से उसे नगर का कुछ समाचार मिल जाता था।

रमेश उससे बोलता नहीं था। कभी-कभी विमला ही उससे कोई प्रश्न करती अथवा बातें करती तो वह उदास और अनचाहे मन से उत्तर दे देता, अथवा बात कर लेता। जब वह बोलता तो विमला का सारा बदन सिहर उठता। सौ प्रतिदिन के हिसाब से वहाँ की आबादी समाप्त होती जा रही थी। जिसे महामारी एक बार छू जाती थी, उसका उभरना असम्भव हो जाता था। मन्दिरों के देवी-देवता सड़कों पर लाकर प्रतिष्ठित किये गये। उनकी आराधना होने लगी, पर फिर भी महामारी को दया न आई।

लोग इतनी तेज़ी से मर रहे थे कि मृतकों का दाह-कर्म करना कठिन हो गया था। कुछ घरों में परिवार-के-परिवार महामारी ने खा लिये, पानी देने वाला भी नहीं बचा। दारोगाजी कुशल अफ़सर थे। उन्हींकी बदौलत शहर में लूट-मार अब तक नहीं हो सकी थी। उन्होंने लावारिसों के दाह-कर्म के लिए अपने सिपाहियों को आदेश दे रखा था। उन्होंने एक बार एक दीवान को गोली का निशाना बना दिया था। उन्हें सन्देह हो गया था कि उसने किसी मकान में अनधिकार प्रवेश करने की चेष्टा की थी।

कभी-कभी विमला का बड़ा बुरा हाल हो जाता। वह इतनी भय-भीत हो उठती कि उसका सारा बदन थर-थर काँपने लगता। यह ठीक था कि तनिक सावधानी बरतने से महामारी के प्रकोप का प्रभाव नहीं हो सकता था; परन्तु विमला में भय समा गया था। उस भय का क्या इलाज था। वह यहाँ से भाग निकलने की भाँति-भाँति की स्कीमें बनाया करती थी। वह चाहती थी कि बिना कुछ लिये जिस अवस्था में भी वह थी उसीमें वहाँ से भाग निकले और किसी निरापद स्थान में पहुँच जाय। उसने एक बार सोचा कि वह अपने मन की भारी व्यथा विमल के सामने रखे और उसकी सहायता से मसूरी पहुँच जाय। कभी सोचती कि अपने पति के पाँव पर गिर पड़े और उनसे कहे कि वह बहुत डर गई है, बेहद डर गई है। उसे विश्वास था यद्यपि

रमेश उससे रुष्ट हैं और उससे घृणा करते हैं; फिर भी मानवता के नाते वह उस पर दया करेंगे।

पर यह सब सोचना व्यर्थ था। यदि वह चली भी गई तो कहाँ जाएगी? अपनी माँ के पास तो जाएगी नहीं। एक तो वह स्वयं माँ के पास नहीं जाना चाहती थी, दूसरे उसकी माँ ने भी उसका विवाह करके जैसे निस्तार पा लिया था। विमला श्याम के पास जाना चाहती थी; पर श्याम उसे नहीं चाहता। विमला को मालूम था कि यदि वह एकाएक श्याम के सम्मुख पहुँच जाएगी तो उसका क्या प्रभाव पड़ेगा। उसकी आँखों में श्याम की तस्वीर घूम गई कि वह मुँह लटकाये बैठा था और उसकी मुद्रा में सख्ती झाँक रही थी। विमला की ऊँगलियाँ गुथ गईं। उसका जी चाहा कि वह भी श्याम को उतना ही क्लेश पहुँचाये जितना उसे उससे मिला था। कभी-कभी हताश होकर वह सोचती कि रमेश उसे तलाक़ क्यों नहीं दे देता? मैं बरबाद ही तो हो जाऊँगी, पर उससे क्या रमेश भी तबाह हो सकेगा? कभी-कभी उसे रमेश के शब्द याद आते तो उसकी गर्दन लज्जा के मारे अनायास ही झुक जाती।

वह डाक्टर रमेश के विषय में न जाने कितनी देर तक सोचती रहती कि आदमी में इतना परिवर्तन कैसे आ सकता है। मैंने श्याम को प्रेम किया। उसने मेरा प्रेम ठुकरा दिया। परन्तु मैं फिर भी उसके लिए दीवानी हूँ।

डाक्टर रमेश ने मुझे प्रेम किया। मैंने इन्हें प्रेम नहीं किया। यह जानते भी थे कि मैंने परिस्थितिवश इनसे विवाह कर लिया था। परन्तु यदि इन्होंने प्रेम किया तो आज वह इनका प्रेम कहाँ गया। क्या इनका वह प्रेम केवल धोखा-मात्र था। क्या वह दिखावा था?

३०

आज जब विमला विमल से बोली तो घुमा-फिराकर श्याम के सम्बन्ध में बातें करने लगी। विमला और रमेश जिस दिन आये थे उसी दिन विमल ने श्याम की चर्चा की थी। उसने कुछ ऐसी मुद्रा बनाई थी कि वह श्याम को केवल अपने पति के मित्र के ही नाते जानती थी। विमल ने कहा, "वह आदमी मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। मैं तो उसके साथ उकता जाता था।"

विमला ने चमकती आँखों से उत्तर दिया, "तो आपका प्रसन्न करना भी टेढ़ी खीर है। मेरे विचार में तो वह मसूरी के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्तियों में से है।"

"मुझे मालूम है। उसके जैसे आदमी के गुण भी मुझे पता हैं। प्रसिद्धि का मन्त्र है उसके पास। वह जिस किसीसे भी मिलता है, ऐसा दिखाता है कि उसके अतिरिक्त उस मिलने वाले का दुनियाँ में और कोई सगा नहीं है। वह सदा हरएक की मदद के लिए उद्यत रहता है और यदि आपका कभी कोई काम पड़ जाये और वह न कर सके तो ऐसा दर्शायेगा कि यदि उससे काम नहीं हो सका तो दुनियाँ में उस काम को कोई नहीं कर सकता। बड़ा स्वार्थी आदमी है वह।"

"यह तो बड़ा आकर्षक गुण है।" विमला बोली।

"हाँ, अकेला आकर्षण कभी-कभी भार हो उठता है। मैं सोचता हूँ इससे अच्छा है किसी ऐसे व्यक्ति से मिला जाय जो अधिक ईमानदार हो—भले ही वह हर समय हँसी न बिखेरता हो। मैं श्याम का कई वर्षों से जानता हूँ और एक-दो बार श्याम के अन्तर में झाँकने का

अवसर भी मिला है। मेरी तो खैर कोई बिसात ही नहीं, एक मामूली आदमी ठहरा, परन्तु यह मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह बहुत बड़ा स्वार्थी है। उसे अपने से जितना प्यार है, उसके मुकाबले किसी आदमी से नहीं। वह अपने जीवन के तनिक-से आनन्द के लिए दूसरे आदमी का जीवन खराब कर सकता है। एक लड़की की कहानी मुझे याद है, जिसका जीवन उसने बरबाद किया था। वह तो भला हो इस महामारी का कि इसने उस बेचारी को ठिकाने लगा दिया, वरना बहुत दुखी थी बेचारी। उसके साथ इसने बहुत निर्दयता का व्यवहार किया था।"

विमला आराम-कुर्सी पर बैठी विमल की बात सुन रही थी। उसकी आँखें मुस्करा रही थीं। वह अपनी उँगली की अँगूठी से खिलवाड़ कर रही थी।

उसने कहा, "और वह आगे ही बढ़ता जाएगा। सारे अधिकारियों से उसका परिचय है। मुझे विश्वास है कि मैं उसे 'हिज़-एक्सीलैन्सी' कहकर सम्बोधित करूँगा।"

"बहुत से लोगों का विचार है कि वह योग्य और कुशल है, इसी कारण उसकी उन्नति होती जाती है।" विमला बोली।

"योग्यता ? बेकार की बात है। वह निपट मूर्ख है। वह आपको दिखाता-भर है कि वह अपने काम में कितना चौकस और कुशल है। परन्तु सत्य यह नहीं है। वह एक साधारण क्लर्क की तरह मेहनती भी नहीं है।" विमल बोला।

"तब उसे इतना चतुर क्यों माना जाता है ?" विमला ने पूछा।

"संसार में मूर्खों की कमी नहीं है और जब कोई अच्छे ओहदे पर हो और वह आपसे कोई वायदा कर ले, पूरा न करे और आपके पीछे आपकी बुराई करे, ऐसे आदमी साधारणतया चतुर समझे जाते हैं। फिर उसकी पत्नी भी तो है। वह सचमुच ही एक कुशल नारी है। उसकी बातें मानने योग्य होती हैं। श्याम जब तक उसके कहे में है, तब

तक उसकी कुशल भी है । सरकारी नौकरी पाने से पहले यदि सुघड़ पत्नी मिल जाये तो सोने पर सुहागा हो जाता है । सरकार कभी भी योग्य या चतुर व्यक्ति नहीं चाहती, न उसे नित्य नये-नये विचारों की आवश्यकता होती है, बल्कि उससे तो सरकार को असुविधा ही होती है । इसके विपरीत सरकार को आकर्षक एवं चलते-पुर्जे आदमी चाहिए, जो दिमाग़ से काम न लें, जिससे सरकारी काम में कोई गलती न हो । श्याम अवश्य शिखर तक पहुँचेगा ।"

"मुझे आश्चर्य है कि आप उसे बिलकुल भी पसन्द नहीं करते ।" विमला बोली ।

"मैं उन्हें नापसन्द नहीं करता ।" विमल बोला ।

"आपको उनकी पत्नी उनसे अधिक पसन्द है ?" विमला कहकर मुस्करा दी ।

"मैं पुराने विचारों का आदमी हूँ और मुझे क़ायदे में पली औरत ही अच्छी लगती है ।"

"काश, वह जितनी अच्छी तरह पली है उसी ढंग से रहना भी जानती है !"

"क्यों ? क्या वह कपड़े ठीक नहीं पहनती ? मैंने तो कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया ।" विमल बोला ।

"मैंने सुना है कि उन दोनों में बड़ा प्रेम है ।" विमला कहकर कनखियों से विमल को देखने लगी ।

"हाँ, श्याम अपनी पत्नी को चाहता है, इतनी उसमें अच्छाई है । मेरे विचार में यही उसमें एक अच्छाई की बात है ।"

विमला मुस्करा दी ।

"वह कुछ अन्य स्त्रियों से भी मिलता, बोलता है; पर उसमें गम्भीरता नहीं होती । वह बड़ा चालाक है । कभी किसी स्त्री को इतनी ढील नहीं देता कि उसके कारण उसे कोई असुविधा हो । वैसे

भी वह अधिक कामुक नहीं है, दम्भी है। वह केवल अपनी बड़ाई सुनना चाहता है। वह अब कुछ मोटा भी हो गया है। अवस्था भी लगभग चालीस की होगी। परन्तु अपने को सम्हाल कर रखा है। देखने में खूबसूरत आदमी है। मैं जब पहले-पहल मसूरी पहुँचा तो मैंने कई बार उसकी पत्नी को उसकी विजय पर गर्वित होते सुना।"

"क्या उसकी पत्नी श्याम के अन्य स्त्रियों के साथ सम्बन्ध के विषय में गम्भीरता से नहीं सोचती ?" विमला ने पूछा।

"बिलकुल नहीं। वह जानती है कि ऐसे सम्बन्ध अधिक नहीं टिकते। वह तो चाहती है कि जो स्त्रियाँ श्याम पर न्योछावर होती हैं वे उसकी भी सहेली बन सकें, पर अब तक सब बड़ी साधारण रही हैं। वह कहती है कि जो 'सेकेण्ड रेट' स्त्रियाँ श्याम से प्रेम करने लगती हैं उनकी ओर उसका विशेष खिचाव नहीं होता।"

विमल के जाने के पश्चात् विमला उसकी बातों पर सोचती रही। विमल के मुँह से वह सब सुनना उसे अच्छा नहीं लगा था, परन्तु किसी मजबूरीवश उसने वह सब सुना था। उसे सुनते समय उसे बहुत कष्ट सहन करना पड़ रहा था। वह कभी भी निर्दय होकर श्याम की बातों पर विश्वास नहीं कर सकती। उसे मालूम था कि श्याम मूर्ख था—दम्भी था—चापलूसी का भूखा था—उसे यह भी याद था कि श्याम अपनी चतुरता दर्शाने को कैसा सजग होकर अपनी कहानियाँ सुनाया करता था। उसे अपनी धूर्त्तता पर गर्व था। विमला सोचती थी कि श्याम की सुन्दर आँखें और सुन्दर आकृति देखकर क्यों उसने ऐसे व्यर्थ पुरुष पर अपना हृदय न्योछावर कर दिया। वह श्याम को भूल जाना चाहती थी। भूलना चाहती थी, क्योंकि घृणा में भी श्याम के लिए प्रेम होता था। श्याम का व्यवहार ही उसकी आँखें खोल देने के लिए पर्याप्त था। रमेश श्याम से घृणा करता था। काश, वह किसी भाँति श्याम को भुला सकती !—और श्याम के स्थान पर यदि उसकी पत्नी की सहेली बन सकती। काश, कमला के हृदय में उसके लिए चाह पैदा हो सकती !

पर कमला ने तो उसे सदा ही हीन समझा था। विमला के मुँह से बरबस हँसी निकल पड़ी। सोचा, यदि माँ को यह मालूम हो जाय कि मैं हीन समझी जाने लगी हूँ, तो उसे कितना कष्ट हो।

रात में फिर विमला ने श्याम को स्वप्न में देखा। उसने देखा कि श्याम ने उसे अपनी बाहुओं में बाँधकर प्रेम प्रदर्शित किया। यदि श्याम का शरीर थोड़ा भारी था और वह चालीस के आस-पास था, तो क्या हुआ? वह स्वप्न में हँस रही थी। श्याम का प्रेम उसके लिए बढ़ ही गया था। वह बालकों की भाँति प्यार करता था। विमला ने चाहा कि वह उसे पूरा सुख दे। जब जागी तो विमला की आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी।

वह नहीं समझ सकी कि नींद में ये सिसकियाँ क्यों थीं।

विमला कुछ देर तक रोती रही। रमेश की दृष्टि विमला पर पड़ी तो वह मुस्कराकर बोला, "निराशा का परित्याग कर जबतक तुम वास्तविकता को नही पहचान पाओगी विमला, निरन्तर कष्ट पाती रहोगी। मैंने तुम्हारी आँखों के सामने पड़े पर्दे को हटाने का प्रयास किया, परन्तु देख रहा हूँ कि वह हट नहीं सका। जिसे तुम प्रेम समझती हो, वह झूठी कामुकता है, उसमें कोई तथ्य नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तुम अब असलियत को पहचानो। मैंने तुम्हें समझने में कभी कोई भूल नहीं की। तुमने मुझे नहीं समझ पाया इसका भी मुझे ग़म नहीं। ग़म इस बात का है कि तुम अपने को भी नहीं पहचान पा रही। तुम्हारी आँखें जिस रूप पर भटक रही हैं वह रूप नहीं, कालिख है विमला, जो तुम्हारे मुख पर भी पुत गई है। मैं चाहता हूँ कि तुम कम-से-कम अपने मुँह की कालिख को धो डालो। और फिर जब तुम अपना साफ़ चेहरा लेकर उस काले मुँह वाले श्याम के सम्मुख जाओगी तो उसकी विलासप्रिय आँखें तुम्हारे चेहरे पर टिक नहीं सकेंगी।"

कहकर रमेश मौन हो गया।

विमला जाने क्यों बहुत देर तक रमेश के चेहरे पर देखती रही। रमेश ने विमला को अपनी कुर्सी के डंडे पर बिठला लिया।

विमला को आज बहुत सुख मिला।

३१

विमल, विमला से लगभग रोज़ ही मिलता। वह अपना काम समाप्त कर रमेश के बँगले तक टहलता हुआ आया करता था। इस प्रकार एक ही सप्ताह में विमला और विमल दोनों ही में घनत्व हो गया था। वैसे तो वहाँ के वातावरण में इतनी निकटता के लिए वर्ष लग जाता। एक बार विमला ने कहा कि यदि विमल वहाँ न रहा तो वह कैसे रहेगी। इस पर विमल ने हँसकर उत्तर दिया—"बात यह है कि आप और मैं शायद दो ही ऐसे व्यक्ति हैं जो वहाँ का ज़मीन पर शान्ति और बेफ़िक्री से घूमते हैं। नर्सों को तो मरीज़ों से ही अवकाश नहीं मिलता।"

विमला इस उत्तर पर हँस तो दी पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया, उसने अनुभव किया कि न चाहने पर भी विमल की चमकीली आँखें विमला को परख रही थीं। विमला को मालूम था कि वह चतुर व्यक्ति था। विमला, विमल को थोड़ा सताने में आनन्द लेती थी। विमला को उससे स्नेह हो गया था। विमल न तो अधिक बुद्धिमान् ही था और न ही विशेष चंचल, पर उसका बात करने का तरीका किसीको भी बरबस अपनी ओर खींच लेता था। उसकी गंजी खोपड़ी, हँस-मुख चेहरा और उसकी बातें, सब मिलाकर वह अच्छा लगता था। वह भिन्न-भिन्न नगरों में अर्से तक रहा था। उसका स्वभाव कुछ झक्की हो गया था। वह स्पष्टवादी था। उससे बात करके कोई भी प्रसन्न

हो जाता था। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण केवल हास्यमय था। वह मसूरी की खिल्ली उड़ाता था। शायद कुछ कटु अनुभव था उसे। 'कॉलरा' तक उसके हास्य का विषय था। वह दुखान्त कहानी सुना ही नहीं सकता था। वह कभी कोई बड़ी बहादुरी की कहानी भी सुनाता तो बिना उसे हास्यास्पद बनाये सुना ही नही सकता था। उसे अपने जीवन के न जाने कितने किस्से याद थे। उसकी कहानियाँ और किस्से सुनकर यही फल निकलता था कि सारा संसार बड़ा अभिनव, आकर्षक और सुन्दर है। विमल अध्ययन नही करता था, पर बातें सुन-सुनकर उसने अच्छा-खासा मसाला एकत्रित कर लिया था। वह विमला को अक्सर उपन्यासों की कहानियाँ या इतिहास की कहानियाँ सुनाया करता था। उसके कहने का ढंग स्वाभाविक एवं आकर्षक होता था। विमला उसकी बातों से समझी कि कदाचित् अनजाने ही विमल पाश्चात्य सभ्यता को बेहूदा समझने लगा था। केवल भारत ही सारी पृथ्वी पर एक देश है जहाँ वास्तविकता है, जहाँ का जीवन सार्थक है। यहीं पर मस्तिष्क का विकास हो सकता है। दूसरी ओर विमला सदा से ही सुनती आई थी कि भारत परतंत्र है, गुलामी के सब दोष यहाँ भरे पड़े हैं। विमल की बात से उसे लगा कि जैसे किसी पर्दे का हल्का सा भाग उठाकर कोई भीतर की जगमगाहट देख ले—ऐसी कि जिसका स्वप्न में भी उसने विचार न किया हो।

विमल, विमला के यहाँ बैठा रहता, बातें करता, हँसता-हँसाता रहता। इसमें दोनों का काफी समय निकल जाता।

विमला ने हिम्मत-भरे स्वर में उसे टोका, "आप मदिरा का सेवन इतना अधिक क्यों करते हैं ?"

"अपने जीवन में मेरा यही सबसे बड़ा शौक है और इसके अधिक पान से कॉलरा नहीं होता।" विमल बोला।

विमल जब गया था तो काफी नशे में था। परन्तु उसमें स्वयं को

सम्हाल सकने की शक्ति थी। मदिरा-पान के पश्चात् वह अधिक स्फूर्ति अनुभव करता था। असंयत होना उसने सीखा ही नहीं था।

उस दिन और दिनों की अपेक्षा रमेश जल्दी आगया था। उसने विमल से वहीं खाने का अनुरोध किया। खाने पर एक कौतूहलपूर्ण घटना घटी। उन्होंने 'सूप' के पश्चात् मछली खाई और तभी चिकिन के साथ ताज़ा हरा सलाद विमला को दिया।

विमला को सलाद लेते हुए देख विमल ऊँचे स्वर में बोला, 'यह क्या! क्या आप इसे खायेंगी?"

"हाँ! हम तो रोज़ खाते हैं।" विमला ने कहा।

रमेश ने कहा, "मेरी पत्नी को यह बहुत पसन्द है।"

प्लेट विमल की ओर बढ़ाई गई; पर उसने मना कर दिया। "धन्यवाद! मैंने अभी आत्महत्या का निश्चय नहीं किया।"

रमेश गम्भीरता से मुस्करा उठा और उसने अपने लिए सलाद ले लिया। विमल ने आगे कुछ नहीं कहा। वास्तव में वह चिन्तित हो उठा था और भोजन के उपरान्त तुरन्त ही वहाँ से चला गया।

रमेश-दम्पति रोज़ रात को सलाद खाते थे। उनके आने के दो दिन पश्चात् ही रसोइये ने सलाद बनाकर भेजा और विमला ने बिना किसी सोच-विचार के उसे खा लिया। रमेश तुरन्त ही चौंका था।

"तुम्हें यह नहीं खाना चाहिए। यह पागलपन है।" रमेश का मुख देखते हुए विमला ने उत्तर दिया था, "क्यों क्या हुआ?"

"यह खाना खतरे से खाली नहीं है। यह सब पागलपन है। मरने की इच्छा है क्या?"

विमला ने कहा, "शायद ऐसा ही हो।"

विमला बिना आगे बातें किये खाने लगी। उसमें मानो वीरत्व जाग गया था। वह उपहास-भरी आँखों से रमेश की ओर देख रही थी। उसने देखा कि रमेश का रंग पीला पड़ गया था; पर सलाद जब उसे

दिया गया तो उसने भी ले लिया। रसोइये ने देखा कि उन्होंने इन्कार नहीं किया और तब से वह हर दिन सलाद खाने पर भेजता रहा। ऐसा खतरा उठाना कितना अच्छा लगता था। विमला, जिसमें महामारी के प्रकोप का भय समा गया था, उसे निडर होकर खाती थी। कुछ इस विचार से कि वह रमेश से बदला ले रही थी और कुछ इससे कि वह अपने अन्दर का सारा भय निकाल देना चाहता थी।

उस दिन से वे दोनों ही बराबर सलाद खाते रहे, परन्तु उसका भय दोनों की आत्मा में समाया रहा।

३२

आज तीसरे दिन विमल फिर आया। कुछ ठहरकर उसने विमला से प्रस्ताव किया कि बाहर थोड़ा घूमा जाय। विमला भी जब से आई थी, बँगले की चारदीवारी ले बाहर नहीं गई थी। वह प्रसन्नतापूर्वक राजी हो गई।

विमल ने कहा, "यहाँ घूमने के लिए विशेष स्थान तो नहीं है; पर चलिए उस पठार तक चला जाय।"

"हाँ! हाँ! मैं कभी-कभी अपनी खिड़की से उसे देखा करती हूँ।"

एक नौकर ने दरवाज़ा खोला और वे दोनों बाहर धूल-भरी गली में बढ़े। वे कुछ ही कदम गये होंगे कि भय से चीखकर विमला ने विमल की बाँह जकड़ ली।

"ऊपर देखिए।" विमला बोली।

"क्या बात है?" विमल बोला।

"बँगले की बाहरी चारदीवारी के ढलाव पर कोई व्यक्ति टाँगें फैलाये और सिर पर हाथ रखे पड़ा है।"

विमला ने हाँफते हुए कहा, "लगता है, मर गया।"

"हाँ, मर गया। आप दूसरी ओर देखिए। मैं लौटते ही इसे उठवा दूँगा।"

पर विमला बुरी तरह काँप रही थी। वह अपने स्थान से हिल तक न सकी।

'मैंने आज तक कभी किसी मृतक को नहीं देखा था।"

"तब आप जल्दी ही इन्हें देखने की आदी हो जाइए; क्योंकि आप अपने इस सुन्दर स्थान के आस-पास ऐसे ही शव देखेंगी।"

विमल ने विमला का हाथ अपने हाथ में लिया और आगे बढ़ा।

विमला ने पूछा, "क्या यह 'कॉलरा' से मरा है ?"

"मेरा तो यही ख़याल है।"

अचानक वह पूछ बैठी, "इतनी संख्या में लोग मर रहे हैं, फिर भी आप कैसे मदिरा-पान कर लेते हैं, बात कर लेते हैं, हँस लेते हैं ?"

गम्भीरता से विमल ने उत्तर दिया, "देखिए, स्त्रियों के लिए यह स्थान आजकल नहीं रहा है। आप चली क्यों नहीं जातीं ?"

विमला होंठों पर मुस्कान-भरे कनखियों से उसे देख रही थी।

"मेरे विचार में ऐसी विषम परिस्थितियों में पत्नी का स्थान पति के समीप ही है।"

"जब मुझे तार मिला कि आप रमेश बाबू के साथ आ रही हैं तो मैं आश्चर्य से अवाक् रह गया था; पर बाद में मैंने सोचा कि सम्भव है आप नर्स हों और आपके लिए यह सब आपकी दिनचर्या में ही हो। मैं समझता था कि आप भी उन नारियों में से हैं जो हस्पताल में किसी के बीमार रहने पर जिन्दगी दूभर बना डालती हैं। आप जिस दिन यहाँ पहुँची थीं इतनी दुबली, कमजोर और पीली दिखाई पड़ रही थीं कि जिसकी हद नहीं।"

"आप क्या मुझे चुस्त और प्रसन्न देखना चाहते थे ?"

"आप तो अब भी वैसी ही दिखाई देती हैं। और यदि मैं थोड़ा और स्पष्ट कहूँ तो यह कि आप दुःखी भी रहती हैं।"

विमला सुनते ही मुरझा-सी गई; पर फिर भी उसने एक मोहनी मुस्कान से बात टालनी चाही।

"मुझे अफ़सोस है कि आपको मेरी मुद्रा नहीं सुहाती। जब मैं बारह वर्ष की थी, तभी मुझे अपनी नाक की लम्बाई देखकर कुढ़न होती थी; पर उस क्लेश को अनजाने ही छिपाये रहती हूँ। अब आपसे क्या कहूँ कि कितने ही मेरे हमउम्रों ने मुझे सान्त्वना दी है।"

विमल की चमकीली आँखें विमला को नीचे से ऊपर तक एक बार देख गई। विमला को पता था कि उसे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। फिर उसने सोचा कि जब तक विमल पर राज़ नहीं खुलता तब तक कोई चिन्ता नही होनी चाहिए।

"मुझे मालूम है कि आप लोगों की शादी को अभी अधिक समय नहीं बीता है। मुझे यह भी पता है कि आप दोनों एक-दूसरे से बड़ा प्रेम करते थे। मुझे विश्वास नहीं होता है कि आपसे उन्होंने यहाँ आने का प्रस्ताव किया होगा। अगर कहा भी हो तो आपको बिलकुल साफ़ मना कर देना चाहिए था।"

बड़ी सरलता से विमला ने उत्तर दिया, "हाँ, बात तो ठीक जँचती है।"

"जी, ठीक तो है, पर यह सत्य नहीं है।"

विमला उस कष्टप्रद बात को उससे एक बार सुन लेना चाहती थी। वह जानती थी कि विमल तीक्ष्ण बुद्धि का जीव था। वह यह भी जानती थी कि वह मुँहफट भी था। फिर भी वह दुखद बात उससे सुन सकने का लोभ संवरण न कर सकी।

"मुझे विश्वास ही नहीं होता कि अब आपको अपने पति से प्रेम है। मेरे विचार में तो आप इन्हें नापसन्द करने लगी हैं। सम्भव है

आप घृणा भी करने लगी हों ; पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपको उनसे भय ज़रूर लगता है ।"

एक क्षण विमला सामने दूर देखती रही । वह विमल को नहीं जानने देना चाहती थी कि उसकी इस बात का तनिक भी प्रभाव उस पर पड़ा ।

मीठे व्यंग्य से विमला ने कहा, "मैं देखती हूँ कि आपको मेरे पति कुछ विशेष अच्छे नहीं लगते ।"

"मैं उनकी बहुत इज्ज़त करता हूँ । वह चरित्रवान व्यक्ति हैं और बुद्धिमान भी । यह आपको मालूम होना चाहिए कि चरित्र और बुद्धि का मेल बहुत दुर्लभ होता है । मैं समझता हूँ आपको यह भी नहीं मालूम कि वह यहाँ क्या करते हैं, क्योंकि शायद वह आपसे बहुत अधिक बोलते भी नहीं । यदि कोई व्यक्ति अकेले ही इस महामारी को समाप्त कर सकते है तो वह डाक्टर रमेश ही हैं । वह बीमारों को दवा देते हैं, नगर की सफ़ाई करते हैं, पीने का पानी स्वच्छ बना रहे है । उन्हें विचार ही नहीं रहता कि वह कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं ? अपने जीवन को उन्होंने जोखिम में डाल दिया है । दारोगाजी उनके दास बन गए हैं । उन्होंने सब सिपाहियों को उनका आदेश मानने के लिए आज्ञा दी है । उन्होंने न जाने कौनसा मंत्र मजिस्ट्रेट के कानों में फूंक दिया है कि वह भी पूरी लगन से काम कर रहा है । उधर नर्सें तो उसके नाम की माला जपती हैं । उनके तो रमेश बाबू नायक बन गये हैं ।

"आप नहीं मानते ?"

"रमेश का यह सब काम तो नहीं है, वह तो जीव-शास्त्री हैं । है न ? उन्हें यहाँ बुलाया नहीं गया था । उनके सारे कार्य से कम-से-कम मुझे तो यह आभास नहीं होता कि समवेदना के नाते वह यहाँ आये हैं । पहले डाक्टर की और बात थी, उन्हें मानव से प्रेम था । चाहे वह कोई भी क्यों न हो; पर तुम्हारे पति के सम्बन्ध में यह बात नहीं है ।

और न ही उन्हें विज्ञान की खोज ही यहाँ घसीट कर ला सकी है । तब फिर वह यहाँ क्यों आये हैं ?"

"अच्छा हो यदि आप यह बात उन्हींसे पूछ लें ।" विमला बोली ।

"आप दोनों का साथ रहना भी मुझे ख़ासा दिलचस्प लगता है । कभी-कभी तो मेरी समझ में नहीं आता कि आप दोनों आपस में कैसा व्यवहार करते होंगे । मेरे सामने तो आप दोनों अभिनय-मात्र करते हैं और वह भी बड़ी बुरी तरह । यदि किसी नाटक-कम्पनी में आप लोग ऐसा अभिनय करते तो आपकी जीविका कठिन हो जाती ।"

विमला ने हँसकर कहा, "मेरी तो समझ में आपकी एक भी बात नहीं आती !" जो प्रभाव विमला पर हुआ था उसे मुख पर न दर्शाने का विमला प्रयास कर रही थी ।

"आप सुन्दर हैं । परन्तु यह कैसा मज़ाक है कि आपका पति आपकी ओर देखता तक नहीं । वह आपसे बोलता है तो लगता है कि वह ध्वनि रमेश के मुख से नहीं, कहीं और से आ रही है ।"

मुस्कराहट भूल, विमलाने गम्भीरता से पूछा, "क्या आप समझते हैं कि वह मुझसे प्रेम नहीं करते ?"

"मुझे नहीं मालूम ! मेरी न तो यह समझ में आता है कि आपने अपने प्रति उनके हृदय में घृणा उत्पन्न कर दी है और न ही यह कि वह आपको इतना अधिक चाहते हैं कि चाह में स्वयं ही जलते रहते हैं और आपसे नहीं बोलते और अपना प्रेम दर्शाना नहीं चाहते । कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि कहीं आप दोनों आत्महत्या करने तो यहाँ नहीं आये हैं ?"

विमला को उस दिन का सलाद वाला क़िस्सा याद आया कि उस समय विमल ने खोजती हुई निगाहों से उन दोनों की ओर देखा था । वह बोली, "आप बेकार की बातों को बड़ा महत्व देते हैं ।" और उठ खड़ी हुई । कहा, "अब घर चला जाय । आपको मदिरा चाहिए इस समय ।"

"आप बहादुर तो हैं नहीं। आपको यहाँ भय लगता है, मृत्यु का ध्यान रहता है। क्या आप सच-सच बता सकती हैं कि आप यहाँ से वापस नहीं जाना चाहतीं ?"

"परन्तु यह सब जानकर आप क्या करेंगे ?" विमला ने पूछा।

"मैं आपकी मदद करूंगा।" विमल बोला।

"आप मेरे दुःख के रहस्य को जानना ही चाहते हैं तो देखिए कि मेरी नाक कितनी लम्बी है।" विमला बोली।

विमल ने विमला को परखने की नीयत से निहारा। उसकी आँखों में घृणा और व्यंग भरा था; पर उस दृष्टि को देखकर लगता था कि जैसे नदी किनारे के पेड़ की छाया सहृदयता के नाते जल में पड़ रही हो। विमला ने यह देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"तो आप यहाँ रहना चाहती हैं ?" विमल ने पूछा।

"जी हाँ।" विमला बोली।

वे दोनों बँगले के पास जब पहुँचे तो मृतक भिखारी फिर दीख पड़ा। विमल ने विमला को सहारा दिया; पर उसने अपनी बाँह छुड़ा ली और खामोश खड़ी रह गई।

"कितना वीभत्स है !" विमला बोली।

"क्या ? मृत्यु ?" विमल ने पूछा।

"जी ! मौत हर चीज़ को कितना छोटा बना देती है। यह जो कभी आदमी था, अब वैसा नहीं लगता। इसकी ओर देखकर कौन कहेगा कि कभी जीवित था। कौन इसे देखकर सोचेगा कि वर्षों पहले यह भी छोटा-सा बालक था जो यहाँ दौड़ा करता था और दौड़-दौड़कर पतंग उड़ाता था।" विमला का कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

विमला तीव्रगति से आगे बढ़ गई। विमल भी उसके पीछे-पीछे कोठी के अन्दर चला गया।

३३

कुछ दिन बाद एक बार विमल, विमला के यहाँ बैठा हुआ मदिरा-पान कर रहा था, तभी उसने विमला को नर्सों का हाल बताया।

"वे बहुत ही अच्छी स्त्री हैं। उन्होंने मुझे बताया था कि सिस्टर किसी बड़े परिवार की लड़की हैं। परन्तु परिवार का नाम नहीं बताया। वह कहती हैं कि इस प्रकार की बातें करने का सिस्टर का आदेश नहीं है।"

"तो आप उनसे ही क्यों नहीं पूछ लेते ?" विमला ने मुस्कराकर कहा।

"यदि आप उनसे मिलें तो आपको पता चले कि ऐसा प्रश्न उनसे करना कितना कठिन है!"

"तब तो वह सचमुच ही बड़ी अच्छी स्त्री होंगी, क्योंकि उन्होंने आपको डरा दिया है।"

"आपके लिए मुझे उन्होंने एक सन्देश दिया था। उन्होंने कहा था कि आप सम्भवतः महामारी के क्षेत्र में नहीं जाना चाहेंगी; पर कम-से-कम एक बार उनका केन्द्र अवश्य देखें।"

"यह तो उनकी दया है। मैं तो समझती थी कि शायद उन्हें मेरे यहाँ होने की सूचना ही न हो।"

"मैंने ही आपके सम्बन्ध में बात की थी। मैं वहाँ सप्ताह में दो-तीन बार जाता हूँ कि शायद मेरे योग्य कोई काम हो तो कर सकूँ। मेरा तो विश्वास है कि आपके पति ने भी वहाँ आपका ज़िक्र किया है। आप स्वयं जाकर देखें कि डाक्टर रमेश के प्रति वहाँ कितना आदर है।"

"क्या आप ब्राह्मण हैं ?"

विमल की छोटी आँखों में अकस्मात् चमक आ गई। वह हँस पड़ा।

विमला ने पूछा, "आप मुझे घूर क्यों रहे हैं ?"

"इस बेकार की बात से क्या लाभ ; वैसे मैं ब्राह्मण नहीं हूँ। मैं अपने लिए कहा करता हूँ कि मैं भगवान् को मानता हूँ तो बिना किसी आपत्ति के मेरा अर्थ होता है कि मैं उनमें से हूँ जो भगवान् को नहीं मानते। जब सिस्टर दस वर्ष पहले यहाँ आई थीं, उनके साथ सात नर्सें थीं। उनमें से तीन का देहान्त हो चुका है। यहाँ का स्वास्थ्य-केन्द्र नगर के मध्य में है। वह भाग अत्यन्त ग़रीब है। वे सब अधिक परिश्रम करती हैं। किसी दिन भी उनकी छुट्टी नहीं होती।"

"अब क्या केवल सिस्टर और तीन नर्सें ही हैं ?"

"नहीं-नहीं, अब तो और अधिक आ गई हैं। अब सब मिलाकर छः हैं। जब उनमें से एक 'कॉलरा' से मृत्यु का ग्रास बन गई थी, तभी दिल्ली से दो और आ गई।"

विमला काँप उठी।

"क्यों, आप सुस्त क्यों हो गई ?" विमल ने पूछा।

"कुछ नहीं, लगता है जैसे कोई मेरे शव पर चल रहा हो।"

"उनके लिए दिल्ली छोड़ने का अर्थ था कि फिर कभी वापस नहीं जाना। वे बड़ा काम करने वाली लड़कियाँ हैं। वहाँ वे सब मानवता की सेवा के लिए आई हैं।

मैं इन स्त्रियों का त्याग देखकर कभी-कभी बदल जाता हूँ। मैं सोचता हूँ कि यदि मैं ईश्वर-विश्वासी होता तो शायद यह सब स्वाभाविक-सा लगता।"

विमला मौन थी। वह विमल की भावनापूर्ण बातों का अर्थ नहीं ढूँढ़ पा रही थी। वह सोचती थी कि कहीं वह अभिनय बो नहीं कर

रहा था । सोचती कि उसने मदिरा अधिक पी ली थी इसीलिए बहक रहा था ।

विमल ने स्मित-भाव से कहा, "आप स्वयं एक दिन वहाँ चलकर देखिए । वहाँ जाने में कच्चे टमाटर खाने जितना खतरा नहीं है ।"

"यदि आप नहीं डरते तो फिर भला मैं क्यों डरने लगी ?" विमला बोली ।

"मैं तो समझता हूँ कि वहाँ जाना आपको अच्छा लगेगा । सिस्टर से आप मिलेंगी तो आपको पता चलेगा कि मानवता के लिए तपस्विनी देवियाँ क्या करती हैं । उनके जीवन का त्याग देखकर आपकी आत्मा को निश्चय ही आनन्द की अनुभूति होगी ।"

"मैं जरूर चलूँगी विमल !" विमला तनिक उत्साहित होकर बोली । वह समझ ही न सकी कि यह कहते समय उसके अन्दर का सारा डर जाने कहाँ चला गया । वह जान ही न सकी कि उसके अन्दर इतना आत्मविश्वास कैसे पैदा हो गया !

३४

एक दिन वे दोनों स्वास्थ्य-केन्द्र की ओर चल पड़े । दोनों नगर के बीच में पहुँच गये थे, परन्तु दूकानें सब बन्द पड़ी थीं ।

"आजकल तो यहाँ का सारा कारोबार ही ठप्प है ।" विमल ने बताया । वह विमला के साथ-साथ चल रहा था । बोला, "यहाँ बड़ी भीड़ रहती थी । आदमी को इस जगह ढूँढ़े रास्ता नहीं मिलता था । सारी जगह मजदूरों से भरी रहती थी । भारी-भारी बोझ उठाये ये चलते जाते थे ।"

गली सँकरी और टेढ़ी-मेढ़ी थी । विमला को दिशा-ज्ञान नहीं रहा ।

दूकानें सब बन्द थीं। गलियों में हफ़्तों की गन्दगी इकट्ठी थी। दुर्गन्ध इतनी तीव्र थी कि उसे नाक पर रूमाल रखना पड़ा। जब अपनी यात्रा में विमला आ रही थी तब उसने देखा था कि भीड़-की-भीड़ उसे देखने को आतुर थी। पर अब उसने देखा कि कभी-कभी अनजाने ही किसी की निगाह उस पर उठ जाती थी। राही छितरे-बिथरे थे। सदा की भाँति वहाँ भीड़ और कोलाहल नहीं था। जितने भी व्यक्ति उस समय मार्ग पर थे, सब खामोश और उदास थे। कभी-कभी किसी मकान से उठता हुआ शोर कान में पड़ता था। उस शोर से पता चलता था कि बीमारी से मकान में किसीकी मृत्यु हो गई।

विमल ने एक स्थान पर रुककर कहा, "बस हम पहुँच गये।"

सामने एक छोटा-सा दरवाज़ा था, जिस पर 'स्वास्थ्य-केन्द्र' लिखा था। विमल ने बाहर से घण्टी बजाई।

वह बोला, "आपका स्वागत साधारण होगा, बहुत अधिक पाने का विचार न कीजियेगा।"

एक लड़की ने दरवाज़ा खोला। विमल से उसने कुछ बातें कीं और फिर उन दोनों को वह अन्दर ले गई। कमरा बहुत छोटा था, जो मकान में जाने के गलिहारे के बगल में था। कमरे में एक बड़ी मेज़ पड़ी थी, जिस पर 'आयलक्लाथ' चढ़ा हुआ था और दीवार के साथ-साथ कुर्सियाँ रखी हुई थीं। क्षण-भर बाद ही एक नर्स ने कमरे में प्रवेश किया। उसका क़द छोटा, रंग पीला, पर चेहरे पर स्वागत का भाव था और आँखों में प्रसन्नता। विमल ने उससे विमला का परिचय कराया। नर्स का नाम कान्ता था।

"आप डाक्टर की पत्नी हैं?" नर्स ने पूछा और फिर बताया कि सिस्टर अभी आती हैं।

विमला ने देखा कि दरवाज़ा खुला, पर ऐसे नहीं कि उसे किसीने चेष्टा से खोला हो, वरन् दरवाज़ा जैसे किसीके स्वागत में स्वयं खुल गया हो। सिस्टर ने प्रवेश किया। एक क्षण वह देहली पर खड़ी रहीं और हँसी। कान्ता और विमल के विदूषक-जैसे मुखों को देखकर स्मित हास्य उसके अधरों पर भी खेल गया। फिर आगे आकर उन्होंने विमला से हाथ मिलाया।

"आप मिसेज़ रमेश हैं न?" वह बोलीं और अभिवादन के लिए थोड़ा झुकीं। फिर बोलीं, "मुझे एक वीर और निर्भीक डाक्टर की पत्नी से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।"

विमला ने अनुभव किया कि सिस्टर की अकलुष आँखें उसे देख रही थीं; पर उसे बुरा नहीं लगा। विमला को लगा कि सिस्टर उसे जाँच रही थीं। उन्हें जाँचने के लिए विशेष आडम्बर नहीं करना पड़ा। बड़े सरल भाव से सिस्टर ने अतिथियों को बैठ जाने के लिए कहा और स्वयं भी बैठ गईं। कान्ता के मुख पर अब भी मुस्कान खेल रही थी। वह सिस्टर के थोड़ा पीछे खड़ी थी।

सिस्टर ने कहा, "आपको चाय प्रिय है, मैंने अभी तैयार कराई है। मुझे मालूम है कि मिस्टर विमल को 'ह्विस्की' पसन्द है; पर मैं उसका प्रबन्ध नहीं कर पाऊँगी।" वह हँस पड़ीं, पर उनकी गम्भीर मुद्रा में अर्थ निहित था।

"सिस्टर, आप तो ऐसे कह रही हैं जैसे मैं निरा शराबी ही हूँ।"

"मैं तो चाहती हूँ कि आप किसी दिन यह कहें कि आप मदिरापान कतन नहीं करते।" सिस्टर बोलीं।

"मैं कभी आवश्यकता से अधिक नहीं पीता।"

सिस्टरने कहा, "हम मिस्टर विमल का मान करते हैं। दो-तीन बार जब हमारे पास अनाथ बच्चों को खिलाने-पिलाने के लिए कुछ भी नहीं था तब इन्होंने हमारी सहायता की थी।"

जिस सिस्टर ने इन लोगों के आने पर दरवाजा खोला था वह कल ही आई थी। वह चाय लेकर आगई।

सबने साथ-साथ बैठकर चाय पी।

उन लोगों में इधर-उधर की बातें होती रहीं। साधारण-सी बातें हो रही थीं; पर सद्भाव के नाते। सारा केन्द्र इतना शान्त था कि एक दम से विश्वास नहीं होता था कि इतनी घनी आबादी वाले किसी नगर में वे बैठे थे। वहाँ शान्ति का आधिपत्य था। बाहर महामारी का प्रचण्ड प्रकोप था। सारी आबादी डरी हुई थी, सहमी पड़ी थी। केन्द्र बीमारों से भरा पड़ा था। लोग मरणासन्न थे। नर्सें बीमारों की देखभाल कर रही थीं।

विमला अनायास ही इस वातावरण की ओर खिंच गई। वह सिस्टर को बराबर देखे जा रही थी। वह सफेद परिधान में थीं। सब कुछ सफेद था, केवल हृदय की धड़कनें गर्म और लाल थीं। सिस्टर अधेड़-अवस्था की स्त्री थीं। चालीस-पचास के बीच की उम्र रही होगी। सही अवस्था आँक पाना कठिन था, क्योंकि उनके पीले-चिकने मुख पर झुर्रियाँ नहीं थीं, उनका शरीर गठा हुआ था, हाथ सुघड़, मज़बूत और सुन्दर थे। उनकी आवाज़ मधुर थी। वह धीरे-धीरे बोलतीं थीं, पर उनके व्यक्तित्व में एक विशेष बात थी कि उनमें बड़प्पन का बोध होता था। अपना कहा मनवाना उनकी आदत थी, पर उसके कारण उनमें घमण्ड नहीं था। विमला को लगा कि इस सबके होते हुए उनमें सहनशक्ति भी थी। विमल की बेसिर-पैर की बातों को भी वह बड़ी शान्ति और मन्द हास लिए सुनती रही थीं। इस सबके अतिरिक्त विमला

ने उनमें कुछ और भी पाया जिसे व्यक्त करने को उसे भाषा नहीं मिल रही थी।

विमला सिस्टर के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुई।

३६

विमल ने दूसरा 'केक' उठाया और खाने लगा। वह शरारत-भरी आँखों से कान्ता को देख रहा था। सिस्टर और कान्ता में कुछ बातें हुई; पर विमला समझ नहीं सकी।

"यदि श्रीमती रमेश केन्द्र देखना चाहती हैं तो मैं सहर्ष दिखाने को तैयार हूँ," वह विमला की ओर मुड़ीं और सस्मित स्वर में बोलीं, "इस समय आप देखेंगी तो, पर यहाँ सब कुछ अस्त-व्यस्त है। हमारे पास काम बहुत अधिक है, और नर्सें इतनी नहीं हैं कि सरलता से निपट जाय। दारोगाजी कहते हैं कि हम अपने केन्द्र को बीमार सिपाहियों के लिए दे दें। हमें केन्द्र के दूसरे भाग में एक और केन्द्र बनाना पड़ा है।"

सिस्टर ने दरवाज़े के बीच में खड़ी होकर विमला को अन्दर जाने का संकेत किया। साथ में कान्ता और विमल भी चले। शीतल स्वच्छ बरामदे में वे चले जा रहे थे। सबसे पहले वे एक बड़े कमरे में पहुँचे। वहाँ कुछ लड़कियाँ क़सीदे का काम कर रही थीं। सब-की-सब आगन्तुकों को देख, काम छोड़कर उठ खड़ी हुईं। सिस्टर ने उनके काम के कुछ नमूने विमला को दिखाए।

"हम यह सारा काम बराबर करते रहते हैं। कम-से-कम काम के समय महामारी का भय मन पर नहीं छाया रहता।"

वे दूसरे कमरे में गये। उसमें कुछ छोटी लड़कियाँ मशीन पर सादी सिलाई का काम कर रही थीं और उसके बाद वे सब तीसरे कमरे में

पहुँचे। वहाँ केवल छोटे बच्चे थे। उन सबकी निगरानी एक स्त्री कर रही थी। बच्चे शोर मचा रहे थे, खेल रहे थे। ज्योंही सिस्टर ने कमरे में प्रवेश किया। सब बच्चों ने आकर उन्हें घेर लिया। बच्चे सिस्टर का हाथ पकड़कर उनके दामन में छिप जाना चाहते थे। सिस्टर का मुख इस क्षण एक अनिर्वचनीय आनन्द से जगमगाने लगा। वह उनसे खेलने लगीं। वह बच्चों से उनकी ही भाषा में बोल रही थीं। सिस्टर उन सबके बीच मानो साकार दया की देवी होकर खड़ी थीं। वह वहाँ से चलने को हुई तो बच्चे उनका पीछा नहीं छोड़ते थे। वे सब-के-सब उनसे चिपट गये थे। सिस्टर ने मुस्कराहट-भरी फटकार बताई। बच्चे सिस्टर से भय करने का कोई कारण नहीं पाते थे।

सिस्टर ने बराँडे में चलते हुए कहा, "आपको मालूम है कि ये अनाथ केवल इसलिए हैं कि इनके माँ-बाप महामारी के शिकार हो गये हैं। अब हम लोग ही इनके माता-पिता हैं।" फिर वह कान्ता की ओर मुड़ीं और बोलीं "आज तो कोई बच्चा नहीं आया ?"

"चार।" कान्ता ने कहा।

"कॉलरा के कारण यह तादाद बढ़ती ही जा रही है।"

फिर वे सब-के-सब एक दरवाज़े पर रुके। वहाँ लिखा हुआ था, "अपाहिज-आश्रम।" विमला ने यहाँ ऐसी चीखें सुनीं, जो उसने पहले कभी नहीं सुनी थीं। सिस्टर ने दर्द-भरे स्वर में कहा, "हर कोई यह जगह नहीं देखना चाहेगा।" फिर एकाएक जैसे कोई विचार आया हो, बोलीं, "डाक्टर रमेश तो भीतर नहीं हैं ?"

सिस्टर ने कान्ता को संकेत किया। वह चेहरे पर मुस्कान लिये दरवाज़ा खोलकर भीतर चली गई। विमला स्वयं में सिकुड़ गई। दरवाज़ा खुला और कान्ता ने आकर बताया कि वह भीतर नहीं थे और अब काफी देर तक लौटेंगे भी नहीं।

"नम्बर छः का क्या हाल है ?"

"वह परलोक सिधार गया।"

सिस्टर ने हृदय पर हाथ रखकर कुछ प्रार्थना की। वे दालान में जा रहे थे कि विमला ने देखा सामने दो बिस्तर पड़े हुए थे और वे ढके हुए थे। सिस्टर ने विमल से कहा, "हमारे पास पलंग भी कम हैं। कभी-कभी तो दो रोगियों को एक पलंग पर लिटाना पड़ जाता है और ज्योंही कोई रोगी मरा कि हमने उसे बाहर निकाला, क्योंकि तुरन्त ही दूसरे रोगी का समुचित प्रबन्ध करना होता है!" वह विमल की ओर देखकर मुस्करा दीं।

विमला ने पूरा 'स्वास्थ्य-केन्द्र' देखा। स्वास्थ्य-केन्द्र क्या था, यह इस समय 'रोग-केन्द्र' बना हुआ था। उसे देखकर उसकी दशा कुछ विचित्र-सी हो गई। परन्तु जो विचित्र बात हुई वह यह थी कि वह भयभीत तनिक भी नहीं हुई। उसकी आत्मा को यहाँ आकर बहुत बल मिला। फिर सिस्टर उन सबको एक छोटे-से कमरे में ले गई। वहाँ एक मेज पर चादर से ढँका कुछ चुहल कर रहा था। सिस्टर ने चादर उठा ली। सामने चार नवजात शिशु लेटे थे। वे सब-के-सब लाल थे और अपने छोटे-छोटे हाथ-पाँव बराबर हवा में चला रहे थे।

"कितने चुस्त हैं। कभी-कभी ऐसे बच्चे यहाँ आते ही मर जाते हैं।"

कान्ता बोली, "श्रीमतीजी के पति डाक्टर रमेश इन बच्चों से घंटा-भर मन बहला सकते हैं। जब ये रोते हैं तो वह चट से इन्हें अपनी गोद में उठा लेते हैं। उनकी गोद में न जाने इन्हें कितना आराम मिलता है कि पहुँचते ही चुप हो जाते हैं और हँसने लगते हैं।"

विमला और विमल अब लौटने को हुए। वे बाहर के दरवाजे पर पहुँच गये। विमला ने सिस्टर को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। सिस्टर ने थोड़ा झुककर मानो उसे ग्रहण किया।

"मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। आपको शायद पता नहीं कि आपके पति हम पर कितनी दया करते हैं और हमारा कितना ध्यान रखते हैं। हमारे लिए तो जैसे वह स्वर्ग से आये हैं। मुझे यह देखकर कम आनन्द

नहीं हुआ कि आप भी उनके साथ यहाँ आई है। जब वह थककर घर पहुँचते होंगे तो आपसे मिलकर वह सब थकान और चिन्ता भूल जाते होंगे। आपका प्रेम उन्हें फिर हरा-भरा बना देता होगा। आप उनका पूरा खयाल रखा कीजिए और उन्हें बहुत अधिक परिश्रम न करने दीजिए। कम-से-कम हम लोगों की भलाई के लिए उन्हे पूरी सुविधा और आराम दिया कीजिए।"

विमला लाल पड़ गई। उससे कुछ कहते न बना। सिस्टर ने अपना हाथ बढ़ाकर विमला से मिलाया। जितनी देर दोनों के हाथ मिले रहे, विमला सिस्टर की आँखों को देखती रही। उसे सिस्टर विचारशील स्त्री जान पड़ीं।

कान्ता ने दरवाजे बन्द कर लिये। विमला आगे बढ़ गई। वे अब उन्ही सँकरी, गन्दी और टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से वापस जा रहे थे। विमल कभी-कभी कुछ बोल देता, पर विमला उत्तर न देती थी। जब वे नदी के किनारे पहुँचे और विमला, विमल के सामने आई तो विमल विस्मय से भौंचक्का रह गया। विमला की आँखो से आँसू बह रहे थे।

उसने आश्चर्य से पूछा, "क्यों, क्या बात हुई ?"

विमला ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा, "कुछ नहीं, मेरी मूर्खता है बस।"

"मन भारी न करो विमला ! क्या तुम्हारी इस आपत्ति में मैं तुम्हारा कुछ सहायक हो सकता हूँ ?"

"जो इतना मूर्ख हो कि हीरे को ठुकराकर पत्थर को छाती से लगाने का असफल प्रयास करे उसे आप कहाँ तक सहायता दे सकेंगे ? उसकी मूर्खता क्या उसका पीछा आसानी से छोड़ देगी ?"

३७

विमला अपने बँगले में खिड़की के सामने आराम-कुर्सी पर अकेली बैठी थी। उसकी दृष्टि सामने नदी के उस पार मन्दिर की ओर लगी थी। साँझ बढ़ रही थी। विमला ने अपनी भावनाओं को सम्भालने का प्रयास किया। उसमें कभी यह विचार भी नहीं उठ सकता था कि स्वास्थ्य-केन्द्र में एक वार जाने-भर से वह इतनी हिल जायेगी। वह तो वहाँ केवल उत्सुकतावश गई थी। वहाँ उसका कोई काम नहीं था। बहुत दिन तक घर की चारदीवारी में रहकर मन उकता गया था, तो उसने उन गन्दी-सँकरी गलियों में जाना स्वीकार कर लिया था।

पर, वहाँ उसे लगा कि जैसे वह किसी और ही दुनियाँ में पहुँच गई हो। उन सादे कमरों और बरामदों को देखकर उसे लगा था कि कोई अपरिचित आत्मा वहाँ निवास कर रही थी। वहाँ उसे हर वस्तु आकर्षक प्रतीत हुई। वहाँ वह था जो मन्दिरों में नहीं होता। जहाँ सजावट होती है, झाड़फानूस होते है, शीशे होते हैं, चित्र होते हैं, पर वहाँ जो कभी विमला ने नहीं देखा वह वहाँ पाया। कितने नियम और सुचारु रूप से इस घनघोर संकट में भी उस केन्द्र में काम हो रहा था और वहाँ कितनी शान्ति थी। खतरे में शान्ति का वास व्यावहारिकता का परिचायक था। मानो वहाँ की शान्ति इस घोर संकट पर व्यंग कर रही थी। वह सब कितना प्रभावशाली था। विमला के कानों में अब तक उन रोगियों की दहलाने वाली चीखें गूँज रही थीं।

रमेश के सम्बन्ध में आशातीत बातें उन्होंने कही थीं। पहले कान्ता ने कहा था। फिर सिस्टर भी अपनी बहुत शालीन भाषा में

उनकी प्रशंसा कर रही थीं। इच्छा के प्रतिकूल विमला को रमेश पर अभिमान हो आया। विमल ने भी रमेश के काम की प्रशंसा की थी, पर उसमें प्रशंसा का वह भाव नहीं था जिस भाव से नर्सो ने उसकी चर्चा की। मसूरी में लोग रमेश को चतुर मानते थे। वे भी उसकी विचारशीलता और सहृदयता का बखान करते थे। वह वास्तव में बड़ा सहृदय था। जब कोई बीमार पड़ता था तो उसे देखते ही बनता था। उसका स्पर्श आराम देता था। बीमारी जैसे दूर हो जाती थी। मानो उसकी उपस्थिति में ही कोई जादू था। उसके उपस्थित रहने-भर से कष्ट कम होता था। विमला को मालूम था कि रमेश की आँखों में उसका परिचित और पुराना स्नेह उसे नहीं मिलेगा। अब वह समझ पा रही थी कि रमेश के हृदय में कितना प्रेम भरा था। और वह उस प्रेम के भण्डार को उन घायलों और बीमारों पर लुटा रहा था। विमला को ईर्षा नहीं हुई, पर उसे स्वयं में कहीं कुछ खाली-खाली सा लगा। उसे लगा जैसे किसी सहारे पर कोई भारी वस्तु सधी हुई हो और सहारा हटते ही वह वस्तु एक ओर को ढह पड़ी हो। उस सहारे का जैसे उसे कभी भान ही नहीं हुआ था।

आज विमला को स्वयं से घृणा हो रही थी। शायद इसलिए कि कभी उसने रमेश से घृणा की थी। रमेश को अवश्य ही उसका भाव मालूम रहा होगा, पर उसने कितनी शान्ति से और बिना कटुता के उस सबको सहन कर लिया था। वह मूर्ख रही और रमेश उससे प्रेम करता रहा। आज उसे रमेश के प्रति घृणा नहीं थी, न उसके प्रति उदासीनता। आज उसमें रमेश का भय समा गया था। वह उलझ गई थी। विमला की समझ में कुछ नहीं आता था, बस एक बात उसकी समझ में आ रही थी कि रमेश में असाधारण गुण भरे हैं। कभी-कभी पहले भी उसे रमेश में आकर्षक गुरुता का भास होता था, परन्तु आज जैसा प्रभाव विमला पर कभी नहीं हुआ था। सिस्टर के रमेश की प्रशंसा में कहे गये वाक्य उसके कानों में गूंज रहे थे।

उस समय वह उससे प्रेम नहीं कर सकी। उसने प्रेम किया तो एक ऐसे पुरुष से जो बिलकुल ही व्यर्थ साबित हुआ। इतने दिन लगातार सोचते-सोचते वह श्याम को भली-भाँति समझ पाई थी वह साधारण मनुष्य था। उसकी साधारण आदतें थीं। काश, विमला श्याम को अपने मन से निकाल फेंक सकती ! उसने सोचा कि अब वह श्याम के विषय में कभी कुछ नहीं सोचेगी, नहीं सोचेगी, नहीं सोचेगी। यही वह व्यक्ति है जिसने उसका जीवन नष्ट किया।

विमल भी रमेश की इज्जत करता था। वही अकेली रमेश को सही न समझ सकी, क्यों ? क्योंकि रमेश विमला से प्रेम करता था, वह नहीं करती थी। आखिर मानव-हृदय में वह क्या चीज़ है जो अपने चाहने वाले को दुत्कारती है, पास नहीं फटकने देती; पर विमल ने तो स्वीकार किया था कि उसे रमेश अच्छा नहीं लगता। सम्भव है पुरुष उसे न चाह सकते हों; पर उन नर्सों में रमेश के प्रति कितना स्नेह था, कितना अनुराग था ! उसका व्यवहार स्त्रियों के साथ भिन्न था। उसकी शर्मीली प्रकृति को देखकर वे उसे दयालु समझती हैं।

वह है भी वास्तव में दयालु ही। आज विमला की दृष्टि अपने व्यवहार पर गई। आज तक उसने अपने प्रति दूसरों के ही व्यवहार पर दृष्टि डाली थी। उसने सोचा कि उसने रमेश के साथ कैसा व्यवहार किया और फिर भी उसके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आया। उसने कभी उसका अपमान करने के लिए एक शब्द भी नहीं कहा, कभी उसकी ओर क्रुद्ध दृष्टि तक से नहीं देखा।

वह सहम-सी गई। उसने निश्चय किया कि वह रमेश से अपनी मूर्खता के लिए क्षमा-याचना करेगी।

३८

उस दिन संध्या को रमेश नित्य की अपेक्षा बँगले पर शीघ्र ही लौट आया था। विमला आराम-कुर्सी पर खिड़की के सामने बैठी थी। झुटपुटा-सा हो चला था।

रमेश ने पूछा, "क्या लैम्प की आवश्यकता नहीं है ?"

विमला बोली, "खाना बनाने के बाद नौकर स्वयं ले आयेगा।"

रमेश विमला से कभी-कभी यों ही इधर-उधर की कोई बात कर लिया करता था, जैसे वे दोनों पति-पत्नी न होकर दो परिचित-भर हों। पर रमेश के व्यवहार से कभी भी नहीं लगा कि उसके हृदय में विमला के लिए द्वेष भरा था। उसने कभी भी विमला से आँखें नहीं मिलाईं और न ही वह उसके सम्मुख कभी मुस्कराया। वह आवश्यकता से अधिक नम्र था।

विमला ने पूछा, 'रमेश, इस महामारी के बाद तुम्हारा क्या विचार है ?"

रमेश उत्तर से पहले क्षण-भर चुप रहा। विमला उसका मुँह नहीं देख पा रही थी।

"मैंने अभी इस पर विचार नहीं किया है।" रमेश बोला।

पहले विमला के मन में जो आता रमेश से कह दिया करती थी, उसे बोलने के पहले कभी सोचने की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं हुई। पर अब ! अब वह रमेश से डरने लगी थी। उसके होंठ काँप रहे थे। हृदय की धड़कनें बढ़ गई थीं।

"आज तीसरे पहर मैं 'स्वास्थ्य-केन्द्र' में गई थी।"

"हाँ, मुझे मालूम हुआ था।"

विमला बड़ा प्रयत्न करके बोल पा रही थी और शब्द उसका साथ नहीं दे रहे थे।

"क्या तुम सचमुच मुझे यहाँ मारने को लाये थे रमेश ?" विमला ने पूछा।

"विमला, तुम्हारी जगह मै होता तो अकेले ही निभा लेता। परन्तु मेरी समझ में ये बातें करना ही व्यर्थ है। अच्छा हो कि हम वह सब भूल जाएँ। भूल जाने से हमें अधिक शांति मिलेगी।"

"परन्तु न तुम्ही भूल पाते हो और न मैं ही। मैं यहाँ जब से आई हूँ, यही सोचती रही हूँ। जो कुछ मुझे कहना है, क्या तुम वह भी नहीं सुन सकते ?"

"ज़रूर सुनूँगा। तुम्हारी एक-एक बात बड़े ध्यान से सुनूँगा विमला ! तुम कहो जो कहना चाहती हो।"

"मैंने तुम्हें बड़ा दुःख दिया है। मैंने तुम्हारे विश्वास को धक्का पहुँचाया है।" विमला बोली।

रमेश मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। उसका निश्चल रहना और भी डर उपजाता था।

विमला ने कहा, "मुझे नहीं मालूम कि तुम मेरी बात समझोगे या नहीं। वैसी बातें जब समाप्त हो जाती हैं तो नारी के लिए उनका कोई महत्व नहीं होता। मुझे मालूम नहीं कि पुरुषों पर क्या प्रभाव पड़ता है।" विमला को इस समय अपना स्वर पराया-सा लग रहा था। "तुम्हें मालूम था कि श्याम कैसा आदमी है और तुम्हें यह भी मालूम था कि वह क्या करेगा। तुम्हारा विचार सही था। वह बिलकुल बेकार आदमी निकला। अगर मैं स्वयं बेकार न होती तो क्यों उसके पंजे में फँस जाती ? मैं तुमसे क्षमा नहीं माँगती। मैं तुमसे पहले-सा प्रेम भी नहीं माँगती; पर क्या हम दोनों मित्रों की भाँति भी नहीं रह सकते ? यहाँ इस महामारी में चारों ओर इन्सान मर रहे हैं और 'स्वास्थ्य-केन्द्र में वे नर्सें······।"

रमेश ने बात काटी, "उनका इस सबसे क्या सरोकार ?"

"हाँ ! मैं नही जानती । मैं आज जब वहाँ गई तो एक ही विचार मुझे घेरे रहा कि उनका इससे बड़ा सम्बन्ध है । यहाँ सब कुछ कितना डरावना है और ऐसे वातावरण में उनका त्याग कितना आदर्श है । मैं यह सोचे बिना नहीं रह पाती कि मुझ जैसी मूर्ख स्त्री ने, जो तुम्हारी सगी नही हुई, तुम्हें कितना दुःख दिया है। मैं सचमुच निरर्थक हूं और बिलकुल इस योग्य नहीं हूँ कि तुम मेरे सम्बन्ध में सोचो या मुझ पर दया करो ।"

रमेश ने न तो उत्तर ही दिया और न ही वह टस-से-मस ही हुआ । लगता था जैसे वह विमला के और बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

विमला ने कहा, "विमल और उन नर्सों ने मुझसे तुम्हारी कितनी प्रशंसा की रमेश ! मुझे तुम पर गर्व है ।"

रमेश बोला, "पर तुम तो ऐसा नहीं सोचतीं । तुम तो मुझसे घृणा ही करती रही हो । क्या अब नही करतीं ?"

"तुम नहीं जानते कि मैं तुमसे कितना डरने लगी हूँ, रमेश ।" विमला रोकर बोली ।

रमेश फिर मौन था ।

अन्त में वह बोला, "मैं तुम्हें नहीं समझ सकता, विमला ! मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर तुम चाहती क्या हो ?"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए, केवल इतनी इच्छा है कि तुम किसी प्रकार अपना दुःख कम करो । केवल यही भीख माँगती हूँ आपसे ।"

विमला को लगा कि रमेश और कठोर हो गया है । उसके उत्तर का स्वर गर्म था—बोला, "मुझे दुःखी समझकर तुमने भूल की है । मेरे पास काम इतना अधिक है कि मैं तुम्हारे सम्बन्ध में सोच ही नहीं पाता ।"

"पता नहीं सिस्टर मुझे 'स्वास्थ्य-केन्द्र' में काम करने की अनुमति देंगी

या नहीं ? उनके पास काम बहुत है। यदि मैं उनके किसी काम आ सकूँ तो उनका मुझ पर अहसान होगा।"

"परन्तु वह सारा काम न तो सरल है और न ही उसमें कोई दिलचस्पी का साधन है। मुझे इसमें सन्देह है कि तुम अधिक दिन वह सब कर सकोगी।"

"रमेश ! तुम्हें सचमुच मुझसे इतनी नफ़रत है ?" विमला बोली।

"नहीं।" रमेश का स्वर भारी था। "मुझे स्वयं से घृणा है। मुझे लगता है विमला कि मेरा अपना जीवन निरर्थक हो गया। मेरे जीवन के सब स्वप्नों पर तुमने पानी फेर दिया। जिस विमला को मैंने फूल के समान अपनी प्यार की तूलिका से रँगा, उसे उस कामुक श्याम ने अपने जूते के तलवे से कुचल दिया। मैं खून का घूँट पीकर रह गया विमला ! मेरा आत्म-सम्मान मुर्दा हो गया। मेरे सीने पर......"कहते-कहते रमेश की ज़बान बन्द होगई।

३६

नियम से रमेश खाना खाने के बाद बैठकर थोड़ी देर पढ़ता था। विमला जब सो जाती थी तो वह पुस्तक रखकर अपनी प्रयोगशाला में चला जाता था। अपने बँगले के ही एक कमरे में उसने प्रयोगशाला बना ली थी। देर रात गये तक वह वहीं कुछ-न-कुछ काम किया करता था। रमेश बहुत कम सोता था। विमला कभी न समझ सकी कि वह आखिर अपनी प्रयोगशाला में क्या अन्वेषण किया करता था। उसने कभी विमला को अपने कार्य के सम्बन्ध में बताया भी नहीं। वह बातें करने का आदी नहीं था। विमला रमेश के शब्दों पर गहराई से विचार कर रही थी। उन दोनों की बातचीत उन्हें किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा सकी। विमला रमेश को इतना कम समझती थी कि वह सरलता से विश्वास नहीं कर

पा रही थी कि जो कुछ थोड़ी देर पहले रमेश ने कहा, वह सत्य था या नहीं। क्या यह भी सम्भव हो सकता था कि अब जब कि रमेश उसके लिए सब कुछ था, वह खुद रमेश के लिए कोई माने न रखती हो। इस विचार ने उसे बता दिया कि कहाँ तो उसकी बातें रमेश को इतनी अच्छी लगती थीं और कहाँ अब वह सुनना ही नहीं चाहता उसकी बातें।

विमला रमेश को एकटक देख रही थी। लैम्प के प्रकाश में वह एक ओर से रमेश का मुख देख पा रही थी; जैसे वह सिक्के पर खुदी हुई तस्वीर हो। उसके नक्श बड़े सुन्दर थे; पर वह सब मिलाकर अत्यन्त गम्भीर था। वह निश्चल बैठा पढ़ रहा था, केवल पंक्तियों के साथ उसकी आँखों की पुतलियाँ चल रही थीं। विमला सोच रही थी कि रमेश को इस मुद्रा में देखकर कौन कह सकता था कि वह सहृदय भी है, अथवा व्यवहार में नम्र होगा? पर वह जानती थी और तभी इस मुद्रा से कुढ़ गई थी। उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा सुन्दर, सच्चरित्र, ईमानदार और भरोसे वाले रमेश से आख़िर वह क्यों प्रेम नहीं कर सकी? सहसा विमला को सुख-सा अनुभव हुआ कि अब वह कभी उसके आलिंगन में नहीं जायेगी।

विमला के पूछने पर कि वह यहाँ उसे अपने साथ क्यों लाया, क्या प्राण लेने? रमेश ने कभी उत्तर नहीं दिया। यह रहस्य विमला को तिल-तिल खा रहा था। उसने सोचा कि रमेश में बहुत अधिक दया है, उसका ऐसा घृणित विचार नहीं हो सकता था। रमेश उसे केवल श्याम से पृथक करना चाहता था—उसे केवल डराना-भर चाहता था।

हाँ, और रमेश ने कहा था कि वह स्वयं से नफ़रत करता है। आख़िर इससे उसका क्या मतलब था? विमला ने एक बार फिर रमेश को देखा। अब भी उसके मुख पर वही भाव स्थिर था। उसे लगा कि रमेश को शायद उसके कमरे में उपस्थित होने का भी ज्ञान नहीं था।

विमला ने शाम की बात को जारी रखते हुए कठिनाई से पूछा, "तुम स्वयं से नफ़रत क्यों करते हो ?"

रमेश ने पुस्तक रख दी और विमला को देखने लगा, मानो विमला के मुख पर लिखी कोई भाषा पढ़ लेना चाहता हो। लगा, जैसे वह कहीं खोये हुए विचारों का सूत्र पकड़ पाने की चेष्टा कर रहा हो।

"क्योंकि मैंने तुमसे प्रेम किया था।"

विमला शर्म से लाल पड़ गई—वह सामने देख नहीं सकी। वह रमेश की निगाह नहीं सह पा रही थी। वह रमेश के कहने का अर्थ समझ गई। थोड़ा रुककर बोली, "तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो। मेरे दुष्ट होने पर अथवा मूर्ख होने पर, मुझ पर, रोष करना व्यर्थ ही तो है। मैं क्या करूं—मुझे पाला ही इसी प्रकार गया था। जितनी लड़कियों को मैं जानती हूँ, सब ऐसी ही हैं···तुम्हारे विचारों तक मैं पहुँच न पाई। तुमने जो गुण मुझमें पाने की बात सोची वे मुझमें नहीं थे, तो इसमें मेरा क्या दोष ? मैंने तुम्हें कभी धोखा नहीं दिया—मैंने कभी यह नहीं किया कि जो मैं नहीं हूँ वह बन गई हूँ। मैं केवल सुन्दर थी और हँसमुख थी। तुम्हीं बताओ क्या मेले-ठेले की छोटी दूकानों पर तुम्हें असली मोतियों का हार मिल जायेगा ? वहाँ तो तुम्हें केवल छोटे-मोटे खिलौने ही मिल सकते हैं।"

"मैं तुम्हें तो दोष नहीं देता।" रमेश बोला।

रमेश की आवाज़ थकी-सी थी। विमला का मन अब उकता रहा था। विमला ने सोचा कि सरल-सी बात जो मैंने समझ ली उसे रमेश क्यों नहीं समझ पाता। हमारे चारों ओर महामारी और मौत का ताण्डव हो रहा है—उसमें नर्सें जी-जान से लगी हैं—ऐसे में हमारे लिए ये अर्थहीन बातें करना उचित नहीं है। यदि कोई स्त्री चरित्र-भ्रष्टा हो गई तो उसका पति उसके सामने इतने ग़म में क्यों खो जाये ? उसे आश्चर्य हुआ कि रमेश जैसा चतुर व्यक्ति इतनी-सी बात क्यों नहीं समझ पाता ? —क्या केवल वह इसलिए दुःखी है कि रमेश ने उसे स्वर्ण-प्रतिमा

बनाकर पूजना चाहा था, पर जब वास्तविकता का पता लगा तो गुड़िया में से बुरादा झड़ पड़ा। क्या इसी कारण वह न तो स्वयं को और न ही मुझे क्षमा कर रहा है ? वह व्यर्थ विश्वास कर बैठा था, पर जब वास्तविकता का पता चला तो सब कुछ बिखर गया।...ठीक तो है कि जब वह स्वयं को क्षमा नहीं कर पा रहा तो मुझे ही कैसे क्षमा कर सकता है।

विमला को लगा जैसे रमेश ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा हो। उसकी निगाहें अनायास रमेश पर टिक गईं। किसी अनजान विचार से विमला थर्रा गई। उसका श्वास रुक गया। वह कठिनाई से अपनी चीख रोक सकी।

उसने सोचा, क्या व्यक्ति की इसी अवस्था में उसे 'भग्न-हृदय' कहा जाता है ? क्या इसीका दूसरा नाम पागलपन नहीं है ?

४०

दूसरे दिन विमला 'स्वास्थ्य-केन्द्र' के विषय में सोचती रही। तीसरे दिन सवेरे जब रमेश काम पर चला गया तो आया के साथ विमला भी 'स्वास्थ्य-केन्द्र' की ओर चल पड़ी।

नगर की सड़कों पर सन्नाटा था। लगता था वह मृतकों का नगर था। इक्का-दुक्का आदमी जो कभी-कभी सामने से गुजर जाता था उसे देखकर विचार उठता था कि वह जैसे मृतकों का प्रेत था। आसमान साफ़ था। तीखी धूप पड़ रही थी। ऐसे प्रकाश में यह कल्पना कठिन थी कि सवेरे-सवेरे सारा शहर जैसे दम तोड़ता हुआ दिखता था,—लगता था किसी व्यक्ति की जान खींची जा रही हो। यमराज का काला रूप धारण किए कोई प्राण निकाल रहा था। सवेरे के प्रकाश को देखकर लगता

था मानो मरते हुए और दुःखी मानव के साथ प्रकृति अन्याय कर रही थी। विमला 'स्वास्थ्य-केन्द्र' के द्वार पर रुकी। विमला ने देखा एक भिखमंगा भीख माँग रहा था। वह चिथड़े लपेटे था। उन फटे-चिथड़ों में से उसका सिकुड़ा हुआ शरीर झाँक रहा था—उसकी खाल काली पड़ी हुई थी। उसकी टाँगें टेढ़ी थीं—सिर पर रूखे सफेद बाल, गाल धँसे हुए, आँखें ज्योतिहीन। विमला उसे एकाएक देख, भयभीत होकर अलग हट गई। विमला ने उस भिखमंगे को चन्द पैसे दिये।

विमला 'स्वास्थ्य-केन्द्र' के निकट पहुँच गई। वहाँ दरवाजे खुले हुए थे। आया ने आगे जाकर विमला के पहुँचने की सूचना सिस्टर तक पहुँचाने को कहा। विमला को पहले वाले कमरे में ले जाया गया। विमला ने उस कमरे का ध्यान से निरीक्षण किया। उसे लगा कि कमरे की खिड़की एक अर्से से नहीं खुली थी। उसे वहाँ बैठे-बैठे काफी समय बीत गया। वह सोचने लगी कि शायद उसके पहुँचने की सूचना अभी अन्दर नहीं पहुँचाई गई। काफी देर बाद सिस्टर ने कमरें में प्रवेश किया।

आते ही सिस्टर ने नम्र वाणी में कहा, "इतनी देर तक आपके अकेले बैठने के लिए क्षमा चाहती हूँ। मुझे आपके आने की आशा नहीं थी और इसके अतिरिक्त आज मैं व्यस्त भी बहुत थी।"

विमला ने उत्तर में कहा, "मुझे असमय में आने के लिए क्षमा करें, मैंने आपको कष्ट दिया।"

सिस्टर ने मुस्कान के साथ विमला की बात सुनी। उन्होंने विमला को प्रेमपूर्वक बिठाया। विमला स्पष्ट देख रही थी कि सिस्टर की आँखें सूजी हुई थीं। वह बराबर रोती रही थीं। विमला को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे तो विश्वास हो गया था कि सिस्टर को भौतिक जगत् का कोई कष्ट नहीं सता सकता।

वह बोली, "मुझे लगता है कोई घटना घटी है। यदि आप कहें तो मैं वापस चली जाऊँ?—फिर किसी दिन दर्शन करूँगी।"

उत्तर में सिस्टर का कण्ठ रुँधा हुआ था। उन्होंने कहा, "नहीं-नहीं! मुझे कुछ नहीं हुआ है, हमारे बीच से एक नर्स कल रात परलोक सिधार गई।—मुझे दुःख नहीं मानना चाहिए। मुझे पता है कि वह पवित्र आत्मा स्वर्ग के ही योग्य थी। वह बहुत साध्वी थी। परन्तु क्या करूँ? अपनी दुर्बलता को दबाकर कोई नहीं रख सकता। मैं भी सदा ही बुद्धि का कहना नहीं मान पाती। भावना का आवेश कभी-कभी मुझ पर भी छा जाता है।"

विमला ने धीमे स्वर में कहा, "मुझे बहुत दुःख हुआ यह जान कर।"—और विमला की आँखों से आँसू गिरने लगे।

सिस्टर ने कहा, "मेरे साथ वह दस वर्ष की आई थी। अब हमारे साथ कुल तीन नर्सें रह गई हैं।"

सिस्टर के निष्कपट और सरल मुख पर झुर्रियाँ पड़ गईं—वह अपने आँसू यत्न करने पर भी नहीं रोक सकी। विमला दूर कहीं देख रही थी। विमला ने सिस्टर के उस भावावेश में न बोलना ही उचित समझा।

सिस्टर ने कहा, "मैं उस सिस्टर के पिता को बराबर उसकी सूचना दिया करती थी। मेरी ही तरह वह भी इकलौती पुत्री थी। उनके लिए यह सूचना सहना कितना कठिन होगा। भगवान् जाने इस महामारी से कैसे पीछा छूटेगा! आज सवेरे से दो लड़कियाँ और बीमार पड़ गई। उनका बचना भी एक आश्चर्य ही होगा। कुछ नर्सें यहाँ आने को तैयार हैं—केवल हमारे बुलाने की ही देर है; पर उन्हें यहाँ बुलाना तो सीधे मौत के मुँह में ढकेल देना है। जब तक इन नर्सों से काम चलता है, मैं उन्हें नहीं बुलाना चाहती, नहीं तो उनकी भी आहुति चढ़ जायगी।"

विमला ने साहस करके कहा, "सिस्टर! मैं जब से आई हूँ, बराबर यही सोच रही हूँ कि बिलकुल असमय में आई। आपने कहा था न कि काम बहुत ज्यादा है और करने वाले कम हैं। क्या आप मुझे यहाँ काम करने की अनुमति देंगी? मैं यहाँ आकर आपका हाथ बँटाऊँगी। मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि मुझे क्या काम करना पड़ेगा—केवल यह

चाहती हूँ कि मैं कुछ भी सेवा कर सकूँ। आप मुझे यहाँ का फ़र्श साफ़ करने का काम देंगी तो भी मैं अहसान मानूँगी।"

सिस्टर ने सरल मुस्कान से विमला को देखा। विमला के भावों में इतने शीघ्र परिवर्तन को देख वह भौचक्की-सी रह गई।

"फ़र्श साफ करने की आवश्यकता नहीं है। वह तो यहाँ के अनाथ बच्चे कर लेते हैं।" सिस्टर थोड़ा रुकी और सहृदय होकर बोलीं, "बच्ची! तुमने तो अपने पति के साथ यहाँ आकर बहुत बड़ा काम किया है, अधिकांश पत्नियाँ यह नहीं कर सकतीं। और रहा बाक़ी का काम! तो तुम बाकी समय में अपने थके-हारे पति की सेवा करो, यह कम नहीं है। विश्वास करो, रमेश का पूरा-पूरा खयाल रखने की अत्यन्त आवश्यकता है।"

विमला यह सुनकर सिस्टर की ओर नहीं देख सकी। सिस्टर की दया और ममता-भरी आँखें उस पर टिकी थीं।

विमला बोली, "मेरे पास सवेरे से शाम तक कुछ भी करने को नहीं है। मैं चाहती हूँ कि मेरे पास इतना काम रहे कि मैं सुस्त न हो सकूँ। मैं बेकार नहीं रहना चाहती। विश्वास कीजिए कि मैं आपकी दया और आपके समय का अपहरण नहीं करना चाहती। यह तो आपका सरल स्नेह होगा, यदि आप मुझे अपनी सेवा में ले-लें।"

"पर तुम तो पुष्ट नहीं हो। परसों जब तुम आई थीं तो पीली पड़ी हुई थीं। कान्ता का विचार था कि तुम माँ बनने वाली हो।"

सुनते ही विमला को रोमाञ्च हो आया; पर वह ज़ोर से बोली, "नहीं-नहीं।"

सिस्टर ने अपनी सरल मुस्कान बिखेर दी। वह बोलीं, "इसमें लजाने की क्या बात है? न ही यह कोई अनहोनी होगी। तुम्हारे विवाह को कितना समय हुआ होगा?"

"मैं पतली-दुबली हूँ, क्योंकि मेरा गठन ही ऐसा है। वैसे मुझमें

बड़ी शक्ति है। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं काम से डरती नहीं।" विमला दृढ़तापूर्वक बोली।

अब तक सिस्टर अपने स्वाभाविक स्तर पर आ चुकी थीं। वह विमला को जाँच रही थीं। विमला अनायास ही काँप उठी।

"क्या मैं अन्य नर्सों के साथ नर्सिंग का काम नहीं कर सकूँगी? मुझे कॉलरा का भय नहीं है। मुझे चाहे स्त्रियों के 'नर्सिंग' का काम दे दिया जाय, चाहे सिपाहियों के।"

सिस्टर ने कुछ विचारते हुए अपना सिर हिलाया।

"तुम्हें नहीं मालूम कॉलरा कितनी भयानक बीमारी है; फिर वहाँ बीमारों का काम करने के लिए तो अन्य सिपाही हैं। नर्स तो केवल निरीक्षण करती हैं।...जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध है...न-न, तुम्हारे पति को यह नहीं रुचेगा। ओह! कितना दुःखद होता है यह सब!"

"मैं उसकी आदी हो जाऊँगी।" विमला ने कहा।

"नहीं-नहीं, तुम्हारे लिए वह काम नहीं है। उसे हम ही करेंगे। तुम्हें वह सब करने की आवश्यकता भी नहीं है। क्या तुमने अपने पति की अनुमति ले ली है?"

"जी हाँ।" विमला ने कहा।

सिस्टर ने विमला को देखा, जैसे वह उसके हृदय का रहस्य पढ़ पा रही हों; पर जब उन्होंने विमला की आँखों में याचना पाई तो मुस्करा पड़ीं।

विमला के मुख पर प्रसन्नता झाँकने लगी। वह मौन बैठी रही। सिस्टर जैसे कुछ सोच रही थीं। वह उठ खड़ी हुईं।

"तुम्हारा विचार बड़ा नेक है। मैं तुम्हें अवश्य कोई-न-कोई काम दूँगी। तुम कब से आना शुरू करोगी?"

"अभी से।" विमला ने कहा।

"शाबाश! मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई तुम्हारे उत्तर से।"

विमला ने कहा, "मैं भरसक मेहनत करूँगी। मुझे ऐसा अवसर देने पर मैं आपकी अनुगृहीत हूँगी।"

सिस्टर ने कमरे का द्वार खोला; पर जाते-जाते वह रुकीं। एक बार फिर उन्होंने विमला की ओर खोजती-सी दृष्टि डाली। उन्होंने विमला की ओर अपना हाथ बढ़ाया; बोलीं, "बेटी! याद रखो, काम में, आनन्द में, संसार में, किसीको शान्ति नहीं मिलती। शान्ति हृदय में विराजती है।"

विमला तनिक चौंकी; पर तब तक सिस्टर के पास जा चुकी थी। विमला की आँखों में आँसू झलक आये थे।

सिस्टर सँभलकर खड़ी हो गई और उन्होंने धीरे-धीरे कहा, "विमला! अपने मन को शान्त करो। मन की शांति ही जीवन की शांति है। मन की अशांति किसी काम-काज में अपने को फँसाने से कभी शांत नहीं हो सकती।

मुझे लग रहा है कि तुम बहुत व्याकुल हो। ऐसा ही एक दिन मैंने डाक्टर रमेश की दशा देखकर भी अनुभव किया था। मेरी तुम दोनों के प्रति हार्दिक सहानुभूति है। मैं जाने क्यों तुम दोनों को अपने पुत्र और पुत्री के समान स्नेह करने लगी हूँ।

कल तुम्हारे जाने के पश्चात् जब डाक्टर रमेश यहाँ आये थे तो मैंने उनसे तुम्हारे यहाँ आने का जिक्र किया था। यह सुनकर उनका चेहरा पीला पड़ गया था।

मैं तुम दोनों के रहस्य को समझकर भी समझ नहीं पाई।"

४१

'स्वास्थ्य-केन्द्र' में काम करने की अनुमति पाजाने से विमला का उत्साह बढ़ गया। वह प्रतिदिन सवेरे केन्द्र चली जाती और शाम को ढलते सूरज की जोगिया किरनें जब मैदानों, पहाड़ों और चरागाहों पर पड़ती होतीं तो बँगले पर लौट आती। सिस्टर ने छोटे बच्चों को विमला के सुपुर्द कर दिया था। सीना, काढ़ना या बच्चों की निगरानी जैसे काम विमला को अपनी माँ से संस्कार-रूप में मिले थे। इन बातों की चर्चा वह कभी-कभी अपनी अन्य बातों के बीच कर डालती थी। सिस्टर को जब उसने बताया कि वह सीना-काढ़ना आदि भी जानती है, तो उसे वह काम भी सौंप दिया। कभी-कभी उसे छोटे बच्चों की निगरानी करने को कहा जाता था। उसे उनके कपड़े बदलने होते। जब उनके आराम का समय होता तो उन्हें सुला देना होता और जगाने के समय जगा देना पड़ता। विमला का काम सबका निरीक्षण करना था। जो भी काम विमला को दिये गए वे उसे विशेष महत्व के नहीं लगे। वह चाहती थी कि कोई मेहनत का काम उसे मिले; पर सिस्टर ने उसकी याचना पर कोई ध्यान न दिया। विमला को कभी-कभी सिस्टर पर आश्चर्य होता।

पहले-पहल कुछ दिन तक वह उन छोटी लड़कियों को चाहना चाह कर भी नहीं चाह सकी। उसे वे कुछ अच्छी नहीं लगती थीं; पर उसने चेष्टा की कि वह उन्हें चाह सके। लड़कियाँ गन्दे कपड़े पहने होतीं, उनके केश कड़े और काले थे, गोल और पीले चेहरे, आँखें काली और जिज्ञासा से भरी। एकाएक विमला को केन्द्र में अपने पहले दिन

की याद आई कि सिस्टर जब इन गन्दी दिखने वाली लड़कियों के पास उसके साथ गई थीं तो उनकी आँखों में दया का भाव झलक रहा था। विमला ने कोशिश की कि वह न चाहने की भावना को त्याग दे और उसने उनमें से दो-एक रोते बच्चों को बारी-बारी से गोदी में उठा लिया। विमला ने अनुभव किया कि गोदी में आते ही और स्नेह-पगे दो-चार शब्द सुनते ही बच्चे रोना भूल जाते थे। तभी से वह उनके लिए अपरिचित नहीं रही।

छोटे-छोटे बच्चे अब उससे डरते नहीं थे। अपनी छोटी-छोटी शिकायतें लेकर आते और विमला के पास खुश होकर खेलने लगते। यही घटना बड़ी लड़कियो के साथ भी घटी। कुछ को उसने सिलाई का काम सिखाया। उसकी तनिक-सी तारीफ़ से उन लड़कियों के चेहरे प्रसन्न हो उठते, उनकी आँखों में चमक आजाती थी। विमला को यह सब बड़ा सुखद लगता। उसे अनुभव हुआ कि वे सब भी उसे चाहते थे और इस विचार के आते ही बदले में उनके प्रति उसका स्नेह और उमड़ पड़ता।

इन सब बच्चों में एक छः साल की लड़की थी। बेवकूफ़-सी, टेढ़ा सा सिर, दुबला-पतला शरीर, खोखली-सी आँखें और भिनभिनाती-सी आवाज़ वाली। इस लड़की के प्रति वह स्नेहमयी नहीं बन सकी। उसे देखकर विमला में घृणा जाग पड़ती; पर उस लड़की में विमला के प्रति स्नेह का भाव जाग उठा था। वह विमला के पीछे-पीछे घूमती रहती थी। वह विमला का दामन पकड़ लेती, उसमें अपना मुँह छिपा लेती। विमला के हाथ पकड़ लेती और विमला घृणा से काँप-सी जाती। वह जानती थी कि वह बच्ची प्यार पाने को लालायित थी; पर विमला के लिए यह असम्भव-सा हो गया था।

एक बार कान्ता से विमला ने कहा था कि उस बच्ची के जीवन पर उसे बड़ा तरस आता है। उत्तर में कान्ता हँस दी थी और हाथ बढ़ाकर उस बच्ची को उसने अपनी गोद में ले लिया था। बच्ची

ने आते ही अपना माथा कान्ता के गालों पर प्यार से रगड़ दिया था।

कान्ता ने कहा, "यह बेचारी जब यहाँ आई थी तो मरणासन्न थी। सौभाग्य से मैं उस समय बाहर के ही कमरे में थी। बिना एक क्षण की भी देरी किये मैंने इसको अन्दर बुला लिया। तुम्हें यकीन नहीं होगा कि हमने कितनी कोशिश करके इसके प्राण बचाये हैं। तीन-चार बार तो इसके बचने की कोई आशा ही नहीं रही थी।

विमला खामोश रही। कान्ता ने अपनी स्वाभाविक मधुर प्रकृति के अनुसार अन्य बातें शुरू कर दीं। दूसरे दिन जब वह बच्ची फिर विमला के पास आई तो विमला ने जी कड़ा करके उसे गोद में उठा लिया। विमला ने मुस्कराने की चेष्टा की; पर एकाएक वह बच्ची विमला की गोद से उतर पड़ी।

लगा कि बच्ची का विमला के प्रति सारा स्नेह छूट गया था। उसके बाद वह बच्ची फिर विमला के पास नहीं गई। विमला की समझ में नहीं आया कि आखिर उससे ऐसा क्या हो गया कि वह नहीं आती। विमला ने बच्ची को फुसलाने की कोशिश की, वह मुस्कराती, उसे बुलाती; पर बच्ची जैसे उस सबको न तो सुनती और न समझती ही थी।

४२

सारा दिन नर्सें अपने-अपने काम में व्यस्त रहतीं। विमला उनमें से किसीसे भी नहीं मिल पाती।

कान्ता विमला की परिचित ही नहीं वरन सहेली-सी बन गई थी। कान्ता के जिम्मे केन्द्र का खर्च सम्भालना था और उसे

कायदे से रखना था । उसे सारा दिन इधर-से-उधर दौड़ते बीतता था। तीसरे पहर जब विमला लड़कियों के साथ अपने काम पर होती, तब कान्ता भी थकी-सी आजाती और दोनों बातों में खो जाती थीं। सिस्टर की अनुपस्थिति में कान्ता बड़ी ही बातूनी बन जाती थी। वह बड़ी हँसमुख और खुशमिज़ाज थी। मजाक करने में भी नहीं चूकती थी। विमला को उससे भय नहीं लगता था। वह उससे जी खोल कर बड़ी प्रसन्नता से बातें करती थी। उसे लगता था कि कान्ता सहृदय घरेलू स्त्री थी। कान्ता एक किसान की पुत्री थी और अब भी उसके अन्तर में वही सरलता भरी थी।

वह कहती, "मैं अपने बचपन में गायों की सेवा करती थी; पर मैं उनकी निगरानी नहीं कर पाती थी। बस मुझमें यही खराबी थी। मैं सोचती कि पिताजी मुझे पीटेंगे; पर वह बड़े अच्छे थे। अब कभी अगर उस समय की अपनी शैतानी पर सोचती हूँ तो स्वयं पर लज्जा आने लगती है।"

विमला इस विचार के आते ही हँस पड़ी, कि यह सीधी-सादी अधेड़-अवस्था वाली नर्स भी बचपन में नटखट रही होगी। उसने देखा कि अधेड़-अवस्था होने पर भी कान्ता में बच्चों की-सी सरलता विद्यमान थी। तभी तो वह अनायास ही कान्ता की ओर आकर्षित हो गई थी। उसमें सिस्टर का-सा गाम्भीर्य नहीं था, न ही किसी निराशा अथवा दुःख का भाव उसके मुख पर था,—इसके बिलकुल विपरीत वह सौम्य थी, सरल थी और प्रसन्न रहती थी।

विमला ने पूछा, "क्या आप कभी अपने घर वापस भी जाना चाहती हैं?"

"नहीं! वहाँ जाकर लौटना बड़ा कठिन हो जायगा। मेरा मन यहाँ रम गया है। मैं इन अनाथों के बीच बड़ी सुखी हूँ। कितने अच्छे हैं ये कि अहसान नहीं भूलते! मेरी माँ अब वृद्ध हैं। जब यह सोचती हूँ कि उनके दर्शन नहीं कर पाऊँगी तो बड़ा कष्ट होता है। माँ भी

अपनी बहू से बड़ी प्रसन्न रहती हैं। मेरा भाई माँ को बहुत खुश रखता है। भाई का पुत्र अब बड़ा हो गया होगा। घर पर सबके सब बड़े प्रसन्न होंगे। अब खेत में काम करने के लिए एक और प्राणी तैयार है। जब मैं घर से चली थी तो वह बहुत छोटा था; पर कोई भी उसे देखकर कह सकता था कि बच्चा होनहार होगा।"

चारो ओर कॉलरा से घिरे इस शान्त कमरे में किसीसे अधिक देर बातें करना असम्भव था; पर कान्ता को उस समय भी जैसे कोई चिन्ता नहीं थी, विमला यह स्पष्ट अनुभव कर रही थी।

कान्ता में संसार को देखने और समझने की सरल जिज्ञासा थी। उसने विमला से मसूरी के विषय में बहुत से प्रश्न कर डाले। उसने पूछा कि वहाँ जहाँ दोपहर में भी कुहासे के कारण हाथ नहीं सूझता, कैसा लगता होगा? कभी विमला 'बालरूम' में जाती थी या नहीं? विमला के कितने भाई-बहन हैं? और न जाने क्या-क्या! फिर कान्ता रमेश के सम्बन्ध में बातें करने लगती। कहती कि सिस्टर तो कहती हैं कि रमेश अद्भुत व्यक्ति है। वह उसकी शुभ-कामना करती है, उसके लिए दुआएँ माँगती हैं। वह कहती, "विमला तुम सचमुच भाग्यवान हो जो इतना अच्छा, इतना बहादुर और इतना बुद्धिमान पति तुम्हें मिला।"

विमला डाक्टर रमेश की कान्ता के मुख से इतनी प्रशंसा सुनत तो उसका मन कुछ और-से-और ही हो जाता। वह भूल ही जाती कि डाक्टर रमेश उस पर नाराज़ है। उसे गर्व हो उठता कि वह ऐसे प्रशंसित पुरुष की पत्नी है।

अब स्वप्न मे भी कभी विमला को श्याम की याद नहीं आती थी। कभी प्रसंगवश विमल के कहने पर उसका नाम उसके सामने आ भी जाता था तो उसकी आँखें क्रोध से लाल हो जाती थीं और घृणा से उसका दिल भर जाता था।

रमेश अब चाहे उसे प्यार न कर सके परन्तु वह उसे देवता समझती थी।

इधर-उधर की बातों के बाद कान्ता सिस्टर को अपनी बातों का केन्द्र बना लेती। विमला पहले ही दिन से समझ गई थी कि सिस्टर का व्यक्तित्व वहाँ शासन करता था। वहाँ हर कोई उनसे स्नेह करता था, उनके प्रति श्रद्धा रखता था। कोई उनसे भय नहीं खाता था। विमला भी अनजाने ही उनके अन्दर मिल गई थी। सिस्टर में विमला के लिए ममता थी और विमला कभी भी उनकी उपस्थिति में सुविधा का अनुभव न कर पाती थी। कान्ता ने विमला को बताया था कि सिस्टर का परिवार कितना घना और बड़ा है। उनके पूर्वज इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्ति थे। इतने वैभव को छोड़ना हँसी-खेल नहीं था। विमला एक मुस्कान लिए यह सब सुनती; पर किसी भी बात से प्रभावित न हो पाती।

कान्ता कहती, "तुम केवल उनके मुख को भली-भाँति देखकर जान सकती हो कि वह कितने बड़े परिवार की लड़की है।"

विमला उत्तर देती, "उनके जैसे सुन्दर हाथ मैंने पहले कभी नहीं देखे।"

"काश, तुम जान पातीं कि उन्होंने उन हाथों से कैसा-कैसा काम लिया है! उन्हें किसी भी प्रकार का कोई भी काम करने में हिचक नहीं होती।" कान्ता ने कहा।

जब वह यहाँ आई थीं तो यहाँ कुछ भी नहीं था। यह केन्द्र उन्होंने ही बनाया था। सिस्टर ने ही योजना बनाई, नक्शे तैयार किये और स्वयं ही सारे काम का निरीक्षण किया। यहाँ आते ही उन्होंने अनाथ बच्चों को लेकर उनका लालन-पालन आरम्भ कर दिया। न जाने कितने निर्दयी हाथों से बच्चे बचाकर वह लाई। आरम्भ में यहाँ बिस्तर तक नहीं थे—खिड़की, दरवाजे कुछ नहीं थे। कभी-कभी तो पैसे बिलकुल नहीं होते थे। मज़दूरों को मज़दूरी देने की बात तो अलग, छोटा-

मोटा खर्च करने के लिए भी धन न होता था। सब किसानों की तरह रहते थे। वह कहा करती हैं कि जो भोजन उन्होंने उन दिनों में किया वैसा भोजन उनके पिता के खेतों में काम करने वाले किसान फेंक देते थे। एक बार ऐसा ही अभाव हुआ तो विमला, यही अपने मजाकिया विमल बाबू दूसरे दिन आये और उन्होंने सौ रुपये दिये।

विमल भी कैसा मसखरा आदमी है। गंजी खोपड़ी और छोटी पर तेज़ आँखें और फिर मज़ाक। इसकी बातों मे बड़ा मज़ा आता है। यह हमेशा ही हँसने-हँसाने की चेष्टा करता रहता है। एक ओर तो महामारी अपना विकराल रूप धारण किये है, दूसरी ओर यह मस्त रहता है; मानो यहाँ छुट्टी बिताने आया है। इसकी बुद्धि बड़ी तेज है। इसका व्यवहार और चरित्र अवश्य ही अच्छा नहीं है; पर यह सब तो उसका निजी मामला है, फिर यह अविवाहित है—युवक है।

विमला ने मुस्कराते हुए पूछा, "क्यों, इसके चरित्र मे क्या खराबी है ?"

"तुमसे कुछ छिपा हो, ऐसी बात तो नही है। मेरे लिए तो वह सब कहना, गुनाह करना है। और फिर ऐसी बातों से मेरा मतलब भी क्या ?—यह एक ऐंग्लो-इडियन औरत के साथ रहता है। उसके रहन-सहन से लगता है जैसे राजकुमारी हो ? वह विमल को बहुत चाहती है।"

विमला ने कहा, "यह असम्भव-सा लगता है।"

"नहीं-नहीं। विश्वास करो, यह बिल्कुल सत्य है। उसे यह नहीं करना चाहिए। ज़रा याद करो, जब पहली बार वह तुम्हारे साथ यहाँ आया था तो उसने मेरे बनाये टोस्ट नहीं खाये थे। सिस्टर ने कहा था कि अंग्रेज़ी खाना खाने से उसका पेट गड़बड़ रहता है। सिस्टर के कहने का यही अर्थ था। इस पर उसने कैसा मुँह बना लिया था। अरे ! बड़ी दिलचस्प कहानी है। कभी वह मसूरी में रहता था, उन्हीं दिनों वह छोकरी इसके हाथ पड़ गई। उस लड़की को इससे प्रेम हो गया,—

उसके बाद की कहानी तुम स्वयं सोच सकती हो। मसूरी से चला तो वह लड़की भी इसके साथ हो ली। अब यह जहाँ भी जाता है, वह इसके साथ रहती है। विमल बेचारे को हार मानकर उसे शरण देनी पड़ी। विमल भी उसे बहुत चाहता है। बहुत सुन्दर है। लो, मैं कहाँ-से-कहाँ की बातें करने लगी। मुझे अभी कितना काम करना बाकी है और यहाँ बैठ के गप्पें लड़ा रही हूँ। मैं बिलकुल बेकार हो गई हूँ। मुझे स्वयं पर लज्जा आती है विमला!"

४३

विमला सोच रही थी कि अब उसका विकास हो रहा था। बराबर ही काम में व्यस्त रहने से वह अपना पुराना सब-कुछ भूल गई थी। उसमें नई कल्पनाओं का उदय हुआ था। वह अब अधिक चेतन रहती थी। वह स्वयं को अब दृढ़ पाती थी। कभी उसने सोचा था कि उसके शेष जीवन में रोना ही बदा था; पर अचानक ही उसे लगा कि वह तो अब हर समय प्रसन्न रहती थी, हँसती रहती थी। उसे भयंकर महामारी में वहाँ रहना स्वाभाविक जान पड़ा। वह जानती थी कि उसके चारों ओर लोग महामारी से मर रहे थे; पर अब उसे उस सबको सोचने का अवकाश नहीं था। सिस्टर ने अपाहिज घर में उसका जाना निषेध कर दिया था। वहाँ के दरवाज़े सदा बन्द रहते थे,—विमला में जिज्ञासा जागती। वह चाहती थी कि अन्दर झाँक ले; पर पकड़ी जाने का भय था। उसकी समझ में नहीं आता था कि पकड़ी जाने पर सिस्टर उसे क्या दण्ड देंगी। यदि उससे वापस जाने को कह दिया तब क्या होगा। वह वहाँ दो बच्चों को प्यार करने लगी थी। वह

जानती थी कि यदि वह चली गई तो बच्चे उसकी याद करेंगे। वह सोच ही नहीं सकती थी कि बिना उसके वे बच्चे रह भी सकेंगे।

एक दिन एकाएक विमला को ख़याल आया कि लगभग एक सप्ताह से न तो उसने श्याम को याद किया और न ही वह कभी उसके स्वप्न में आया। उसके हृदय की गति रुक-सी गई, पर उसने स्वयं को सँभाल लिया। अब वह श्याम के प्रति उदासीन हो गई थी। अब वह उससे प्रेम नहीं करती थी। इस बन्धन के छुटकारे के विचार-मात्र से विमला को जैसे राहत मिल गई थी। उसने अपने अतीत पर दृष्टि डाली तो आश्चर्य हुआ। वह कितना चाहती थी उसे। वह सोचती थी कि श्याम के बिना वह मर जाएगी। उसने सोचा था कि बिना श्याम के उसका जीवन निरर्थक हो जाएगा, दुःखों का सागर बन जाएगा; पर आज उस सब पर उसे हँसी आगई। उसने सोचा कि वह एक व्यर्थ जीव था और वह स्वयं कितनी मूर्ख थी। श्याम के सम्बन्ध में उसने अब भावना-रहित होकर सोचा तो उसे कारण का पता न लगा कि आखिर वह क्यों श्याम की ओर इतनी आकृष्ट हुई थी!

उसने सोचा कि चलो अच्छा ही हुआ जो विमल को कुछ भी पता नहीं चला, नहीं तो उसकी कटु दृष्टि और व्यंग्य-भरी बातें वह नहीं सुन पाती। अब वह उस सारे बन्धन से स्वतन्त्र थी, अन्त में स्वतन्त्र हो ही गई। विमला से इस विचार पर चुप नहीं रहा गया, वह खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

दूसरी ओर छोटे बच्चे खेल रहे थे। मुख पर मुस्कराहट लिये उन्हें खेलते देखना विमला की आदत हो गई थी। जब कभी वे अधिक शोर करते, तो रोक देती। वह ध्यान रखती कि खेल में भूलकर कोई बच्चा चोट-चपेट न खा जाय। पर आज! आज विमला एक अज्ञात प्रसन्नता से प्रेरित हो स्वयं को भी बच्चा समझ उनके खेल में शामिल हो गई। छोटे-छोटे बच्चों ने किलकारियों से और अपनी छोटी-छोटी हथेलियों से ताली बजाकर उसका स्वागत किया। कमरे-भर में बच्चे उसके पीछे

दौड़ने लगे, बेहताशा जोर से चीखकर किलकारियाँ भरने लगे। बच्चे मारे खुशी के हवा में उछलने लगे। बला का शोरगुल था।

एकाएक कमरे का दरवाजा खुला। सिस्टर सामने खड़ी थीं। विमला एकाएक खड़ी हो बच्चों से अपना दामन छुड़ाने लगी; पर बच्चे शोर मचाये जा रहे थे।

सिस्टर ने स्नेह-भरी आँखों से और मुस्कान-भरी वाणी से पूछा, "क्या इसी प्रकार बच्चों को खामोश रखा जाता है ?"

"हम सब खेल रहे थे सिस्टर ! बच्चे जोश में आकर चिल्लाने लगे। इसके लिए मैं दोषी हूँ।" विमला ने कहा।

सिस्टर कमरे में चली आई। बच्चों ने स्वभाव के अनुसार उनसे लिपटना आरम्भ कर दिया। सिस्टर ने उनके कन्धे थपथपाकर हँसते हुए उनके छोटे-छोटे कान पकड़े; पर वह बराबर विमला को स्नेह-भरी दृष्टि से निहार रही थीं। विमला का श्वास जोर से चल रहा था। वह शरमाई, ठिठकी-सी खड़ी थी। उसकी तरल आँखों में चमक थी, उसके केश बिखर गये थे। वह इस रूप में अत्यन्त सौम्य लग रही थी।

सिस्टर बोलीं, "तुम्हें देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है। ये बच्चे तुम्हें बहुत चाहते हैं।"

विमला लाज से लाल पड़ गई। अनजाने ही उसकी आँखें डबडबा आईं। दोनों हाथों से उसने अपना मुँह ढाँप लिया। बोली, "सिस्टर, आप मुझे लज्जित करती हैं।"

"अच्छा-अच्छा, पगली नहीं बनते हैं। सौन्दर्य तो भगवान् की देन है। यह सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है। यदि हम सुन्दर हैं तो हमें प्रभु का गुणगान करना चाहिए और यदि दूसरे सुन्दर हैं तो प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए कि उसकी इस कला से हमें प्रसन्नता प्राप्त होती है।"

सिस्टर हँस दी। मानों विमला उनके सामने छोटी-सी बच्ची थी, और उन्होंने उसके गाल थपथपा दिये।

विमला का मन आज बहुत हलका हो गया था।

४४

जब से विमला ने केन्द्र जाना आरम्भ किया था, वह विमल से दो या तीन बार ही मिल सकी थी। कभी-कभी वह विमला के बँगले पर आ जाता, मदिरापान कर लेना, या कभी उसे रास्ते में मिल जाता तो नदी-किनारे तक विमला को पहुँचा आता, या पहाड़ी तक साथ घूम आता। एक दिन विमल ने प्रस्ताव किया, कि विमला उसके घर पर उसके साथ खाना खाये। सिस्टर विमला को सप्ताह में एक दिन विश्राम देती थीं, परन्तु रमेश नित्य की भाँति रविवार को भी व्यस्त रहता था।

विमला ने दावत स्वीकार कर ली और वह निश्चित समय पर विमल के यहाँ पहुँच गई।

"मेरे विचार में तो अब आप कुछ ही महीनों में वापस चली जाएँगी। बीमारी का ज़ोर धीरे-धीरे कम होता जा रहा है और सर्दियाँ शुरू होते-होते यह ख़त्म हो जायगी।" विमल ने पूछा।

"मैं तो यहाँ से जाना नहीं चाहती।" विमला बोली।

एक क्षण को विमला भविष्य की चिन्ता में डूब गई। उसे रमेश के प्रोग्राम का पता नहीं था। उसने विमला को कुछ भी तो इस सम्बन्ध में नहीं बताया था। उसका तो केवल सभ्य और मौन व्यवहार रहा था; दो बूँदों के समान जो नदी में अज्ञात की ओर निरन्तर बढ़ी जा रही थी।

विमल ने कुटिलता से कहा, "देखिए कहीं ये नर्सें आपके मार्ग में न आजायें।"

"उन्हें इन बातों के लिए अवकाश नहीं है। वे अपने ही धन्धों में अत्यन्त व्यस्त हैं। वे बड़ी भली हैं,—उनमें दया है,—फिर भी न जाने क्यों उनके और मेरे बीच कोई दीवार अदृश्य है। मैं नहीं जानती उसका कारण क्या है। लगता है, उनके पास कोई ऐसा रहस्य है जिसे वे ही जानती हैं और मैं उसे जान सकने योग्य नहीं हूँ।"

शरारत-भरे स्वर में विमल ने कहा, "मैं समझता हूँ कि इससे आपके दम्भ को चोट लगी है।"

"मेरा दम्भ ?" आश्चर्य से विमला ने कहा।

विमला अलस-भाव से मुस्करा पड़ी।

उसने पूछा, "परन्तु आपने अब तक मुझे क्यों नहीं बताया कि आप किसी ऐंग्लो-इंडियन लड़की के साथ रहते हैं ?"

"और उन गप्पी स्त्रियों ने आपसे क्या-क्या कह डाला है, ज़रा वह भी बता दो। किसीके सम्बन्ध में किसीकी पीठ के पीछे ऐसी बातें करना पाप है।" विमल बोला।

"लेकिन आप इतना तिनकते क्यों हैं ?" विमला बोली।

विमल बगलें झाँकने लगा,—हलका मुस्करा दिया। वह बोला, "यह बात कोई प्रचार करने की तो है नहीं। यदि बात फैल गई तो मेरी आगे की तरक्की रुक जाएगी।"

"क्या आप उससे बहुत प्रेम करते हैं ?" विमला ने पूछा।

विमल ने ऊपर देखा। उसका चेहरा उस समय विमला को नटखट लड़के-सा लगा।

"उसने मेरे लिए अपना घर, परिवार, इज्ज़त सब कुछ त्याग दिया। कई वर्ष हो गये जब वह इस सबको तिलाञ्जलि देकर मेरे साथ आई। मैं उसे दो-तीन बार वापस भी भेज चुका हूँ; पर वह फिर लौट आती है। मैं स्वयं उससे अलग होकर बाहर चला गया था;

पर उसने मेरा पीछा नहीं छोड़ा और अब मैंने उसे अलग करने का विचार छोड़ दिया है। मैंने सोचा है कि हम दोनों साथ-साथ रहकर ही जीवन बितायेंगे।"

"तब तो सचमुच वह आपको बहुत चाहती होगी।" विमला ने कहा।

"यह भी एक अजीब समस्या है।" विमल ने कुछ परेशानी का भाव जताकर कहा। "अब तो मुझे विश्वास हो गया है कि यदि मैं उसे छोड़ दूँ तो वह आत्महत्या कर लेगी; इस भाव से नहीं कि वह मुझे फँसाये, बल्कि इसलिए कि वह मेरे बिना ज़िन्दा नहीं रह सकेगी। जब दोनों पक्षों में से किसी एक को इस बात का पता लग जाए तो अजीब-सी भावना का उदय होता है और कोई भी इस भावना से बचकर भाग नहीं सकता।"

"पर प्रेम करने का जो महत्त्व है वह प्यार किये जाने का तो नहीं है। कहीं तो कोई अपने चाहे जाने का शुक्रगुज़ार नहीं होता। कुछ को अगर कोई नहीं चाहता तो वह दूसरे के लिए भार बन जाते हैं।" विमला ने कहा।

"मुझे दुनियाँ का कोई अनुभव नहीं है।" विमल ने कहा। "मुझे तो केवल अपना अनुभव है।"

"अच्छा, क्या वह सचमुच भले परिवार की लड़की है ?"

"नहीं ! हाँ, वह एक बड़े परिवार की लड़की है; पर वह है सचमुच अद्भुत नारी।" विमल ने कुछ घमंड-भरे स्वर में कहा। विमला को अनायास ही हँसी आगई।

"तब क्या आप यहीं सारा जीवन बितायेंगे ?" विमला ने पूछा।

'हाँ ! मैं दूसरी जगह जाकर क्या करूँगा ? अवकाश ग्रहण के बाद मैं एक छोटा-सा मकान ले लूँगा और हम दोनों यहीं रहेंगे। यहाँ कोई न अपनी जाति का है, न बिरादरी का।"

"आपके बच्चे हैं ?"

"नहीं !"

विमला ने जिज्ञासावश विमन को देखा। उसने सोचा कि यह बन्दर की शक्ल का आदमी भी एक स्त्री को रिझा सका, और उसमें अपने लिए अतीव प्रेम जगा सका। विमला की समझ में कुछ नहीं आया। उसने सोचा क्या इसने हास-परिहास और बोलने की कला के सहारे उस स्त्री को जीत लिया।

विमला ने हँसकर कहा, "विमल, गार्डन तक पहुँचने मे विशेष बाधा नहीं होती।"

"परन्तु आप यह क्यों कह रही हैं ?"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आता ! जिन्दगी अजब चीज है। मुझे लगता है कि मैं जैसे सारा जीवन एक छोटे से तालाब मे रही हूँ और फिर एकाएक मुझे किसीने सागर के दर्शन करा दिये। कभी-कभी तो मेरा जी घुटने लगना है।

मैं मरना नहीं चाहती,—मैं जीना चाहती हूँ। मुझे आभास होता है कि मुझमें हिम्मत है। मेरी आत्मा किसी अज्ञात को खोजती रहती है, जैसे पुराने नाविक अज्ञात की ओर परिवार छोड किसी नये सागर की तलाश में निकल पड़े थे।"

विमल ने विमला की ओर देखा। विमला की दृष्टि अस्थिर जल-प्रवाह पर स्थिर थी। दो बूंद। दो बूंद जो चुपचाप बह रही थीं—चुपचाप,—बह रही थीं अँधियारे—गहरे सागर की ओर।

एकाएक विमला ने सिर उठाकर पूछा, "क्या मैं किसी दिन आपकी पत्नी से मिल सकती हूँ ?"

विगल ने चिढ़ाते हुए हँसी बिखेर दी। वह बोला, "मैं किसी दिन आपको ले चलूंगा। वहाँ आपका सत्कार तो होगा ही।"

विमला ने विमल को नहीं बताया कि वह स्त्री विमला के लिए एक प्रतीक बन गई थी और वह उसे अनजाने में चाहने लगी थी। उसे

लगा जैसे वह स्त्री उसे किसी दूसरे देश की ओर, जहाँ उत्साह हो, संकेत कर रही थी ।

४५

दो-तीन दिन बाद विमला को एक अज्ञात रहस्य का पता लगा । नित्य की भाँति उस दिन भी वह केन्द्र में गई । केन्द्र पहुँचते ही उसका पहला काम बच्चों की स्वच्छता आदि का प्रबन्ध करना होता था । नर्सों की धारणा थी कि रात की हवा हानिप्रद होती है, अतः वे खिड़की और दरवाज़े बन्द कर दिया करती थीं । विमला सारे दरवाज़े और खिड़कियाँ खोलती थी । बन्द दरवाज़े में कमरे के अन्दर उसे घुटन-सी महसूस होती थी; पर उस दिन विमला ने अचानक अनुभव किया कि उसकी तबियत बिगड़ रही थी, उसका सिर चकरा रहा था । वह उठकर एक खिड़की के सहारे खड़ी हो गई । वह स्वयं को सम्हालने की चेष्टा कर रही थी । उस दिन जैसी उसकी तबियत पहले कभी खराब नहीं हुई थी । उसका जी मिचला उठा और उसने उल्टी की । उसके मुख से भयानक चीख निकली । सारे बच्चे सहम गये । एक बड़ी लड़की जो विमला के काम में सहायता दिया करती, उसकी सहायता को दौड़ी; पर विमला को काँपते देखकर और उसका रंग सफेद पड़ा देखकर वह ठिठक गई । अचानक उसके मुँह से निकला, "कॉलरा !" विमला के कानो में यह शब्द पड़ते ही उस पर मौत की छाया-सी मँडराने लगी । वह मौत के आतंक से काँपने लगी । वह स्वयं को उस मौत के अन्धकार से छुड़ाने का प्रयत्न कर रही थी । उसे लगा कि वह बीमार थी और फिर एक अँधियारा-सा उसकी आँखों के आगे आगया ।

विमला ने जब आँखें खोलीं तो वह समझ नहीं सकी कि वह कहाँ थी। उसे लगा कि वह फर्श पर लेटी थी और तब उसने धीरे-से अपना सिर उठाया,—उसने देखा कि सिर के नीचे तकिया रखा हुआ था। वह कुछ भी याद कर पाने में असमर्थ थी। सिस्टर उस पर झुकी हुई थीं। उसे कोई वस्तु सुँघा रही थीं और कान्ता निरन्तर विमला की ओर देख रही थी। विमला को कॉलरे का ख़याल आया, उसने देखा कि नर्सों के मुख पर गाम्भीर्य छाया हुआ था। विमला को कान्ता बहुत लम्बी लग रही थीं। एकाएक वह फिर भय से काँप उठी।

विमला रो पड़ी, "ओह सिस्टर! क्या मैं मर जाऊँगी? मैं मरना नहीं चाहती।"

सिस्टर ने कहा," तुम मरोगी नहीं।" सिस्टर बिलकुल शान्त थीं। उनके मुख पर मन्द-सी हास्य की रेखा विद्यमान थी।

"परन्तु यह तो कॉलरा है। डाक्टर रमेश कहाँ हैं? क्या उन्हें बुलाने को भेजा है? ओह सिस्टर!!" विमला सिसकियाँ भरकर रोने लगी। सिस्टर ने अपने हाथों का सहारा दिया। विमला को सिस्टर के हाथ पकड़कर लगा कि इधर उसने उनके हाथों को छोड़ा और उधर उसके प्राण निकले।

"होश में आओ मेरी बच्ची! मूर्ख न बनो। कॉलरा नहीं है यह।"

"डाक्टर रमेश कहाँ हैं?"

"वह बहुत व्यस्त हैं, उन्हें तकलीफ़ देकर क्या करोगी? पाँच मिनट में ठीक हुई जाती हो।" सिस्टर ने कहा।

सिस्टर को विमला एक टक देख रही थी। वह सोच रही थी कि ये इतनी निर्मम क्यों हैं? इन्होंने इस बीमारी को खेल क्यों समझा?

सिस्टर बोली, "कुछ क्षण खामोश रहो। घबराने की कोई बात नहीं है, तुम अभी ठीक हुई जाती हो।"

विमला की धड़कनें बढ़ गई थीं। विमला 'कॉलरा' के सम्बन्ध में

इतना कुछ सुन चुकी थी कि वह यह भूल ही गई कि उसे भी कॉलरा हो सकता था।

उसने सोचा, मैं कितनी मूर्ख हूँ। मैं समझ रही थी कि मैं मर जाऊँगी। मैं कितनी भयभीत हो गई थी! कुछ लड़कियाँ एक आराम-कुर्सी ले आई और उसे एक खिड़की के पास रख दिया।

"आओ, हम तुम्हें बिठा दें।" सिस्टर ने कहा। "आरामकुर्सी पर तुम्हें अधिक सुविधा रहेगी। तुम खड़ी हो पाओगी?"

सिस्टर ने अपने हाथों का सहारा दिया और कान्ता ने विमला की टाँगें पकड़, उसे उठाकर कुर्सी पर बिठा दिया। विमला थकी, निर्जीव-सी कुर्सी पर पड़ गई।

"मेरे विचार में खिड़की बन्द कर दूँ।" कान्ता ने कहा। "सवेरे की ठण्डी हवा सम्भव है, हानिकारक हो।"

विमला ने फौरन बात काटी, "नहीं-नहीं, उसे खुली रहने दो।"

विमला ने सामने नीला आसमान देखा तो उसकी जान-में-जान आई। वह बिलकुल निर्जीव-सी हो गई थी; पर अब धीरे-धीरे वह सुधर रही थी। दोनों नर्सें एक क्षण उसकी ओर चुपचाप देखती रहीं। कान्ता ने सिस्टर से कुछ कहा; पर विमला वह समझ नहीं सकी। सिस्टर कुर्सी के हत्थे पर बैठ गई। उन्होंने विमला का हाथ अपने हाथों में ले-लिया।

"सुनो, मेरे बच्ची!"

सिस्टर ने विमला से दो-एक प्रश्न किये। विमला ने उनके प्रश्नों का अर्थ समझे बिना उत्तर दे-दिये। उसके होंठ अब भी काँप रहे थे, उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी।

"इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं।" कान्ता ने कहा। "मुझे इस सम्बन्ध में धोखा हो ही नहीं सकता।" और हँस पड़ीं। विमला को इस हास में उत्तेजना स्पष्ट दीख पड़ी; पर स्नेह नहीं। सिस्टर विमला का हाथ अपने हाथों में लिए मुस्करा पड़ीं। उनकी मुस्कान में मृदुता थी।

"कान्ता को इन बातों का मुझसे अधिक अनुभव है मेरी बच्ची!

उन्होंने तुरन्त तुम्हारी तकलीफ़ का कारण जान लिया। उनका अनुमान बिलकुल सही था।"

विमला ने उत्सुकतावश पूछा, "आपका अर्थ मैं नहीं समझी।"

"मेरी बच्ची! अर्थ स्पष्ट है। क्या तुम्हें इसका भान कभी नहीं हुआ? तुम माँ बनने वाली हो?"

विमला सिर से पाँव तक चौंक गई। उसने अपने पाँव जमीन पर कुछ ऐसे रखे कि वह उछल पड़ेगी।

सिस्टर ने समझाया, "अभी आराम से लेटी रहो।"

विमला लज्जा से सिकुड़ गई। उसने अपने दोनों हाथों से अपनी छातियाँ दबा ली।

"यह असम्भव है, यह नहीं हो सकता।" विमला बोली।

कान्ता ने कुछ कहा। विमला नहीं समझ पाई। सिस्टर ने विमला को बताया। कान्ता के गाल लाल हो रहे थे। उसके मुख पर चमक थी।

"इसमें त्रुटि नहीं हो सकती, यह मेरा दावा है।"

"तुम्हारे विवाह को कितना समय हो गया?" सिस्टर ने पूछा। "मेरी ननद का विवाह हुए जब तुम्हारे जितना समय हो गया था तब तक दो बच्चों की माँ हो चुकी थी।"

विमला कुर्सी में गड़-सी गई। उसके हृदय पर मृत्यु का-सा भय छा रहा था। वह बड़बड़ाई, "कितनी लज्जाजनक बात है!"

"क्यों? इसलिए कि तुम्हारे बच्चा होने वाला है। अरे! यह तो स्वाभाविक ही है।" कान्ता ने कहा।

"डाक्टर को कितनी प्रसन्नता होगी।" कान्ता ने कहा।

"हाँ, सोचो तो तुम्हारे पति को कितना हर्ष होगा! वह तो प्रसन्नता से फूले नहीं समायेंगे। तुम्हें भी तो बच्चों के पिता का ख़याल रखना है। वह तो बच्चों के साथ खेलने में मग्न हो जाते हैं और फिर जब उनका अपना बच्चा होगा तब तो प्रसन्नता का ठिकाना ही न रहेगा!

एक क्षण तक विमला मौन रही। दोनों नर्सें उसे निहार रही थीं। सिस्टर विमला के हाथ सहलाने लगीं।

"मैं कितनी मूर्ख हूँ कि मुझे इसका पता तक नहीं लग सका।" विमला ने कहा। "खैर, 'कॉलरा' नहीं हुआ, मुझे इसकी सबसे बड़ी प्रसन्नता है। अब मै अच्छी हो गई, मैं अपने काम पर जाती हूँ।"

"आज नहीं। मेरी बच्ची! तुम्हारी तबियत बिगड़ के चुकी है। तुम घर जाकर आराम करो।"

"नहीं-नहीं; मैं यहाँ रहकर अपना काम करूँगी।"

"नहीं! मेरा कहना मानो। डाक्टर क्या कहेगा? अगर इच्छा हो तो कल आना; पर आज तुम जाकर विश्राम करो, मैं अभी डोली मँगवाये देती हूँ। चाहो तो किसी एक लड़की को अपने साथ लेती जाओ।"

"नहीं माँ! मैं अकेली ही चली जाऊँगी।" विमला ने कहा।

विमला अपने बँगले को चली गई। यह एक नई आपत्ति उसके सिर पर आगई। उसने आज तक अनेक प्रयास करके किसी प्रकार श्याम को अपने मन से निकाल कर बाहर किया था, वह उसकी स्मृति को अपने मन-तलक में लाना ही नहीं चाहती थी, परन्तु हाय! यह विधाता ने क्या किया! यह बच्चा अब बीच में आकर निश्चय ही उस खंदक को चौड़ी कर देगा, जिसे इतने प्रयास के पश्चात् वह अपने और रमेश के बीच में कम करने का प्रयास कर पाई थी।

४६

अपने बँगले के एक बन्द कमरे में विमला लेटी थी। दोपहर के खाने के बाद नौकर भी आराम करने चले गये। आज जिस रहस्य का विमला को पता लगा था, उससे वह एकाएक चिन्तित हो उठी थी।

जब से वह बँगले में वापस आई थी तभी से इस समस्या पर बराबर विचार कर रही थी; पर कुछ भी निष्कर्ष निकाल पाने में असमर्थ रही। उसे अपने मन में भय-सा लग रहा था। उसके विचारों में कोई क्रम नहीं था। सोचते-सोचते उसे क़दमों की आहट सुनाई पड़ी। कोई बूट पहने चला आ रहा था। ध्वनि से विमला ने जान लिया कि रमेश आ रहा था। वह बाहर के कमरे में था। विमला ने सुना कि वह उसका नाम लेकर पुकार रहा था। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। एक क्षण के मौन के बाद विमला ने अपने कमरे के दरवाज़े पर दस्तक सुनी।

"हाँ !" विमला ने कहा।

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

विमला ने पलंग से उठकर अपना ड्रेसिंग-गाउन पहना, बोली 'हाँ, आप आ सकते हैं।"

वह भीतर आया। विमला को ढाढ़स बँधा कि उस बन्द कमरे में उसका मुँह रमेश ठीक से नहीं देख पायगा।

"मैंने तुम्हें जगाया तो नहीं, बहुत ही धीरे-से मैंने थपथपाया था।

"मैं सो नहीं रही थी।" विमला ने कहा।

रमेश ने एक खिड़की खोल दी। खिड़की खुलते ही प्रकाश कमरे में आगया।

"क्या बात है ?" विमला ने पूछा। आज आप इतनी जल्दी कैसे वापस आगये ?"

"नर्स ने बताया कि तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। मैंने सोचा कि यहाँ आकर कारण का पता लगाऊँ।" रमेश बोला। वह कुछ चिंतित-सा था।

विमला को क्रोध आ गया।

"यदि मुझे 'कॉलरा' हो जाता तो आप क्या करते ?" विमला ने पूछा।

"अगर कॉलरा हो जाता तो तुम केन्द्र से घर तक वापस न आ पातीं ।" रमेश मुस्कराकर बोला ।

विमला उठकर आइने के सामने जाकर अपने बिखरे केशों में कंघा फेरने लगी । वह थोड़ा समय लेना चाहती थी ।

"मेरी तबियत आज सवेरे ठीक नहीं थी । सिस्टर ने जोर दिया कि मैं वहाँ आकर आराम करूँ । अब तो मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ । मैं कल फिर नित्य की तरह केन्द्र जाऊँगी ।"

"परन्तु हो क्या गया था ?"

"उन्होंने तुम्हें बताया नहीं ?"

"नहीं, सिस्टर ने कहा कि मुझे घर आने पर स्वयं पता चल जायगा ।" रमेश ने कहा ।

आज रमेश ने वह किया जो वह बहुत ही कम करता था—उसने भरपूर दृष्टि से विमला को देखा । उसका व्यक्तित्व उसके मुख पर विद्यमान था । विमला तनिक सकुचाई । फिर उसने साहस करके रमेश से आँखें मिलाई । वह बोली, "मुझे बच्चा होने वाला है ।"

विमला को मालूम था कि जिस बात का जवाब वह रमेश से सुनना चाहती थी, साधारणतया उसके उत्तर में वह मौन रहा करता था; पर आज की भाँति उसका यह मौन विमला को कभी नहीं अखरा था । वह कुछ भी नहीं बोला, न ही उसकी भंगिमा में कोई परिवर्तन हुआ । केवल उसकी आँखों से लगता था कि उसने सुन-भर लिया । विमला का जी चाहा कि वह चीख पड़े । यदि पति-पत्नी का आपस में प्यार हो तो ऐसे अवसर पर दोनों भावना के अतिरेक में लिपट जाते; पर वह मौन विमला को बुरा लगा । उसीने आरम्भ किया, "मुझे इसका पहले पता नहीं था । मेरी कैसी मूर्खता थी, परन्तु एक वस्तु का दूसरे से क्या ?"

"तुम्हें गर्भवती हुए कितने दिन हुए ?"

लगता था रमेश को बोलने में कठिनाई प्रतीत हो रही थी ।

विमला ने अनुभव किया कि उसकी भाँति रमेश का भी कण्ठ सूख रहा था। उसे अपने बोलने में होंठों का कम्पन खल रहा था। उसने सोचा, यदि रमेश पाषाण नहीं है तो उसमें अवश्य दया आएगी।

"मेरे विचार में दो या तीन महीने हुए होंगे।"

"क्या मैं ही इस बच्चे का पिता हूँ?"

विमला ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा। रमेश की वाणी में कम्पन था। रमेश की इस भावना का खण्डित होना बड़ी दयनीय अवस्था थी। अचानक विमला को याद आया कि मसूरी में उसने एक यन्त्र देखा था जिसकी सुई तनिक भी हिलने पर बता देती थी कि कितने हज़ार मील पर भूचाल आया है और उसमें कितने आदमी मरे। उसने रमेश की ओर देखा। वह बिलकुल पीला पड़ गया था। विमला ने यह पीलापन उसके मुख पर पहले भी एक-दो बार देखा था। रमेश तनिक गर्दन घुमाये दूसरी ओर देख रहा था।

"तो·········?"

विमला ने अपने दोनों हाथ बाँधे। वह जानती थी कि उसके केवल 'हाँ' कहने से रमेश को दुनियाँ की दौलत मिल जायगी। वह उसका विश्वास कर लेगा, क्योंकि वह उसका विश्वास करना चाहता था और फिर उसे क्षमा भी कर देगा। वह जानती थी कि रमेश में करुणा भरी है, वह उसका उपयोग करेगा। वह जानती थी कि वह हठी नहीं है। यदि रमेश के हृदय को छूती हुई वह बात कह भी दे तो वह उसे बिलकुल क्षमा कर देगा। फिर उसके बाद वह कभी भी अतीत को याद नहीं करेगा। उसने सोचा, रमेश निर्दय हो सकता है, परन्तु कमीना और ओछा नहीं हो सकता। उसके 'हाँ' शब्द के कहने पर रमेश को सब कुछ मिल जाएगा।

विमला को भी संवेदना की अत्यन्त आवश्यकता थी। वफ़ा पाने

के विचार से ही उसमें नई आशाओं और आकांक्षाओं का उदय हुआ था। वह स्वयं को कमजोर, भयभीत और अकेली पा रही थी। उसी दिन सवेरे उसे अपनी माँ का ध्यान आया था; पर इस समय वह हृदय से चाहती थी कि काश, वह उसके पास हो सकती ! वह सहारा ढूँढ रही थी, ढाढ़स खोज रही थी। वह रमेश से प्रेम नहीं करती थी। वह यह भी जानती थी कि वह उसे कभी नहीं चाह सकती; पर उस क्षण वह चाह रही थी कि रमेश उसे अपने आलिंगन में ले ले और अपने वक्षस्थल पर उसे अपना सिर टिका लेने दे, एक बार प्रसन्नता में किलकारी भी भर लेने दे। वह चाहती थी कि रमेश उसका चुम्बन ले ले। वह चाहती थी कि वह अपनी बाँहों का हार रमेश के गले में डाल दे।

विमला रो पड़ी। वह झूठ बोल सकती थी। वह झूठ सरलता से बोल सकती थी। यदि एक झूठ से बिगड़ा खेल बन जाए तो फिर बोलने मे क्या आपत्ति थी ? झूठ-झूठ-झूठ क्या था ? केवल 'हाँ' ही तो कहना था। उसने अनुभव किया कि रमेश की आँखें द्रवित हो गई थीं और वह अपने हाथ उसकी ओर फैला रहा था। पर वह 'हाँ' नहीं कह पा रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्यों नहीं कह पा रही थी। पिछले हफ्तों में उसे बहुत अनुभव हुआ था। श्याम और उसकी निर्ममता, 'कॉलरा' और उसके कारण आदमियों की मौत, नर्सें और विमल जो पियक्कड़ था। इन सबने उसे बिलकुल बदल दिया था। वह इन सबसे जैसे हिल-सी गई थी। लगता था कि कोई उसके अन्तर में बैठा यह सब आश्चर्य की दृष्टि से देख रहा था। उसे सच कहना चाहिए, झूठ बोलना ठीक नहीं। उसके विचारों में साम्य न था। उसे विचारों में अहाते की दीवार के सहारे वह भिखमंगा दिखाई दिया। उसके सम्बन्ध में आखिर क्यों सोचा ? वह सिसकी नहीं ! आँसू उसके गालों पर ढुलक रहे थे। अन्त में उसने प्रश्न का उत्तर दिया। रमेश ने पूछा था, क्या वही बच्चे का पिता है ?

वह बोली, "मैं नहीं जानती।'

रमेश के दाँत बज उठे। विमला घबरा गई।

"क्या यह अनुचित नहीं है?"

रमेश का उत्तर उसके व्यक्तित्व के अनुकूल था। सुनते ही विमला का कलेजा बैठ गया। वह सोच रही थी कि काश, रमेश समझ सके कि उसे सत्य कहने में कितनी कठिनाई हुई! काश, वह उसके इस प्रयत्न की प्रशंसा कर सकता! अपना उत्तर 'मैं नहीं जानती—मैं नहीं जानती।' उसके दिमाग़ मे गूँज रहा था। अब उत्तर वापस नहीं लिया जा सकता था। बटुए में से रूमाल निकालकर उसने अपनी आँखें पोंछीं। दोनों मौन थे। खाट के पास रखी हुई सुराही से विमला ने एक गिलास पानी पिया। उसने देखा कि रमेश का हाथ कितना पतला था! रमेश का हाथ तो सुडौल था—लम्बी उँगलियाँ थीं; पर अब तो वह कंकाल-भर रह गया था। वह थोड़ा काँपा। रमेश ने अपने मुख पर तो प्रतिक्रिया का भाव नहीं आने दिया; पर हाथ धोखा दे गया।

"मेरे रोने की चिन्ता मत करो।" वह बोली, "इसमें कुछ भी नहीं है। केवल यही कि मैं आँसू बहाये बिना रह नहीं सकी।"

विमला के पानी पीने के बाद रमेश ने गिलास लेकर रख दिया। वह एक कुर्सी पर बैठ गया और एक सिगरेट सुलगा ली। उसके मुख से आह-सी निकल गई। विमला ने पहले भी रमेश को कराहते सुना था और उसकी आह सुनकर विमला का कलेजा बैठ जाता था। रमेश खिड़की के बाहर शून्य में टकटकी बाँधे देख रहा था और विमला रमेश को निहार रही थी। उसने देखा कि रमेश कितना दुबला हो गया था। उसने अभी तक कभी यह अनुभव नहीं किया था। रमेश का चेहरा सूख गया था। उसके कपड़े इतने ढीले हो गये थे कि लगता था जैसे अपने से किसी बड़े आदमी के उसने पहन रखे थे। चेहरे पर धूप का प्रभाव था, रंग काला-सा पड़ गया था। वह बिलकुल थका-

माँदा दीखता था । वह निरन्तर व्यस्त रहता था । सोता बहुत कम था—खाना बहुत कम खाता था । विमला को अपने क्लेश में भी उस पर दया आगई । विमला को बड़ा दुःख हुआ कि उसने कभी रमेश का ध्यान नहीं रखा ।

रमेश ने अपना हाथ अपने माथे पर रखा । जैसे उसके सिर में पीड़ा थी । विमला को लगा कि रमेश के दिमाग़ में भी उसके वे शब्द 'मैं नहीं जानती—मैं नहीं जानती ।' गूँज रहे थे । कितने आश्चर्य की बात थी कि रमेश-जैसे शर्मीले आदमी में भी बच्चे के लिए कितना प्रेम था ! बहुत से पुरुषों को अपने बच्चे नहीं सुहाते; पर रमेश के सम्बन्ध में तो नर्सें बताती रही थीं । यदि रमेश में उन बच्चों के लिए स्नेह था तो न जाने अपने बच्चे के लिए उसमें कितना वात्सल्य भरा होगा ? कहीं चीख न निकल जाये, इसलिए विमला ने अपने होंठ दबा लिए ।

रमेश ने अपनी घड़ी में समय देखा ।

"मुझे बहुत काम करना है, इसलिए अब जाता हूँ । तुम तो अब स्वस्थ रहोगी न ?"

"हाँ-हाँ, मेरी चिन्ता न करो ।"

"तुम शाम को मेरा इन्तजार न करना । मुझे आने में देर हो सकती है । दारोगाजी के यहाँ खाना खा लूँगा ।"

"अच्छा ।" विमला ने कहा ।

रमेश खड़ा हो गया । बोला, "अगर मैं तुम्हारी स्थिति में होता तो आज कुछ न करता । तुम भी इसकी विशेष चिन्ता मत करो । मेरे जाने से पहले कोई वस्तु चाहिए तो बता दो ।"

"नहीं, मैं बिलकुल ठीक हो जाऊँगी ।" विमला ने कहा ।

एक क्षण को रमेश रुका, जैसे वह कुछ अनिश्चित-सा हो और फिर एकाएक तेज़ी के साथ बिना विमला को देखे ही कमरे से चल दिया ।

विमला ने आज रमेश में धैर्य की पराकाष्ठा देखी । उस बात को

सुनकर रमेश के अतिरिक्त यदि कोई अन्य पुरुष होता तो न जाने उस की क्या दशा होती। उसका व्यवहार अपनी पत्नी के प्रति कितना अमानुषिक हो गया होता; वह अपने को न सँभाल पाता।

परन्तु रमेश पर मानो उसका कोई प्रभाव ही नहीं हुआ। उसने विमला की फिर भी चिन्ता की और उसे विश्वास था कि विमला के लिए आज भी उसके हृदय में उतना ही प्रेम था।

४७

रात खासी खुश्क और गरम थी। विमला कमरे की खिड़की के पास बैठी सामने किसी मन्दिर के गुम्बद को देख रही थी, जो अजीब-सा लग रहा था। झिलमिलाते तारों की रोशनी में वह अच्छा लगता था। अन्त में रमेश आगया। विमला की आँखें रोते-रोते सूज गई थीं; पर अब वह पूर्णतया स्वस्थ थी। तमाम थकावट और उलझन के बाद वह अब अपने अन्दर शान्ति का आभास पा रही थी।

रमेश अन्दर आते हुए बोला, "मैं तो समझता थी कि तुम सो गई होगी अब तक।"

"मुझे नींद नहीं आई। यहाँ बैठने में अधिक सुविधा अनुभव कर रही थी। तुमने खाना खाया, या नहीं ?" विमला ने पूछा।

"हाँ खा लिया।" रमेश बोला।

रमेश कमरे में चहलकदमी कर रहा था। विमला समझ रही थी कि रमेश बहुत बड़ी उलझन में था। बिना विशेष रुचि के वह रमेश के बोलने का इन्तज़ार कर रही थी। रमेश बोला, "तुम्हारी दोपहर की कही बात पर मैं बराबर सोचता रहा हूँ। मेरी समझ में तो यदि तुम वापस चली जाओ तो अच्छा हो। मैंने कल दारोगाजी से

बातचीत की थी, वह तुम्हें पहुँचा देंगे। 'आया' को भी साथ लेती जाओ—तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न होगा।"

"परन्तु मैं जाऊँ कहाँ ?" विमला ने पूछा।

"अपनी माताजी के पास जा सकती हो।"

"तुम्हारे विचार में क्या वह मुझे पाकर प्रसन्न होंगी ?"

रमेश एक क्षण रुका जैसे बात का अर्थ लगा रहा हो।

"तो तुम मसूरी जा सकती हो।"

"वहाँ मैं क्या करूँगी ?" विमला ने पूछा।

"तुम्हारे लिए पूरी सेवा और देखभाल का प्रबन्ध आवश्यक है। मेरी समझ में तुम्हारा यहाँ ठहरना उचित नहीं होगा।" रमेश बोला।

विमला बिना हँसे नहीं रह सकी। व्यंग की हँसी नहीं, परिहास की हँसी थी। वह रमेश को देखकर हँस रही थी। बोली, "मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता तुम क्यों कर रहे हो ?"

रमेश खिड़की के पास आकर खड़ा हो गया। वह दूर क्षितिज के उस अँधियारे में ताक रहा था। आसमान में तारे छिटके हुए थे। बादल का कहीं पता नहीं था। वहीं खड़ा-खड़ा वह बोला, "तुम्हारी-जैसी अवस्था की नारी के लिए यह उपयुक्त स्थान नहीं है।"

विमला ने रमेश की ओर देखा। उस दुबले-पतले पुरुष के भावों में कटुता और दुर्विचार कूट-कूटकर भरे थे, फिर भी विमला इस समय भयभीत नहीं हुई। विमला ने अचानक पूछा, "जब तुम मुझे यहाँ लाये थे, तब क्या मुझे मार डालने की नीयत से लाये थे ?"

रमेश ने देर तक कोई उत्तर नहीं दिया। विमला समझी उसने उसकी बात नहीं सुनी।

"पहले तो यही विचार था।"

विमला काँप उठी। रमेश ने पहली बार अपनी भावना का परिचय दिया। विमला को रमेश का उत्तर बुरा नहीं लगा। क्यों नहीं बुरा

लगा, इस पर स्वयं विमला को आश्चर्य हो रहा था । विमला को रमेश का उत्तर किंचित् अच्छा ही लगा और उसे हँसी आ गई । एकाएक उसे श्याम का विचार आया जो अब विमला के विचारों में एक निपट मूर्ख व्यक्ति था ।

विमला ने कहा, 'तुम इतना बड़ा खतरा मोल ले रहे थे । जितने भावुक हो उस हिसाब से तो उस स्थिति में तुम स्वयं को कभी क्षमा नहीं कर पाते ।''

"परन्तु तुम मरी नहीं—तुम ज़िन्दा हो ।"

"मुझे अपना जीवन इतना प्यारा पहले कभी नहीं था ।"

विमला ने चाहा कि वह रमेश के हास्य पर न्योछावर हो जाय । आखिर वे दोनों ही कठिनाई और वीभत्स वातावरण में साथ रहे थे । विमला ने सोचा कि जब मौत आदमियों को ऐसे बीन रही थी जैसे कोई माली खेत में पड़े आलू बीनता हो, तो ऐसे वातावरण में यदि उसके शरीर के साथ किसीने खेल खेल लिया तो क्या हुआ । काश, वह रमेश को समझा पाती कि श्याम उसके लिए बिलकुल नगण्य हो गया है, अब वह अपने विचारों में श्याम का सही चेहरा तक नहीं उतार सकती, वह अपने हृदय से उसे निकाल कर फेंक चुकी है । अब क्योंकि श्याम से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा, अतः उसके साथ के वे पुराने सम्बन्ध उसे बिलकुल महत्त्वहीन लगे । उसने अपना हृदय वश में कर लिया था, यदि उसके शरीर पर कुछ अवांछित घट गया था तो उसकी चिन्ता उसे नहीं थी । उसने चाहा कि वह रमेश से कह दे, "देखो रमेश, हम खासी बेवकूफ़ी कर चुके हैं । हम दोनों बच्चों की भाँति मुँह भी फुला चुके, अब क्यों न हम आपस में प्रेम और मित्रता से रहें । यदि हम दोनों प्रेमी और प्रेयसि नहीं बन सकते तो क्या मित्र भी नहीं बन सकेंगे ?"

रमेश निश्चल खड़ा था । लॅप के प्रकाश में उसका चेहरा देखकर विमला चौंक पड़ी । विमला को उस पर भरोसा नहीं था । यदि वह

गलत बात कहती थी तो रमेश तुरन्त सख्त बनकर जवाब देता था। उसे रमेश की चरम-भावुकता का पता था। उसको छिपाने के लिए ही वह बर्फ-सा शांत रहता था। दिल पर चोट लगने पर भी वह कैसी चतुराई से अपने भाव बचा जाता है। विमला को एक क्षण के लिए रमेश की मूर्खता पर क्रोध आगया था। विमला जानती थी कि स्वत्व से अधिक चोट रमेश की अहमन्यता को पहुँची थी।

विमला ने सोचा कि अहमन्यता का घाव नहीं भरता। कैसा व्यंग है कि पुरुष अपनी पत्नियों के सदाचार पर इतना महत्व देते हैं। पहले-पहले जब वह श्याम के पास गई थी तब उसमें एक दूसरी ही भावना थी—तब वह स्वयं को बदला हुआ पाती थी; पर वह स्वयं को बहुत अच्छी तरह समझती थी। उसे अपने जीवन में उत्साह और उमंग मिले थे। विमला ने सोचा था कि वह रमेश से कह दे बच्चा रमेश का ही था। छोटा-सा झूठ बोलने से उसका क्या चला जायगा; पर रमेश के लिए वह छोटा झूठ कितना सुखद हो जायगा! फिर उसने सोचा कि मेरा यह कहना गलत नहीं भी हो सकता। कौन जाने? पर विमला के हृदय ने इस सन्देह की पुष्टि की, आज्ञा नहीं दी। पुरुष कितना मूर्ख होता है! प्रजनन में उसका भाग कितना कम होता है। यह तो स्त्री ही अपने गर्भ में बालक को छिपाये, असुविधा और कष्ट सहती है; फिर भी पुरुष अपने क्षणिक आवेग को इतना महत्व दे डालता है। बच्चे के प्रति रमेश में विचार-भेद क्यों हो? विमला के सारे विचार उसके होने वाले बच्चे के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगे। विमला में बच्चे के प्रति कोई कोमल भावना उस समय नहीं थी—न ही मातृत्व की भावना थी, केवल सरल-सी जिज्ञासा।

रमेश ने मौन भंग करते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर ध्यान से सोचो तो, अच्छा हो।"

"क्या सोचूं?" विमला ने कहा।

रमेश तनिक विमला की ओर घूमा, जैसे उसे इस उत्तर पर आश्चर्य हुआ।

"यही कि तुम्हें कब जाना है ?"

"मैं जाना नहीं चाहती।" विमला दृढ़तापूर्वक बोली।

"क्यों नहीं जाना चाहतीं ?" रमेश ने पूछा।

"मुझे यहाँ केन्द्र में अपना काम प्रिय है। मैं स्वयं को उपयोगी बना पा रही हूँ। जब तक तुम यहाँ हो, मैं भी यहीं रहूँगी।"

"मैं तुमसे स्पष्ट कह दूँ कि यहाँ के वातावरण में तुम्हें महामारी होजाने का भय है।" रमेश ने कहा।

व्यंग-भरी मुस्कान से विमला ने कहा, "तुम्हारे कहने का तरीका मुझे अच्छा लगता है। मैं मर जाऊँ तो इस सामने वाली नदी के किनारे उठाकर फूंक देना।"

विमला घबराई। रमेश को यह नहीं ज्ञात था कि उसकी बातों से विमला में दया का भाव संचरित हो गया था।

"नहीं ! तुम मुझे नहीं चाहते। कभी-कभी तो मै सोचती हूँ कि मैं तुम्हारे लिए भार-स्वरूप हूँ। मैं नहीं जानती थी कि तुम उन नर्सों के लिए स्वयं को होम दोगे।" विमला के होंठ मुस्कान से फ़ैल गए थे। वह आगे बोली, "अपनी धारणाओं के ठीक न होने का दोष मुझ पर क्यों मढ़ते हो ? यदि तुमने मूर्खता की तो इसमें मेरा क्या दोष ?"

"विमला ! इस तरह की बातें करना यदि तुम्हें शोभा देता है तो जितना जी चाहे करो।"

"मुझे दुःख है, मैं तुम्हें बड़ा समझने का अवसर नहीं दे पाती।" विमला को लगा कि वह अब अधिक गम्भीर नहीं हो पाएगी। "तुम भी ठीक कहते हो कि मैं उन अनाथों के लिए यहाँ नहीं रह रही हूँ। सच बात तो तुम्हें भी मालूम है कि दुनियाँ में मेरा कोई नहीं है,

जिसके पास मैं चली जाऊँ। जिसके पास भी जाऊँगी, उसीको खलूँगी। मेरे मरने-जीने की किसीको चिन्ता नहीं है। मेरे जीवन का अर्थ समाप्त हो चुका है।"

रमेश बड़बड़ाया, परन्तु इस बड़बड़ाने में क्रोध नहीं था। उसने कहा, "हमने सारा खेल बिगाड़ दिया विमला !

"क्या तुम अब भी मुझे तलाक़ देना चाहते हो विमला, परन्तु अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। तुम चाहो तो सहर्ष दे सकती हो। तलाक लेकर भी मैं तुम्हारा आजीवन भार सम्भालने को उद्यत हूँ।

यह अच्छी तरह जान लो कि तुम्हें यहाँ लाकर मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया।" रमेश मुस्कराकर बोला।

"मुझे तो नहीं मालूम। फिर मैं कोई भावना-परीक्षक भी तो नहीं हूँ। यहाँ से जाने के बाद हमारा क्या प्रोग्राम है ? क्या हम साथ-साथ रहेंगे ?"

"इसकी चिन्ता क्यों करें, भविष्य को अपना खेल खेलने दो।"

रमेश के स्वर में मृत्यु के समय की-सी थकान थी।

परन्तु इस समय दोनों के चेहरों पर कुछ प्रसन्नता के आसार थे। लगता था, जैसे बहुत बड़ा बोझ दोनों के कलेजों से उतरकर एक ओर जा गिरा था।

दोनों ने एक बार मुस्कराकर एक-दूसरे की ओर देखा और फिर दोनों मौन हो गये।

रमेश धीरे-धीरे आगे बढ़कर विमला की आरामकुर्सी के डंडे पर जा बैठा और उसने धीरे-से विमला का हाथ अपने हाथ में लेकर उसकी उँगलियों में अपनी उँगलियाँ डालकर कहा, "मेरी उँगलियाँ कुछ कमज़ोर-सी पड़ गई विमला।"

विमला की आँखों से आँसू बरस पड़े।

४८

दो-तीन दिन बाद विमल केन्द्र से विमला को अपने मकान पर ले गया। अपनी स्त्री के हाथ की बनी चाय पिलाने का उसका वायदा था। विमला पहले दो-एक वार विमल के निवास-स्थान पर भोजन कर चुकी थी। विमल का मकान चौकोर, बड़ा और सफ़ेद बना था। उसे देखने पर लगता था कि वह कोई सरकारी इमारत थी। विमला और विमल एक ज़ीने पर चढ़े, दरवाज़ा खोला। विमला ने स्वयं को एक विशाल कक्ष में पाया, जिसकी दीवारें सफ़ेद पुती हुई थीं और उन पर चित्र बने थे। एक चौकोर नक्काशीदार मेज़ के सहारे कुर्सी पर वह स्त्री बैठी थी। वह विमला और विमल के अन्दर आते ही उठकर खड़ी हुई, पर आगे नहीं बढ़ी।

विमल ने कहा, "लो, ये हैं जिनसे आप मिलना चाहती थीं।"

विमला ने उस स्त्री से हाथ मिलाया। वह लम्बा और कढ़ा हुआ गाउन पहने थी। वह छरहरे बदन की थी। कद भी उसका विमला से बड़ा था। रंग उसका निखरा हुआ, गुलाबी था। उसने अपने काले केश बड़ी रुचि से काढ़े हुए थे और उन पर क्लिप लगे थे।

मुख पर पाउडर लगा था और आँखों के पास से लेकर मुँह तक—गालों पर सुर्खी पुती थी। उसकी भवें तनी हुई थीं—भवों के स्थान पर केवल एक रेखा-सी खिची हुई थी और ओठ गुलाबी थे। इस चेहरे-मोहरे पर उसकी बड़ी-बड़ी आँखें ऐसे चमकती थीं जैसे दो झीलों में कोई द्रव्य दमकता हो। सब मिलाकर वह स्त्री के स्थान पर मूर्ति-सी लगती थी। उसके हाव-भाव नपे-तुले थे। विमल को लगा कि स्त्री

स्वभावतः जिज्ञासु और शर्मीली थी। विमल जब उससे विमला के सम्बन्ध में बातें कर रहा था तो उसने दो-तीन बार सिर हिलाया था। विमला की निगाह उसके हाथों पर गई। उसके हाथ साधारण से अधिक लम्बे थे, कमज़ोर थे और हाथी-दाँत से सफ़ेद और नाखूनों पर लाली लगी थी। विमला ने सोचा कि पहली बार उसने ऐसे सुघड़ हाथ देखे थे। उन हाथों से आभास होता था कि उनका घराना शताब्दियों से सभ्य था।

वह बहुत थोड़ा बोलती थी; पर जब बोलती तो लगता कि किसी बगिया में कोई चिड़िया बोल रही हो। उसने कहा था कि उसे विमला से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। उसने विमला की अवस्था पूछी। उसके कितने बच्चे हैं, यह पूछा? वे तीनों उसी मेज़ के चारों ओर पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए और तभी एक ब्वॉय चाय के प्याले लाया। उस स्त्री ने विमला को चाय परसी। कमरे में उस मेज़ और कुर्सियों के अतिरिक्त बहुत थोड़ा फ़र्नीचर था। वहाँ नक्काशीदार और सिरहाने-वाला बड़ा पलंग था और उसके अतिरिक्त चन्दन की दो आलमारियाँ थीं।

विमला ने पूछा, "आप सारा दिन अकेली क्या करती रहती हैं?"

"थोड़ी-बहुत पेन्टिंग करती हूँ या कविताएँ लिखती हूँ। अधिकतर खाली बैठी रहती हूँ या सिगरेट पीती हूँ।"

"आप भी सिगरेट पीते हैं?" विमला ने पूछा।

"बहुत कम! मुझे तो केवल 'ह्विस्की' पसन्द है।" विमल बोला।

कमरे में एक अजीब-सी महँक थी जो सुखद तो नहीं थी; पर नशीली अवश्य थी।

उस स्त्री ने एक पैनी दृष्टि विमला पर डाली। उस दृष्टि में मुस्कान झलक रही थी। वह सीधी बैठी थी। उसके व्यक्तित्व में आकर्षण था। उसके मेकप किये चेहरे से और आँखों से भान होता

था कि आत्मसंयत नारी थी। वह केवल चित्र की भाँति थी, फिर भी विमला को खींच रही थी।

विमला को उस नारी के सुघड़ लम्बे हाथों की उँगलियाँ पहेलियों की गुत्थियों की चाबी-सी दिखाई दीं।

विमला ने पूछा, "सारे दिन आप क्या सोचती रहती हैं?"

"कुछ नहीं।" उसने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"आप अनुपम सुन्दरी है। आपके-जैसे हाथ मैंने पहले कभी नहीं देखे। मुझे आश्चर्य है कि आपने मिस्टर विमल में क्या देखा?"

मुस्कराते हुए विमल ने विमला की ओर देखा।

"यह बहुत अच्छे हैं।" विमला ने मसखरेपन से कहा, मानो स्त्री ने पुरुष की अच्छाइयों से प्रेम किया था, उसके रूप और शरीर से नहीं।

वह स्त्री हँसी। वह भी उस समय जब विमला ने उसके 'ब्रेसलेट' की प्रशंसा की। उसने 'ब्रेसलेट' निकालकर विमला को दे-दिया। विमला के हाथ नाजुक थे, छोटे थे, मुलायम थे। 'ब्रेसलेट' उनमें चढ़ न सका। वह स्त्री बच्चों की भाँति खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने विमल से कुछ कहा, आया को बुलाया। आया को उसने आदेश दिया कि वह उनके जूते ले आये। आया जूते ले आई।

"मैं आपको ये जूते भी भेंट करना चाहती हूँ, यदि आप इन्हें पहनें तो अच्छा होगा। ये बहुत बढ़िया हैं।"

विमला ने तृप्ति के भाव में कहा, "मेरे तो यह बिलकुल ठीक हैं।"

विमला ने देखा कि विमल के होंठों पर शैतान-सी मुस्कराहट थी।

विमला ने पूछा, "क्या ये इनके बहुत बड़े हैं?"

"मीलों।" विमल बोला।

विमला को इस उत्तर पर हँसी आगई। वह स्त्री और आया भी हँस पड़ीं।

थोड़ी देर बाद विमला और विमल वहाँ से चलकर पहाड़ी की ओर जा रहे थे तो विमला ने मुस्कान-भरी दृष्टि से विमल को देखा।

'आपने मुझसे पहले कभी नहीं बताया कि आप उसे इतना अधिक प्रेम करते हैं।"

"परन्तु आपको कैसे पता चला कि मैं उसे इतना प्रेम करता हूँ ?"

"आपकी आँखें स्पष्ट बताती थीं। लगता था जैसे कोई किसी देवी अथवा स्वप्न को प्रेम करता हो। इन पुरुषों को भी समझ पाना बड़ा कठिन है। मैं तो समझती थी कि आप भी अन्य पुरुषों की ही भाँति होंगे; पर अब देखती हूँ कि मैं आपको बिलकुल ही नहीं समझ सकी थी।" विमला बोली।

दोनों जब बँगले में पहुँच गए तो विमल ने अचानक ही पूछा, "आप उससे क्यों मिलना चाहती थीं ?"

विमला उत्तर देने के पहले तनिक सकुचाई। फिर बोली, "मैं कुछ ढूँढ़ रही हूँ; पर मैं स्वयं नहीं जानती कि क्या ढूँढ़ रही हूँ। इतना जानती हूँ कि जो खोज रही हूँ उसका जान पाना बहुत ही आवश्यक है। अगर मैं जान जाऊँ तो सब सरल हो जाय। शायद नर्सें उस अज्ञात को जानती हैं। जब भी मैं उनके साथ होती हूँ तो मुझे लगता है कि वे निरन्तर ही कोई रहस्य मुझसे छिपाए रहती हैं, उस रहस्य को मुझे नहीं बताना चाहतीं। मैं सोचती थी कि मैं तुम्हारी पत्नी से मिलूँ तो सम्भव है मुझे अपनी खोज के लिए कोई किरण मिल जाय। शायद वही मुझे कुछ बता सके।"

"आपने कैसे जाना कि उसे उसका पता है ?"

विमला ने विमल को घूरकर देखा; पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। विमला ने एक दूसरा प्रश्न किया, "क्या आप उस रहस्य को जानते हैं ?"

विमल मुस्करा दिया।

विमला बोली, "देखिए, हममें से कुछ तो समझते हैं कि अफ़ीम के

नशे में वह रहस्य निहित है, कुछ सोचते हैं कि अध्यात्म के पथ पर चलकर उसे जाना जा सकता है, कुछ लोगों का विचार है कि वह मदिरा में मिलता है और कुछ उसे प्रेम में ढूँढ़ते हैं। परन्तु इन सबसे कुछ हासिल नहीं हो पाता।

वह इन सबमें नहीं है। वह इन सबसे पृथक है। पास रहकर भी दूर रहने का रहस्य क्या तुमने इन चीज़ों में कहीं पाया है? बोलो विमल! है नहीं यह बहुत बडा रहस्य! यह प्रेम-शून्य नहीं है विमल! परन्तु फिर भी क्या तुम इसे प्रेम कहोगे?"

विमल उपहास-प्रिय व्यक्ति था, परन्तु विमला की आज की बात सुनकर वह उसे उपहास में न उड़ा सका। उसने विमला के चेहरे पर देखकर कहा, "विमला! डाक्टर रमेश के प्रति मेरे मन में अगाध श्रद्धा हो गई है। और मेरे ही समान उन नर्सों में भी। हम सबमें एक भी डाक्टर रमेश के रूप पर लट्टू नहीं है। पुरुष का रूप उसका शरीर नहीं होता, उसके गुण होते हैं। दूसरों को धोखा देने वाले पुरुष के सुन्दर रूप से मुझे घृणा है विमला!" और फिर मुस्कराकर बोला, "मेरी पत्नी भी यही कहती है विमला! तभी तो मैं उसे अच्छा लगता हूँ, वरना तो तुमने सच ही कहा था कि मेरी शकल में प्रेम करने के लिए क्या है, अच्छा-खासा बन्दर-जैसा मेरा चेहरा है।"

विमल की बातें सुनकर विमला खिलखिलाकर हँस पड़ी। भोपाल में आकर शायद वह प्रथम बार इस प्रकार खिलखिलाकर हँसी थी।

४६

विमला फिर केन्द्र में जाने लगी थी। उस दिन सवेरे उसकी दशा अच्छी नहीं कही जा सकती थी; पर फिर भी वह पूरी शक्ति से अपने को अस्वस्थ होने से रोक रही थी। उसे यह सोचकर आश्चर्य हो

रहा था कि नर्सों को उसमें कितनी दिलचस्पी थी। वे नर्सें जिनसे विमला का कोई मतलब नहीं था, केवल नमस्कार आदि ही कभी-कभी होता था, उस दिन वे सब विमला का हाल पूछने आई। उन्होंने उससे बातें कीं। कान्ता तो उससे कई बार कह चुकी थी कि विमला माँ बनने वाली है; पर जिस दिन अचेत हो गई थी, उस दिन तो उन्हें कोई सन्देह ही नहीं रह गया था। उसने कहा था, "अरे, अब तो बिलकुल स्पष्ट है कि विमला बच्चे को जन्म देने वाली है। कान्ता ने अपनी भाभी के ऐसे ही दिनों की चर्चा की थी, परन्तु विमला उस सब से घबराई नहीं थी।"

विमला का गर्भवती होना केन्द्र में प्रसन्नता और आनन्द का बहाना हो गया था। वहाँ के वातावरण से लगता था जैसे किसी बगिया में कोमल कलियों से हलकी भीनी हवा खिलवाड़ करती हो। इस विचार-मात्र ने, कि विमला गर्भवती है, वहाँ की नर्सों में उत्साह जगा दिया था।

कभी वे विमला से भय खातीं, कभी उन्हें विमला आकर्षक लगती। वे सब-की-सब विमला के स्वास्थ्य को देखतीं। सारी-की-सारी नर्सें किसान-परिवारों की थीं; पर उनके सरल हृदयों में अपार प्रेम था। उन सबको विमला के कष्ट पर दुःख होता था; पर फिर भी वे अन-जाने ही प्रसन्न हो उठतीं। कान्ता ने विमला से कहा था कि सारी नर्सें विमला का ध्यान रखा करें।

विमला को अपने प्रति इतना स्नेह देखकर गुदगुदी हो उठती थी। सिस्टर जो अपने व्यवहार में बड़े संयम से काम लेतीं, उनकी आँखों में अपने प्रति नवीन स्नेह देखकर विमला को आश्चर्य हुआ। वह सदा ही विमला को स्नेह देती रही थीं; पर वह स्नेह अछूता-सा होता; पर अब विमला को उनका स्नेह वात्सल्य से भरा दीखता। विमला को उनकी आवाज़ अब अधिक मधुर लगती। जब वह विमला को देखतीं तो विमला को लगता कि उनकी आँखें प्रसन्नता से चमक रही थीं। जैसे वह विमला पर रीझ गई थीं। विमला पर इन बातों का विशेष प्रभाव

पड़ा। उसका हृदय शान्त सागर की भाँति था, जो मन्थर गति से शान्ति के साथ अपना अस्तित्व बनाए रखता था, परन्तु अब लगता था कि उस खामोशी में सूरज की किरण ने हलचल पैदा करदी थी और लहरें उठने लगी थीं। सिस्टर अक्सर शाम को विमला के पास आकर बैठा करती थीं। वह कहतीं, "मैं तुम्हारी पूरी निगरानी करूँगी। देखूँगी कि कहीं बहुत अधिक तो अपने को नहीं थका लेती हो तुम।" फिर स्वयं पर मधुर आरोप थोपतीं, कहतीं, "डाक्टर रमेश मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे। उनमें कितना अत्मसंयम है। वैसे तो बहुत प्रसन्न रहते हैं; पर उनसे इस सम्बन्ध में कुछ बात करो तो एक दम जैसे पीले पड़ जाते हैं।"

सिस्टर विमला का हाथ अपने हाथों में लेकर सहलाने लगतीं।

"डाक्टर रमेश ने बताया था कि वह तुम्हें भेज देना चाहते थे; पर तुम हम लोगों को छोड़कर नहीं जाना चाहतीं। तुम्हारा यह विचार कितना सुन्दर है! मेरी बच्ची! तुमने हम लोगों की जो सहायता की है, उसे हम कह नहीं सकेंगे। परन्तु मैं तो समझती हूँ कि तुम डाक्टर को भी अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती होगी। और यह ठीक भी है, क्योंकि तुम्हारा स्थान तो डाक्टर के पास ही है और फिर उन्हें भी तुम्हारी बहुत आवश्यकता है। मैं तो सोच नहीं सकती कि कि यदि डाक्टर रमेश न होते तो हम लोगों का क्या हाल हो गया होता। इस नगर और इस देहात की क्या दशा हो गई होती।"

विमला ने उत्तर में कहा, "मुझे तो बड़ी खुशी होती है जब देखती हूँ कि वह आप लोगों की थोड़ी सेवा कर सके।"

मेरी बच्ची! तुम डाक्टर रमेश से सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करना। वह साधु पुरुष है। ऐसा साधु पुरुष आज तक मेरी नज़र से नहीं गुज़रा।"

विमला मुस्करा दी; पर उसका हृदय कहीं से चीख़ उठा। उसकी समझ में नहीं आता था कि डाक्टर रमेश उसे क्षमा कर देंगे। वह चाहती थी कि वह उसे क्षमा कर दें, उसके लिए नहीं अपने लिए, क्योंकि

वह जानती थी कि क्षमा के बाद ही उन्हें मानसिक शान्ति मिल सकेगी ? विमला के विचारों में रमेश से क्षमा माँगना व्यर्थ था। यदि रमेश कोई सन्देह पाल रहा था तो वह उसके चाहने पर ही तो पल रहा था, विमला का उसमें दोष नहीं था। जब तक वह सन्देह रहेगा तब तक रमेश का मान, रमेश से उसे क्षमा नहीं करा सकेगा। अब विमला को रमेश के व्यवहार पर क्रोध नहीं आता था वरन् उसे रमेश का व्यवहार न्यायोचित और स्वाभाविक लगता था। उसे रमेश पर तरस आता था। केवल किसी अचानक घटित होने वाली घटना ही रमेश के हृदय से उस विचार को उखाड़ सकती थी। विमला का विचार था कि यदि रमेश की भावनाएँ तनिक ज़ोर मार दें तो रमेश का सन्देह एवं दुःख जो उस पर किसी डरावने सपने की भाँति छाया हुआ था, दूर हो सकता था। पर रमेश भी यदि यह समझ जाय कि भावनाएँ उससे लड़कर उसका दुःख दूर कर देना चाहती हैं, तो वह उनसे भी जूझ जायगा।

विमला सोचती थी कि यह कैसा व्यंग्य था कि इस दुःख-दर्द से भरी दुनियाँ में पुरुष इतनी व्यर्थ बातों में और सन्देशों से घिरकर स्वयं को प्राणान्तक कष्ट दे !

यह विचित्र बात थी। पुरुषों के विषय में उसने यही सुना था कि वे स्वार्थी होते हैं, संयमहीन होते हैं और सभीके संयमपूर्ण और निःस्वार्थ प्रेमिका होने का स्वप्न देखते हैं। भारत के अधिकांश पुरुषों का यही दस्तूर है परन्तु डाक्टर रमेश उनसे सर्वथा भिन्न हैं। उन्होंने विमला से कभी कुछ पाने की इच्छा नहीं रखी। अपना सर्वस्व उन्होंने सर्वदा ही विमला के चरणों पर अर्पित किया था और वह आज भी था। विमला इस बात को दिल से जानती थी। वह जानती थी कि विमला के लिए डाक्टर रमेश के हृदय में हर समय प्रेम का समुद्र लहरें मारता रहता है। वह उसे ही प्रेम करते हैं।

५०

यद्यपि सिस्टर ने तो विमला से तीन-चार बार से अधिक बातें नहीं की थीं और एक ही दो बार वह दस मिनट तक बातें कर सकी थीं; पर इतने अल्प समय के अपने व्यवहार से ही उन्होंने विमला पर अपने व्यक्तित्व का पूरी तरह प्रभाव डाल दिया था। उनका चरित्र बिलकुल ऐसा लगता था कि जैसे कोई ऐसे देश में पहुँच गया हो जो बड़ा ही शानदार हो; पर साथ ही रूखा हो और तभी कोई उसमें भीतर जाकर देखे तो उसे खिलखिलाते हुए गाँव, बड़े-बड़े पहाड़ और फलों और फूलों से लदे-फदे वृक्ष दिखाई दें, उसे कलकल करती नदियाँ दिखाई दें, चारागाह दिखाई दें। इतना आकर्षक होने पर भी जैसे वहाँ कोई जम न पाये और यह आभास हो कि उस देश में कहीं कुछ हवा उड़ाकर ले गई हो। ऐसी थीं सिस्टर। उनसे तादात्म्य स्थापित करना असम्भव था। उनमें कुछ ऐसा अलगाव था जो विमला को अन्य में दिखाई नहीं पड़ा था।

एक दिन शाम को विमला और सिस्टर दोनों साथ बैठी हुई थीं। दिन छोटे होने लगे थे, सूर्य का प्रकाश घटने लगा था। सिस्टर कुछ थकी-सी दीख पड़ रही थीं। उनका चेहरा उतरा हुआ था और मुख सफेद पड़ गया था। उनकी सुन्दर आँखों में से चमक कहीं उड़ गई थी। सम्भव है, उनकी थकावट ने उन्हें विमला को विश्वासपात्री बनाने की प्रेरणा दी हो।

लम्बी खामोशी के बाद सिस्टर बोलीं, "मेरी बच्ची! आज का दिन सदा याद रहेगा; क्योंकि आज ही के दिन मैंने सेवा-व्रत ग्रहण किया था। दो वर्ष तक मैं सोचती रही थी, मुझे भय लगता था कि कहीं

मैं सांसारिक झगड़ों में न फँस जाऊँ। परन्तु आज के ही दिन सवेरे मैंने अपना निश्चय अपनी माँ को बता दिया था। मैंने जब सेवा-व्रत धारण किया तो प्रार्थना की कि भगवान् मुझे मानसिक शान्ति प्रदान करे। मुझे मेरी प्रार्थना के उत्तर में सुनाई पड़ा, "तुझे शान्ति उसी समय मिलेगी जब तू उसे चाहना छोड़ देगी।"

सिस्टर अपने अतीत की याद में खो-सी गई।

"उस दिन हमारे पास की एक लड़की बिना किसीसे कुछ कहे-सुने कहीं चली गई थी। उन्हें मालूम था कि उनका परिवार उनकी इच्छा के प्रतिकूल था; पर उनका विश्वास था कि चूँकि वह विधवा थीं, अतः अपना मनचाहा करने का उसका अधिकार था। मेरा रिश्ते का एक भाई उसे छोड़ने गया था; पर वह भी उस दिन संध्या तक नहीं लौटा था। माँ बहुत दुःखी थीं। अपना विचार माँ को बताने में मुझे कुछ भय-सा लगा। मैंने उन्हें नहीं बताया; पर मैं अपने सेवा-व्रत के सम्बन्ध में कहना अवश्य चाहती थी। मैंने माँ के सामने ही अपने भाई से तमाम प्रश्न कर डाले। माँ किसी काम में व्यस्त थीं, वह बिलकुल नहीं बोलीं। मैंने सोचा कि आज ही मुझे बताना चाहिए और उसमें एक क्षण का भी विलम्ब उचित नहीं होगा।

मुझे आज तक वह दृश्य बहुत अच्छी तरह याद है। हम लोग एक मेज़ के चारों ओर बैठे थे। गोल मेज़, जिस पर लाल मेज़पोश बिछा था। हम लोग लैम्प के प्रकाश में कुछ काम कर रहे थे। मेरे दो भाई भी वहीं थे। हम सब मिलकर ड्राइंग-रूम की कुर्सियों की गद्दियाँ बना रहे थे।

मैंने बोलने की बहुतेरी कोशिश की; पर मुँह जैसे किसीने सी दिया था। तभी कुछ क्षण बाद माँ ने मुझ से कहा, "मेरी समझ में तुम्हारी सहेली का काम नहीं आया। इस तरह बिना किसीसे कहे-सुने चले जाना मुझे पसन्द नहीं है। कैसा घिनौना काम किया उसने! कोई भले परिवार की लड़की कहीं ऐसा काम करती है कि

जग-हँसाई हो। यदि तुम्हें कभी जाना हो तो ऐसे मत जाना जैसे कोई पाप करके भाग रही हो।"

उसी क्षण बोलना चाहिए था; पर अपनी दुर्बलता को क्या कहूँ? मेरे मुँह से इतना ही निकला, "माँ तुम चिन्ता न करो, मुझमें इतना साहस नहीं है।"

माँ ने कोई उत्तर नहीं दिया; पर मैं पछता रही थी कि मैं अपने विचार क्यों नहीं व्यक्त कर सकी। मैं कमज़ोर थी, मुझे अपना जीवन सुहाता था, अपने आराम प्यारे थे, अपना परिवार प्यारा था, अपने काम प्यारे थे। मैं इन्हीं भावनाओं में खो गई थी।

थोड़ी देर बाद माँ ने कहा, "मेरी बच्ची! मैं समझती हूँ कि तुम बिना कुछ नाम कमाये अपना जीवन नहीं बिताओगी।"

मैं तब भी अपने विचारों में डूबी रही। मेरे भाई वैसे ही बिना रुके अपना काम कर रहे थे। उन्हें क्या मालूम था कि मेरे हृदय की गति कितनी तीव्र हो गई थी। मेरी माँ ने अपने हाथ का काम छोड़कर मुझसे कहा, "मेरी बच्ची मुझे दिखता है कि तुम मानव की सेवा करोगी।"

"माँ! क्या तुम सच कह रही हो?" मैंने पूछा, "क्या तुम तो मेरे अन्तर की वास्तविकता बता रही हो?"

मेरे भाई एक साथ बोल पड़े, "यह तो पिछले दो वर्षों से यही सोच रही है। परन्तु आप इन्हें आज्ञा न दीजिए, आप इन्हें बिलकुल प्रोत्साहन न दीजिए।"

माँ ने उत्तर दिया, "मुझे मना करने का क्या अधिकार है? यदि ईश्वर की यही इच्छा है, तो यही होगा।"

मेरे भाइयों ने इस सारी बात को हास्य में टालना चाहा; पर कुछ ही क्षण बाद हम सब-के-सब रो रहे थे, तभी मेरे पिताजी की चरण-चाप सुनाई दी।

सिस्टर एक क्षण शान्त रहीं, फिर उन्होंने एक दीर्घ श्वास ली और बोलीं, "मेरे पिताजी के लिए यह सूचना कठोर आघात थी। मैं उनकी एक ही लड़की थी और पुरुष साधारणतया बेटों से अधिक बेटियों से स्नेह करते हैं।"

"हृदयहीना भी दुर्भाग्य ही है," विमला ने कहा। "पर उस हृदय को मानवता के अर्पण कर देना कितना बड़ा सौभाग्य है!"

उसी क्षण एक छोटी लड़की दौड़ती हुई आई और उसने उन्हें कहीं पाई हुई एक गुड़िया दिखाई। सिस्टर ने अपने नरम हाथ उस बच्ची के कन्धों पर रख दिए। बच्ची उनसे लिपट गई। विमला ने देखा कि सिस्टर की आँखों में कितना वात्सल्य था; पर वह स्वयं उनसे कितनी अछूती थी!

विमला ने कहा, "सिस्टर! ये बच्चे आपको कितना चाहते हैं। यदि मैं कहीं इतना प्यार अपने लिए इनमें जगा पाऊँ तो फूली न समाऊँ।"

सिस्टर ने अपनी स्वाभाविक मुस्कान बिखेर दी। बोलीं, "हृदय जीतने का केवल एक ही मार्ग है कि जिसे जीतना है उसकी-सी बन जाओ।"

सिस्टर चली गई। विमला ने इस वाक्य को अनेक बार अपने मन में दुहराया।

वह सोचती रही कि तब क्या उसे वास्तव में रमेश से प्रेम करना चाहिए? क्या उसे रमेश से ही प्रेम करना चाहिए था?

विमला को लगा कि जैसे डाक्टर रमेश उसकी आँखों के सामने खड़े थे। उसने स्वप्न-सा देखा।

परन्तु तभी पास ही खिड़की से बाहर उसके कानों में आवाज़ आई। डाक्टर रमेश पूछ रहे थे, "अब कैसी दशा है विमला की?"

कान्ता ने कहा, "अब वह बिलकुल स्वस्थ है।"

"दिल पर पहले जैसी घबराहट तो नहीं है?"

"कतन नहीं।"

"जी तो नहीं मचलाता; मचलाता हो तो ये गोलियाँ दे-देना उन्हें, मुँह में डालती रहेंगी। इनसे जी नहीं मचलायेगा।" गोलियाँ देकर रमेश चला गया।

विमला के चेहरे पर अचानक मुस्कान बिखर गई।

५१

उस दिन संध्या को रमेश डिनर के लिए नहीं आया। विमला उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। रमेश को जब भी बाहर काम से रुक जाना पड़ता था तो वह विमला को सूचना भिजवा दिया करता था। वह कमरे की खिड़की के सामने आराम-कुर्सी पर बैठकर आकाश के तारों को देखने में लीन होगई। शान्त वातावरण में उसे सुख मिल रहा था।

विमला ने कुछ पढ़ना नहीं चाहा। उसके मन में विचारों का तांता बँधा था जैसे किसी छोटी-सी झील पर मेघ घिर आये हों। विमला इतनी थकी हुई थी कि वह एक भी विचार को पकड़ नहीं पा रही थी। वह एक धुँधले-से विचार पर सोच रही थी कि सिस्टर के सानिध्य से उस पर क्या प्रभाव पड़ा। सिस्टर की जीवनचर्या ने उस पर पूरा प्रभाव डाला; पर उनके विश्वास का जहाँ तक सम्बन्ध था, विमला उससे बिलकुल अछूती थी, उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। वह सोच भी नहीं सकती थी कि उनका-सा विश्वास उस पर भी छा जायगा। उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी, शायद विश्वास की वह किरण उसकी आत्मा को जगमगा दे। एक-दो बार उसने सिस्टर से अपने दुःखी जीवन के सम्बन्ध में कहना चाहा; पर साहस न हुआ। वह नहीं चाहती थी कि वह उसके सम्बन्ध में कोई बुरी धारणा

बनाएँ। सिस्टर को उसका कार्य पापमय लगता। विमला स्वय अपने किये को बुरा नहीं मानती थी; पर उसे वह सब कुछ मूर्खतापूर्ण और भद्दे अवश्य लगते थे।

शायद उसे अपने और श्याम के सम्बन्धों पर दुःख भी होता था; पर वह पश्चाताप की जगह उस सबको भूल जाना अच्छा समझती थी। श्याम का विचार आते ही वह सिहर उठी। उसे श्याम का सुघड़ शरीर और उभरा हुआ सीना दिखाई पड़ा। उसे श्याम की घनी भौंहें पसन्द थीं; पर अब उसे श्याम एक पशु से अधिक और कुछ नहीं लगता था, जिससे विमला को घृणा थी।

उसने कैसी निर्दयता से विमला को छोड दिया था! वह कुछ समझ ही नहीं सकी। बच्चा होने पर शायद वह मर जाय। उसने सोचा कि यदि भविष्य इतना ही धुँधला है, तब तो लगता है कि वह उसे नहीं देख पायेगी। सम्भव है, रमेश उसकी माँ से बच्चे के पोषण के लिए कहे, यदि बच्चा जीवित रहा तो? पर विमला को विश्वास था कि रमेश को बच्चे के पिता होने में चाहे जितना सन्देह हो, वह बच्चे को प्यार करेगा। रमेश का हर अवस्था में मधुर व्यवहार था। उसे तरस आता था कि उसमें गुण है, वह निःस्वार्थ है, उसका मान है, वह योग्य है; पर यह सब होने पर भी उसे प्यार नहीं किया जा सकता था। अब विमला को रमेश से भय नहीं लगता था, वरन् उसे रमेश के लिए दुःख होता था। पर विमला! साथ ही रमेश को यह भी समझती थी कि उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। रमेश की गहन भावनाओं ने उसमें यह विचार जगा दिया था कि वह रमेश से स्वयं को क्षमा करा सकेगी। वह सोचती थी कि केवल इसी प्रकार वह उन कष्टों और दुःखों से रमेश को छुड़ा सकेगी जो उसने स्वयं उसे दिए थे। रमेश में हास-परिहास की शक्ति ही जैसे नहीं थी। विमला अपने विचारों में रमेश के साथ ही स्वयं को भी न हँसा पाती थी।

विमला थकी हुई थी। वह लैम्प अपने कमरे में ले गई और बिस्तर पर लेटते ही सो गई।

रात में दरवाज़ों को ज़ोर-ज़ोर से पीटे जाने की आवाज़ से वह जाग उठी। वह स्वप्न देख रही थी, अतः किवाड़ों की भड़भड़ाहट को वह सत्य नहीं समझ सकी; पर दरवाज़ा बराबर कोई पीटे जा रहा था। थोड़ी ही देर में वह समझ गई कि 'कम्पाउण्ड' का फाटक कोई पीट रहा था। घना अँधेरा था। उसकी घड़ी अँधेरे में चमकती थी। उसने समय देखा, ढाई बजा था। सोचा, रमेश आया होगा; पर कितनी देर में लौटा है। क्या वह नौकर को नहीं जगा सकता था? दरवाज़े अब भी भड़भड़ा रहे थे और तेज़ी से अब वह पीटे जा रहे थे। दरवाज़ों का पिटना समाप्त होते ही उसने सुना कि भारी चटखनी किसीने खोली। रमेश तो इतनी रात गए कभी नहीं आता। बेचारा थक गया होगा। उसने सोचा कि रमेश इतना अक्लमन्द तो है कि वह इस समय प्रयोगशाला में न जाकर अपने कमरे में चला जाएगा।

बाहर कई आदमियों के बोलने का स्वर सुनाई पड़ा। आश्चर्य! रमेश जब कभी देर से आता था तो इस बात का ध्यान रखता था कि मुझे कोई बाधा न हो। विमला ने सुना कि दो-तीन आदमी जल्दी-जल्दी लकड़ी की सीढ़ी पर चढ़े आरहे थे और दूसरे कमरे के दरवाज़े तक पहुँच गए थे। विमला को भय लगा। उसे सदा ही दंगा होने की आशंका बनी रहती थी। क्या कहीं कुछ हो गया है? उसकी धड़कनें बढ़ गई; पर वह अपना विचार दृढ़ बना सके, इसके पहले ही कोई उसके कमरे के दरवाजे पर आकर दरवाज़ा खड़काने लगा।

"विमला!"

विमला ने विमल का स्वर पहचान लिया।

"हाँ, क्या है विमल?"

"आप फ़ौरन उठ जाइए, मुझे आपसे कुछ कहना है।"

विमला ने उठकर 'ड्रेसिंग-गाउन' पहना। दरवाजा खोला। उसने देखा कि विमल खड़ा था। नौकर लैम्प लिये था और थोड़ी दूर पर तीन सिपाही खाकी वर्दी पहने खड़े थे। उसने विमल के चेहरे पर चिन्ता देखी, वह चौंक पड़ी। विमल का मुख भारी था, जैसे वह पलंग से उठकर सीधा वहीं आया था।

उसने पूछा, "क्या बात है?"

"आप शान्त रहें। समय बिना बरबाद किये तैयार हो जायँ और मेरे साथ चलें।"

"परन्तु बात क्या है? क्या शहर में कुछ हो गया है?"

सिपाहियों को देखकर वह यही समझी कि शहर में दंगा हुआ है और वह उसकी रक्षा के लिए भेजे गए हैं।

"आपके पति बीमार हैं, आप तुरन्त चलिए।"

"रमेश!" वह चीख पड़ी।

"आप घबरायें नहीं, मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम कि क्या हुआ है। दारोगाजी ने इस अफ़सर को मेरे पास भेजकर कहलवाया है कि मैं आपको तुरन्त ले आऊँ। इससे अधिक मुझे कुछ मालूम नहीं।"

विमला एक क्षण विमल को देखती रही, उसका दिल जैसे बैठ गया, फिर बोली, "मुझे दो मिनट लगेंगे।"

मैं तो सो रहा था, जैसा का तैसा उठकर चला आ रहा हूँ, केवल कोट पहना और जूते डालकर चल पड़ा।

विमला ने नहीं सुना। उसने तारों की रोशनी में जो पाया, पहन लिया। घबराहट में उसकी उँगलियाँ उलझ रही थीं,। कपड़ों के बटन लगाने में उसे लगा कि बड़ा समय बीत गया था। उसने कंधे पर शाल डाली और चल पड़ी।

"मैंने टोप नहीं पहना, कोई आवश्यकता भी नहीं है या पहन लूँ?" विमल ने पूछा।

"नहीं, कोई आवश्यकता नहीं है।"

नौकर आगे-आगे लैम्प लेकर चला और वे सब बँगले से बाहर आ गए ।

"सम्भलकर चलिए, कहीं गिर न जाइए । चाहें तो मेरी बाँह पकड़ लीजिए ।" विमल बोला ।

सिपाही विमल के पीछे-पीछे चल रहे थे । दारोगाजी ने पालकी नदी-किनारे भेजी है ।"

वे जल्दी-जल्दी पहाड़ी से उतर रहे थे । विमला के होंठों पर प्रश्न था; पर वह बोल न सकी । वह उत्तर से घबरा रही थी, जाने क्या होगा ?

किनारे पहुँचकर उन्होंने देखा कि नाव उनकी प्रतीक्षा कर रही थी ।

"क्या कॉलरा हो गया है ?" विमला ने पूछा ।

"मुझे तो यही लगता है ।" विमल बोला ।

विमला के मुख से हलकी-सी चीख निकल गई । वह ठिटक गई ।

"आप जल्दी-से-जल्दी मुझे वहाँ पहुँचाने का प्रयत्न करें ।"

विमल ने अपना हाथ बढ़ाकर विमला को सहारा दिया । नदी स्थिर थी, एक स्त्री अपनी कमर पर बच्चा बाँधे, नाव को एक पतवार से खे रही थी ।

विमल ने बताया, "रमेश आज तीसरे पहर बीमारी पड़े, यानी कल तीसरे पहर ।"

"पर मुझे तुरन्त क्यों नहीं बुलाया गया ?"

कोई कारण न होने पर भी दोनों धीमे बोल रहे थे । अँधियारे में विमला इतना ही समझ सकी कि विमल चिन्ताग्रस्त था ।

"दारोगाजी तो बुलाना चाहते थे; पर डाक्टर रमेश ने मना कर दिया था । वह बराबर रमेश के पास रहे ।"

"फिर भी उन्हें मुझे बुलवा भेजना चाहिए था । कितनी निर्दयता की उन्होंने !"

"आपके पति को मालूम था कि आपने कॉलरा के किसी मरीज़ को नहीं देखा है। बड़ा ही वीभत्स दृश्य होता है। वह नहीं चाहते थे कि आप वह सब देखें।"

सूखे हुए कण्ठ से विमला ने कहा, "फिर भी, वह मेरे पति हैं। मुझे तुरन्त पहुँचना चाहिए था।"

विमल ने कोई उत्तर नहीं दिया

"अब मुझे क्यों बुलाया है?"

विमल ने अपनी दृष्टि विमला की ओर को फेरी। बोला, "आपको साहस नहीं हारना चाहिए। आपको हर स्थिति का सामना करने को तैयार रहना चाहिए।"

विमला के चेहरे पर दुःख छा गया था। उसने देखा कि सिपाही उसे देख रहे थे। उसने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। विमला ने उनकी आँखों में चिन्ता देखी।

"उनकी दशा अब कैसी है?"

"मैं तो केवल दारागाजी का सन्देश-भर जानता हूँ जो उन्होंने इन सिपाहियों से भिजवाया है। मैं समझता हूँ कि दशा गम्भीर है।"

"बचने की कोई आशा नहीं है क्या?"

"मुझे दुःख है। यदि हम वहाँ तुरन्त नहीं पहुँच पाते हैं तो शायद हम उन्हें जीवित न देख सकेंगे।"

विमला काँप उठी। वह रोने लगी।

"वह कितना अधिक काम करते थे। सहने की शक्ति उनमें नहीं रही थी।"

विमला ने विमल की ओर गम्भीर दृष्टि से देखा। उसे विमल का इतने धीमे स्वर में बात करना बुरा लग रहा था।

वे दूसरे किनारे पर पहुँच गए। वहाँ पालकी रखी हुई थी। विमला ने स्वयं को सम्भाला। विमल ने उससे कहा, "अपने को सँभाले रखिए। आपका स्वयं को काबू में रखना बहुत आवश्यक है।"

"पालकी वालों से कहिए शीघ्रता करें।"

"उन्हें आज्ञा है कि जल्दी-से-जल्दी पहुँचाएँ।"

सिपाही जो अपनी पालकी में बैठ चुके थे, उन्होंने कहारों से चलने को कहा। उन्होने पालकी उठाकर सम्भाली और तेज़ी से चल दिए विमल, विमला की पालकी के बिलकुल पीछे था। उन्होंने पहाड़ी पर मोड़ लिया। हर पालकी के साथ एक लेम्प था और फाटक पर पहरे-दार अपनी टॉर्च जलाए हुए था। सिपाही अपनी कुर्सी से चिल्लाया और फाटक खुल गया। रात के सन्नाटे में वे आवाज़ें चौंका देने वाली थीं। वह भीगी हुई सड़क पर चल रहे थे। सिपाही-अफ़सर की पालकी का एक कहार फिसल गया। विमला ने अफ़सर की गुस्से से भरी आवाज़ सुनी। पालकी फिर तेज चलने लगी। सँकरी गलियाँ थीं। शहर में अँधियारा और घना लगता था। कहारों के ज़ोर से साँस लेने का स्वर स्पष्ट था। वे सब लम्बे-लम्बे डग भरते तेज़ी से चल रहे थे। सबके सब ख़ामोश थे।

बन्द दूकानों के चबूतरों पर कहीं-कहीं कोई लेटा हुआ दिखाई दे जाता था। कौन जानता था कि वह सवेरे उठ बैठने को सोया था या सदा को सो गया था। सँकरी गलियाँ उस ख़ामोशी में बेहद डरावनी लग रही थीं। तभी अचानक किसी कुत्ते के भौंकने से विमला चौंक पड़ी। विमला को कुछ पता नहीं था कि वे सब कहाँ जा रहे थे? मार्ग जैसे समाप्त ही होने में नहीं आता था। क्या मज़दूर और तेज नही चल सकते? और तेज़?? थोड़ा और तेज़??? समय बीत रहा था और किसी भी क्षण बहुत देर हो सकती थी।

विमला का दिल बैठा जा रहा था। उसके नेत्र पथरा रहे थे। उसका दिल धड़-धड़ कर रहा था। वह भयभीत हो उठी थी।

विमला अपने आपसे बोली, 'रमेश! तूने मुझे तो क्षमा कर दिया, परन्तु तू अपने को क्षमा नहीं कर सका।'

विमला के नेत्र बरस पड़े, उसकी हिड़कियाँ बँध गई।

५२

चलते-चलते वे सब एक लम्बी दीवार में बने हुए एक फाटक पर रुके। फाटक पर सन्तरियों की कई चौकियाँ बनी हुई थीं। कहारों ने पालकियाँ उतारीं। विमल तेज़ी से विमला के पास पहुँचा। विमला पहले ही पालकी से बाहर निकल आई थी। सिपाही ने फाटक पर ज़ोर से दस्तक दी और छोटा दरवाज़ा खुल गया। उसीसे सबने अन्दर प्रवेश किया।

"डाक्टर रमेश अभी जीवित है।" विमल ने दबे स्वर में कहा, "आप सम्हालकर चलिएगा।"

नौकर लैम्प लिये हुए अब भी मार्ग दिखाते आगे चल रहे थे। आगे जाकर एक बड़े फाटक में दाखिल हुए और उसके बाद एक बड़े आँगन में पहुँच गये। आँगन के एक ओर बड़ा भारी मकान बना था, जो रोशनी से जगमगा रहा था। लैम्प लिए हुए नौकर एक कमरे तक इन सबको ले गया। दरवाजे पर पहुँचकर सिपाही ने दस्तक दी। द्वार तुरन्त खुल गया। अफ़सर ने विमला को संकेत किया और पीछे हट गया।

विमल ने कहा, "आप अन्दर चलिए।"

विमला फुर्ती से अन्दर गई और पलंग तक पहुँचकर उसने देखा रमेश आँख बन्द किये लेटा था। कमरे के प्रकाश में उसके मुख पर मौत नाचती विमला ने देखी। वह बिलकुल अचेत था।

डरी हुई और दबी हुई आवाज़ में विमला ने पुकारा, "रमेश! रमेश!"

रमेश का बदन तनिक हिला या हिलने की केवल छाया मात्र थी। लगता था एक ऐसा निस्पन्द हवा का झोंका जिसका आभास तो होता था, पर व्यक्त नहीं किया जा सकता। हवा ने शान्त जल को ज़रा थिरका-भर दिया।

"रमेश ! मुझसे बोलो।" विमला ने कहा।

रमेश की आँखें बहुत धीरे-धीरे खुलीं। ऐसा लगता था कि पलकें इतनी भारी हो गई थीं कि उन्हें खोलने में बड़ा परिश्रम करना पड़ा था। पर रमेश ने देखा नहीं। उसकी निगाहें सामने दीवार पर गढ़ी हुई थीं। वह कुछ बोला। उसका स्वर धीमा और कमज़ोर था। उसने कहा, "मछली बड़ी सुन्दर है।"

विमला की सांस ऊपर-की-ऊपर और नीचे-की-नीचे रह गई। वह आगे कुछ नहीं बोला, बोलने का कोई संकेत तक नहीं। विमला पंजों के बल खड़ी हो गई। उसने बहकी-सी निगाह से सामने खड़े हुए पुरुष को देखा।

"कुछ-न-कुछ तो किया जा सकता है, आप यहाँ बेकार क्यों खड़े हैं ?"

विमला ने अपने हाथ बाँध लिए। विमल ने बिस्तर के समीप खड़े हुए अफ़सर से कुछ बातें कीं।

"जितना जो कुछ सम्भव था वह सब किया जा चुका है। सर्जन इलाज कर रहा था। आपके पति ने ही उसे ट्रेनिंग दी थी। उस सर्जन ने वह सब किया है जो ऐसी अवस्था में आपके पति कर सकते थे।"

"क्या वह सर्जन हैं ?"

"हाँ, वह मैं ही हूँ। मैं रमेश के पास से हटा ही नहीं।"

विमला ने अनमनेपन से उसकी ओर देखा। उनका कद लम्बा, पर शरीर सुगठित था। वह खाकी वर्दी पहने था। वह बराबर रमेश को देख रहा था।

विमला ने देखा कि उसकी आँखों में आँसू छलछला आये थे। बिमला

ने सोचा, इस आदमी की आँखों में आँसू क्यों ?

बोली, "हाथ-पर-हाथ धरकर बैठने से तो लाभ नहीं होगा।"

विमल ने कहा, "इस समय इनको पीड़ा नहीं है।"

विमला फिर रमेश के मुख पर झुक गई। उसकी भयावनी आंखें अब भी सामने देख रहीं थीं। विमला समझ नहीं सकी कि रमेश कुछ देख भी पा रहा था या नहीं। उसने अपने ओठ रमेश के होंठों पर रखे।

"रमेश, क्या हम अब कुछ भी नहीं कर सकते ?"

विमला ने सोचा कि कोई-न-कोई तो ऐसी दवाई होगी ही जो रमेश को दी जा सके। अब उसने देखा कि रमेश का मुख एक ओर झुक गया। वह कठिनाई से उसे पहचान पा रही थी। यह सोचना ही असम्भव था कि कुछ घण्टे में रमेश, रमेश न रहकर कोई और दीखने लगेगा। वह इस समय मनुष्य नहीं लग रहा था। वह सरापा मौत था !

विमला ने समझा कि वह बोलने का प्रयत्न कर रहा था। उसने अपने कान उसके बिलकुल पास कर लिए।

'चिन्तित मत हो विमला ! हालत बहुत खराब थी; पर अब मैं बिलकुल ठीक हूँ।'

विमला यह सुनना चाहती थी ; पर रमेश अब शान्त था। उसके नितान्त निस्पन्द पड़े रहने से विमला को भय लग रहा था। वह जैसे चिता पर लेटने की खामोशी सहने की तैयारी कर रहा था। सर्जन आगे आया और विमला को ज़रा हटने का संकेत किया। वह उस मरणासन्न रोगी के सूखे होंठों पर एक गन्दा-सा कपड़ा भिगोकर फेर रहा था। विमला निराशा भरी विमल की ओर मुड़ी।

उसने पूछा, "क्या कोई आशा नहीं रही ?"

विमल ने सिर हिला दिया।

"कितनी देर अभी और जीवित रह सकते हैं ?"

"कोई क्या कह सकता है, शायद एक घण्टा और।"

विमला ने कमरे में चारों ओर देखा। उसकी निगाहें दारोगाजी पर अटक गईं।

"क्या मैं थोड़े-से एकान्त में इनके पास रह सकती हूँ ? केवल कुछ मिनट के लिए ?"

"अवश्य ।"

विमल ने दारोगाजी के पास जाकर कुछ कहा । उन्होंने माथा झुकाया और फिर आदेश दिया ।

विमल ने कहा, "हम बाहर जाते हैं, आपको केवल पुकारना-भर होगा ।"

अब विमला को चेतना लौट आई थी । उसने सोचा कि जो ज़हर रमेश को बराबर सालता रहा था उसे दूर कर दे, जिससे उसका मरण तो अधिक कष्टमय न हो । उसे अपनी सुध नहीं थी । उसके सारे विचार उस समय रमेश पर केन्द्रित थे ।

"रमेश, मैं क्षमा माँगती हूँ, मुझे क्षमा कर दो ।" विमला रमेश पर झुक गई थी । इस भय से कि रमेश कोई भार न सह सकेगा, उसने धीरे-से अपने होंठ उसके होंठों से मिलाए । "मैं बहुत दुःखी हूँ, मैंने तुम्हें बड़ा दुःख दिया रमेश !"

वह कुछ नही बोला । लगता था, वह कुछ नहीं सुन पा रहा था । विमला ने फिर दोहराना चाहा । विमला को लगा कि रमेश की आत्मा एक पंतगा है, जिसके पर घृणा में सने हैं ।

"डार्लिंग !"

रमेश के सूजे हुए चेहरे पर कोई छाया-सी दिखाई दी । उसे हरकत नहीं कहा जा सकता था । विमला ने यह शब्द उससे कभी नहीं कहा था । कदाचित् बुझते हुए दिमाग में यह बात घुसी कि उसने तो विमला को यह शब्द हर जगह प्रयोग करते हुए सुना था । वह कुत्तों को, बच्चों को, सभीको यह सम्बोधन कर देती थी । तभी कुछ अप्रत्याशित घटा । विमला ने दोनों हाथ बाँध लिये, पूरा ज़ोर लगाकर उसने स्वयं को काबू में रखा । उसने देखा कि रमेश की आँखों में से दो आँसू ढुलक आये थे ।

"मेरे रमेश, यदि तुमने मुझे कभी प्यार किया है—मुझे मालूम है तुमने मुझे किया है और मैं बराबर घृणा की पात्री बनी रही, तो मुझे क्षमा करना। मुझे अपना पश्चाताप जताने का समय नहीं मिला। मुझ पर दया करो, मैं प्रार्थना करती हूँ, मुझे क्षमा कर दो।"

वह ठहर गई। उसे उत्तर सुन पाने की उत्कट आकांक्षा थी। उसने देखा कि रमेश बोलना चाहता था। विमला का हृदय धड़क उठा। विमला ने सोचा कि यदि रमेश क्षमा कर दे तो उसके कारण उसे जो कटुता मिली थी, वह शान्त हो जाएगी। रमेश के ओठ हिले। उसने विमला को नहीं देखा। उसकी आँखें निरन्तर सफेद दीवार पर गड़ी थीं। विमला उस पर झुक गई कि वह सुन सके। रमेश बिलकुल स्पष्ट स्वर में बोला।

"कुत्ता मर गया विमला।"

विमला जैसे पत्थर बन गई। वह कुछ नहीं समझ पाई। भय और कातरता से उसे देखती रह गई। रमेश ने उसका कहा एक शब्द नहीं समझा।

जिन्दा रहकर इतना निश्चल होना असम्भव है। विमला बराबर उसे देखे जा रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि रमेश में श्वास है अथवा नहीं। विमला पर भय छाने लगा।

"रमेश !" उसने धीरे-से पुकारा, "रमेश !" फिर एकाएक वह कह उठी। वह डर गई थी। वह दरवाजे पर जाकर बोली, "आप अन्दर आजायें। लगता है कि वह······।"

सब भीतर आगए। उन्होंने टॉर्च के प्रकाश में रमेश की आँखें देखीं और फिर उन आँखों को मूँद दिया। उसने कुछ कहा। विमल ने विमला को अपनी बाँह का सहारा दिया।

"शरीर छूट गया।"

विमला ने दीर्घ निःश्वास छोड़ी। उसकी आँखों से कुछ आँसू गिरे। वह चकरा गई। बिस्तर के चारों ओर सब शान्त खड़े थे कि आगे क्या

करना हैं। विमल बिलकुल खामोश था।

विमल ने विमला से कहा, "चलिए, आपको आपके बँगले पर छोड़ आऊँ! शव वहीं ले आया जायगा।"

विमला ने थका-सा हाथ अपने माथे पर फेरा। वह बिस्तर पर जाकर झुक गई। उसने रमेश के ओठों का चुम्बन लिया। अब वह रो नहीं रही थी।

"मुझे दुःख है कि आपको इतनी परेशानी हुई।"

विमला के चलने पर अफ़सरों ने सलामी दी। उसने सिर झुकाकर प्रत्युत्तर दिया। वे सब दालान से होकर बाहर आए और अपनी अपनी पालकी में बैठ गए। विमला ने देखा कि विमल ने सिगरेट जलाई थी। हलका-सा धुआँ हवा में मिल गया, जैसे किसी आदमी का जीवन उड़कर हवा में मिल गया हो।

५३

बँगले में प्रवेश करते ही विमल ने विमला से कहा, "आप थोड़ा आराम कर लें तो ठीक रहेगा।"

"नहीं; मैं इस खिड़की के सहारे बैठती हूँ।"

विमला पहले कई बार खिड़की के सामने बैठ चुकी थी। सामने बना हुआ एक पुराना मन्दिर था। विमला जब उस ओर देखती थी तो उसे जैसे चैन मिला करती थी।

परन्तु आज उसे चैन नहीं मिल रही थी। उसे लग रहा था कि उसने कोई बड़ा भारी अनर्थ कर दिया था। उसके मन ने कहा, "विमला! तूने अपने पति को खा लिया। ऐसे पति को खा लिया जो

तुझे न जाने तेरे किस पूर्व जन्म के अच्छे संस्कार-स्वरूप प्राप्त हो गया था। तू उसके योग्य नहीं थी। तू अपने को उसके योग्य बना भी नहीं सकी।

तीन घण्टे पश्चात् डाक्टर रमेश का दाहकर्म-संस्कार हो गया। केन्द्र में नर्सों को नगर की हर घटना की सूचना मिलती रहती थी। उन्हें रमेश के देहान्त की भी सूचना मिली। उन्होंने शव पर चढ़ाने के लिए कुछ पुष्प भेजे। वे शव पर डाले गए। पुष्प बहुत सुन्दर लग रहे थे। दाहकर्म का सारा प्रबन्ध करने के पश्चात् सब लोग दारोगाजी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहलाया था कि वह दाहकर्म के समय वहाँ उपस्थित रहना चाहते हैं। वह अपने अंगरक्षक के साथ आए। कुछ लोगों ने शव को उठाकर चिता पर रख दिया। पंडित ने पाठ आरम्भ किया। उन कठिन शब्दों का जब वह पाठ कर रहा था तो उसने सोचा कि यदि कहीं उसकी मृत्यु हो जाय तो पाठ करने वाला भी वहाँ कोई नहीं होगा।

दारोगा ने अपने सिर का टोप उतार लिया। उसने विमला का अभिवादन किया और वापस चला गया। साथ ही उसका अंगरक्षक भी चला गया।

अन्य सब लोग जो शव के साथ आये थे, वे भी चले गए। केवल विमला और विमल वहाँ रह गए। चिता की लपटें आकाश को चूम रही थीं। जब शव चिता पर रखा गया तो उसका दिल जैसे टूट गया, उसका सिर चकरा गया और वह खड़ी न रह सकी।

उसने देखा कि विमल उसके चलने की बाट देख रहा था।

विमला ने पूछा, "क्या आपको जल्दी है? मैं तुरन्त बँगले पर नहीं जाना चाहती। मेरा मन बहुत अशांत है।"

"नहीं, मुझे कोई काम नहीं है। मैं आपके साथ हूँ।" विमल ने कहा।

विमला ने नेत्र बन्द करके अपने दोनों हाथ चिता की ओर जोड़ दिए और फिर आगे बढ़कर अपनी उँगली से अँगूठी उतारकर चिता को अर्पित करते हुए गम्भीर वाणी में कहा, "डाक्टर रमेश ! आप क्षमा नहीं कर सके अपनी इस अपराधिनी को। आपके इस प्रेमोपहार को मैं सम्मानित न कर सकी। इसलिए इसे अपने पास रखने का भी मुझे कोई अधिकार नहीं है। आपके प्रेम की यह पवित्र भेंट आपके ही चरणों में अर्पित करती हूँ।

आपकी क्षमा प्राप्त न कर सकी, इसलिए जीवन में कभी शांति प्राप्त करने की तो मुझे आशा ही नहीं है, परन्तु फिर भी मैं प्रयास अवश्य करूँगी, इसलिए नहीं कि उससे मुझे शांति मिल सके, इसलिए कि मैं आपकी आत्मा को शांति प्रदान कर सकूँ।

आप अब नहीं हैं परन्तु यदि आपकी आत्मा कहीं है तो वह जान ले कि विमला पतिता नहीं है, अभागी अवश्य निकली, मूर्खता उसने इतनी की, कि अपना सारा जीवन अंधकारपूर्ण कर लिया और अपने पति के काम न आसकी, उसके मन में अपने प्रति विश्वास न जगा सकी। उसकी आज्ञा पर यहाँ मृत्यु का चुम्बन करने आई और अपने पति को मृत्यु की भेंट चढ़ा चली।"

विमला विमल के साथ-साथ चल पड़ी। रास्ता पार करके वे उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ एक मेहराब-सी बनी थी। वह किसी विधवा का स्मृति-चिन्ह था। विमला के मन पर उसका विशेष प्रभाव पड़ा। वह नहीं जानती थी कि वह मेहराब किस वस्तु का प्रतीक था। उसे उसमें न जाने क्यों व्यंग का आभास मिला।

"यहाँ थोड़ी देर बैठ लिया जाय। लगता है कि हम यहाँ इस स्थान पर युगों पहले आये थे।" पहाड़ी के सामने लम्बा-चौड़ा मैदान फैला था। सब ओर शान्ति थी। "कुछ ही सप्ताह बीते, हम लोग यहाँ आये थे; पर लगता है जैसे पूरे युग के पश्चात् आज फिर यहाँ आये हैं।" विमला बोली।

विमल ने कोई उत्तर नहीं दिया। विमला के मन में भाँति-भाँति के विचार उठ रहे थे। उसके मुँह से एक आह निकल गई। उसके बहुत से सप्रयास रोके हुए आँसू छलककर बह चले।

"क्या आप मानते हैं कि आत्मा अमर है?" विमला ने कहा।

"मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता।" विमल ने कहा, परन्तु उसे यह सुनकर कुछ आश्चर्य नहीं हुआ।

"अभी-अभी जब डाक्टर रमेश के शव को जलाने से पूर्व स्नान कराया गया था तो मैं बराबर उसे देख रही थी। वह बिलकुल जवान लग रहा था। आपको याद है कि जब हम पहली बार घूमने निकले थे तो हमने एक भिखारी को मरा हुआ देखा था? मैं उस समय डर गई थी, इसलिए नहीं कि मैंने मृतक देखा था, बल्कि इसलिए कि उसे देखने से लगता था कि वह कभी इन्सान नहीं था। वह केवल मरा हुआ जानवर-सा लगता था। और रमेश को देखने से लगता था जैसे कोई मशीन फेल हो गई। तभी मुझे भय लगा था। यदि यह शरीर मशीन-मात्र है तो फिर यह पीड़ा, दर्द, कसक सब व्यर्थ की बातें हैं।" कहकर विमला ने विमल की ओर देखा।

विमल मौन रहा। वह अपने सामने फैले मैदान पर स्थिर दृष्टि से देख रहा था। सुनहरी किरणों से भरपूर सवेरा बड़ा सुहावना लग रहा था। लम्बे-चौड़े खेत दूर तक फैले थे। उनमें कहीं-कहीं किसान अपने हल-बैल लेकर काम कर रहे थे। सब मिलकर बड़ा सुखद और शांत वातावरण था। विमला ने मौन तोड़ा। उसने विमल की ओर डबडबाई आँखों से देखा।

"मैं आपको बता नहीं सकूँगी कि केन्द्र के जीवन ने मुझ पर कितना प्रभाव डाला है। वे सब सराहनीय हैं। नर्सों के जीवन के आगे मैं स्वयं को बिलकुल हेय मानती हूँ। उनके त्याग की मैं प्रशंसा नहीं कर सकती। मानवता के प्रति उनके मनों में कितनी श्रद्धा है। आपने देखे थे वे पुष्प जो रमेश के शव पर पड़े थे। वे उनकी श्रद्धा के पुष्प

थे। डाक्टर रमेश भी मानवता के महान् पुजारी थे।"

विमला ने अपने हाथ बाँधकर विमल की ओर देखा।

"अच्छा थोड़ी देर को मानिए कि इस दुनियाँ के बाद कोई जीवन नहीं है, तब क्या मृत्यु हर बात का अन्त नहीं कर देती ?"

विमल एक क्षण विमला को ठगा-सा देखता रह गया।

"मैं नहीं समझता कि उन्होंने अपना ध्येय, स्वप्निल माना था। उनका जीवन उनके लिए बड़ा रोचक था। मैं तो मानता हूँ कि कभी-कभी मानव अपने जीवन में कुछ ऐसा सुन्दर कर दिखाता है कि उसमें उसका मन लगा रहता है, नहीं तो संसार में मन लगाने को कुछ है ही नहीं। मानव कभी चित्र बनाता है, कभी संगीत की रचना करता है, कभी साहित्य-सृजन करता है और इस तरह जीवन बिता देता है। इन सबसे अधिक सुन्दर है सुखद और सुन्दर जीवन बिता पाना। यह सर्वोत्कृष्ट कला है।" विमल ने कहा।

विमला ने आह भरी ! जो कुछ विमल ने कहा वह कितना सत्य था। वह और सुनना चाहती थी। यही तो वह चीज़ थी, जिसे वह न कर सकी।

विमला ने पूछा, "कभी आप किसी कन्सर्ट में गई हैं ?"

"हाँ, मुझे संगीत का तनिक भी ज्ञान नहीं है। परन्तु मुझे उसका चाव बहुत रहा है।"

"आर्केस्ट्रा में हर वादक अपना-अपना साज़ बजाता है, हरएक वादक का केवल अपने साज़ से सम्बन्ध होता है, परन्तु वह जानता है कि उस सबका फल सुन्दर है—और यद्यपि वहाँ उस अकेले साज़ को कोई नहीं सुनता—फिर भी वह सुन्दर है और वादक अपना भाग बजाकर तुष्टि पाता है।"

विमला ने कहा, "आपने उस दिन कुछ और ज़िक्र किया था, आपको याद है न ! वही फिर बताइए।"

विमल ने विमला को देखा, एक क्षण को हिचकिचाया और फिर

एक फीकी मुस्कान फेंककर बोला, "कुछ नहीं ! पथ और पंथी की बात थी। यही कि हर जीव उस मार्ग पर चलता है; पर वह मार्ग किसी जीव ने नहीं बनाया। पथ स्वयं बना है। वह सब कुछ और कुछ भी नहीं है । उसीसे सबका उद्भव है, उसीमें सब फिर समा जाते हैं । वह बिना कोण का एक चौखटा है, वह एक आवाज जिसे कान नहीं सुन पाते, वह एक मूर्ति है; पर उसका कोई आकार नहीं है। वह एक ऐसा विश्राम-स्थल है जहाँ हर किसीको आराम मिलता है। वह कहीं नहीं है; पर फिर भी आप उसे देख सकती हैं। असफलता सफलता का आधार है और सफलता में असफलता निहित है। परन्तु कौन जाने कि मोड़ कहाँ आता है ? शक्तिशाली वही है जो अपने आप पर विजय प्राप्त कर सके।"

"इस सबका कोई अर्थ भी है ?" विमला ने कहा।

"कभी-कभी जब मैं शराब के नशे में आकाश के तारों को देखता हूँ तो पाता हूँ कि इसका अर्थ है।

फिर दोनों मौन हो गए। विमला बोली, "मुझे बताइए, 'कुत्ता मर गया' कोई कहावत है क्या ?"

विमल के होंठों पर मुस्कान छा गई। वह उत्तर देने ही वाला था; पर विमला क्योंकि उसकी ओर नहीं देख रही थी इसलिए विमल ने उत्तर न देना ही उचित समझा।

"अगर कहावत है तो मैं नहीं जानता, परन्तु क्यों ?"

"कुछ नहीं, यों ही मैंने पूछ लिया।" दोनों फिर मौन हो गए।

विमल ने कहा, "जब आप वहाँ अपने पति के पास अकेली रह गई थीं तो मैंने सर्जन से कुछ बातें पूछी थीं।"

"क्या ?" विमला ने पूछा।

"सर्जन ने जो कुछ कहा उससे तो मैं कुछ नहीं समझ सका; पर मेरा विचार है कि कोई प्रयोग करते समय डाक्टर रमेश पर यह छूत का प्रभाव हो गया था।" विमल ने कहा।

"वह सर्वदा प्रयोग करते रहते थे। वह डाक्टर तो थे नहीं, वह तो जीव-विज्ञान शास्त्री थे, तभी तो वह यहाँ आने को इतने उत्सुक हुए थे।"

"पर मैं सर्जन की बातों से यह नहीं समझ सका कि अचानक उनपर प्रयोग का प्रभाव हुआ, अथवा वह स्वयं पर कोई प्रयोग कर रहे थे।" विमल ने कहा।

विमला पीली पड़ गई। इस वाक्य से वह सिहर उठी। विमल ने उसका हाथ थाम लिया। वह बोला, "मुझे इस विषय पर बातें करने के लिए क्षमा कीजिए। मैं समझा था कि यह बात सम्भवतः आपका दुःख कुछ हलका करेगी। मैं समझता हूँ कि ऐसी परिस्थिति में ऐसी बात नही करनी चाहिए क्योंकि इसका कोई लाभ नहीं है। मेरे कहने का अर्थ केवल यही था कि आप यह जान लें कि रमेश अपने कर्त्तव्य और विज्ञान पर शहीद हो गया।"

विमला को कोई सन्देह घेरे था। उसने कहा, "डाक्टर, रमेश का हृदय टूट गया था, उसीके कारण उनकी मृत्यु हुई।"

विमल निरुत्तर रहा। विमला ने विमल को देखा, विमला के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। वह बहुत भयभीत थी।

विमला ने पूछा, "रमेश ने आखिर यह क्यों कहा था कि जो मर गया वह कुत्ता था। यह क्या बात थी?"

विमल इसका कोई उत्तर न दे सका।

दोनों चुपचाप आगे बढ़ गए।

५४

दूसरे दिन प्रातःकाल विमला 'स्वास्थ्य-केन्द्र' गई। जिस लड़की ने जाकर दरवाज़ा खोला वह विमला को वहाँ पाकर दंग रह गई। विमला जाकर अपने काम पर जुट गई। थोड़ी देर बाद सिस्टर उसके पास आई। उन्होंने आते ही विमला के हाथ अपने हाथ में ले लिये।

"मेरी बच्ची! अच्छा हुआ तुम यहाँ आगई। इतनी पहाड़-जैसी विपदा के पश्चात् भी तुमने यहाँ आकर साहस का परिचय दिया, यह तुम्हारी बुद्धिमानी है। यहाँ का काम तुम्हारा दुःख बँटायेगा।"

विमला की पलकें झुकी हुई थीं। उसका मुख लाल हो गया था। वह नहीं चाहती थी कि सिस्टर उसके हृदय की उथल-पुथल जानें।

"मैं यह कहना नहीं चाहती कि हम सबको तुम्हारी विपदा में कितना दुःख है। हम सबकी हार्दिक सहानुभूति और प्रेम तुम्हारे साथ है।"

विमला ने उत्तर दिया, "यह आपकी सहृदयता है।"

"हम सब तुम्हारे लिए और तुमसे छूटी हुई आत्मा की शान्ति के लिए प्राथना करेंगे।"

विमला मौन थी। सिस्टर ने विमला का हाथ छोड़ दिया। उन्होंने विमला को कुछ काम सौंप दिए। उन्होंने वहाँ उपस्थति दो-तीन बच्चों को प्यार किया और फिर अपने आवश्यक कामों को निपटाने चली गई।

उनके चले जाने पर कान्ता ने उस कमरे में प्रवेश किया। विमला ने आश्चर्य से देखा कि कान्ता की आँखें रोते-रोते सूज गई थीं। वह विमला से कुछ बोलना चाहती थी, परन्तु बोल न सकी।

दोनों एक-दूसरे के चेहरों को केवल देखती-भर रहीं, बहुत देर तक देखती रहीं।

एक सप्ताह बीत गया। एक दिन विमला बैठी सिलाई कर रही थी। उसी समय सिस्टर ने कमरे में प्रवेश किया और विमला को पढ़ती-सी उसके पास बैठ गई।

"विमला, तुम बडी अच्छी सिलाई करती हो। आजकल की लड़कियों में तो शायद ही कोई ऐसी बढ़िया सिलाई करती हो।"

"यह मैंने अपनी माँ से सीखी थी।"

"तुम्हारी माँ तुम्हें पाकर बड़ी प्रसन्न होंगी।"

विमला ने अपनी निगाहें उठाईं। सिस्टर की इस बात में उसे ऐसा कुछ लगा कि वह इसे बेमानी बात नहीं समझ सकी। सिस्टर ने आगे कहा, "मैंने तुम्हारे पति की मृत्यु के बाद तुम्हें यहाँ काम करने दिया; केवल इसी विचार से कि थोड़ा-बहुत काम में अटके रहने से तुम्हारा मन बहला रहेगा। मेरे विचार में उस समय तुम इस लायक नहीं थीं कि तुम्हें मसूरी भेजा जाता और न ही तुम्हें अपने घर पर मैं अकेली छोड़ना चाहती थी कि वहाँ पड़ी-पड़ी तुम अपनी विपदा को पहाड़-सा पाओ; पर अब आठ दिन बीत गए, अब तुम्हें वापस जाना चाहिए।"

"सिस्टर, मैं नहीं जाना चाहती। मैं यहीं रहना चाहती हूँ।"

"यहाँ तुम्हारे लिए क्या रह गया है जिसके कारण रहोगी? तुम अपने पति के साथ आई थीं; अब पति रहा नहीं और दूसरे तुम इस अवस्था में नहीं हो कि अकेली रहो। तुम्हारी पूरी निगरानी और देखभाल आवश्यक है। मेरी बच्ची, भगवान् तुम्हारे लिए एक नया प्राणी भेज रहा है, उसके लालन-पालन में तुम्हें तनिक भी कमी नहीं करनी चाहिए।"

विमला ने पलकें नीचे गिरा लीं। वह मौन रही। फिर बोली, "मैं तो सोचती थी कि मैं यहाँ के किसी क़ाम के योग्य हो सकूँगी और

यहाँ काम करके मैंने अनुभव किया कि मैं काम कर सकूँगी। मैं समझती थी कि जब तक यहाँ महामारी समाप्त नहीं हो जाती, आप मुझे यहीं काम करती रहने देंगी।"

किंचित् मुस्कान से सिस्टर ने उत्तर दिया, "हम सबके सब तुम्हारे बहुत आभारी हैं; पर अब महामारी भी समाप्त हो ही गई है, कोई विशेष खतरा अब नहीं है। मैंने दो नर्सें और बुलाई हैं। दो-चार दिन में वे यहाँ पहुँच जाएँगी, उसके बाद फिर केन्द्र में तुम्हारे लायक काम भी नहीं रहेगा।"

विमला का कलेजा जैसे बैठ गया। सिस्टर की भंगिमा से प्रतीत होता था कि उन्हें उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। विमला भी जानती थी कि सिस्टर पर बेजा दबाव नहीं डाला जा सकता।

सिस्टर ने बताया कि विमल ने उनसे सलाह ले-ली थी।

"विमल स्वयं अपने काम में दिलचस्पी लें तो अच्छा है।"

"यदि वह न आते तो मैं स्वयं उन्हें बुलाकर सब समझाती। इस स्थिति में तुम्हारा स्थान यहाँ न होकर अपनी माँ के पास है। विमल ने दारोगाजी से कहकर तुम्हारी यात्रा के लिए प्रबन्ध करा दिया है। कुलियों आदि का भी प्रबन्ध कर दिया है। एक नौकरानी तुम्हारे साथ जायगी। तुम्हारी यात्रा में तुम्हें पूरी सुविधा हो, इसका सारा प्रबन्ध कर दिया गया है।"

विमला के ओठ जैसे जकड़ गए। उसने सोचा कि उसीके लिए सब कुछ किया गया और उसीसे राय तक नहीं ली गई। तीखा उत्तर न देने के लिए विमला कठिनता से स्वयं को वश में कर सकी।

"मुझे कब तक जाना होगा?"

सिस्टर पहले की ही भाँति सरल थीं। बोलीं, "जितनी जल्दी तुम पहुँच सको, उतना ही अच्छा है। मैं चाहती हूँ कि तुम कल सवेरे ही प्रस्थान कर जाओ।"

"इतना शीघ्र!"

विमला को लगा कि वह चीख पड़ेगी ; फिर उसने सोचा कि सच ही तो है। अब उसका काम हो गया था। जिसके सहारे वह आई थी जब वही नहीं रहा तो उसका क्या होगा ?"

उदास स्वर में उसने कहा, "लगता है, आप मुझसे जल्दी-से-जल्दी छुटकारा पाना चाहती हैं।"

"मेरी बच्ची, यह मत समझो कि मैं तुम्हारी सचाई नहीं समझ पा रही हूँ। तुम्हें भेजते हुए मेरा दिल टूट रहा है।"

विमला सिस्टर को टकटकी बाँधे देखे जा रही थी। वह सोच रही थी कि वह इतना बड़ा मान अपने से कैसे सम्बद्ध करे। वह रुकना चाहती थी क्योंकि उसके लिए कहीं और स्थान नहीं था। उसे मालूम था कि संसार में उसके मरने-जीने की चिन्ता करने वाला कोई नहीं था।

सिस्टर ने समझाते हुए कहा, "तुम घर जाने में सकुचाती क्यों हो ? यहाँ तो तमाम लोग बाहर के हैं, जो तुम्हारे सम्बन्ध में तरह-तरह की बातें करेंगे।"

"आप तो नहीं करेंगी न मेरे विषय में तरह-तरह की बातें ?"

"हमारी बात दूसरी है बेटी ! हम तो जब यहाँ आये, तभी यह समझ लिया कि अपना घर सदा को छोड़ दिया।"

विमला ने अपनी इस असहायता में भी सोचा कि वह सिस्टर के विश्वास को परखे।

उसने चाहा कि वह मानव की सहज कमज़ोरियों के बारे में सिस्टर को परख ले।

वह बोली, "आप अपने सगे-सम्बन्धियों, जिनके बीच आप पली और बड़ी हुई, छोड़ देंगी और फिर उनसे नहीं मिलना होगा, यह विचार ही कितना कष्टदायक रहा होगा।" विमला ने कहा।

सिस्टर एक क्षण को सकुचाई; पर विमला को उनमें कोई भाव उनके गम्भीर और सुन्दर मुख पर बदला हुआ नज़र नहीं आया।

"मेरी माँ, जो अब बुढ्ढी हो चली हैं, उनके लिए तो बड़ा कठिन होगा। वह मुझे अपने शरीर-त्याग के पहले अवश्य देखना चाहती होंगी। मैं चाहती हूँ काश, उन्हें वह प्रसन्नता दे पाती ! पर, यह सम्भव नहीं है। अब हम माँ-बेटी स्वर्ग में ही मिलेंगे।"

"फिर भी कभी-न-कभी यह विचार तो जागता ही होगा कि अपने प्रियजनों को छोड़कर बुरा किया या भला किया।"

"मुझसे पूछ रही हो कि मैंने ऐसा करके पश्चाताप तो नहीं किया ?" अनायास ही सिस्टर का मुख जगमगाने लगा। "नही, कभी नहीं। मैंने नाकारा और बेकार जीवन से साधना और त्यागमय जीवन अपनाया है।"

कुछ क्षण मौन रहा, फिर सिस्टर ने मृदु मुस्कान से कहा, "मैं तुम्हारे हाथ एक छोटा-सा 'पार्सल' भेजूँगी। उसे वहाँ पहुँचकर दे-देना। मैं उसे पोस्ट-ऑफिस द्वारा नहीं भेजना चाहती। मैं अभी लिये आती हूँ।"

विमला ने कहा, "कल दे-दीजिएगा।"

"कल तुम व्यस्त रहोगी, शायद यहाँ न आ सको। आज ही हमसे विदा ले-लो।"

सिस्टर कमरे से बाहर चली गई। तभी कान्ता आगई। वह विमला को विदा देने आई थी। उन्होंने विमला की सफल यात्रा के लिए कामना की। कहा कि दारागाजी ने यात्रा का समुचित प्रबन्ध कर दिया है। तुम्हारी माँ तुम्हें पाकर कितनी प्रसन्न होंगी ! तुम्हें अपना पूरा ध्यान रखना चाहिए क्योंकि भगवान् तुम्हें एक प्राणी के लालन-पालन का भार सौंपने वाला है। उस जीव में डाक्टर रमेश की आत्मा होगी।"

कान्ता का व्यवहार बड़ा स्नेहपूर्ण था; पर विमला को लगा कि जैसे वह प्राणरहित हों। उसने चाहा कि वह कान्ता के सुदृढ़ कन्धे पकड़कर उन्हें झँझोड़ डाले और चीखकर कहे–"क्या देखती नहीं

कि मैं भी इन्सान हूँ, अभागी हूँ, नितान्त अकेली हूँ और मुझे थोड़े आराम, उत्साह और संवेदना की आवश्यकता है । ओह ! क्या आप मुझे संवेदना और शान्ति नहीं दे सकतीं ?" इस विचार के आते ही विमला के ओठों पर हँसी आगई । उसने सोचा कि यदि वह कह दे तो कान्ता आश्चर्य-चकित रह जाएँगी । अभी तो सन्देह ही है, फिर विश्वास हो जायगा कि मैं पगली हूँ ।

विमला ने कहा, "मुझे यात्रा बहुत अच्छी लगती है । मैं कभी यात्रा में बीमार नहीं पड़ती ।"

इतने में सिस्टर एक छोटा-सा पार्सल लिए आगई ।

"ये रूमाल हैं । मैंने अपनी माँ के लिए बनवाए हैं । इन पर यहाँ की लड़कियों के नाम कढे हैं ।"

सिस्टर ने पार्सल खोला और रूमाल विमला को दिखाने लगीं । रूमाल बहुत सुन्दर बने थे । विमला ने भरपूर प्रशंसा की । सिस्टर ने फिर पार्सल बाँधा और विमला को सौंप दिया । कान्ता शुभ-कामना देने के बाद चली गई । विमला ने सोचा कि अब सिस्टर से भी विदा लेनी चाहिए । उसने उनकी सहृदयता के लिए धन्यवाद दिया । सिस्टर ने पूछा, "यह पार्सल पहुँचाने में विशेष कष्ट तो नहीं होगा ?"

"मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी ।"

विमला ने पता पढ़ा । वह बोली, "इस जगह मैं हो आई हूँ ।"

"मैं सोचती हूँ कि यदि मैं इतने सुन्दर स्थान में रहती होती तो मैं उसे न छोड़ पाती ।" विमला मुस्कराकर बोली ।

"हाँ, बहुत ही सुन्दर स्थान है ; पर मुझे उसकी चिन्ता नहीं है । हाँ, कभी-कभी मुझे वह स्थान याद आजाता है जहाँ मेरा बचपन बीता है । मेरा तो जन्म मसूरी नगर में न होकर पहाड़ी के नीचे एक गाँव में हुआ है ।"

विमला को लगा कि सिस्टर अपनी बात कहते हुए भी जैसे उसकी खिल्ली उड़ा रही थीं । इतने में वे दोनों केन्द्र के बाहर तक पहुँच गईं ।

विमला के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने स्वयं को सिस्टर के आलिंगन में पाया और उन्होंने उसके मुख पर स्नेह-चिन्ह अंकित किया। दोनों ओर सिस्टर ने चुम्बन लिया, तब विमला विह्वल होकर रो पड़ना चाह रही थी।

अपनी बाँहों में जकड़े हुए ही उन्होंने विमला से कहा, "जाओ बेटी! भगवान् तुम्हें शान्ति दे। पर, याद रखना कि कर्तव्य-पालन से बड़ा कार्य और कोई नहीं है। जब भी कभी कोई पाप हो जाय तो तुरन्त उसकी क्षमा-याचना करना। कर्तव्य के प्रति निष्ठावान रहना। जब कर्तव्य और प्रेम एकाकार होते हैं तभी सुख मिलता है!"

विमला के वास्ते केन्द्र का द्वार बन्द हो गया।

विमला धीरे-धीरे आगे बढ़ी तो उसने देखा कि विमल उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था।

विमल, विमला के साथ पहाड़ी तक गया और वहीं से उसने विमला को विदा दी। रमेश की चिता के स्थान को देखकर विमला में विचार उपजा कि वह स्थान उस पर व्यंग्य कर रहा था, लेकिन फिर भी विमला जैसे उस व्यंग्य का प्रत्युत्तर दे सकती थी। विमला अपनी पालकी में बैठ गई।

रात बीत गई। चलने का समय होगया। विमला को हर वस्तु जो वह देख रही थी, कुछ ही सप्ताह पहले विपरीत दिशा में जाते देख चुकी थीं। कुली कन्धों पर सामान उठाए बेतरतीब चल रहे थे। साथ में रक्षा के लिए भेजे गए सिपाही भी बेमन से चल रहे थे।

विमला जा रही थी। जब आई थी तब भी आज की ही तरह मौन थी परन्तु तब वे दो मौन प्राणी थे। तब कभी-कभी मौन टूट भी जाता था, परन्तु आज उसका मौन भंग करने के लिए कोई नहीं था। उसे लगा कि मानो उसने एक चल-चित्र देखा। वह सिनेमा से लौट रही थी। सिस्टर, विमल और उसकी स्त्री उसे पत्रों-से दिखाई पड़ रहे थे। यद्यपि उन सबकी कुछ-न-कुछ विशेषता थी; पर विमला वह

विशेषता नहीं समझ सकी। उसे लगता था जैसे वे सब किसी समारोह के अवसर पर नाचते हों, और नाच भी बाबा आदम के युग का। उन सबको देखकर कोई भी कहता कि उनके जीवन में कुछ तथ्य था और जो इतना महत्त्वपूर्ण था कि उसे समझा जाय ; पर उनको समझ पाने के लिए कहीं से कोई आरम्भ करने भर का संकेत उसे नहीं मिला।

विमला की समझ में नहीं आया कि आखिर उसने और डाक्टर रमेश ने उस अवास्तविक नृत्य में भाग क्यों लिया ? इतना ही नहीं उन दोनों ने तो महत्त्वपूर्ण अभिनय भी किया। वहाँ उसकी भी मृत्यु हो सकती थी, और रमेश की हो ही गई। क्या वह सब परिहास था ? शायद वह सब एक भयानक स्वप्न था, जिससे अभी-अभी उसकी आँखें खुली थीं और उसने सन्तोष की साँस ली थी। वहाँ का अतीत विमला को बहुत पुराना प्रतीत हो रहा था। विमला के सामने अब वास्तविक जीवन था, उसके सामने वहाँ के पात्र केवल छाया-चित्र के पात्र-भर थे। अब उसे वहाँ का जीवन एक कहानी से अधिक कुछ नहीं लग रहा था। उस सबसे उसका बहुत थोड़ा सम्बन्ध था। यहाँ तक कि विमल जो उसके अधिकतर साथ रहा था, उसका चेहरा तक उसकी स्मृति में स्पष्ट नहीं रह गया था।

५५

विमला डाक्टर रमेश की मृत्यु पर रोई नहीं थी, उसे ग्लानि थी। परन्तु दारोगा क्यों रो रहा था ? वह तो अपने पति की मृत्यु पर स्तम्भित-सी रह गई थी। उसे विश्वास ही नहीं होता था कि वह फिर

कभी बँगले में वापस नहीं जाएगा, अभी वह जिन्दा था, अब वह मर चुका था। सिस्टर ने विमला की उस कष्ट को सह लेने पर प्रशंसा की थी, विमल अधिक चतुर था, यद्यपि उसने विमला से संवेदना प्रकट की थी, परन्तु फिर भी उसके मन में कुछ था जो उसने नहीं कहा। रमेश की मृत्यु से विमला को सचमुच बड़ा धक्का पहुँचा था। वह उसकी मृत्यु नहीं चाहती थी ; पर वह उससे प्रेम भी तो नहीं करती थी और न ही उसने कभी पहले रमेश को चाहा था। उसने सोचा कि चुप रहकर ही इस दुःख को सह लेने में भलाई थी। वह नहीं चाहती थी कि कोई उसके अन्तर में झाँक पाये। पर, उसने स्वयं को बहुत धोखा दिया था। उसने सोचा कि पिछले कुछ सप्ताहों में उसने सीखा कि कभी-कभी दूसरों से झूठ बोल जाने में भलाई होती है, केवल स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए। उसे रमेश की मृत्यु पर दुःख था; पर उसका दुःख केवल मानवता के नाते था, उसे इतना ही दुःख अपने किसी भी परिचित की मृत्यु पर होता ! वह सोचती थी कि रमेश में प्रशंसा के योग्य गुण थे। न केवल वही उसे नहीं चाह सकी, बल्कि रमेश उसके लिए सर्वदा रंज का ही कारण बना रहा।

विमला को रमेश की मृत्यु से कोई सुख नहीं पहुँचा। वह सोचती थी कि यदि उसके एक शब्द से रमेश का जीवन वापस आ जाये तो वह तुरन्त कह दे ; पर साथ ही उसमें यह विचार भी उपजा कि रमेश की मृत्यु के बाद उसका जीवन थोड़ा सरल हो गया था। वे दोनों कभी भी सुख से नहीं रह सकते थे, परन्तु पृथक होना भी कम कष्टदायक नहीं था। विमला अपने ही विचारों पर चौंक उठी, सोचा कि यदि कहीं किसीको उसके विचार मालूम हो जायँ तो वह उसे निर्दय कहेगा, परन्तु कोई जाने ही क्यों ? उसने सोचा सभीके अन्तर में कुछ ऐसे रहस्य होते हैं जो हर कोई दूसरों से छिपाकर रखना चाहता है।

विमला ने अपने भविष्य पर सोचा ही नहीं और न ही उसने कोई पूरी कल्पना की। अभी तो वह मसूरी में कम-से-कम समय रुकना

चाहती थीं। मसूरी पहुँचने के विचार-मात्र से वह सिहर उठी। उसे आभास हुआ कि किसी छाया-चित्र के पात्र की भाँति हर रात उसे भिन्न-भन्न स्थान पर बितानी होगी ; पर इतने निकट भविष्य का तो सामना करना ही होगा। उसने निश्चय किया कि मसूरी में वह किसी होटल में ठहरेगी। वहाँ से वह अपना मकान और फ़र्नीचर बेचने का प्रबन्ध करेगी। उसे श्याम से मिलने की कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु वह कम-से-कम एक बार तो उससे मिलेगी ही और मिलकर उससे कहेगी कि वह श्याम को कितना नीच समझती है।

परन्तु श्याम से अब उसका सम्बन्ध ही क्या था ?

श्याम का विचार आते ही उसे लगा कि उसके हृदय को किसीने छेड़ दिया और उसमें से अत्यन्त मधुर संगीत बज उठा। उसे लगा कि महामारी से तृप्त वह नगर उसके लिए कारावास से कम न था। अब वह उस क़ैद से भाग निकली थी, आज के पहले उसे नीला आकाश सुन्दर नहीं लगा था। अब उसे बाँसों के झुरमुट भी मोहक लगने लगे। स्वतन्त्रता के विचार ने उसका हर श्वास संगीतमय बना दिया। इस विचार के आगे उसे भविष्य की चिन्ता नहीं रही। स्वतन्त्रता, केवल एक गुत्थी से ही नहीं, या एक ऐसे आदमी से नहीं जो उसे सदा रंजीदा बनाये रखता था, स्वतन्त्रता उस मौत के साम्राज्य से ही नहीं बल्कि उस प्रेम से जिसके कारण उसे झुकना पड़ा था, हर आध्यात्मिक बन्धन से उसे मुक्ति मिल गई थी। अब वह स्वतन्त्र थी और स्वतन्त्र रहकर ही जो कुछ भी उस पर बीतेगा, वह सहेगी।

५६

ट्रेन देहरादून के स्टेशन पर जाकर रुक गई। विमला ट्रेन से उतर पड़ी। आगे उसे बस से जाना था। वह सामान उतरवा ही रही थी कि तभी उसके कम्पार्टमेण्ट के दरवाजे पर किसीने पुकारा। आया ने दरवाज़ा खोला।

"मिसेज़ रमेश।"

विमला ने घूमकर देखा तो पहले क्षण वह आगन्तुक को पहचान नहीं सकी। उसका दिल धक-धक करके रह गया, वह सुर्ख पड़ गई। आगन्तुक कमला थी। विमला के लिए कमला का यहाँ आना अप्रत्याशित था, उसकी ज़बान पर जैसे ताला पड़ गया। कमला ने कम्पार्टमेण्ट में प्रवेश करते ही स्नेहवश विमला का हाथ अपने हाथों में ले-लिया।

"विमला, मुझे सचमुच बड़ा दुःख है।"

कमला ने विमला को चूम लिया। विमला ने कमला को सदा ही आज से भिन्न समझा था। उसे आज कमला के व्यवहार पर आश्चर्य हो रहा था।

"आपकी बड़ी सज्जनता है।" विमला ने कहा।

"आओ हम लोग बाहर चलें। यहाँ की देखभाल 'आया' कर लेगी। मेरे साथ मेरे बच्चे भी आये हैं।"

कमला विमला को हाथ थामे बाहर ले गई। विमला ने देखा कि कमला के मुख पर वास्तव में संवेदना झलक रही थी।

"तुम्हारी ट्रेन तो समय से पहले ही आ गई। मुझे यदि तनिक और देर हो जाती तो मैं तुम्हें नहीं पा सकती थी। फिर हमारी भेंट

मसूरी में ही होती।"

विमला ने आश्चर्य से पूछा, "तो आप क्या मुझे ही लेने के लिए यहाँ आई हैं ?"

"हाँ-हाँ, बिलकुल विमला ! बिलकुल ! "

"परन्तु आपको मेरे आने की सूचना कैसे मिली ?"

"विमल ने तार भेजा था।"

विमला का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। उसने अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया। वह रोना नहीं चाहती थी। वह चाहती थी कि कमला चली जाय ; पर कमला ने विमला का हाथ अपने हाथों में ले रखा था। विमला उस लजीली स्त्री के इस सारे दिखावे से उलझन में पड़ गई।

"मैं चाहती हूँ कि तुम जब तक यहाँ रहो, हमारे ही पास ठहरो।" कमला ने कहा।

विमला ने अपना हाथ छुड़ा लिया।

'यह तो आपकी बड़ी दया है ; पर मैं वहाँ ठहर नहीं सकूँगी।"

"परन्तु तुम्हें हमारे साथ ही ठहरना होगा, अपने उतने बड़े मकान में तुम अकेली कैसे रह पाओगी ?

मैंने अपने यहाँ तुम्हारे रहने का सारा प्रबन्ध कर दिया है। तुम्हारा कमरा बिलकुल अलग होगा। चाहो तो हमारे साथ भोजन करना और यदि न चाहो तो अलग प्रबन्ध भी हो सकेगा। हम दोनों की बड़ी इच्छा है कि तुम हमारे साथ रहो।"

"मैं मकान में जाकर नहीं रहना चाहती। मैंने होटल में रहने का निश्चय किया है। मैं आपको कष्ट नहीं देना चाहती।"

विमला कमला का विचार सुनकर चौंक-सी उठी थी। उसने सोचा कि यदि श्याम में ज़रा भी सभ्यता होती तो वह अपनी पत्नी के द्वारा मुझे अपने यहाँ ठहरने को न कहलवाता। वह उन दोनों की अहसान-मन्द होने को उद्यत नहीं थी।

"परन्तु मैं तुम्हें होटल में नहीं रहने दूँगी। तुम्हें होटल में पहुँचते ही उससे नफ़रत हो जाएगी। वहाँ तरह-तरह के लोग रहते हैं। दिन-भर थका देने वाला संगीत होता रहता है। तुम कहो न कि तुम मेरे साथ ठहरोगी। यह मेरा वायदा रहा कि मैं और श्याम तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट होने नहीं देंगे।" कमला बोली।

"यह तो आपकी सहृदयता है।" विमला जाना नहीं चाहती थी परन्तु स्पष्ट ना भी नहीं कर पा रही थी, वह न जाने के बहाने ढूँढ़ रही थी। बोली, "मैं आप लोगों के साथ अपनी इस स्थिति में नहीं रह सकूँगी।"

"परन्तु हम तो तुम्हारे लिए अपरिचित नहीं हैं। हम तो तुम्हारे मित्र हैं विमला !" कमला के स्वर में कम्पन था और आँखों में आँसू। "मैं चाहती हूँ कि तुम हमारे पास ही ठहरो। मैं चाहती हूँ कि मैं अपनी भूलें सुधार सकूँ।" कमला बोली।

विमला की कुछ समझ में नहीं आया। उसने सोचा कि कमला ने कौन-सी ऐसी भूल की थी जिसे वह सुधारना चाह रही थी।

"मुझे तुम पहले नहीं सुहाती थीं। मैं तुम्हें अच्छी स्त्री भी नहीं समझती थी, मैं तो पुराने जमाने के विचारों वाली स्त्री हूँ, और फिर मूर्ख भी ठहरी।" कमला बोली।

विमला ने तिरछी दृष्टि कमला पर डाली, तो कमला उसे पहले पतिता और भ्रष्ट समझती थी; पर विमला ने अपने भावों का परिवर्तन कमला पर व्यक्त नहीं होने दिया। अपने मन में वह कमला पर हँस रही थी।

"परन्तु जब मैंने सुना कि तुम अपने पति के साथ मौत के मुँह में चली गई, तब मैं चकाचौंध रह गई। मुझे अपने विचारों पर क्रोध आया। मुझे इतना दुःख हुआ कि जिसकी सीमा नहीं। तुम प्रशंसनीय हो—बहादुर हो; तुम्हारे सामने मेरे जैसी स्त्रियों की कोई गणना नहीं है।" यह कहते हुए विमला ने देखा कि कमला की आँखों में आँसू

भर आये । "मैं तुम्हें बता नहीं सकती विमला, कि मेरे हृदय में तुम्हारे लिए कितनी श्रद्धा है । मैं तुम्हारी विपत्ति में हाथ नहीं बँटा पाऊँगी; पर मैं सचमुच तुम्हारे दुःख में बहुत दुःखी हूँ । यदि तुम थोड़ा-सा भी समय मुझे अपनी सेवा करने का अवसर दो तो मैं अनुगृहीत होऊँगी, मेरी मिथ्या धारणा पर रुष्ट न हो । विमला, तुम पूज्य हो और तुम्हारे सामने मैं एक मूर्खा हूँ ।"

विमला नीचे देख रही थी । वह पीली पड़ गई थी । उसे कमला से इस सीमा तक भावुकता की आशा कतन नहीं थी । उस पर कमला के शब्दों का बहुत प्रभाव पड़ा । पर उस क्षण भी उसने सोचा कि यह सरल हृदया कमला अब भी तो मिथ्या धारणाएँ बनाये बैठी है ।

"यदि आप मुझे अपने साथ ठहरने को बाध्य करती हैं तो मैं आपके ही यहाँ ठहरूँगी ।" विमला ने कहा ।

विमला सोच रही थी, इस समय डाक्टर रमेश के विषय में कि जिसके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जीवन ने उसे समाज में कितना सम्मान दिया था । वह सोच रही थी अपने काले कारनामों पर और फिर रमेश के ठोस व्यक्तित्व पर कि जिसने अपने जीवन-काल में और मर कर भी उसे अन्य लोगों की दृष्टि में ऊपर ही उठाया था । डाक्टर रमेश के सम्बन्ध से वह विमल, उसकी पत्नी, सिस्टर, कान्ता, दारोगाजी और कमला की दृष्टि में कितनी ऊपर उठी थी । उन सभीने उसे देवी करके माना था । रही श्याम और विमला के अपने मन की बात, सो यह उनके अपने मन की बात थी । यह पाप था या पुण्य, इसे वे ही जानें—वे ही समझें । डाक्टर रमेश की पुण्य आत्मा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं था, कोई सरोकार नहीं था ।

विमला जीवन में रमेश को शांति प्रदान नहीं कर सकी; परन्तु क्या अब उसकी आत्मा को कष्ट पहुँचाने की सामर्थ उसमें थी ?

५७

श्याम का निवास-स्थान नगर के एक ऊँचे भाग में था। जहाँ से सम्पूर्ण नगर की छटा देखी जा सकती थी। श्याम साधारणतया दो-पहर के भोजन के लिए घर नहीं आता था; पर उस दिन विमला वहाँ पहुँची तो कमला ने विमला से पूछा कि यदि वह श्याम से मिलना चाहे तो वह घर आसकते हैं। विमला ने सोचा कि उसे एक बार तो श्याम से मिलना है ही, तो फिर पहले ही दिन क्यों न मिल लिया जाये। वह यह सोचकर प्रसन्न हुई कि उसके सामने श्याम एक विचित्र-सी उलझन अनुभव करेगा। विमला जानती थी कि श्याम को यदि कोई काम करना होता था तो वह बड़ी खूबसूरती से करता था। अपने ठहरने के सम्बन्ध में भी उसने इसी प्रकार सोचा। विमला सोच रही थी कि उसकी और श्याम की अंतिम भेंट श्याम के मन में फोड़ा बन गई होगी, जिसका वह इलाज नहीं कर सका होगा। उसने जितना दुःख श्याम के कारण पाया था, उतना ही श्याम को भी बदले में दे दिया था। उसने सोचा, अब श्याम उससे घृणा करने लगा होगा। अन्तिम दिन जब वह श्याम के दफ्तर से बाहर निकली थी तो उसने सोचा था कि अब कभी श्याम उस पर आँख नहीं उठायेगा, उसकी ओर देखेगा भी नहीं।

विमला कमला के साथ बैठी श्याम के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे सजे हुए ड्राइंग-रूम में बैठकर श्याम की प्रतीक्षा करना अच्छा लग रहा था। कमरे में फूल सजे थे, दीवारों पर सुन्दर चित्र टँगे थे। कमरा काफी ठण्डा था। उसे वहाँ अजनबीपन नहीं लग रहा था।

उसे भोपाल के खाली बँगले की याद आगई। वहाँ की कुर्सियाँ टूटी हुई थीं, पुरानी थी। वहाँ की रसोई महकती थी, दरवाजों पर लाल और गन्दे पर्दे पड़े थे। कितना कष्ट था वहाँ! कमला तो वहाँ के बारे में कभी सोच भी नहीं सकती थी।

दोनों ने बँगले में आती हुई मोटर की आवाज सुनी, और तुरन्त श्याम कमरे में आगया। उसके हाव-भाव में कोई परिवर्तन नहीं था। उसकी चाल-ढाल में कोई थकावट या लज्जा का आभास नहीं था। वह पहले जैसा ही तरो-ताज़ा था।

"मुझे आने में देर तो नहीं हुई? मेरी अधिक प्रतीक्षा तो नहीं करनी पड़ी। मुझे गवर्नर से मिलना था, इसलिए शीघ्र न आसका।"

उसने विमला के पास पहुँचकर उसके दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए और पूर्ववत् मुस्कराकर सामने खड़ा होकर बोला, "आपके यहाँ आने पर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मेरे विचार में कमला ने आपको बता दिया होगा कि आप जब तक यहाँ रहें, हमारे ही यहाँ ठहरें और इसे अपना ही घर समझें। यही मैं भी आपसे प्रार्थना करता हूँ। यदि मैं आपकी कोई सेवा कर सकूँ तो अपना सौभाग्य मानूँगा।" श्याम की आँखों में सचाई झलक रही थी। "मुझे बहुत-सी बातें करनी नहीं आतीं और न ही मैं मूर्खों की भाँति बहुत कुछ कहूँगा ही, पर यह सत्य है कि मुझे आपके पति की मृत्यु से बहुत सदमा पहुँचा। वह बहुत सज्जन पुरुष थे, यहाँ उनका अभाव हमें बहुत खलेगा। उनका मैं बहुत आदर करता था।"

"श्याम यह सब मत कहो, विमला सब समझती है।"

अफ़सरों के रीति-रिवाज के अनुसार दो बैरे कमरे में मदिरा लिये हुए आए। विमला ने मना कर दिया।

श्याम ने अपने साधारण चतुर व्यवहार के नाते कहा, "एक पेग तो लेना ही होगा। यह लाभ करेगी और फिर ऐसी शराब आपको मसूरी छोड़ने के पश्चात् कहाँ मिली होगी। मेरा तो ख़याल है कि

भोपाल में बर्फ़ तक नहीं मिला होगा।"

विमला ने कहा, "आपका विचार ग़लत नहीं है। परन्तु क्या पहले कभी आपने मुझे यहाँ शराब पीते देखा था?"

एक क्षण में विमला की आँखों में उस मृतक भिखारी का चित्र नाच गया जो उसके फाटक के पास फटे-पुराने कपड़े पहने पड़ा था और उनमें से उसकी झुर्रियाँ-भरी काया झाँक रही थी।

वे सब भोजन करने लगे। श्याम मेज़ के सिरे पर बैठा था। उसी ने बातों का क्रम आरम्भ किया। संवेदना के कुछ क्षणों के पश्चात् श्याम को विमला का आना ऐसा लगा जैसे वह भोपाल से अपना आपरेशन कराकर वहाँ स्वास्थ सुधारने आई हो। उसके अतिरिक्त जैसे उसकी कोई हानि नहीं हुई हो। उसे किंचित् उत्साह की आवश्यकता थी और यह काम श्याम ने अपने हाथों में ले लिया। विमला को स्थान अपरिचित न लगने देने के लिए आवश्यक था कि उससे घर के आदमियों की भाँति व्यवहार किया जाय। श्याम ने वहाँ की घुड़-दौड़ और पोलो की चर्चा छेड़ दी। बोला, "मैं यदि अपना वज़न न घटा सका तो पोलो खेलना छोड़ देना पड़ेगा।" उसने उसी दिन सवेरे गवर्नर से भेंट की थी, वह किसी एडमिरल के जहाज़ पर एक पार्टी में गया था। श्याम की बातों का इतना प्रभाव पड़ा कि विमला को लगा कि जैसे वह एक सप्ताह-भर को बाहर गई थी और फिर वहाँ वापस आ गई। वहाँ स्त्रियाँ, बच्चे, मर्द मक्खियों की तरह मर रहे थे। विमला ने अपने परिचितों के विषय में पूछना आरम्भ किया। श्याम उत्तर देने में हास-परिहास करता और विमला उन पर प्रसन्न हो उठती। कमला घर की मालिकन की भांति मौन बैठी सुन रही थी। विमला में जैसे चेतना लौट रही थी।

श्याम अपनी पत्नी से बोला, "देखो, विमला अब पहले से अच्छी हो गई है। अभी खाने के पहले यह इतनी पीली पड़ी हुई थी कि मैं तो दंग रह गया था इसे देखकर।"

विमला जब श्याम से बातें कर रही थी तो उसे बराबर बड़े ध्यान से देख रही थी। भोपाल में क्रोध में भी उसने श्याम का चित्र अपने विचारों में बनाया था कि उसके केश लम्बे और घुँघराले हैं, अपने सफेद बालों को छिपाने के लिए वह सिर में अधिक तेल लगाता है, केशों को बड़ी सावधानी से ब्रुश करता है, उसका मुख लाल है, उसके मुख पर नसें उभरी हुई हैं, जबड़ा बड़ा है, जब उसका सिर झुका होता है तो दो ठोड़ियाँ दिखाई देती हैं और उसकी घनी भौंहों के कारण वह बन्दर-सा लगता है; उसके हाव-भाव बड़े भोंडे हैं। वह अपने भोजन का बराबर ध्यान रखता है, कसरत भी करता हैं। फिर भी उसका मुटापा कम नहीं होता। हड्डियों के जोड़ों पर भी मुटापा चढ़ा है। वह अधेड़ है। वह अपनी अवस्था कम जताने के लिए चुस्त कपड़े पहनता है।

परन्तु जब श्याम ने कमरे में प्रवेश किया तो विमला ने उसे अपनी कल्पना के विपरीत पाया। उसकी कल्पना को ठेस पहुँची। तभी शायद वह कुछ पीली पड़ गई थी। उसकी कल्पना ने उसे धोखा दिया था। श्याम उसकी कल्पना के सर्वथा प्रतिकूल था। विमला को स्वयं पर हँसी आगई। श्याम के केश सफेद नहीं थे। हाँ, कनपटी पर एक-आध बाल सफेद था, परन्तु वह तो अच्छा लगता था। उसका मुख लाल नहीं था, उसका सिर बड़ा सुन्दर बना था। वह मोटा नहीं था, न ही अधेड़ दीखता था। वास्तव में वह इकहरे बदन था। सब मिलाकर उसका बदन आकर्षक था। यदि उसे अपनी बनावट पर थोड़ा गर्व था तो इसमें श्याम का क्या दोष था? उसे मालूम था कि वस्त्र कैसे पहने जाने चाहिएँ? वह साफ-सुथरा था। विमला समझ नहीं सकी कि आखिर वह इस सबके विपरीत कैसे सोचे? श्याम सुन्दर पुरुष था। श्याम की वास्तविकता सौभाग्य से वही जानती थी। उसे मालूम था कि श्याम का स्वर दूसरे को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। विमला ने स्पष्ट अनुभव किया कि उसकी बातचीत में

सचाई नहीं होती परन्तु उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्यों उसके फन्दे में फँस गई थी। श्याम की आँखें सुन्दर थीं। उन्हींमें जैसे उसके व्यक्तित्व का सारा आकर्षण निहित था। उन आँखों में हलकी-सी नीलिमा थी, जो स्पष्ट चमकती थी। वह बातचीत करता तो उस बातचीत से बिना प्रभावित हुए रहा नहीं जा सकता था।

अन्त में कॉफ़ी लाई गई। श्याम ने अपना चुरट सुलगा लिया। उसने अपनी कलाई में बँधी घड़ी देखी और उठ खड़ा हुआ।

"अब तुम दोनों सहेलियाँ बातें करो, मेरा दफ्तर पहुँचने का समय हो गया।" एक क्षण को वह रुका, फिर विमला को स्निग्ध दृष्टि से देखकर बोला, "मैं अभी दो-एक दिन आपको परेशान नहीं करूँगा, तब तक आप आराम करें, फिर उसके बाद मुझे आपसे कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।"

"मुझ से ?" विमला ने कहा।

"हाँ, हमें आपके मकान और फ़र्नीचर आदि का निबटारा करना भी तो है।"

"ओह, परन्तु उसके लिए तो मैं किसी वकील के पास जा सकती हूँ, आप उसके लिए क्यों परेशान हों ?" विमला बोली।

"यह मत सोचिए कि मैं इन तमाम क़ानूनी कामों पर आपको दौड़ने दूँगा। मैं स्वयं सारा प्रबन्ध करूँगा। आपको मालूम है कि आपको 'पेन्शन' मिलने का अधिकार है। मैं गवर्नर से इस सम्बन्ध में भी बातें करूँगा और देखूँगा कि कुछ कार्यवाही करने से आपको अतिरिक्त धन भी मिल सकता है, कि नहीं। आप सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए। अभी तुरन्त इस सबके लिए परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। हम तो चाहते हैं कि सबसे पहले आपका स्वास्थ्य सुधर जाय। क्यों कमला, मैं ठीक कह रहा हूँ न ?"

"बिलकुल ठीक।"

श्याम ने विमला के सामने मस्तक झुकाया।

५८

विमला श्याम के यहाँ दो-चार दिन में ही थकी-थकी-सी अनुभव करने लगी थी। यहाँ की सुख-सुविधा ने जैसे उसके अवतक के जीवन से उसका सम्बन्ध तोड़ दिया था। उसे दुखद जीवन भूल-सा गया था। वह सुन्दर वातावरण पाने के लिए तरस उठी। उसका यहाँ हर बात का ध्यान रखा जा रहा था। उसे यह विचार बुरा नहीं लगा था कि वह आजकल संवेदना पाने का पात्र बनी हुई थी। उसके पति की मृत्यु हुए इतना कम समय बीता था कि वह पूरा मनोरञ्जन नहीं कर सकती थी; पर बड़े घरानों की स्त्रियाँ उसके पास आती थीं। ये स्त्रियाँ विमला का इतना ध्यान रखती थीं, जैसे वह चीनी मिट्टी का कोई कीमती खिलौना हो। विमला को आभास होता था कि आगन्तुक स्त्रियाँ उसे नायिका मानती थीं और वह स्वयं भी बड़ी सुन्दरता और नम्रता से अभिनय करती थी। वह सोचती थी कि यदि वहाँ विमल उपस्थित होता और वह चालाक इस स्थिति को देखता तो वे दोनों खूब हँसते। कमला के पास विमल का पत्र आया था, जिसमें उसने केन्द्र में विमला के दत्तचित्त होकर काम करने के बारे में लिखा था। उसके साहस और आत्म-नियन्त्रण की प्रशंसा की थी। वह सम्हल-सम्हलकर सबको मूर्ख बना रहा था। गन्दा, कुत्ता कहीं का। सोचकर विमला हँस पड़ी।

विमला प्रयत्न करने पर भी नहीं समझ सकी कि श्याम उससे परिस्थितियों के कारण अब तक एकान्त में नहीं मिल सका था, अथवा जान-बूझकर नहीं मिल रहा था। उसका हर काम निराला था।

उसका व्यवहार सज्जनतापूर्ण, संवेदनशील और आकर्षक था। कोई भी उसके व्यवहार को देखकर नहीं कह सकता था कि विमला और उसमें परिचय होने के अतिरिक्त कोई अन्य सम्बन्ध भी था। एक दिन तीसरे पहर वह अपने कमरे के बाहर पड़े सोफ़े पर लेटी कोई पुस्तक पढ़ रही थी, तभी श्याम उधर से जाते-जाते वहाँ ठहर गया।

उसने पूछा, "क्या पढ़ रही हो ?"

"किताब।" विमला ने कहा।

विमला की आँखों में व्यंग्य था। श्याम मुस्करा दिया।

"कमला गवर्नमेण्ट-हाउस में एक पार्टी में गई है।"

"मुझे मालूम है। तुम क्यों नहीं गए ?"

"मुझे वहाँ जाना कुछ अच्छा नहीं लगा, और फिर सोचा कि यहाँ रहकर तुम्हारा जी बहलाऊँगा। मोटर खड़ी है, चाहो तो सैर को चलें।" श्याम बोला।

"नहीं धन्यवाद !" विमला ने कहा।

श्याम उसी सोफ़े पर बैठ गया।

"जब से तुम यहाँ आई हो, मुझे तुमसे बातें करने का अवसर ही नहीं मिला।" श्याम बोला।

विमला उसकी आँखों में भेदपूर्ण दृष्टि से देख रही थी।

"क्या अभी हमें कुछ और बात करना बाकी है ?"

"इतनी कि किताबें भर जायें।" श्याम बोला।

विमला ने अपने पाँव समेट लिए कि कहीं वे उससे छू न जाएँ।

श्याम ने पूछा, "क्या तुम अभी तक मुझसे रुष्ट हो ?"

"नहीं," कह कर विमला हँस पड़ी।

"यदि तुम रुष्ट न होतीं तो ऐसे न हँसतीं।"

"यह तुम्हारी भूल है। मुझे तुम्हारी कोई चिन्ता ही नहीं जो रुष्टता की बात उठे।"

श्याम अविचलित न हुआ।

"यह तुम्हारी निर्दयता है। यदि अतीत पर तनिक ध्यान दो तो मैंने जो किया, उचित किया था ?"

"अपनी दृष्टि से।" विमला बोली।

"अब तो तुमने कमला को परख लिया। अब बताओ क्या यह अच्छी स्त्री नहीं है ?" श्याम बोला।

"है ! मैं उसकी सहृदयता की सदा अनुगृहीत रहूँगी।"

"वह हजारों में एक है। यदि हम दोनों का विछोह हो जाता तो जीवन अजीर्ण हो गया होता। और फिर उसके साथ चाल चलना भी अनुचित था। इसके अतिरिक्त मुझे अपने बच्चों का भी तो ध्यान था। उन्हें कितना कष्ट हो जाता ?"

एक क्षण को विमला स्तम्भित-सी श्याम को देखती रही। अब वह स्वयं पर काबू पा चुकी थी।

"मैंने तुम्हारा आचरण इस पिछले सप्ताह में देखा है। मैं समझती हूँ कि तुम कमला को चाहते हो।"

"मैंने भी तो तुमसे यही कहा था कि मैं उसे चाहता हूँ। मैं उसको किसी प्रकार की भी असुविधा नहीं पहुँचा सकता। वह बहुत ही अच्छी पत्नी है।" श्याम बोला।

"क्या तुमने भी कभी सोचा कि तुम्हें भी उसका विश्वास नहीं खोना चाहिए ?" विमला ने पूछा।

"साधारणतया जिस चीज़ को आँख नहीं देखतीं उसे हृदय भी नहीं मानता," कहकर श्याम हँस दिया।

"तुम्हारा निरादर होना चाहिए।"

"मैं तो इन्सान हूँ। मैं नहीं समझ पाता कि तुम क्यों मुझे बुरा कहती हो। मैं जी-जान से तुम्हें चाहता रहा हूँ। मैं देवता नहीं हूँ।"

इस वाक्य से विमला को रोमान्च हो आया। उसने अनुभव किया जैसे वादक ने वाद्य बजाने के पहले उसके तार कस दिए हों।

वह दृढ़ता-भरे स्वर में बोली, "मैं तो तुम्हारा शिकार हूँ न ?"

"मैं आखिर यह कैसे सोचता कि हम पर इतनी उलझनें सवार हो जाएँगी।" श्याम बोला।

"तुम्हें तो विश्वास था कि यदि भुगतना भी पड़ा तो वह तुम्हें नहीं भुगतना होगा।" विमला बोली।

"तुम आवश्यकता से अधिक कठोर हुई जा रही हो। मैंने तो दोनों की भलाई का काम किया था। तुम उस समय संतुलन खो बैठी थीं। तुम समझती हो कि यदि मैं तुम्हारा कहना उस समय मान लेता तो उसका परिणाम क्या अच्छा होता? हमारी ज़िन्दगी बड़ी कटु हो जाती, भार बन जाती? तुम्हारी उससे कोई हानि नहीं हुई। हम अब भी पहले जैसे मित्र क्यों न बने रहें?"

विमला हँस दी।

"तुम समझते हो मैं भूल गई हूँ कि तुम्हींने मुझे मौत के मुँह में झोंक दिया था?" विमला बोली।

"यह बेकार की बात है। मैंने तो तुमसे कहा था कि तनिक सी सावधानी बरतने पर वहाँ कोई भय नहीं है। क्या तुम समझती हो कि बना समझे-बूझे मैं तुम्हें वहाँ भेज देता?"

"तुम समझ-बूझ गए थे, क्योंकि तुम मुझे भेजना चाहते थे। तुम पहले दर्जे के स्वार्थी लोगों में से हो।"

"ख़ैर, आदमी को परखकर ही कुछ कहा जा सकता है। अब तुम वापस आगई हो, और अगर बुरा न मानो तो कहूँ कि तुम पहले से अधिक सुन्दर होकर लौटी हो।" श्याम बोला।

"और डाक्टर रमेश?"

श्याम के मुँह पर जो उत्तर आया वह उसे संवरण नहीं कर सका। बोला, "तुम पर काली पोशाक जितनी फबती है, उतनी अन्य कोई नहीं।"

एक क्षण को विमला श्याम को देखती ही रह गई। विमला रो पड़ी इस बात को सुनकर। उसे बहुत दुःख हुआ।

"भगवान् के लिए रोओ मत ! मैंने तुम्हें चोट पहुँचाने के लिए कुछ नहीं कहा विमला ! यों ही परिहास में कह दिया था। तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे दुःख से मैं कितना दुखी हो जाता हूँ ।"

"शैतान, अपनी जबान बन्द कर ।" विमला बोली । उसके नेत्र लाल हो गए । "यदि रमेश मेरे किसी भी प्रयास से वापस आ सके तो मैं तैयार हूँ। उसके लिए मैं प्राण दे सकती हूँ । तुम्हारे और मेरे कारण ही उसकी मृत्यु हुई है ।"

श्याम ने विमला का हाथ पकड़ना चाहा; पर उसने छुड़ा लिया। रोते हुए बोली, "तुम यहाँ से चले जाओ । तुम्हारा यही सबसे बड़ा अहसान होगा । मुझे तुमसे घृणा है । तुम्हारे जैसे दस भी डाक्टर रमेश की समता नहीं कर सकते । मैं मूर्ख थी जो पहले नहीं समझ सकी । जाओ, अब चले जाओ यहाँ से ।"

विमला ने देखा कि श्याम कुछ और बोलने जा रहा था, तभी वह उठकर अपने कमरे में चली गई । श्याम उसके पीछे गया ।

श्याम विमला को बाँहों में भर लेना चाहता था । बोला, "मैं तुम्हें इस दशा में नहीं छोड़ सकता । मैं तुम्हें कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता ।"

"मुझे मत छुओ—मत छुओ मुझे—भगवान् के लिए चले जाओ।"

"डार्लिङ्ग ! मैंने तुमसे हमेशा प्रेम किया है, और मैं अब भी तुम्हें पहले से अधिक चाहता हूँ ।"

"तुम इतना झूठ कैसे बोल लेते हो ! मुझे छूने का प्रयास न करना ।"

"इतनी निर्दय न बनो विमला ! मैं तुम्हारे साथ सही व्यवहार न कर सका, उसके लिए मुझे क्षमा कर दो ।" श्याम बोला ।

विमला रो रही थी—काँप रही थी । उसका सारा शरीर काँप रहा था । वह स्वयं को बिलकुल कमजोर पा रही थी । उसे लगा, जैसे उसकी हड्डियाँ तरल हुई जा रही थीं । रमेश के प्रति दुःख के भाव के स्थान पर उसे स्वयं पर तरस आ रहा था ।

विमला रोती हुई बोली, "तुम उस समय इतने निर्मम क्यों होगये थे ? क्या तुम्हें नहीं मालूम था कि मैं तुम पर न्योछावर हो चुकी थी।"

"मालूम था।"

श्याम ने उसे फिर भुजाओं में भर लेना चाहा। वह चिल्लाई "नहीं, नहीं।"

श्याम अटपटी भाषा बोल रहा था। उद्वेग के कारण उसके शब्द स्पष्ट न थे। विमला को लगा कि जैसे कोई खोया हुआ बच्चा घर लौटकर आगया हो। वह हलके स्वर से कराह उठी। उसकी आँखें झप गई, गाल आँसुओं से भीग गये। उसे लगा कि उसके शरीर में जैसे स्वर्णिम ज्योति जाग उठी थी। अपने स्वप्नों में उसने वह दृश्य कई बार देखा था। अब वह उससे क्या चाहता था? इस समय विमला स्त्री नहीं थी। विमला के स्थान पर जैसे पाषाण का एक टुकड़ा पड़ा था।

५६

अपना मुँह हाथों से छिपाए विमला पलंग पर बैठी थी।

"तुम पानी पिओगी ?"

विमला ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। श्याम ने गिलास भरकर विमला को दिया।

"थोड़ा पानी पी लो, तो मन स्थिर हो जायगा।"

श्याम ने गिलास विमला के हाथ में दे दिया। विमला बराबर भय खाई-सी श्याम को देख रही थी। श्याम उसके बिलकुल पास, सामने खड़ा था। उसकी आँखों में आत्म-तुष्टि की झलक थी।

"तुम समझती हो कि मैंने कुछ बुरा काम किया ?"

विमला की पलकें झुक गईं। बोली, "हाँ ! परन्तु मैं ही तुमसे कब अच्छी हूँ। तुम कृतघ्न हो। अच्छा, अब तुम यहाँ से चले जाओ।"

"मैं सच कहूँ तो मुझे अब जाना भी चाहिए। मैं कमला के आने से पहले चला जाना चाहता हूँ।"

श्याम कमरे से चला गया।

विमला कुछ देर वैसी ही बैठी रही। उसका मन बिलकुल खाली-खाली-सा था। वह उठी और ड्रेसिंग-टेबिल के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। वह अपनी शक्ल उस आइने में देख रही थी। उसकी आँखें रोते-रोते सूज गई थीं। उसके मुख पर आँसुओं के दाग़ थे। उसके गाल अभी तक लाल पड़े हुए था। वह अपने से भय खा रही थी।

वह बोली, "कुत्ता कहीं का।"

वह अपनी बाँहों पर सिर टिका फूट-फूटकर रोने लगी। वह सोचने लगी कि आखिर उसे हो क्या गया था ! कितना घृणास्पद था ! उसे श्याम से घृणा हो रही थी, उसे स्वयं से भी घृणा हो रही थी। वह श्याम को अब कभी देखना तक नहीं चाहती थी।

श्याम ने उससे विवाह न करके उचित ही किया। वह बिलकुल बेकार स्त्री थी। उन स्त्रियों से भी गई-बीती जो रोटी के लिए स्वयं को बेच देती हैं। उसी घर में वह गिर गई, जहाँ कमला ने उसके संकट के समय उसे ठहराया था। उसकी सिसकियाँ बँध गई। सब कुछ समाप्त होगया। उसने सोचा था कि वह पहली विमला नहीं थी। अब, वह स्वयं को शक्तिशाली समझने लगी थी। वह समझती थी कि वह सम्भ्रान्त स्त्री की तरह मसूरी लौटी थी। उसके विचारों में जीवन के प्रति नया अनुराग उत्पन्न हुआ था। उसने अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने की आकांक्षा की थी। उसे स्वतन्त्रता मिली थी कि वह अपना पथ सुन्दर बना सके। उसके सामने संसार एक प्रशस्त पथ

था, जिसपर वह सिर ऊँचा करके चल सकती थी। उसने समझा था कि उसने वासना पर विजय पा ली थी। वह स्वतन्त्र हो गई थी वह अब शुद्ध जीवन बिता सकेगी, परन्तु वह तो दासी से भी गई-बीती थी। कमज़ोर—-नितान्त कमज़ोर। कुछ नहीं, उसकी दशा घृणास्पद थी !

विमला रात के खाने पर नहीं आई। नौकर से कहला दिया कि उसके सिर में पीड़ा है और वह कमरे में ही आराम करेगी। कमला उसके पास गई। उसने विमला का सुर्ख चेहरा देखा, सूजी हुई आँखें देखीं। उसने विमला को सान्तवना देने की चेष्टा की। विमला ने सोचा कि कमला को विश्वास है कि मैं रमेश के कारण रो रही हूँ, इसलिए यह मुझसे संवेदना जता रही है।

'मैं जानती हूँ विमला, कि कितनी बड़ी विपदा है, परन्तु साहस न हारो। तुम्हारे पति की आत्मा तुम्हें दुःखी देखकर शान्ति से नहीं रह पाएगी।" कमला ने कहा।

विमला के माता-पिता आजकल कलकत्ता में रह रहे थे।

'भाग चल यही विचार उसके मस्तिष्क में बार-बार आ रहा था। चल, तुरन्त चल। उसने अपने पिता को तार दिया कि वह वहाँ पहुँच रही है। रमेश की मृत्यु की सूचना का तार वह पहले ही दे चुकी थी।

आज विमला ने कमला को सूचित किया कि वह अब यहाँ नहीं ठहर सकती। उसने अपने पिता को तार दे-दिया है, कल कलकत्ता पहुँचने का।

सहृदया कमला ने कहा, "तुम्हारे जाने पर हमें बड़ा खलेगा, परन्तु मजबूर हूँ। तुम्हारे भाव भी मैं समझती हूँ कि तुम अपने माता-पिता के पास पहुँचना चाहती हो।"

मसूरी आने के पश्चात् विमला को अपने घर में कदम रखने को

जी नहीं चाहा था। वह वहाँ पहुँचकर पुरानी स्मृतियों से घिर जाने के भय से गई ही नहीं। परन्तु अब कोई चारा न था। श्याम ने फ़र्नीचर बेचने का प्रबन्ध कर दिया था। उसे ग्राहक भी मिल गया था; पर उसके अतिरिक्त मकान में रमेश के और उसके तमाम कपड़े थे। वे विशेष सामान लेकर भोपाल नहीं गए थे। मकान में पुस्तकें थीं, चित्र थे और तमाम सामान था। विमला हर वस्तु के प्रति उदासीन थी; पर वह उन चीज़ों को बेचना नहीं चाहती थी। उसने निश्चय किया कि उस-सारे सामान को पैक करके वह अपने साथ ले जाएगी। दोपहर के खाने के पश्चात् इसी विचार से वह वहाँ गई। कमला उसकी सहायता को उसके साथ जाना चाहती थी; पर विमला ने कहा कि वह अकेली ही जाएगी। कमला ने दो लड़के उसके साथ कर दिये, जो उसे सामान पैक कराने में सहायता दें।

घर एक पुराने नौकर पर छोड़ दिया गया था। विमला के पहुँचने पर उसने द्वार खोला। विमला को मकान में प्रवेश करते लगा कि वह वहाँ के लिए अपरिचिता थी। सारा मकान साफ़-सुथरा पड़ा था। हर चीज़ कायदे से रखी थी।

फ़र्नीचर बड़े क़रीने से लगा था। गुलदस्तों में फूल तक सजे थे। सब कुछ देखकर आभास होता था कि घर का मालिक कुछ क्षणों के ही लिए बाहर गया था। परन्तु, वह क्षण कितना बड़ा होगया था! उसके बाद कौन सोच सकता था कि उस मकान में क़हक़हे फिर कभी गूँजेंगे! पियानो इन्तज़ार कर रहा था कि उसे अब बजाया जाएगा। विमला को लगा कि यदि इसे बजाया भी गया तो इसमें से कोई स्वर नहीं निकलेगा। रमेश का कमरा उसकी उपस्थिति के समय जैसा ही साफ़ था। उसके कमरे में कपड़ों की आलमारी पर विमला के दो चित्र रखे थे, उनमें से एक चित्र में वह अपने विवाह का परिधान किए थी।

नौकर कमरों से बक्स ला-लाकर पैक करने की तैयारी कर रहे थे। विमला उन्हें काम करते देख रही थी। विमला ने सोचा कि दो दिन में तो सारा काम सरलता से निबट जाना चाहिए। उसे व्यर्थ की बातों में न फँसकर अपना काम करना चाहिए। व्यर्थ की बातों के लिए उसके पास समय नहीं था। तभी उसने अपने पीछे किसीके पद-चाप सुने। आने वाला श्याम था। विमला का हृदय ज़ोर से धड़क उठा।

विमला ने पूछा, "तुम्हें और क्या चाहिए ?"

"तुम ज़रा कमरे में चलो तो कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।"

"मैं बहुत व्यस्त हूँ।" विमला बोली।

"मैं पाँच मिनट से अधिक समय नहीं लूँगा।"

विमला कुछ नहीं बोली। नौकरों को काम करते रहने का आदेश देकर वह कमरे में चली गई। वह बैठी नहीं, वह दिखाना चाहती थी कि उसके पास समय नहीं था; पर विमला के हृदय की धड़कनें बढ़ गई थीं। फिर भी उसने शान्ति से और क्रुद्ध निगाहों से श्याम से पूछा, "हाँ, क्या काम है आपको ?"

"मुझे अभी कमला ने बताया कि तुम परसों जा रही हो। उसीने बताया कि तुम यहाँ अपना सामान पैक कराने आई हो। उसने कहा कि मैं तुमसे पूछ लूँ कि यदि मेरे योग्य कोई काम हो तो कर दूँ।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद ! मैं स्वयं सारा काम निपटा लूँगी।"

"यह तो मेरा भी विचार था। परन्तु मैं केवल इतना ही पूछने तो यहाँ नहीं आया हूँ। मैं यह भी जानने आया हूँ कि जाने की इतनी शीघ्रता क्या कल की घटना के कारण हुई ?"

"आपका और कमला का बड़ा सौजन्य रहा। मैं नहीं चाहती कि आप लोग यह सोचें कि आपकी सहृदयता का मैं अनुचित लाभ उठा रही हूँ।" विमला बोली।

"यह तो स्पष्ट उत्तर नहीं हुआ।"

"आपको क्या अन्तर पड़ता है ?"

"बड़ा अन्तर पड़ेगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी किसी ग़लती के कारण तुम्हें यहाँ से जाना पड़े।" श्याम बोला।

विमला मेज़ के सहारे खड़ी थी। उसने अपनी आँखें नीची कर लीं। उसकी निगाह एक चित्र पर अटक गई, जो बहुत पुराना था; पर जिसे रमेश अपनी मानसिक पीड़ा के क्षणों में घूरा करता था। अब रमेश······उसने अपनी आँखें ऊपर उठाई।

"मैं बिलकुल गिर गई हूँ। तुम मुझसे इतनी घृणा नहीं कर सकते जितनी मैं स्वयं अपने से करती हूँ।" विमला बोली।

"परन्तु मैं तो घृणा नहीं करता। मैंने जो कुछ भी कल कहा था उसका हर शब्द सत्य था। मैं तुमसे वास्तव में प्रेम करता हूँ।

इस प्रकार भागने से क्या लाभ होगा ? मेरी समझ में नहीं आता कि हम मित्रों की भाँति क्यों नहीं रह सकते ? तुम्हारे इस विचार पर कि मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया, मुझे घृणा होती है।"

"तुम मुझे अकेली क्यों नहीं छोड़ देते ?"

"इस सबको गोली मारो। मैं न तो लकड़ी हूँ, न पत्थर हूँ। कैसी बेमतलब की बातें कर रही हो, तुम कितनी गन्दी दृष्टि से सब समझ रही हो। मैं तो समझा था कि कल की घटना के बाद मेरे प्रति तुम्हारा अनुराग बढ़ जायगा। आखिर हम सब इन्सान हैं।"

"मैं नहीं समझती कि हम लोग इन्सान हैं। मुझे लगता है कि हम जानवर हैं। मैं तुम्हें दोष नहीं देती, मैं स्वयं बुरी हूँ। मैं गिर गई, क्योंकि मैंने तुम्हें चाहा। परन्तु वह मैं नहीं थी। मैं इतनी गिरी हुई नहीं हूँ, मैं वासना की मूर्ति नहीं हूँ। वह मेरे अन्तर की नारी थी, जिससे मुझे अब अपार घृणा है। मैं अपने वास्तविक रूप में तुम्हारे साथ नहीं मिली। मैं वह हूँ जिसके पति के शरीर की उष्णता अभी तक मेरी आँखों में जल रही है। जिसके साथ तुम्हारी पत्नी इतनी सज्जनता रही है। मेरे अन्दर कोई जानवर था, कोई प्रेत था जिससे मैं घृणा करती

हूँ, जिसे तुमने अपनी भुजाओं में भरा था, जो तुम पर रीझ गई थी। मेरा जी चाहता है कि मैं उस नारी पर थूक दूँ।"

श्याम विमला की बातें सुन किंचित् भयभीत हो उठा।

"ख़ैर, मैं काफ़ी सुलझा हुआ आदमी हूँ; पर कभी-कभी तुम्हारी बाते सुनकर मुझे धक्का लगता है।"

"मुझे इसके लिए दुःख है। अब आप जाएँ तो बहुत अच्छा हो। तुम बिलकुल मूर्ख हो और तुमसे गम्भीरतापूर्वक बातें करना भी मूर्खता ही है।"

श्याम ने कोई उत्तर नहीं दिया। विमला को उसकी आँखों में क्रोध दिखाई दिया। लगता था वह सोच रहा था कि विमला को भेजकर वह शान्ति की साँस ले-सकेगा। विमला ने अपने जाने के समय का दृश्य सोचा। उसने देखा कि वह उससे हाथ मिलाकर उसकी यात्रा की मंगल-कामना कर रहा था और वह उसके अतिथि-सत्कार के लिए धन्यवाद दे रही थी। इतने ही में उसने श्याम के भाव बदलते हुए देखे।

श्याम ने पूछा, "कमला कह रही थी कि तुम्हारे बच्चा होने वाला है, क्या यह सच है?"

विमला का रंग उड़ गया, पर उसने स्वयं को संयत रखा।

"हाँ।" विमला बोली।

"क्या मैं उस बच्चे का पिता हूँ?"

"जी नहीं ! वह डाक्टर रमेश का बच्चा है।" विमला बोली।

विमला ने पूरा ज़ोर देकर यह कहा था; पर उसे अपना स्वर प्रभावोत्पादक नहीं लगा।

"क्या तुम्हें पूरा विश्वास है?" श्याम के मुख पर शरारत नाच रही थी। "कई वर्ष पहले तुम्हारा विवाह रमेश से हुआ; पर कुछ नहीं हुआ। तारीखें भी ठीक ही मालूम होती है। मैं समझता हूँ कि बच्चा डाक्टर रमेश का न होकर मेरा ही है।"

"यदि तुम्हारा बच्चा हुआ, तो मैं उसे मार डालूंगी।"

"ओह, मूर्खता की बातें मत करो। मुझे तो गर्व होगा। मैं चाहता हूँ कि लड़की हो। मेरे लड़के तो हैं। तुम्हें बहुत दिन इस सन्देह में नहीं रहना होगा। मेरे सब बच्चों की सूरत मुझसे मिलती है।"

श्याम ने फिर अपना पहला-सा व्यवहार अपना लिया। विमला जानती थी कि यह परिवर्तन क्यों था।

उसने सोचा कि श्याम का बच्चा होने का अर्थ यह होगा कि वह उससे भले ही न मिल सके; पर उसकी छाया से पीछा नहीं छुड़ा सकेगी। श्याम की शक्ति उसका पीछा करेगी और उसके दैनिक जीवन पर प्रभाव डालेगी।

विमला बोली, "तुम बिलकुल दम्भी और निरर्थक व्यक्ति हो। यह मेरा दुर्भाग्य है मैं तुम जैसे व्यक्ति से मिली थी।"

६०

विमला ज्योंही स्टेशन के लिए रवाना होने लगी तो उसे पोस्टमैन ने लाकर एक तार दिया। विमला ने उसे काँपते हाथों से खोला।

तार में विमला की माताजी के प्राणान्त की सूचना थी। विमला सीधी स्टेशन पहुँचकर ट्रेन पर सवार हो गई।

अपनी यात्रा में विमला निरन्तर आपबीती बातों पर विचार करती रही। वह स्वयं को समझ पाने में असमर्थ थी। जो कुछ उसके साथ घटा था, सबका सब अप्रत्याशित था। आखिर उस पर किस बात का इतना प्रभाव पड़ा कि श्याम से घृणा करते हुए भी वह उसके संकेत पर नाच गई। उसे स्वयं पर क्रोध आया, स्वयं से उसे घृणा होने लगी। उसने सोचा कि वह कभी भी अपने आपको क्षमा नहीं

कर पाएगी। वह खूब रोई। ज्यों-ज्यों वह मसूरी से दूर होती गई, उसका दुःख अपने आप कम होता गया। उसे लगा कि उसके साथ जो कुछ वहाँ घटा था, वह एक दूसरी दुनियाँ में घटा था। उसे अपनी स्थिति उस पागल जैसी लगी जो पागलपन के बाद सही होश में आया हो और अपने पागलपन की बातें याद करता हो। पर, क्योंकि वह जानता है कि पागलपन में वह अपने आपे में नहीं था, अतः कोई उसे क्षमा करे न करे; पर वह स्वयं को निर्दोष समझता है।

विमला ने सोचा कि उसकी स्थिति जानकर कोई भी सहृदय व्यक्ति उसे दोष नहीं देगा, वरन् उस पर तरस ही खाएगा। उसे अपना आत्म-विश्वास खण्डित होता जान पड़ा। उसका भविष्य जो उसे सीधा और सरल प्रतीत होता था, अब संटकपूर्ण लगा। फिर भी विमला ने निश्चय किया कि वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से जीवन-पथ पर अग्रसर होगी।

उसका भविष्य कठिन था और वह निपट अकेली थी। ट्रेन आगे बढ़ती जा रही थी। विमला अपने कम्पार्टमेन्ट में अकेली जा रही थी। उसे रह-रहकर डाक्टर रमेश की याद आ रही थी। रमेश की जिस मौन स्थिति को वह निरर्थक समझती थी उसकी सार्थकता आज स्पष्ट सामने आ रही थी। रमेश कुछ बोलता नहीं था, परन्तु लगता था कि विमला के चारों ओर सुरक्षा की दीवार खड़ी थी। आज वह बिलकुल अकेली थी, निराधार।

कलकत्ता में अपने पिता के घर पहुँचकर विमला ने घण्टी बजाई। उसके पिता अपने पढ़ने के कमरे में थे। उसने उनके कमरे पर जाकर धीरे-से दरवाजा खोला। वह अँगीठी के पास बैठे शाम का अखबार पढ़ रहे थे। विमला को देखकर वह उछल पड़े।

"ओह, विमला! मैं तो समझता था कि तुम दोपहर की गाड़ी से यहाँ पहुँचोगी।"

"मैंने सोचा कि आपको स्टेशन आने का कष्ट न दूँ, इसीलिए अपने

पहुँचने के समय की सूचना नहीं दी।" विमला बोली।

विमला ने अपने पिता को सादर प्रणाम किया।

विमला ने जब पिता को देखा था तब से अब अधिक बूढ़े और दुर्बल दिखाई पड़ रहे थे। विमला ने अपनी माताजी की बीमारी और अचानक मृत्यु के विषय में पूछा।

तुम्हारी माँ की तबियत पिछले एक वर्ष से गड़बड़ चल रही थी, परन्तु वह डाक्टर के पास जाने को सर्वदा टालती रहीं।

सर्जन ने बताया था कि उन्हें निरन्तर दर्द रहता था। वह तुम्हारी माँ ही थी जिसने वह सब सह लिया।" पिता बोले।

"क्या उन्होंने कभी बताया तक नहीं ?"

"वह यही कहती रहीं कि उनकी तबियत ठीक नहीं है, बस! उन्होंने पीड़ा का कभी ज़िक्र नहीं किया।" वह रुके और विमला की ओर देखकर पूछा, "तुम यात्रा के कारण थक गई होगी ?"

"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं।" विमला बोली, "क्या आपने माताजी का दाहकर्म करा दिया ?"

"नहीं, तुम उन्हें देखना चाहोगी ?"

"क्या वह यहीं पर हैं ?"

"हाँ, मैं अस्पताल से उन्हें यहीं ले आया था।"

"मैं तुरन्त देखना चाहूँगी।" विमला उद्विग्न-सी हो उठी।

"क्या मैं भी साथ चलूँ ?" पिता ने पूछा।

"नहीं, मैं अकेली ही चली जाऊँगी" विमला बोली।

वह नीचे की मंज़िल के बड़े कमरे में गई, जहाँ वर्षों से उसकी माँ सोती थीं। उसे दीवारों पर की कीमती कारीगरी अभी तक याद थी। ड्रेसिंग-टेबिल पर अब भी सारा सामान करीने से रखा था।

वह ज़मीन पर लेटी थीं। उनकी छाती पर उनके दोनों हाथ रखे थे। वह इतनी नम्र लग रही थीं कि जितनी अपने जीवन-काल में कभी नहीं लगीं। उनका मुख और अंग इतने सुघड़ थे कि वह अब

भी सुन्दर लग रही थी। यद्यपि बीमारी और क्लेश के कारण उनके गालों में गढ़े पड़ रहे थे। उनके मुख पर उनका चरित्र स्पष्ट था। लगता था जैसे कोई सम्राज्ञी सो रही हो। विमला ने पहली बार किसी मृतक को इतना आकर्षक देखा था। उसे अपनी माँ की मृत्यु पर दुःख नहीं हुआ। उसके और माँ के बीच सदा ही कटुता विद्यमान रही थी जिसके कारण उसके अन्दर अपनी माँ के लिए स्नेह नाम की कोई वस्तु नहीं रह गई थी। पर जब उस दिन उसने अपनी माँ को लुटे हुए अरमानों और मृत्यु-शय्या पर पड़े देखा तो उसका दिल भर आया।

उसकी माँ अपने जीवन-भर परिकल्पनाओं में फँसी रहीं, कभी अपने स्तर से गिरी बात की उन्होंने कभी आकांक्षा नहीं की।

विमला की छोटी बहन फूल भी आ चुकी थी। उसे विमला ने स्नेह से सान्त्वना दी। फूल के आँसू रुके तो विमला ने पूछा, "क्या पिताजी से मिलना चाहोगी?" उसने अपने आँसू पोंछे। विमला ने देखा कि वह गर्भवती होने पर सुन्दर हो गई थी। काले कपड़ों में भी वह खिली कली थी।

"नहीं, अभी पिताजी के पास नहीं जाऊँगी। वहाँ मैं फिर रो पड़ूँगी। पिताजी बड़ी कठिनाई से माताजी की मृत्यु के कष्ट का सामना कर रहे हैं।"

विमला बहन को लेकर कमरे के बाहर आई और उसे विदा करके अपने पिता के पास चली गई।

६०

दूसरे दिन खाना खाते समय पिताजी विमला को उसकी माँ की बीमारी से लेकर मृत्यु तक का सारा ब्योरा सुनाते रहे। उन्होंने बताया कि सम्बन्धियों और मित्रों ने भी पत्र भेजकर शोक प्रकट किया था।

दोनों खाना खाने के बाद पढ़ने के कमरे में चले गये। बँगले-भर में वही एक कमरा था जिसमें अँगीठी बनी थी। कमरे में जाकर विमला के पिता ने चिमनी पर रखा हुआ अपना पाइप उठाकर भरा; पर अचानक उन्हें कोई विचार आया। उन्होंने विमला को सन्देहात्मक दृष्टि से देखा और 'पाइप' रख दिया।

विमला ने पूछा, "क्या आप 'पाइप' नहीं पियेंगे ?"

"तुम्हारी माँ को पाइप की बू पसन्द नहीं थी और सिगार पीना मैंने पिछले युद्ध के समय छोड़ दिया था।"

विमला को थोड़ा धक्का लगा। एक साठ वर्ष का पुरुष अपने कमरे में भी अपनी पसन्द का धूम्रपान न कर सके, इससे अधिक विडम्बना क्या होगी। परन्तु कितना प्रेम था उनका माताजी के प्रति !

उसने किंचित् हास से कहा, "मुझे पाइप की खुशबू बड़ी अच्छी लगती है।"

पिता को जैसे सन्तोष का अनुभव हुआ। उन्होंने पाइप उठाकर सुलगा लिया। अँगीठी के एक ओर विमला बैठी थी और दूसरी ओर उसके पिता। पिता ने सोचा कि उन्हें विमला की वेदना के प्रति संवेदना प्रकट करनी चाहिए।

वह बोले, "मेरे खयाल में तुम्हें अपनी माताजी का पत्र मिला होगा। रमेश की मृत्यु की सूचना से हम दोनों को बड़ा धक्का लगा था। वह बहुत अच्छा लड़का था।"

विमला मौन रही।

"तुम्हारी माँ ने मुझे बताया था कि तुम्हारे बच्चा होने वाला है।" पिता बोले।

"जी हाँ।"

"कब तक आशा करती हो ?"

"लगभग चार महीने में।"

"बच्चे से तुम्हारा साहस बढ़ जायगा। तुम अपनी छोटी बहन

का बच्चा भी देखना. बड़ा सुन्दर है।"

बाप-बेटी ऐसे बातें कर रहे थे, जैसे दो परिचित बड़े समय के बाद मिले हों। विमला जानती थी कि वह कभी भी अपने पिता का स्नेह नहीं पा सकी थी। उसके पिता का घर में मान भी नहीं था, क्योंकि रोटी-कपड़ा देने के अतिरिक्त वह और कुछ इकट्ठा नहीं कर सके थे। पिता होने के नाते ही यदि उनमें कोई स्नेह उसके लिए हो तो हो। यदि उसे पता लग जाय कि उसके पिता में उसके लिए स्नेह का कोई भाव नहीं था तो उसे एक और आघात पहुँचता।

उसे याद था कि घर में सबको पिता की उपस्थिति में असुविधा प्रतीत होती थी; पर क्या कभी किसीने यह भी सोचा था कि पिताजी को उन सबकी उपस्थिति से कितनी असुविधा होती थी! वह सदा ही सहृदय और विनम्र बने रहते थे।

"तुम्हारी माँ ने कहा था कि बच्चा होने तक तुम यहीं रहोगी। वह तुम्हारा कमरा ठीक ठाक करने का इरादा कर रही थीं।"

"मुझे मालूम है, परन्तु मैं आपको इस समय परेशान नहीं करूँगी।"

"यह बात नहीं है। परिस्थितियों को देखते हुए तुम्हारे पास अपने माँ-बाप के अतिरिक्त और कहीं रहने का ठिकाना नहीं है। मुझे चीफ़-जस्टिस का पद मिला है और वह मैंने स्वीकार भी कर लिया है।"

"पिताजी, यह सुनकर मुझे सचमुच बड़ा हर्ष हुआ। मैं आपको हार्दिक बधाई देती हूँ।"

"तुम्हारी माताजी की मृत्यु के बाद मुझे यह सूचना मिली। यदि उन्हें भी मालूम हो जाता तो शायद उन्हें मरते समय पूर्ण सन्तोष होता।"

"यह सब भाग्य की विडम्बना है। अपने सारे परिश्रम करने के पश्चात् माताजी अधूरे अरमान छोड़कर चल बसीं।" विमला बोली।

'मैं अगले महीने के आरम्भ में ही चला जाऊँगा। मकान किसी

एजेण्ट की निगरानी में छोड़ दूँगा और फ़र्नीचर बेच दूँगा। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम यहाँ नहीं रह पाओगी। परन्तु तुम नये फ्लैट में यदि यहाँ का फ़र्नीचर ले जाना चाहो तो खुशी से जितना चाहो, ले जा सकती हो।"

विमला अँगीठी की ओर देख रही थी। उसके हृदय की गति तीव्र हो गई थी। वह एकाएक हताश हो गई। उसकी वाणी में कम्पन था। उसने काँपते स्वर में पूछा, "पिताजी, क्या मैं आपके साथ नहीं चल सकती ?"

"तुम ! मेरी बच्ची !" उनकी आँखें नीची हो गई। बड़ी कठिनाई से बोले, "परन्तु तुम्हारे और तुम्हारी बहन के जान-पहचान के तो सब लोग यहीं हैं। मैं तो समझा था कि यहाँ ठहरकर तुम अधिक प्रसन्न होगी। मुझे तुम्हारी परिस्थितियों का पूरा ज्ञान तो नहीं है; पर मैं फ्लैट का किराया बराबर देता रहूँगा।"

"मेरे पास जीवन बिताने-भर को पर्याप्त सरमाया है "

"मैं एक अपरिचित स्थान पर जा रहा हूँ, मुझे स्वयं वहाँ का कुछ भी हाल मालूम नहीं।"

"मुझे अपरिचित स्थान अच्छे लगते हैं। कलकत्ता में मेरी कोई रुचि नहीं है। यहाँ मैं घुट जाऊँगी।" विमला बोली।

एक क्षण को विमला के पिता ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। वह समझी कि वह रो पड़ेंगे। उनके मुख पर बड़ा दयनीय भाव उभर आया था। विमला को बड़ा क्लेश हुआ। उसका विचार ठीक ही था कि माताजी की मृत्यु के बाद पिताजी का जीवन थोड़ा सरल हो जायगा। उनका अपने अतीत से कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा और वह स्वच्छन्द हो जायेंगे। अब उन्हें अपने सम्मुख नया जीवन दीख रहा था। अब-तब की प्रसन्नता मृगतृष्णा-मात्र थी। विमला बड़ी अच्छी तरह समझ रही थी कि तीस वर्ष के क्लेशों और कष्टों ने उन्हें बिलकुल तोड़ दिया था। उसके पिता ने आँखें खोलीं—और एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर

बोले, "यदि तुम्हें मेरे साथ चलने में सुविधा है तो मैं बड़ी खुशी से तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा।"

अरे, यह तो बड़ी सरलता से निबट गया। पिता ने सन्तान के प्रति कर्तव्य के सम्मुख आत्म-समर्पण कर दिया। विमला अपनी कुर्सी से उठी और झुककर उसने पिता के हाथ अपने हाथों में ले-लिए।

"नहीं पिताजी! यदि आप नहीं चाहते तो मैं नहीं चलूँगी। आप बहुत त्याग कर चुके हैं। यदि आप अकेले जाना चाहते हैं, तो अकेले ही जाइए, मेरी बिलकुल चिन्ता न कीजिए। मैं स्वयं कर लूँगी।"

पिता ने अपना हाथ छुड़ाकर विमला के सिर पर फेरा और धीरे से कहा, "बेटी! तुम्हें अपने साथ ले चलने में मुझे प्रसन्नता ही होगी। आखिर मैं तुम्हारा पिता हूँ। तुम इस समय अनाथ हो, अकेली हो। यदि तुम मेरे साथ रहना चाहती हो तो मैं मना करके निर्दयी नहीं बनूँगा।"

"परन्तु मैं पुत्री होकर भी कोई अधिकार नहीं चाहती।"

"मेरी बेटी!"

"मेरा कोई अधिकार नही है।" विमला ने कहा। "यह सोचकर मेरा हृदय द्रवित हो जाता है कि जीवन-भर हम आप पर भार ही बने रहे और उसके बदले में कुछ भी नहीं दे सके। तनिक-सा स्नेह भी न दे पाये। आपका जीवन आनन्दमय नहीं रहा। क्या आप मुझे अपनी पिछली त्रुटियाँ सुधारने का अवसर नहीं देंगे?"

विमला की भावनाओं के उद्रेक से उन्हें थोड़ी उलझन-सी हुई। "तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई। मुझे तुमसे कभी कोई शिकायत नहीं हुई। मुझे किसीसे कोई शिकायत नहीं है।"

"पिताजी! मैंने बड़े दुःख झेले हैं। यहाँ से जाते समय वाली विमला यह अब नहीं रही है। अब वह अत्यन्त शान्तिपूर्ण हो गई है; आज के दिन उतनी गन्दगी उसमें नहीं है जितनी उस

समय थी। क्या अब भी आप मुझे अवसर नहीं देंगे ? मेरा आपके सिवाय इस संसार में कौन है ? क्या आप मुझे अपने स्नेह की छाया में रहने का सौभाग्य नहीं देंगे ? पिताजी, मैं नितान्त अकेली और अत्यन्त दुःखी प्राणी हूँ। मुझे आपके स्नेह की जितनी आवश्यकता इस समय है, उतनी कभी नहीं थी।"

विमला ने अपना मुँह पिता की गोदी में छिपा लिया। वह रो रही थी। उसके सब्र का बाँध टूट गया था।

"मेरी बच्ची, मेरी बेटी !"

विमला ने अपने पिता की ओर देख उनके गले में अपनी बाँहें डाल दीं।

"पिताजी, मुझ पर रहम करो ! हम दोनों को एक-दूसरे का दुःख बँटाना चाहिए।"

पिता ने बेटी के होंठ चूम लिए और विमला के आँसुओं ने उनके गाल भिगो दिए।

"तुम मेरे साथ चलो।" पिता ने सस्नेह कहा।

"क्या आप सच ही मुझे अपने साथ ले जाना चाहते हैं, क्या यह सच है पिताजी ?"

"हाँ !"

"पिताजी मैं कैसे कृतज्ञता प्रकट करूँ ?"

"बेटी, ऐसी बातें नहीं करते हैं, इन सबसे मुझे क्लेश होता है।"

अपने रूमाल से उन्होंने विमला के आँसू पोंछे। इस समय की-सी उनकी मुस्कान विमला ने पहले कभी नहीं देखी थी। एक बार फिर आह्लादित हो उसने पिता के गले में बाँहें डाल दीं।

"पिताजी, हम दोनों साथ रहेंगे।"

"यह मत भूलो कि तुम माँ बनने वाली हो।"

"मुझे तो खुशी है कि मेरी बच्ची खुले आकाश के नीचे जन्म लेगी।"

"तो तुम्हें यह भी मालूम हो गया कि लड़की होगी ?" पिता के

मुख पर फीकी-सी मुस्कान थी

"मैं चाहती हूँ कि लड़की हो। मैं उसे इस प्रकार पालूंगी कि वह वही त्रुटियाँ न करे जो मैंने की थीं। मैं जब अपने अतीत को देखती हूँ तो मुझे स्वयं से घृणा होती है, परन्तु मुझे सुधरने का अवसर ही नहीं मिला। मैं अपनी बच्ची को अपने पाँव पर खड़ा होना सिखाऊँगी। मैं इसलिए उसे नहीं पालूंगी और प्यार करूँगी कि उसकी जवानी में कोई पुरुष उसे रोटी-कपड़े का सहारा देकर लूट ले।"

●